राजस्थान प्रकाशन, जयपुर

# आवृत-अनावृत

योगेन्द्र शर्मा

पूज्य पिता श्री महादेव प्रसाद शर्मा

एवं

पूज्यनीया माँ श्रीमती शान्ति देवी शर्मा

को

समर्पित

तथा

उसको

जिसके कारण

स्मिता

के चरित्र का निर्माण हुआ।

साथ ही मानवीय संबंधो की सूक्ष्मता, मानसिकता और गहराई को भी अभिव्यक्त करते हैं।

प्रख्यात साहित्यकार श्री मुद्राराक्षस, श्री आनन्द शर्मा, डॉ० इन्दुबाला मिश्रा, सुश्री स्नेहलता पाठक, सुश्री सुमनलता शर्मा तथा उन सभी समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं के सम्पादकों, जिन्होंने रचनाओं का प्रकाशन कर मेरा उत्साह-वर्द्धन किया कि शुभकामनाओं के फलस्वरूप उपन्यास पूर्ण हो सका, अतएव सभी के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

—योगेन्द्र शर्मा

अमित सहसा विश्वास न कर सका। अभी जो उसने देखा था क्या वास्तव मे वही है? वह इसी उधेड़बुन में था कि उसने आटो रिक्शा को रुकने का संकेत किया और शीघ्रता से सड़क पार करने लगा। उसने जिस युवती को देखा क्या वह उसकी चिर-परिचिता सर्वाधिक प्रिय स्मिता ही है? लेकिन वह यहाँ कैसे? अमित आफिशियल वर्क से इस शहर में कल शाम को ही पहुँचा था और आज उसे स्मिता दिखाई पड़ जाएगी इसकी तो उसने कल्पना भी न की थी। अभी-अभी उसने सड़क के दूसरी ओर एक मेडिकल स्टोर की सीढ़ियों से एक युवती को उतर कर रिक्शे पर बैठते देखा था। जब तक अमित सड़क पार कर उस तक पहुँचता, रिक्शा काफी आगे बढ़ चुका था। उसने दौड़ना आरम्भ कर दिया। स्मिता से मिलने और हाल-चाल जानने की उसमें ललक बनी हुई थी। तभी उसने देखा कि रिक्शा चौराहे को पार कर गया है। चौराहे तक पहुँचते ही रेड सिगनल देखकर उसे रुक जाना पड़ा और वह हताशा की स्थिति मे आ गया। क्या वह वास्तव मे स्मिता ही थी या उसे भ्रम हुआ है? यह प्रश्न उसके मन मे उठा। लेकिन वह स्मिता को पहचानने में, जिसे सम्पूर्ण हृदय से उसने चाहा था, भूल कदापि नही कर सकता। इसका उसे पूर्ण विश्वास था फिर स्मिता की रूपरेखा ही ऐसी थी जो उसे विशिष्टता प्रदान करती थी। भीड़ में भी उसकी छवि अपना अलग ही अस्तित्व बनाए रखती है। इतने दिनो बाद स्मिता को सामने पाकर और बात करने से वंचित रह जाना, उसे नितान्त दुखद लगा। ओह, उसका भी कैसा भाग्य है कि जब तक वह अपने को स्मिता के करीब पाता है, वह उससे दूर चली जाती है, ऐसा लगता है कि वह समुद्र में निःसहाय अकेला तैर रहा है, उसे किश्ती दिखाई पड़ती है, वह सहारे को पकड़ने का प्रयास करता है, तभी लहरो के थपेड़ों से किश्ती दूर चली जाती है। यही तो उसके जीवन में हुआ। स्मिता से अन्तरंग सम्बन्ध स्थापित करने पर वह जब मन की बात उससे कहना चाह ही रहा था कि रवि उसे दूर हटा ले गया। फिर रवि से सम्बन्ध टूट जाने पर पुनः स्मिता के करीब उसने जाना चाहा तभी स्मिता जीवन साथी के साथ परिणय-सूत्र मे आबद्ध हो गई। क्या उसकी नियति यही है? काश ऐसा भाग्य ईश्वर किसी को न दे। कितना दारुण आघात उसने सहा है लेकिन वह आज तक उसे समझ न पाई। कहा जाता है कि स्त्री पुरुष की निगाह को समझने मे बड़ी चतुर होती है लेकिन इतनी प्रबुद्ध होते हुए भी क्या स्मिता उसे समझ पाई? शायद नही। फिर उससे

इतना भावात्मक और अन्तरंग सम्बन्ध क्यों ? सम्बन्ध टूटने की किसी हद तक जाकर फिर कहीं जुड़ने में लग जाते हैं और प्रगाढ़ भी हो जाते हैं। संभवतः किसी स्तर पर पति से भी इतने प्रगाढ़ सम्बन्ध शायद ही वह स्थापित कर पाती हो, जैसा कि उसने स्वयं बताया था।

आखिर उसे इतनी निकटता क्यों न मिल पाई, जितनी वह अपेक्षा करता था। हो सकता है कि उसके कुछ गुण स्मिता को इतने अच्छे लगे हो कि दूर जाकर भी वह वापस लौट आती है लेकिन जीवन साथी के रूप में स्मिता के मन में जो मापदण्ड रहा है, उसके अनुरूप वह खरा न उतरा हो। उसने कभी कहा भी तो नहीं कि आखिर वह क्या चाहती है ? यदि उसे मालूम होता तो वह उसकी आकांक्षाओं के अनुरूप स्वयं को ढालने का प्रयास करता। वासना तृप्ति के लिए दो-चार पल काफी होते हैं और वह तो विगत आठ वर्ष से किसी न किसी रूप में उससे जुड़ा रहा। बीच में कभी-कभार लम्बे अन्तराल भी आए पर सम्बन्ध-विच्छेद तो नहीं हुए न स्मिता ने ऐसा भाव ही व्यक्त किया। क्यों ऐसा होता है, कि नारी किसी पुरुष के गुणों पर मुग्ध होकर उसे आदर करती है, प्रशंसा करती है और सामीप्य भी प्रदान करती है लेकिन शारीरिक सम्बन्ध प्रायः कामी एवं लम्पट पुरुष से ही स्थापित करती है ? क्या इसलिए कि जहाँ पहले प्रकार का मनुष्य हृदय से चाहता है, भावात्मक तादात्म्य स्थापित करता है और सोच विचार कर संयम धारण करते हुए आगे बढ़ना चाहता है वहीं दूसरा व्यक्ति अवसरवादिता से लाभ उठाते हुए मौके पर कदम उठाकर संकोच छोड़ कर अपनी बातों को व्यक्त कर दूसरे व्यक्ति के मन और शरीर पर, अधिकार स्थापित कर लेता है। तब पहले प्रकार का व्यक्ति कुण्ठा और निराशा में अतृप्ति लिए हुए जिन्दगी भर विवश होकर जीवन-यापन की चेष्टा करता रहता है। टीस और कसक उसके जीवन के अभिन्न अंग बन जाते हैं।

अमित का भाग्य भी कुछ इसी प्रकार का था। लगभग तीन वर्ष के अन्तराल के बाद एक मौका मिला स्मिता से मिलने का। कुछ कहने और सुनने का, पर ये घड़ियां भी निष्ठुर बन गयी जैसे उसे अमित का स्मिता से संयोग सह्य नहीं था और यादों के रूप में पीडा और जलन छोड़ गई अमित के लिए। पर क्या उसने स्मिता का केवल शरीर ही पाना चाहा था ? उद्दाम के क्षण आनन्दातिरेक अवश्य देते है। शायद विजय की भावना भी पर यह स्थायी नहीं होता। स्मिता के शारीरिक आकर्षण, उसके उभार-उतार, रूप-सज्जा और यौवन के खिंचाव में वह दूर रहा हो, यह तो नहीं है लेकिन इतनी प्रमुखता उसके बुद्धि चातुर्य, हाव-भाव, हास-परिहास, मानसिक गुण, स्टाइल और व्यवहार कुशलता को भी उसने दी थी। समग्र रूप से, सब मिलकर उसे विशिष्ट बनाते थे और स्मिता की यही विशिष्टता ही अमित को इस प्रकार प्रभावित किये थी कि वह इसके

जाल से अपने को कभी मुक्त न कर सका। शारीरिक आकर्षण को वह नकारता नही लेकिन सिर्फ शारीरिक आकर्षण ही उसे स्मिता के समीप खीच लाया था, यह कहना यथार्थ को भुठलाना होगा। अमित का विचार था कि सर्वप्रथम विषम लिंगीय व्यक्ति से मानसिक तृप्ति की आवश्यकता होती है, शारीरिक तृप्ति तो तो उसके बाद की अवस्था है। शायद यह प्रेम की पराकाष्ठा और अन्तिम अवस्था हो। अगर ऐसा नही है तो मानसिक तृप्ति के अभाव मे शारीरिक तृप्ति पाकर लोग परामुख क्यो होते हैं? यहां तक कि प्रेम विवाह करने वाले भी तृप्ति के अभाव में कही और ठिकाना खोजने लगते हैं। इसका अर्थ यह है कि इस प्रकार के प्रेम विवाह मे तलाक अस्वाभाविक नही है फिर विवाह को भी विषम लिंगीय व्यक्तियों के लिए जुडने की स्थायी व्यवस्था नही माना जा सकता। एक प्रश्न उसे सदैव कुरेदता रहा लेकिन आज तक उसे अवसर न मिल पाया पूछने का "क्या स्मिता विवाह से स्थायी रूप से संतुष्ट है?" जाने क्यों उसे विश्वास था कि उस जैसी महत्वाकांक्षिणी युवती स्थायी रूप से संतुष्ट नही हो सकती। उसकी अपेक्षाओं को पूरा कर पाना एक व्यक्ति के लिए शायद ही सम्भव हो। यदि ऐसा कोई हो भी तो निश्चित रूप से वह विलक्षण व्यक्तित्व का धनी होगा।

स्मिता के परिवार अर्थात् पति, पुत्र और उसकी मम्मी तथा स्वयं उसके सम्बन्ध मे अमित बहुत कुछ जानना चाहता था लेकिन अवसर सामने आकर भी खिसक गया। अब कब भेंट हो पाएगी यह भी तो निश्चित नही। क्या वह जीवन भर भटकता ही रहेगा? मंजिल न मिलेगी। शारीरिक रूप से न सही, क्योंकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे यह सम्भव नही प्रतीत होता, मन से ही वह एक बार स्वीकार करने की भावना व्यक्त कर दे तो उसे आत्म-तुष्टि मिल जायेगी। जीवन मे शारीरिक, तुष्टि किसी से मिल ही जाती है प्रायः पत्नी से ही, पर मन से जुड़े रहना जीवन की उपलब्धि होती है। स्त्री का स्वभाव भी अजीब होता है, तृप्ति मिले या न मिले लेकिन वह अपने लिए पुरुष के भ्रम को बनाए रखती है। स्वयं वह अचेतन मन की तरह एक बन्द तहखाना ही रहती है, जो जाहिर नही होती। इसलिए उसके शरीर को पा लेना ही सब कुछ नही है। उसके मन को जीतते जाओ तो वह परत के समान खुलती चली जाती है लेकिन सभी परतें तो वह शायद ही किसी के समक्ष खोलती हो? क्या स्मिता के हृदय में भी उसके प्रति कोमलतम अनुभूतियां है या यह उसका भ्रम ही है? वह कितने विश्वास के साथ, बेलौस होकर गुह्य बातें भी प्रगट कर देती है। शायद वह उसके मन के भाव को समझती हो और आश्वस्त भी रहती हो कि जब तक वह खुलकर बढ़ावा न देगी अथवा प्रोत्साहित न करेगी अमित स्वयं से व्यक्त होने वाला नही। इसलिए वह सुरक्षित महसूस करती आयी हो अब तक। अपने कटु-व्यवहार के लिए उसने

स्मिता के चेहरे पर पश्चाताप के भाव भी देखे हैं फिर क्यों कभी-कभी वह इतना निर्मम व्यवहार कर बैठती है ? अमित को लगा कि व्यक्ति जिसे नितान्त अपना समझता है, उसी के प्रति ही वह कठोर भी हो जाता है कभी-कभी। हो सकता है कि कही एक दूसरे की भावनाओं को जाने-अनजाने ठेस लगती हो, इसलिए ऐसा हो जाता हो। खैर, कुछ भी हो अमित के जीवन की साध बनी रही कि स्मिता एक बार उसे स्वीकारे चाहे दिखावे के रूप मे ही सही लेकिन वह जिस परिवेश मे पला है वहाँ कृत्रिम बात तो कह ही नही सकती। कहेगी तो सच जरूर होगा। उसने स्मिता को सदैव सुखी देखना चाहा है इसलिए उसकी आकांक्षा थी कि स्मिता सुखमय दाम्पत्य जीवन गुजारे। उसे कोई अभाव महसूस न हो। उसका क्या, वह तो अभावों में पला ही है, जैसे-तैसे अभाव मे जिन्दगी बिता देगा या हो सकता है कि जीवन के किसी मोड़ पर कोई ऐसा हमदर्द मिल जाये जो उसकी जिन्दगी को संवारने मे योगदान दे सके। किसी और के अस्तित्व की कल्पना उसे सहज स्वीकार न हो पाती, उसे लगता कि स्मिता भले ही उसे न समझ पाई हो लेकिन कही भावात्मक स्तर पर वे इतने सन्निकट भी है, कि दूसरा कोई इतनी निकटता को नही पहुँच पायेगा।

इन्ही विचारों मे खोया हुआ वह पैदल ही उस होटल तक आ गया, जहा वह रुका था। उसका कार्य समाप्त हो चुका था और आज ही उसे वापस लौटना था। होटल पहुँच कर वह तैयारी करता रहा। बीच-बीच मे उसका ध्यान भंग हो जाता। तब वह पाता कि तैयारी करते करते उसका ध्यान कही विचलित हो जाता है। वास्तव मे ध्यान कही और नही, स्मिता की यादो मे ही खोया हुआ था। उसे स्मिता के विवाह की भी याद आ रही थी और विवाह के पश्चात पुत्र उत्पन्न होने के समय पारिवारिक समस्याओं से जूझते हुए भी उसने देखा था। यह सर्वथा उसका नवीन रूप था जिसकी अमित ने कल्पना भी नही की थी। जिसकी शैशव और किशोर वय इतनी सुख-सुविधा, लाड-प्यार और आमोद-प्रमोद मे व्यतीत हुई हो, वह इतनी जीवट और संघर्षशील भी हो सकती है, यह विश्वास से परे था। उसने उसका मनोहारी रूप देखा था या व्यंग्योक्तियां और कटुवचन सुने थे और बगैर उफ किए परिस्थितियो से जूझते भी देखा था। वह समझौता पसन्द नही थी। हार मानने वाली भी नही थी चाहे कितनी ही प्रतिकूल परिस्थितियां क्यों न हो ? अमित से वह कहा करती थी, "इन्सान चाहे तो जिन्दगी मे क्या नही पा सकता बस उसमे डिटरमिनेशन हो।" अमित ने उसकी इस उक्ति को चरितार्थ करना चाहा था, पर उसे लगा था कि दृढ़ निश्चयी बनने मे प्रेरणा का भी हाथ होता है। प्रेरणा ने अप्रत्यक्ष सहारा भले ही दिया हो पर वह प्रत्यक्ष सहारा नहीं बन सकी। उसने स्मिता को ही अपनी प्रेरणा बनाना चाहा था पर

क्या वह बन सकी ? संघर्ष तो उसने भी किया था लेकिन स्मिता के संघर्ष को वह स्वयं के संघर्ष से कम नहीं समझता था क्योंकि नारी होकर उसका संघर्ष स्पृहणीय था। इन्हीं बातों को सोचते विचारते वह लौट आया। दूसरे दिन से वह न्यूज पेपर के आफिस जाने लगा। जीवन के दिन व्यस्ततापूर्ण ढंग से व्यतीत हो रहे थे।

× × ×

एक दिन स्लिप देखते ही उसका हृदय स्पन्दित हो उठा। लन्च टाइम के पश्चात अभी आकर वह अपने कक्ष में प्रविष्ट हुआ ही था कि चपरासी ने एक स्लिप लाकर दी, स्लिप पर नाम की लिखावट देखकर वह चौंक उठा था। आज इतने वर्षों के बाद नितान्त अपना सा, बेहद आत्मीय, जिसके साथ जीवन की सुखद एवं कटु स्मृतियां जुड़ी थी, व्यक्ति से मिलने की कल्पना से वह पुलक उठा। दूसरे ही क्षण उसके मन में कहीं टीस भी उभर आयी। मिलना तो था ही, अधिक सोचने का समय भी नहीं था, इसलिए चपरासी से उसने कहा "भेज दो" और इसी के साथ वह हिदायत देना भी न भूला कि दो कोल्ड ड्रिंक्स दे जाये।

अगले ही पल अमित, जो एक स्थानीय दैनिक समाचार पत्र में न्यूज एडीटर के पद पर था, के कक्ष में लगभग छब्बीस वर्षीया युवती प्रविष्ट हुई। अमित प्रसन्नता के अतिरेक से खड़ा हो गया और औपचारिक नमस्ते के आदान-प्रदान के पश्चात उसने स्मिता को बैठने का संकेत किया। वह सोच नहीं पा रहा था कि कहां से, किस क्रम में बात करे। बातें बहुत सी कहने सुनने को थी पर यह सोचकर कि देखें पहल उस ओर से किस रूप में होती है, उसने अपने को नियन्त्रित करते हुए इतना ही कहा। "हैलो स्मिता, कैसी हो ?"

"बस जिन्दगी जी रही हूँ।"

"तुम कब आयीं ?"

"अभी थोड़ी देर पहले साबरमती एक्सप्रेस से।"

"सामान वगैरह ?"

"अधिक कुछ नहीं, केवल ब्रीफकेस और होल्डाल जो होटल में रख आयी हूँ।"

"यहां आकर होटल में क्यों ? शायद मेरे घर में तुमने अपने लिए जगह न समझी या ठहरना उचित नहीं समझा।"

"ऐसी तो कोई बात नही। अपना न समझती तो आती ही क्यों ?"

"किस होटल मे रुकी हो ?"

"आम्रपाली होटल मे रूम नम्बर थर्टी फोर,"

"अच्छा चलो, सबसे पहले तुम्हारा सामान घर ले चलते हैं।"

"नही, अमित। कल तो जाना है वापस। इस बार न सही फिर कभी तुम्हारे यहां भी रुक जाऊंगी।"

"फिर कभी, नही। अगली बार। वायदा करो पक्का वायदा।"

"श्योर।"

"पिछले माह मैंने तुम्हे कानपुर मे देखा था। जब तक सडक पार कर तुमसे मिलता तुम रिक्शे पर जा चुकी थी।"

"हां, एक विवाह समारोह में सम्मिलित होने मे गयी थी। भेंट हो गयी होती तो कितना अच्छा रहा होता।"

"खैर....तुम्हारे आने से मुझे अत्यधिक खुशी है। आज इतने दिनो बाद तुम्हें देखकर भी यह विश्वास करना कठिन हो रहा है कि तुमने मुझसे मिलने की आवश्यकता तो समझी।"

"हां अमित। मैं नही जानती कि तुम मुझे देखकर कैसा महसूस कर रहे हो? तुम्हारे जाने के पश्चात तुम्हारी बाते मुझे यथार्थ प्रतीत हुईं और सयोग देखो कि आज मेरी पोस्टिंग भी इसी शहर मे हुई। पहले मैंने सोचा कि तुम्हे पत्र लिखू फिर यह सोचा कि सरप्राइज दू।"

इसी बीच दो कोल्ड ड्रिक्स लाकर रख दिये गये। अमित ने स्मिता को ड्रिक्स आफर किया। दोनों ने ड्रिक धीरे धीरे आरम्भ किया। अब अमित ने ध्यान मे स्मिता को देखा। पिछले तीन वर्षो मे उसका शरीर अधिक लावण्ययुक्त हो गया था। औसत कद, गोरा रंग, उन्नत एवं आनुपातिक गोलाई लिए हुए वक्ष, गुदाज बाहे और आकर्षक नैन नक्श, सभी मिलकर उसे एक ऐसा व्यक्तित्व बना रहे थे जो सहज ही आकृष्ट करने की क्षमता रखता है। जहा एक ओर गरिमा और कान्ति-मयी वह दीख पडी व्ही चेहरे पर कशिश तथा अलस भाव के साथ थकान और शिकन के चिन्ह भी दिखाई पड़े। ऐसा प्रतीत हुआ कि जीवन-समर मे जूझते-जूझते उसे विश्राम की आवश्यकता आ पड़ी हो, जिससे वह स्वयं का विश्लेषण कर सके तथा अपने परिश्रम का मूल्याकन भी। किसी के दिशा निर्देशन मे या स्वयं अपने लिए आगामी राह निश्चित कर सके। यह सोचते हुए अमित को ख्याल आया कि उसने उसकी बात का कोई जवाब नही दिया। उसने स्मिता को लक्ष्य करते हुए कहा—"तुम्हारी सरप्राइज देने वाली बात मुझे अच्छी लगी। वास्तव मे तुम्हारी बेबाक बातें और बात करने की शैली का मैं सदैव प्रशंसक रहा हू।"

"अधिक तारीफ न करो, नहीं तो मुझे कहना पड़ेगा कि तुम फ्लैटरी पर उतर आये हो। शायद तुम जानते हो कि नारसिज्म से हम औरतें अधिक ग्रस्त रहती है, तभी पुरुष वर्ग सदैव से इसका लाभ उठाता रहा है।"

"तो तुम शायद मुझे औरो की श्रेणी मे रखना चाह रही हो। लेकिन तुम जानती हो कि मैं अवसरवादी एवं व्यवहारपरक नही रहा, नही तो शायद मैं भी···· ?"

"तुम सच कहते हो, यही औरो मे भिन्नता, मुझे तुम्हारे समीप जब तब और भी कर देती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे मन की निकटता कहाँ तक ले जायेगी, यह तो नही कह सकती। पर हाँ, बहुत कुछ कहने सुनने को है। इस दरम्यान जो कुछ मैंने भोगा है उसे कहकर स्वयं अपना गुबार हल्का कर लेन की बड़ी चाह है और तुमसे उपयुक्त पात्र मेरी दृष्टि मे और कौन हो सकता है ?"

"नही, अभी कुछ नहीं। देखो मैं अवकाश ले लेता हूँ। घर चलते हैं, तुम थकी हुई हो। सफर की थकान चेहरे पर स्पष्ट है, इसलिए खा-पीकर थोडा आराम कर लेना। शाम को थोड़ा घूमेगे और फिर रात तो अपनी ही है, जी भर कर देर तक बातें करेंगे।"

*अमित का अहं जो थोड़ी देर पहले आहत हो चुका था, स्मिता की बातों से काफी कुछ सामान्य हो गया।*

"तुम्हारा आग्रह है तो चलो तुम्हारे घर चलते हैं, थोड़ी देर के लिए ही सही फिर होटल आ जायेंगे।" स्मिता बोली।

अमित का अपना दो कमरो वाला एक फ्लैट था, एक मंजिला ही। आज-कल वह अकेला ही था। वह खाना स्वयं बना लेता था। स्मिता ने आग्रह किया कि वह कुछ बना दे। लेकिन अमित न माना। उसने कहा "इस समय तो कम से कम मेरे हाथ का बनाया हुआ खा लो। शाम से तुम्हारे निर्देशानुसार हो सारी व्यवस्था होगी।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी।" कह कर उसने उसकी बात मान ली। खा-पीकर वह होटल चलने को उद्यत हुई। अमित ने आग्रह किया कि वह उसे होटल पहुँचा आए लेकिन स्मिता ने कहा कि वह आराम करे। शाम-चार बजे वह होटल ही पहुंच जाए। अमित ने उसका अनुरोध स्वीकार नही किया। होटल में कमरे तक पहुँचा कर वह शाम को आने के लिए कह कर लौट आया। स्मिता शीघ्र ही नीद के आगोश मे लीन हो गई बैड पर। इधर अमित घर पहुंच कर पलंग पर लेटा हुआ था। नीद उससे कोसों दूर थी। उसके मानस पटल पर विविध चित्र बन बिगड़ रहे थे।

स्मिता से प्रथम भेंट आज से आठ वर्ष पूर्व कालेज के एक सांस्कृतिक समारोह में हुई थी। अमित तब एम. ए. फायनल का छात्र था। स्वभाव से वह रिजर्व किस्म का होनहार छात्र था। साहित्यिक परिषद् का वह सचिव था। अतः कालेज के विभिन्न सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन में वह सक्रिय रुचि लेता था। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उसके लेख प्रकाशित होते रहते थे। स्मिता ने उसी वर्ष बी. ए. प्रीवियस में एडमीशन लिया था। कालेज में वह अपने रूप के कारण चर्चित हो गई थी। कुछ छात्र उसको प्रभावित करने का प्रयास कर चुके थे। उसमें सौन्दर्य के साथ बौद्धिकता भी थी वह स्वयं प्रतिभाशालिनी थी। ऐसे ही एक समारोह में अमित को वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला था, *विषय था "शिक्षा की प्रगति सरकारीकरण से प्रबन्धकीय* व्यवस्था की अपेक्षा अधिक हो सकती है।" वाद-विवाद के पश्चात् कवि सम्मेलन का आयोजन था। स्मिता ने स्वरचित पाठ किया। स्वर के आरोह-अवरोह तथा कविता के भाव एवं शब्दों ने श्रोताओं को अभिभूत कर दिया। उसकी कविता में वेदना की कसक थी जो कहीं गहरे में एकाकीपन का बोध कराती थी। अमित आत्म-केन्द्रित प्रकार का व्यक्ति था। उसका अन्तर्मन उद्वेलित हो उठा। समारोह की समाप्ति के पश्चात् श्रोता परस्पर प्रशंसा कर रहे थे अच्छे गीतकारों की। कुछेक बधाइयां भी दे रहे थे। अमित का मन हुआ कि वह स्मिता के प्रयास की सराहना करे। वह गया भी लेकिन उसने देखा कि लोग स्मिता को बधाई दे रहे हैं, बधाई देने वालों में रवि भी था। वह खिन्न हो उठा और स्वयं को विशिष्ट समझते हुए उसने सोचा कि अन्य सामान्य व्यक्तियों की तरह वह बधाई क्यों कर दे? क्या वह इन व्यस्त क्षणों में उसकी प्रशंसा को सामान्य रूप में नहीं लेगी? अन्त में वह लौट आया। दूसरे दिन स्मिता उसे कालेज प्रांगण में दिखाई पड़ी, वह स्वयं को रोक न सका। "सुनिए! आप तो काफी अच्छी कविता लिखती हैं? कल तो *आपने हम सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। बधाई स्वीकार करें!"*

"थैंक्स।" संक्षिप्त सा उसने उत्तर दिया।

"नो थैंक्स।" आप प्रयास जारी रखें। आप में सफल कवियित्री बनने की पर्याप्त संभावना है। यह मेरा अनुरोध है।"

"आपकी सलाह पर विचार करूंगी। वैसे जब तब मन उद्वेलित हो उठता है, कविता के माध्यम से भावों को व्यक्त कर आत्म-सन्तोष मिलता है। कल के वाद-विवाद में आपको प्रथम पुरस्कार मिला। वास्तव में आप उसके योग्य थे। आपने अपनी वक्तृता से काफी प्रभावित किया।"

"आगामी माह में हम लोग एक एकांकी नाटक अभिनीत करने वाले हैं। मैं चाहता हूँ कि आप उसमें भाग लें।"

"धन्यवाद। मेरा कोई रुझान उस ओर नहीं है।" यह कहकर वह चली गई।

अमित उस रूपगर्विता को जाते हुए कुछ पल तक देखता रहा। यद्यपि उसके रोमांस की चर्चा उस तक भी पहुंची थी लेकिन अफवाहें थीं, यह सोचकर कि अफवाहें तो उड़ती ही रहती हैं, महज अफवाहें ही समझा। इसी अवधि एक-दो माह व्यतीत हो गये। एक दिन उसने स्मिता को आते हुए देखा अपने घर के पास। उसने सोचा कि वह अनदेखा कर दे लेकिन जब वह सामने आ ही गई तो औपचारिक शिष्टाचार के पश्चात स्मिता ने बताया। —"मेरे डैडी आपसे मिलना चाहते हैं।"

"क्यों? मुझसे क्या काम आ पड़ा? अमित ने पूछा।

"क्या बिना कारण बताये आप नहीं आयेंगे?" —

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। आप मैसेज भिजवा देती तब भी मैं आ जाता।"

"मैसेज भिजवाती या खुद आ गई, बात तो एक ही है।"

"एक तो नहीं है खैर.....! इतना कष्ट उठाया। आपको मेरा निवास कैसे मालूम हुआ?"

"क्यों? यह कौन सी मुश्किल है, खास कर जब आप इसी मुहल्ले में रहते हैं।"

"अच्छा, कल शाम को सात बजे अगर आप घर पर रहें, मैं आ जाऊँगा।"

"ठीक है। मैं प्रतिक्षा करूँगी।"

"लेकिन अभी तक आपने घर का पता तो बताया ही नहीं।"

"ओ सारी।" कहकर वह खिलखिला पड़ी। उसकी शुभ्रदंत पंक्तावली चमक उठी।

"मेरा पता सी-16, राजेन्द्रनगर है।"

"अच्छा कल भेंट होगी। नमस्ते।"

स्मिता ने हाथ जोड़ दिये और वापस मुड़ी। अमित विभिन्न प्रकार की कल्पना करते हुए उसको जाते हुए देखता रहा। स्मिता जीवन्त रूप में लिविंग को सार्थक बनाये रखने का प्रयास करती थी। वह वास्तव में "लाइफ" के अर्थ की साकार प्रतिमूर्ति थी। टिप-टाप और साज-सज्जा के प्रति वह सचेष्ट रहती थी। स्वयं उसका अपना व्यक्तित्व भी डैशिंग था। डायनिमिक पर्सनाल्टी थी उसकी और सामान्य से हटकर कुछ असाधारण दिखने और दिखाने की इच्छा

रखती थी । भावनाओं को "रिप्रेस" करना वह जानती न थी, इसलिए गलत और जोखिमपूर्ण कार्यों मे वह किसी की परवाह नही करती थी, चाहे वह व्यक्ति कितना ही निकटतम क्यों न हो, रिश्ते-नाते या उसके परिवार का ही कोई क्यों न हो ? उसे आवश्यकता से अधिक लाड-प्यार मिला था । उसके पिता रिटायर्ड राजपत्रित अधिकारी थे । सम्पन्न मध्यमवर्गीय परिवार में वह पली थी । दूसरी ओर अमित साधारण परिवार का सादगी पसन्द व्यक्ति था । वह अन्तर्मुखी किस्म का भावुक था । उसकी अपनी मजबूरियाँ थी । वह आत्म-निर्भर था । बचपन मे ही उसके पिता की डेथ हो चुकी थी । घर में केवल माँ थी जो उसके जीवन का सम्बल थी । ट्यूशन उसकी जीविका का एक मात्र अवलम्बन था । उसमे प्रतिभा तो थी लेकिन जब कभी वह अपनी प्रशंसा सुनता तो संकुचित हो उठता था । उसकी बहुमुखी प्रतिभापूर्ण रूप से प्रकाशित अब तक नही हो सकी थी । शायद उमके जीवन मे प्रेरणा का अभाव इसका कारण रहा हो । स्मिता के निमन्त्रण को पाकर उसे जाना ही था । वहाँ जाने पर स्मिता के डैडी राजनाथ जी ने उचित आदर सत्कार किया और कहा "मैंने बेटी से तुम्हारी योग्यता के सम्बन्ध मे सुना है । मैं चाहता हूँ कि तुम उसे समय निकालकर सुविधानुसार अंग्रेजी साहित्य मे मार्ग-दर्शन कर दिया करो ।"

"जी । मेरा स्वयं इस वर्ष फाइनल इयर है । मैं अधिकांश समय व्यस्त रहता हूँ, अतः....." अभी वाक्य वह पूरा भी न कर पाया था कि स्मिता जो नीले सूट मे सुसज्जित बैठी थी, ने कहा "आप इतना अनुरोध भी न मानेंगे ? मैंने बड़े विश्वास के साथ कहा था ।

"प्लीज मान जाईये ।"

अनुरोध स्वीकार करने के अलावा उसके पास कोई चारा नही रहा । वह नियमित रूप से पढ़ाने जाने लगा । जिस मुहल्ले मे वह रहता था उसी मे स्मिता का भी निवास स्थान था । एक छोटा सा बंगलानुमा उसका घर साफ सुथरा था । लान मे फूल-पौधे भी लगे थे जिसकी देख-भाल नियमित रूप से स्मिता करती थी । उसे प्रकृति से बड़ा प्रेम था । सम्भवतः इसी वजह से उसकी रुचि काव्य के प्रति उन्मुख थी । उसमे सेल्फ कांशसनेस प्रचुर मात्रा मे विद्यमान थी । दूसरे शब्दो में कहा जाए तो वह "इगोइस्ट" थी । अपने ईगो पर चोट पहुँचाने वाले व्यक्ति को किसी भी कीमत पर वह बर्दाश्त नही कर पाती थी । प्रतिभा उसमें थी ही, अतः अमित को अधिक मेहनत नही करनी पड़ती थी, विषय-वस्तु को वह शीघ्र हृदयगंम कर लेती थी । शंका समाधान के लिए वह प्रश्न भी पूछती थी जिसमे ज्ञात होता कि उसका अध्ययन गहन है । अमित ऐसी प्रतिभाशालिनी छात्रा को पाकर प्रसन्न था । वह मनोयोग पूर्वक पढ़ाता

जिससे उसकी अध्ययन सम्बन्धी प्रगति सन्तोषजनक रूप से जारी थी। वह पूर्ण सन्तुष्ट थी। एक दिन उसने कहा भी था—"मैं सोचती हूँ, यदि आप उस दिन मेरा अनुरोध स्वीकार न करते तो आज यह प्रगति नहीं हो पाती। मैं वास्तव में कृतज्ञ हूँ।"

"तुम गलत सोचती हो। तुम्हारी बात को नकारने की सामर्थ्य भला मुझमें कहां ? तुमने अवसर दिया इसलिए मैं ही कृतज्ञ हूँ।" आपके बजाए अमित अब स्मिता को "तुम" कह कर सम्बोधित करता था, प्रारम्भ मे उसने ही ऐसा कहने को कहा था। उनमें थोड़ी-बहुत आत्मीयता आ गई थी। रोज-रोज का सम्बन्ध किसी भी रूप में क्यों न हो, कुछ निकटता तो ला ही देता है।

"आपका ज्ञान अथाह है। निश्चित रूप से मैं लाभान्वित हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि आप मेरे व्यक्तिगत जीवन के विविध क्षेत्रों से सम्बन्धित उपयुक्त परामर्श देते हैं जिससे जीवन के प्रति जीने और सोचने के नजरिए के परिवर्तन को मैं महसूस करने लगी हूँ।"

इन्ही स्मृतियों मे अमित खोया हुआ था। अचानक घड़ी की ओर निगाह गई। देखा चार बज रहे है। वह झटपट तैयार होकर साढ़े चार बजे होटल में पहुँचा और स्मिता के कमरे की घंटी उसने बजायी। स्मिता ने तुरन्त दरवाजा खोला। उसने देखा स्मिता उसे निहार रही है। लगता था कि वह समय पर तैयार होकर प्रतीक्षा कर रही थी। अमित ने कहा "अरे, तुम तो तैयार भी हो गई। मैं सोच रहा था कि तुम सफर से थकी हुई हो। देर तक सोओगी।"

"अरे जनाब। घड़ी देखो। शाम के साढ़े चार बज रहे है। दो बजे हम लोग यहाँ आए थे। क्या सोते ही रहना है ?"

"सारी स्मिता। मुझे समय का ध्यान ही न रहा। जीवन में खुशी के कुछ पल कभी कभी ऐसे आते हैं कि समय का पता ही नही चलता।"

"चलो, कोई तो मिला जिसको मुझसे प्रसन्नता मिलती है। इन्तजार करते-करते अभी वेटर से मैंने अपने और तुम्हारे लिए चाय को कह दिया है।"

इसी समय वेटर चाय ले आया। स्मिता ने एक कप अमित को दिया और दूसरा स्वयं ले लिया। अमित ने चाय पी। पीते समय ही स्मिता ने पूछा—"अब आगे का क्या प्रोग्राम है ?"

"प्रोग्राम क्या ? मयूर होटल मे खाना खायेंगे। कुछ घूमेंगे। फिल्म देखकर आ जायेंगे।"

"नही खाना यही मँगवा लूँगी। हँ घूमने जरूर चलेंगे।"

लगभग आधे घन्टे पश्चात् दोनो निकले । "आक्रोश" फिल्म के बाल्कनी के टिकट लेकर दोनो फ़िल्म देखने लगे । फिलम मे एक उत्तेजक दृश्य देखकर अमित ने अपना हाथ स्मिता के हाथ पर रख दिया । स्मिता को सिहरन महसूस हुई, पर उसने कुछ कहा नहो । इस आत्मीयतापूर्ण स्पर्श से उसे सुखद अनुभूति हुई । वह प्रतीक्षा करती रही कि वह उसके हाथ को सहलाए या दबाए । अमित ने उसको निश्चेष्ट देखकर चुपचाप हाथ हटा लिया । कोई बात नहीं हुई फिल्म के दौरान । शो खत्म होने पर दोनो होटल पहुँचे । स्मिता ने उससे खाने के लिए आग्रह किया । बैरा को बुलाकर खाने का आर्डर उसने दिया । बैरा खाना ले आया । दोनो खा चुके तो अमित ने आग्रह किया कि वह सो जाए पर स्मिता ने कहा —"सोना तो लगा ही रहता है, आओ बैठें, कुछ बात करें ।"

"हाँ, इधर के तीन वर्षों का हाल सुनाओ । जिन्दगी मजे मे गुजर रही होगी ।" "नही, ऐसा कुछ तो नही है । विवाह के थोड़े समय बाद ही तुम चले आये वहाँ से । कोई तुम्हारे जैसा मिला भी तो नही जिससे आप बीती सुनाती ।"

"क्यो ? अब तुम्हें किसी दूसरे की जरूरत ही कहाँ रही ? पति से बढ़कर आत्मीय कौन हो सकता है ?"

"विवाहित जीवन मे जहाँ सन्देह उपजा नही कि दाम्पत्य जीवन कटु और कुरूप हो जाता है । या यूँ कह लो परस्पर प्रेम धूल-धूसरित हो जाता है ।"

"यह तो तुम ठीक कहती हो, अविश्वास से आदमी की प्रवृत्तियाँ बिगड़ती हैं फिर पुरुष हो या स्त्री हम सभी के जीवन का सम्बल विश्वास ही है । वैसे तुमसे मिलने पर तुम्हारी बातो से ऐसा लगा था कि तुम दुःख महसूस कर रही हो ।"

"हाँ अमित । तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं किस प्रवृति की हूँ । अच्छी हूँ या बुरी पर हूँ स्पष्टवादी । विवाह होने पर विवाह पूर्व की जिन्दगी मैंने सच्चे रूप मे बयान कर दी, उसी का परिणाम भुगत रही हूँ ।"

"क्या तुमने पूर्व के हालात बताने का निर्णय सोच-समझ कर लिया था ?" इतना कहने के बाद अमित को याद आयी कि स्मिता ने उससे एक बार कहा था कि वह पुरुष के सहारे के बिना नही रह सकती ।

"विवाह होने पर मैंने चाहा था कि एक निष्ठ बनूँ । अतीत को विस्मृत कर दूँ । पिछला चेप्टर क्लोज़ कर खुले मन से नया अध्याय शुरू करूँ । मैंने जो किया उसका पछतावा मुझे नही है पर सोचती हूँ क्या पूर्व वृत्तान्त बताना उचित हुआ या नहीं ?"

"उचित रहा या नहीं, यह तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन तुमने बोल्ड स्टेप जरूर लिया है।" "लेकिन क्या लाभ हुआ इसका ? उपेक्षा और अस्वीकृति पग पग पर मिलती रहती है अगर इनके मध्य थोड़ी स्वीकृति भी मिलती तो कितना सम्बल प्रदान करती।" उदासी के स्वर में वह बोली।

"तुम कैसे कह सकती हो कि तुम्हें स्वीकृति नहीं मिलती।"

"इतना भी नहीं समझते अमित। औरत पुरुष के चुम्बन और बाहुपाश के नशे से समझ जाती है कि सम्बन्धों में घनिष्ठता आती जा रही है या दूरी। शारीरिक सम्बन्ध तो जारी है पर यह आवश्यक तो नहीं कि शरीर देकर स्त्री को तृप्ति मिल ही जाए। अब तो मैं वासनापूर्ति का माध्यम भर रह गई हूँ।"

अमित सिर झुकाए गम्भीर बैठा था, सिसकियों को सुनकर उसने देखा कि स्मिता रो रही है। उसने सोचा कि उसे रो लेने दो। आँसुओं से मन हल्का हो जाता है लेकिन उससे रहा न गया। स्वयं उसकी आँखें गीली हो गईं। उसने स्मिता के आँसू पोंछे। ढाढ़स बंधाया। वह जानता था कि सम्बन्धों के टूटने की प्रक्रिया बड़ी विनाशकारी होती है। उसने कहा—"परिस्थितियों से समझौता करना होगा स्मिता। जो बीत गया उसे भूल जाओ। आदर्श को सामने रखकर स्थिति को सामान्य बनाने की कोशिश करो।"

"आदर्श। आदर्श में क्या रखा है ? यही तो कि जीवन भर अतृप्त रहो, प्रतिक्रिया और कुण्ठा से ग्रस्त रहो, अन्त में मानसिक विकार के शिकार बन जाओ या आत्मघात कर लो।" आवेश में आकर वह बोली, फिर अपने को संयत किया और दर्द भरे स्वर में कहा "अब मुझे केवल अपने को ही नहीं देखना है। तीन वर्ष का मेरा बेटा अंकित भी है। विवाह के बाद मैंने सोचा कोई सर्विस करूँ। आत्मनिर्भर बनूँ, आखिर एम. ए. की डिग्री किस दिन काम आयेगी ? मेरे पति राजेश जी के लिए आत्म-सुख ही सब कुछ है। मेरी और अंकित की क्या जरूरतें हैं इससे उन्हें कोई सरोकार नहीं। मूड अच्छा हुआ तो हँस बोल लिया, नहीं तो छिड़क दिया। इस अस्थरता में मैंने रिसेप्शनिस्ट की सर्विस की, ट्यूशन भी किए। मेरे डैडी भी अब नहीं रहे, जिनका मुझे काफी सहारा था। परिवार में अन्य किसी से मैं सहयोग लेकर उपहास नहीं करना चाहती। कम्पटीशन्स में मैं बैठती रही, अब जाकर उपयुक्त सर्विस मिली। आर्थिक स्थिरता तो आई। मैंने राजेश जी से अपनी कोई मांग कभी नहीं रखी। कोई जरूरत नहीं बतायी पूरी करने के लिए। या तो अपने साधनों से पूरा किया या अभाव में ही रहना सीख लिया। हाँ पति का प्रेम जरूर चाहती हूँ क्योंकि मैं जानती हूँ कि नारी प्रेम के बिना विशृंखल सी होती है। प्रेम ही उसे पत्थर से सजीव प्रतिमा बनाता है।"

"देखो स्मिता, यह तो सच है कि प्रेम के अभाव में व्यक्ति उदास हो जाता है। प्रेमपूरित होकर व्यक्ति आनन्दित होता है। तुम दृढ निश्चयी हो, इसलिए मुझे विश्वास है कि देर-सवेर तुम्हें लक्ष्य की प्राप्ति हो जायेगी।"

"इसी आशा मे मैं संघर्ष कर रही हूँ। वैसे राजेश जो जब तब प्रेम का विश्वास दिलाते हैं पर मुझे स्वाभाविक नही लगता क्योंकि ये क्षण वही होते हैं जब शरीर के लेन-देन की यात्रिक क्रिया होती है। अस्थिर चित्त के हैं वह या यह कह लो कि मूडी हैं। शायद इस सर्विस से आर्थिक स्थिति मे सुधार होने से मेरी कामनाएँ पूरी हो।"

"तुम्हें अवश्य सफलता प्राप्त हो, मेरी हार्दिक शुभ कामनायें है। मेरे योग्य कोई भी कार्य हो नि संकोच कहना कभी भी। अच्छा अब रात काफी हो गई है। तुम सो जाओ। कल सुबह मैं आठ बजे यही आ जाऊँगा।"

"हाँ, मैं तुम्हे यह बताना भूल गई कि कल सर्विस ज्वाइन कर मैं कुछ दिनों का अवकाश लेकर चली जाऊँगी क्योंकि राजेश और अंकित के लिए व्यवस्था भी कुछ करनी है। अच्छा, गुडनाइट ऐन्ड स्वीट ड्रीम्स टू यू।"

दूसरे दिन स्मिता ने एक नेशनलाइज्ड बैंक में प्रोबेशनरी आफिसर की पोस्ट ज्वाइन की। छुट्टी की एप्लीकेशन भी दे दी। अमित ने कैजुअल लीव ले ली थी शाम को वह स्टेशन पर सी आफ करने गया। ट्रेन चलने में कुछ ही देर थी। "स्मिता, मैं तुम्हारे इस सान्निध्य के लिए आभारी हूँ। अच्छा गुड बाई।"

यह कहकर उसने हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढा दिया। अचानक उसे ख्याल आया, लेकिन तब तक हाथ बढ चुका था।

स्मिता चौकी। थोडी झिझकी भी पर उसने अमित का हाथ थाम लिया और कहा "मेरे आने से तुम्हे जो असुविधा हुई हो या जाने-अनजाने कोई गलती हुई हो तो क्षमा करना।"

"अरे नही। यही बात तो मैं भी अपने लिए कहना चाह रहा था। तो क्या तुम सचमुच जा रही हो?"

"हाँ, जाना तो है ही।" कहते हुए स्मिता का स्वर आर्द्र हो उठा।

"अच्छा पत्र जरूर लिखना। विश यू ए हैप्पी जर्नी।"

ट्रेन चल दी। दिखाई पड़ने तक वे हाथ हिलाते रहे। अमित स्पर्श की अनुभूति मे खोया था। ट्रेन के ओझल हो जाने पर शून्यता और रिक्तता का अनुभव करते हुए वापस लौट आया। पिछली रात वह देर तक जागता रहा था, कल और आज वह स्मिता के साथ व्यस्त रहा। अतः बेड पर लेटते ही उसे नींद आ गई।

दूसरे दिन वह देर से सोकर उठा। आज उसका डे आफ था। कही जाने की जल्दी उसे थी नही। धीरे-धीरे वह आवश्यक काम निपटाता रहा। काम खत्म होने और खा-पी चुकने पर उसने मेज की ड्राअर खोली पर्स निकालने के लिए। उसे फोटो एलबम दिखाई पड़ा। उसने वैसे ही पन्ने उलटने शुरू किए। एक पन्ने पर स्मिता की चार फोटो लगी थी। वह उन्हे ध्यान से देखता रहा। एक स्मिता के बचपन का चित्र था, शायद तब वह चौथी या पांचवी क्लास मे पढ रही होगी। दूसरे चित्र मे वह परिवार के सदस्यों के साथ थी। एक फोटो डिग्री की थी गाउन पहने हुए तथा एक अन्य फोटो मे वह अमित के साथ थी। इस फोटो मे स्मिता और अमित के कुछ और भी सहपाठी थे। उसने महसूस किया कि सभी फोटो मे वह आकर्षक लगी तथा ग्रुप फोटो मे भी वह दूसरों की अपेक्षा ज्यादा आकर्षक थी और होती भी क्यो न ? उसका फेस फोटोजेनिक था। उसने खिचाव महसूस किया। एलबम लिए हुए ही वह लेट गया। स्मिता के साथ व्यतीत किए हुए क्षण उसे याद आने लगे, लेकिन कटुता भरे प्रसंग को याद करने का उसका जी न चाहा। उसे याद आया कि स्मिता ने बी. ए. के प्रथम वर्ष में प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त किए थे। इधर उसका भी एम. ए. मे प्रथम श्रेणी तथा यूनिवर्सिटी मे सेकण्ड पोजीशन रही। उसने रिसर्च ज्वाइन कर लिया था फिर लगभग एक वर्ष बाद अचानक उसका मन उस शहर को ही छोड़ देने का तथा कही अन्यत्र जाने का हो गया था। कारण दोनो लोग जानते थे। स्मिता ने उससे अनुरोध करते हुए कहा था—"अमित। क्या तुम इतना ऊब गये हो कि इस शहर को ही छोड़कर चले जाना चाहते हो ? क्या ऐसा नही हो सकता कि तुम यही बने रहो ?"

"नही, अब तो जाना ही पड़ेगा।" वेदना के स्वर मे वह बोला। उसे लगा कि वह कुछ और कहना चाह रही है या शायद औपचारिकता वश ही कह रही है। उसने बी. ए. प्रीवियस की परीक्षा के एक माह पूर्व ही ट्यूशन छोड़ दिया था क्योंकि कोर्स वह समाप्त कर चुका था। फिर उसे अपनी परीक्षा की तैयारी मे व्यस्त हो जाना पड़ा था। आना-जाना जारी था। ट्यूशन छोड देने पर अब मित्र भाव ही या जिसमे आत्मीयता थी। अमित ने कहा भी था.... "देखो स्मिता। तुम मुझे आप कहती रही मैंने मना नही किया क्योंकि सम्बन्ध तब कुछ और था। अब तो तुम भी मुझे तुम ही कहा करो जैसे मैंने तुम्हारा अनुरोध मान लिया था।"

स्मिता ने हंसकर अपनी स्वीकृति दे दी थी तब से उनमे आप की दूरी समाप्त हो गई। "मैं चाहती थी कि तुम यही रहकर थीसिस पूरी करते। किसी डिग्री कालेज मे लेक्चररशिप मिल जाती। तब तक एम. ए. मैं भी कर लेती।"

अमित कुछ न बोला।

"यह क्या अमित। जवाब भी नहीं दोगे। लगता है मेरी कुछ बातों का तुम बुरा मान गये हो। शायद मेरी किस्मत ही ऐसी है जिसे अपना समझती हूँ वही बेगाना निकलता है।"

"नही, ऐसी कोई बात नही। तुम व्यर्थ ही परेशान हो रही हो।"

"मैं जानती हूँ कि अब तुम मेरी कोई बात नही मानोगे। आखिर तुम अपने निश्चय के आगे किसी की नही चलने दोगे। जिद और स्वाभिमान तुम्हें आवश्यकता से अधिक प्रिय है। अब क्या करने का इरादा है? कहाँ जाओगे?

"फिलहाल तो कोई निश्चित नही फिर भी कही सर्विस मिल ही जाएगी और इतना तो मिल ही जाएगा कि मेरा और माँ का गुजारा हो जाए।"

"मैं जानती हूँ तुम जहाँ भी रहोगे, निश्चय ही प्रगति करोगे। प्रतिभा के विकास मे भी किसी व्यक्ति के सहारे की आवश्यकता होती है। शायद तुम्हें मित्र बनकर रहना पसन्द नही मेरे साथ। खैर, जहाँ भी रहो खुश रहो। हो सके तो रोज खबर लेते रहना।"

"मेरी शुभ कामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। अच्छा फिर भेंट होगी। नमस्ते"
"इतनी ही वह कह सका था। इस बीच उसका स्वर भारी हो उठा था, बडी मुश्किल से उसने स्वयं पर नियन्त्रण किया।

"नमस्ते" कह कर स्मिता अमित को जाते हुए देखती रही, फिर मन्थर गति से वह पार्क से घर की ओर मुडी।

अमित घर आकर सोचता रहा। यह ठीक है कि उसने स्मिता मे अपनी आन्तरिक भावनाएँ कभी स्पष्ट शब्दों मे व्यक्त नही की। पर क्या वह अपनी सेक्स सम्बन्धी अतृप्ति, कुण्ठा एवं ग्रन्थियाँ स्मिता के मांसल बन्धन मे दूर नहीं करना चाहता था? सम्भाषण भी कभी-कभी वह भाव व्यक्त नहीं कर पाते जो मौन, हाव-भाव या संकेत व्यक्त कर देते है। नारी तो वैसे भी अपने प्रति उदासी और उपेक्षा को समझने मे भूल नही करती और न दूसरे की दृष्टि मे अपने प्रति प्यार और आकर्षण को समझने मे। स्मिता तो प्रबुद्ध है क्या उसने नही समझा होगा? क्या अब दूर चले जाने पर निर्लिप्त भाव से परख हो सकेगी एक दूसरे की? उसके जीवन मे भी चाहे जाने की माग बडी प्रबल है, यह तब तक पूरी नहीं होगी जब तक स्मिता इसे पूरा नही करती। क्या उसकी आकांक्षा अब पूरी नही होगी? उसे याद आया कि अन्तरग क्षणों मे विविध अवसरो पर कितनी ही बातें वह स्मिता से करता था। स्मिता भी खुले हृदय से उससे प्रायः अपनी सभी बातें बता दिया करती थी। ऐसे ही उसने एक दिन कहा था "मुझे शर्मा सरनेम बहुत अच्छा लगता है।"

अमित को यह बात गुदगुदा गई क्योंकि उसका पूरा नाम अमित शर्मा है। मन ही मन उसने कहा "मैं भी यही चाहता हूँ कि यह सरनेम तुम्हारे साथ आजीवन जुड़ जाये।" उसने सोचा यह बात उसे ही इंगित करके कही गई है।

"अच्छा यह बताओ अमित, क्या मैं सैक्सी दिखाई पड़ती हूँ। मैंने लोगों से अपने बारे में यह कमेन्ट्स करते सुना है।"

अमित सोच में पड़ गया। बात तो सच ही है फिर सम्भल कर बोला "सच कहूँ। मुझे तुम्हारे चेहरे पर भोलापन नजर आता है। तुम्हारा अल्हड़पन और खिलखिलाकर हँसना अच्छा लगता है।"

"क्या ऐसा नहीं हो सकता कि खिलखिला कर हँसने वाला व्यक्ति भीतर से शून्यता और दर्द का गहराई से अनुभव करता हो ?"

अमित समझ नहीं सका कि स्मिता को भी शून्यता और दर्द का एहसास होता है। अनायास उसने स्मिता के हाथ को छू लिया। उसके हाथ को अपने दोनों हाथों में उसने ले लिया। कुछ कहना चाहा, देखा, स्मिता व्याकुल हो उठी है। वह निर्णय नहीं कर सका कि प्राप्ति का अवसर उपस्थित हो और आत्मसात न किया जाये तो उसे वह हृदयहीन या कायर समझेगी अथवा यदि वह आगे बढ़ता है तो उसे लम्पट समझेगी। उसके हाथ ढीले हो गये और उसने स्मिता का हाथ छोड़ दिया। उसने सोचा विवाह से पूर्व इस प्रकार की हरकतों से कहीं वह स्मिता की निगाह से गिर न जाए। अमित को लगता था कि स्मिता मे चिल्लाहट और गड़गड़ाहट है। विवाह के पश्चात वह पहाड़ी नदी से मैदानी नदी जैसी हो जायेगी और तब उसका शान्त और स्निग्ध स्वरूप कितना लुभावना होगा। उसकी मुस्कराहट उसका मन बहलाव करेंगी।

स्मिता शरीर की प्यास को स्वाभाविक और पवित्र मानती थी। उसे अमित द्वारा प्यास जगा देने पर यूँ छोड़ दिया जाना अस्वाभाविक लगा जैसे अमित का अहं बीच में कहीं आ गया हो। अहं को मिटाए बिना शारीरिक प्रेम की पराकाष्ठा को अमित किस प्रकार प्राप्त कर सकेगा ? स्मिता समझती थी कि अमित शर्मीले किस्म का व्यक्ति है, लेकिन उसे विश्वास था कि यदि वह उसे कुरेदने मे सफल हो गई तो उसके असीम प्रेम का खजाना खुल जाएगा और फिर तो उस बहाव मे अपने आप सब कुछ तिरोहित हो जाएगा। उसने सोचा काश अमित यह समझ पाता कि जो शर्मीले होते हैं उनसे लड़की बिदक जाती है क्योंकि पुरुष के मौन को नारी स्वयं का अपमान समझती है, इसलिये वह चाहती है कि पुरुष पहल करे। इस पहल को वह अपने प्रति आसक्ति का प्रमाण मानती है। जब तब वह ऐसे अवसर देती जिससे अमित की प्रसुप्त भावनायें जाग उठें। उसे

यह विश्वास था कि पति के रूप में ग्रमित उसके लिये सर्वथा उपयुक्त है। उसके माता-पिता भी इस सम्बन्ध का विरोध नहीं करेंगे क्योंकि ग्रमित के वे प्रशंसक हैं। वह इस उधेड़बुन में पड़ जाती कि ग्रमित अपने मन की बात आखिर कहता क्यों नहीं ? स्त्री होकर वह पहल करे। नहीं·······नहीं, ऐसा नहीं हो सकता ! क्या वह भिक्षा मांगे ? वह इतनी सस्ती और निर्लज्ज नहीं है। उसका स्वाभिमान अवरोधक बन जाता। उसने ग्रमित की डायरी पढ़ी थी और कहा था "तुम व्यक्तिपरक न लिखकर वस्तुपरक रूप में सामान्यीकरण करके लिखते हो। शैली निःसन्देह उत्तम है। तुम में लेखक बनने की प्रबल सम्भावनायें हैं। प्रयास जारी रखना। तुम्हारी यह योग्यता निःसन्देह तुम्हें शोहरत दिलाएगी।"

"चाहता तो मैं भी हूँ, लेकिन प्रेरणा हो तभी तो।"

"क्या अभी तक प्रेरणा नहीं मिली ? अन्तर्मन को टटोलो, मन जिसे चाहे उसे ही बना लो अपनी प्रेरणा।"

"पर स्वीकृति मिले न मिले, यही आशंका है।"

"देखो शंका से शंका बढ़ती है और विश्वास से विश्वास। न हो तो मित्र ही उसे बना लो। यदि मित्र भी वह न बने तो किसी ऐसे का दामन पकड़ लो जो मित्र, प्रेरणा, प्रेयसी, सभी कुछ बन जाए।"

"मेरा तो विश्वास है कि मित्र चुनने में धीमे रहो और उसे बदलने में और भी धीमे। खैर···मैं उसका हृदय टटोल रहा हूँ, सिगनल मिलते ही मैं उसे बता दूँगा और तुम्हें भी।" "यह क्यों नहीं कहते तुम जिन विविध रूपों की कल्पना एक व्यक्ति में चाहते हो वह मैं ही हूँ।" मन ही मन स्मिता ने कहा, "तुम भूल जाते हो कि नारी, प्रेम, दया या सहानुभूति के वश होकर जब देने पर उतर आती है तो चाहती है कि पुरुष याचक बनकर उसे स्वीकार करे और यदि वह स्वाभिमान दिखाता है तो वही उससे किनारा कर लेती है।" वह यह प्रयास करती कि यह अव्यक्त प्रेम टूटने न पाये क्योंकि बीती हुई रात की तरह शायद यह टूटा हुआ प्यार न जुड़ पाये। इस आशंका मात्र से उसे सिहरन होती। दुश्चिन्ताएं उसे चैन नहीं लेने देती ! कब तक वह प्रतीक्षा करेगी और भावनाओं पर नियन्त्रण रख सकेगी ? प्रतीक्षा की भी एक सीमा होती है।

ग्रमित और स्मिता कालेज में, एक दूसरे के घर पर, पार्क व रेस्तरां में जब तब मिलते रहते ! बातें भी होती लेकिन जिस बात की प्रतीक्षा थी वही बात दोनों में कोई न कह पाता। पता नहीं कब संकोच की दीवार उनके बीच आ जाती और अगली भेंट के इन्तजार में भेंटवार्ता समाप्त हो जाती। एक दिन ग्रमित ने उससे कहा, "तुम्हारी बातें मुझे बहुत अच्छी लगती है। जी चाहता है कि तुम

बातें करती रहो और समय सरकता रहे। सोचता हूँ एक रात ऐसी हो जिसमें हम सिर्फ बातें ही करते रहें।"

"इतना समय तो परीक्षा बाद ग्रीष्म अवकाश में ही शायद मिल सके और वह भी तब जब मम्मो और डैडी बाहर गये हों। रिटायरमेंट के बाद डैडी घर से बाहर एक-दो दिन के लिये शायद दो-तीन बार ही कहीं गये हों।"

"इन्तजार करूँगा।" लेकिन प्रतीक्षा केवल प्रतीक्षा ही रह गई। बात करते-करते कब अमित का हाथ स्मिता के कन्धे पर चला गया, उसे पता ही न चला और जब ज्ञात हुआ तो लज्जित होकर उसने हाथ हटा लिया। स्मिता ने इसे लक्ष्य किया लेकिन कुछ कहा नहीं। पलकें झुका लीं। पलकें उठाने पर अमित को अपनी ओर निहारते हुये जब उसने देखा तो उसके मुँह से निकल पड़ा, "इस तरह अपनी नशीली और सम्मोहक आँखों से क्या देख रहे हो?"

"नहीं, कुछ भी नहीं। कुछ सोच रहा था।" उसने उत्तर दिया। उसने अपने बारे में किसी लड़की के इस नजरिए को पहली बार जाना क्योंकि वह स्वयं इस बात को स्मिता के लिये सोचा करता था।

"तुम्हारी संवेदनाजन्य अनुभूति मुझे अजीब सी लगती है।"

"क्या मतलब?" अमित समझ नहीं सका कि यह बात उसके अनुकूल है या प्रतिकूल।

"जो मुझसे सहानुभूति प्रदर्शित करते हैं उनके प्रति मेरे हृदय में उथल-पुथल मच जाती है।"

"तो तुम इसे सिर्फ सहानुभूति समझती हो और कुछ नहीं।"

"कह नहीं सकती। केवल इतना ही कहना है कि मुझे यह अच्छा लगता है।"

"तुम्हारी आँखें प्रायः लाल दिखायी पड़ती हैं क्या रात देर तक जागते रहते हो?"

'नहीं तो, ऐसा कुछ विशेष नहीं। हाँ, यादों में सो जाने की आदत है मुझे। वैसे सच कहूँ अगर अन्यथा न समझो! मुझे तुम्हारा सौंदर्य ही सम्मोहन लगता है। ये होंठ और आँखें या यूँ कहो कि सम्पूर्ण चेहरा सम्मोहक प्रभाव डालता है।" इधर काफी दिनों से मुझे कुछ ऐसी अन्तःप्रेरणा हो रही है कि एक उपन्यास लिख डालूँ।"

"तो दूसरा उपन्यास लिखने का इरादा कर रहे हो। तुम्हारा पहला उपन्यास "गन्तव्य" मुझे बड़ा ही मर्मस्पर्शी लगा। लेकिन उसमें नायिका को

नायक के अहं से टकराने के बाद अलग रहते हुये दिखाकर अन्त में समझौता करने को नायिका को मजबूर तुमने किया, उससे मैं सहमत नहीं हूँ।"

"क्यों ? नायक ने अपनी गलती पत्र में स्वीकार तो कर ली थी। तो क्या परिवार को और स्वयं को संवारने का निर्णय कर नायिका ने बुरा किया ? स्थायी रूप से सम्बन्ध विच्छेद होता तो क्या तुम्हें अच्छा लगता ?"

"कह नहीं सकती। वैसे कुल मिलाकर उपन्यास अच्छा ही लगा। क्यों न तुम दूसरा उपन्यास मुझ पर ही लिख डालो ?"

"कोशिश करूँगा। तुमको कुछ और समझना, सोचना चाहता हूँ।"

"यह तो मेरी खुशकिस्मती होगी। तुम अवश्य लिखो। मैं तो तुम्हारी फैन हूँ।"

"केवल फैन ? प्रशंसिका बनने से क्या होगा ? यह क्यों नहीं कहती कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ।" मन ही मन अमित ने कहा। फिर वह सोचने लगा कि औरत के मन की थाह पाना विरले मनुष्य के लिये ही सम्भव हो पाता है। उसने देखा कि स्मिता काली साड़ी में चित्ताकर्षक लग रही थी। मेकअप के प्रसाधन से वह सुवासित थी। वह अपनी वेशभूषा, चालढाल और व्यवहार के प्रति सतर्क रहती थी। वह सोच रहा था कि काश वह उसके जीवन में आ जाये तो उसके जीवन की वास्तव में यह उपलब्धि होगी। पर क्या उसका ऐसा भाग्य है कि सर्वाधिक प्रिय उसकी जीवन संगिनी बन जाये ? ऐसा ही भाग्यशाली होता तो वह बाल्यावस्था से अब तक अभाव में क्यों जीता ? स्मिता उसके विचारों की, रचनाओं की प्रशंसा करती थी, कभी-कभी आलोचना भी। पर अमित अपने एकाकीपन के जीवन के कारण उसकी आन्तरिक अनुभूतियों को नहीं समझ सका था। वह उसे चाहता था। सम्भवतः गहराई में उससे प्रेम भी करता था पर स्मिता के चंचल स्वभाव के कारण उसे सन्देह होने लगता कि वह शान्त, धीर और लेखक को जीवन साथी क्यों कर चुनेगी ? उसे तो रोमांटिक और टिपटाप वाला ही पा सकता है क्योंकि वह प्रायः रोमांटिक उपन्यास पढ़ा करती थी पर अमित के उपन्यास "गन्तव्य" को पढ़ने के बाद वह उसकी फैन बन चुकी थी। उसमें अमित के प्रति "आईडेन्टिफिकेशन" की भावना उत्पन्न हो चुकी थी, इसलिये उसने कहा, "तुम्हारे उपन्यास ने गहराई तक मेरे मन को छू लिया। मेरा जीवन भी उपन्यास से कम नहीं।" अमित ने सोचा कि स्मिता की बातें अगर सच हैं तो उसका जीवन घटनायुक्त और विविधता से पूर्ण होना चाहिये। उसने स्मिता पर मोहक दृष्टि डाली और देखा उसकी सघन केश-राशि उसकी कमर के नीचे तक झूल रही है। उसे लगा कि यह उसकी युवावस्था की पूर्णता के एक अंग बन चुके हैं। एक दिन स्मिता ने अमित से कहा—"तुम साहित्यिक रुचि के व्यक्ति

हो। अपनी रचनायें प्रकाशित करवाते रहो, जिससे दूसरे लोग भी तुम्हें कुछ जान, समझ सकें।"

"तुम जानती हो कि एप्रोच के बिना कुछ भी नहीं होता। फिर भी प्रयास कर रहा हूँ।" उसे लगा कि स्मिता एक वाद्य यन्त्र है और वह वादक। अब धीरे-धीरे वह उसकी प्रेरणा बनती जा रही है।

× × ×

अमित को लग रहा था कि अब उसे अपनी आन्तरिक भावनाओं को व्यक्त करने में संकोच नहीं करना चाहिए। क्या पता देर करने मे कोई अनहोनी न घट जाये। स्मिता के सान्निध्य ने उसे सोचने पर मजबूर कर दिया कि वह उसे चाहती अवश्य है, आदर भी करती है। पर चाहत क्या प्रेम के अर्थ मे है या अन्य किसी अर्थ मे ? यही वह तय नहीं कर पा रहा था। काश स्मिता प्रत्यक्ष उसे कुछ सकेत दे चुकी होती तो संशय की यह स्थिति उत्पन्न नहीं होती। इतनी बेबाक बातें करने वाली कहीं सारी बातें जान लेने पर उसकी भावुकता का उपहास न कर दे। तब उसकी क्या स्थिति रह जायगी ? इस प्रकार आना, जाना और मिलना खूब जी भर कर बातें करना तब क्या सम्भव हो पाएगा ? यदि सम्बन्ध टूट जाये इस प्रकार, तो क्या अच्छा नहीं होगा कि पूर्ववत सम्बन्ध चलता रहे बगैर आंतरिक भावना को व्यक्त किये या वह इन्तजार करे शायद कोई प्रत्यक्ष संकेत उसी की ओर से मिले। आखिर पुरुष-स्त्री मे एक को पहल तो करनी ही होती है। अधिकांश में यह पहल पुरुष ही करता है। फिर भी स्मिता तो सुशिक्षिता है जिस वातावरण में वह पली है, वहाँ कोई खौफ या संकोच वह महसूस नहीं करती। यहाँ तक कि वह चुभती हुई बातें करने से भी नहीं कतराती। व्यक्ति वैसे भी प्रेम का भूखा होता है। फिर इससे लाभ तो दोनों पक्ष को होता है। इसलिये सम्भव है कि वह स्पष्ट संकेत कभी दे। एक बार संकेत मिल जाये तो अमित को विश्वास था कि वह उसे अपना बना सकने में सफल हो सकेगा। अब तक की संचित अभिलाषा, जो उसके चेतन-अचेतन मन मे व्याप्त है उसको निष्कासित करने का, कहने का पूरा अवसर मिल जायेगा। अतः उसने "वेट एण्ड सी" का ही अनुगमन करने का निश्चय किया, लेकिन वह नारी मनोविज्ञान को नहीं समझ सका। वह नहीं जानता था कि स्त्री का अधिकांश भाग अचेतन मन की तरह प्रच्छन्न रहता है ! वह यह भी भूल गया कि स्त्री-पुरुष के माध्यम से ही अभिव्यक्त होती है स्वयं अभिव्यक्त होने की उसमें शक्ति नहीं होती। कभी-कभी वह यह भी सोचता कि

उसका निर्णय शायद गलत है, फिर वह पुनर्विचार भी करता, लेकिन असमंजस या अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति से अपने को उबार नही पाता था। इस बीच उसकी रिसर्च की सिनाप्सिस यूनिवर्सिटी के रिसर्च सलेक्शन कमेटी द्वारा एप्रूव्ड हो गई थी और उधर स्मिता भी बी. ए फाइनल की तैयारी मे लगी हुई थी। आधे से ज्यादा सत्र बीत चुका था। सत्र समाप्ति मे वैसे अभी तीन-चार महीने बाकी थे। दोनो अपनी पढाई के प्रति अब ज्यादा जागरुक हो गये थे। मिलना भी इधर कम हो पाता था। पिछले डेढ महीने से दोनो की मुलाकात कम न हो पाई थी। आज अमित अपने को तरो-ताजा महसूस कर रहा था, कारण इधर वह थीसिस का एक चैप्टर पूरा कर चुका था। वह पुलकित था क्योंकि स्मिता के यहाँ जाने और कुछ अपनी बात कहने का वह इरादा कर चुका था, अतः वह तैयार होकर दोपहर मे उसके घर की ओर चल पडा आशा सजोए हुए।

अमित स्मिता के घर के लान से होकर गुजर रहा था। दरवाजे के पास पहुँचकर कालबेल वह बजाना ही चाहता था कि उसने देखा कि दरवाजा थोड़ा खुला हुआ है। दरवाजा खोलकर वह भीतर गया। उसने देखा कि ड्राइंगरूम मे कोई नही है। शायद स्मिता ऊपर अपने बेडरूम मे हो यह सोचकर वह सीढियों से ऊपर चढने लगा। अचानक उसे ऊपर पहुँचकर रुक जाना पड़ा। ऊपर बेडरूम से किसी के गुनगुनाने की आवाज आ रही थी फिर उसे लगा कि यह तो युगल स्वर मे गाया जा रहा है। कोई फिल्मी गीत था। एक ही लाइन वह ठीक से सुन सका, अन्य पंक्तियाँ अस्पष्ट सी थी। वह गीत तो उसे याद नहीं फिर भी बोल कुछ इस प्रकार थे :—

"कदमो के निशाँ फिर भी मंजिल का पता देंगे। वह स्तब्ध खड़ा रहा। तय नही कर पा रहा था कि वह भीतर जाए या वही खड़ा रहे अथवा लौट जाए। पशोपेश की स्थिति बनी रही। उसे भीतर से खिलखिलाकर हँसने की आवाज आ रही थी। उसे उत्सुकता बनी रही कि दूसरा व्यक्ति कौन है? अचानक उसे सुनाई दिया "ओह रवि, तुम बहुत शैतान हो। मानते ही नही।"

"अरे तुम इतना भी नही समझती। मानने के लिए नही मैं तो मनवाने के लिए आया हूँ।"

"तुम्हारी यही शरारतें तो मुझे अच्छी नही लगती। थोड़ी देर भी चुपचाप नही रह सकते।"

"तो क्या तुम मुझे अमित समझती हो? जो सिर्फ इन्तजार करना जानता है।"

"यह तुम किसकी बातें ले बैठे। पर्सनल कमेंट्स नही कोई और बात करो।"

"स्मिता, तुम तो बहुत जल्दी नाराज होने लगती हो । चुप बैठूँ तो भी नाराज, कुछ करूँ या बोलूँ तो भी नाराज । यदि मैं वही बात [illegible] ठीक ही माने नही रखती तुम्हारी हर नहीं, कभी झुँझला कर कहा है और कभी शरमा कर नहीं ।"

इसके बाद उसे लगा जैसे रवि स्मिता को गुदगुदा रहा है और स्मिता हँसते-हँसते दोहरी हुई जा रही है । क्योंकि बेडरूम में कुछ उठा-पटक, छीना-झपटी और दौड़ने की आवाजें आ रही थीं । अमित से अब रहा न गया । वह चुपचाप नीचे पहुँचकर गेट खोलकर बाहर सड़क पर आ गया । ओह कितनी घुटन वह महसूस करने लगा था । लगने लगा था कि जैसे हलक से कोई तीखी चीज दिल को पार कर गई हो । दिल भारी हो गया हो ऐसा उसे महसूस हुआ । बाहर आने पर, खुले वातावरण में ठंडी हवा के झोंकों से उसे थोड़ी राहत जरूर मिली फिर भी वह गुजरे वाक़या के प्रभाव से अपने को मुक्त न कर सका । पार्क में बैठकर उसने स्वयं को बहलाना चाहा, लेकिन वह शान्त न हो सका । आवेश बढ़ गया था । वह बेचैन हो उठा । वहाँ से उठकर वह एक ही दिशा में सीधा चलता गया एक दो घण्टे चलने के बाद उसने अपने को नदी तट पर पाया । काफी देर तक वह बैठा रहा एकान्त में । उसकी पलकें आँसुओं से तर हो चुकी थीं । वह कुछ सोचने का प्रयास करता लेकिन किसी विचार बिन्दु या विषय वस्तु पर ध्यान केन्द्रित कर सकने में उसने अपने को नितान्त असमर्थ पाया । अन्त में वहाँ भी जब उसे राहत न मिल सकी तो वह अपने घर लौट आया और बिना कुछ खाए-पिये कपड़े उतारे, वह बिस्तर पर लेट गया । काफी देर तक उसे नींद न आयी और वह करवटें बदलता रहा । आखिरकार वह नींद के आगोश में खो गया । काफी देर तक वह सोता रहा । दूसरे दिन जब वह उठा तो उसने देखा, धूप रोशनदान से होकर बिस्तर तक आ गई थी । उसने घड़ी देखी तो दिन के दस बज रहे थे, वह सोचने लगा कि इतनी देर तक तो इसके पहले शायद ही वह कभी सोया हो । उसे थकावट महसूस हो रही थी । यह थकावट तन और मन दोनों की थी । घटनाएँ घटित होती ही रहती हैं और हम सभी को उसे सहन करने के लिए चाहे-अनचाहे बाध्य होना पड़ता है क्योंकि उसका अन्य कोई विकल्प भी तो नहीं । उसे महसूस हो रहा था कि अब जीवन के प्रति उसे कुछ ठोस निर्णय लेने पड़ेंगे ।

रवि अमित का ही क्लास फैलो था । एम. ए. तक दोनों साथ-साथ पढ़े थे । एम. ए. के पश्चात् रवि ने एल एल. बी. में प्रवेश ले लिया था और अमित ने रिसर्च प्रारम्भ कर दिया था । रवि पढ़ने में मेधावी तो नहीं था फिर भी अच्छा था वह सम्पन्न परिवार का था । अपने माता-पिता की एकलौती सन्तान । अतः

वे उसकी जायज-नाजायज बातों को यथा सम्भव पूरा करते थे। स्वाभाविक ही था कि उसे लाड-प्यार अधिक मिलता। इसलिए वह कुछ जिद्दी और उच्छृंखल स्वभाव का था। फैशन परस्त तो वह था ही। सदैव टिप-टाप और साज-सज्जा से रहना उसकी हाबी थी। लोगो से वह निःसकोच मिलता रहता, इसलिए व्यवहार कुशल भी था। उसकी विशेषता थी कि वह अपने समवयस्क लोगो से ही अधिक मिलता जुलता था चाहे वे जिस सेक्स के हों। उसका व्यक्तित्व बहिर्मुखी प्रकार का था। ऐसे व्यक्तियो की विशेषता होती है कि बाह्य रूप से वे निःस्वार्थी दिखाई देते हैं। पर आन्तरिक रूप से स्वार्थी होते हैं। किसी कार्य की ओर वह तभी प्रवृत होते हैं जब उसमें उन्हे स्वार्थ सिद्धि दिखाई देती है। देखने में भी वह आकर्षक था। चचलता और सावेगिक अस्थिरता उसमे विद्यमान थी। उसका मूड बात-बात पर आफ हो जाया करता था, खासतौर से जब कोई उसकी आलोचना करता था। वैसे वह दूसरो की हँसी मजाक करने से बाज नही आता था लेकिन जब कोई उससे इसी प्रकार की बाते करता तो वह चिढ जाता था। ऐसे मौको पर वह नाखून को दाँतो से काटता दिखाई पड़ता था जो सम्भवतः किसी हीन मनोवृत्ति या भावना ग्रन्थि का प्रकाशन रहता जिसका संचालन अचेतन मन द्वारा होता है। लडकियो मे वह लोकप्रिय भी था तथा नारी मनोविज्ञान को काफी कुछ समझता था अतः लडकियो से मिलने-जुलने का प्रयास करता रहता था। सम्पर्क मे आने वाली लडकी की मनोवृत्ति को भलीभाँति समझने का पहले प्रयास करता तदनुसार उस लडकी के प्रति वह अपने व्यवहार को निर्दिष्ट करता। प्रेम प्राप्ति मे कोई भी चीज गलत या सही नही है। इस कथन मे वह पूर्ण रूप से विश्वास करता था और उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी भी मार्ग का अवलम्बन उसके लिए सहज था। इच्छा की पूर्ति हेतु हर सीमा को पार करने मे उसे संकोच नही होता। विपरीत सेक्स के प्रति वह अपने मन की कमजोरी को समझता था जिसे वह दूर करने मे स्वय को असमर्थ पाता। प्राप्ति की सम्भावना होने पर वह धैर्य भी धारण कर सकता था भले ही सयम कृत्रिम ही क्यो न हो? उसकी आदत थी कि किसी लड़की से मिलते ही पुरुष वर्ग की चाहे कोई व्यक्ति कितना ही आत्मीय क्यो न हो, उपेक्षा कर देता था। इसलिए पुरुष मित्र उसके कम ही थे। वह इसकी परवाह भी नही करता था। उसे वे ही लडकियाँ आकर्षित कर पाती थी जिनमें सुन्दरता होती और नाज-ओ अदा से भरपूर होती। धन की कमी न होने पर भी वह सोच समझकर खर्च करता। लेटेस्ट डिजाइनो के ड्रेस पहनने के प्रति उसका रुझान बना रहता। सुरुचिपूर्ण वह था। कालेज में उसका एक लिमिटेड सर्किल था। उसमे प्रायः वे ही व्यक्ति होते जिनकी रुचि उसकी रुचि से मिलती जुलती होती। कालेज के अन्य विविध कार्य-कलापो से वह अपने को अलग

रखता। आदर्श या सिद्धान्त में उसका कतई विश्वास नहीं था। किशोर अवस्था से ही वह सेक्स के प्रति उन्मुख हो गया था। उसके सहपाठी अधिकांशतः उसकी आदतों से परिचित थे, लेकिन अधिकांश लड़कियाँ इन बातो को नही जानती इसलिये मिलने जुलने से घनिष्ठता का बढ़ना स्वाभाविक होता। लोगो से सम्पर्क होने पर वह गौर करता कि दूसरा व्यक्ति उससे प्रभावित हुआ या नहीं। यदि वह जान जाता कि उसका प्रभाव अनुकूल रूप मे दूसरे पर नही पड़ा फिर वह पुनः मिलने से कतराता रहता। बातूनी होने से लड़कियो मे वह पापुलर था। एम. ए. प्रीवियस में ही उसने अपनी क्लास फेलो कनक से प्रेम विवाह कर लिया था तब स्मिता कालेज की छात्रा नही थी। उसकी मिसेज को विवाहोपरान्त शीघ्र ही सर्विस मिल गई और वह दूसरे शहर में सर्विस के सिलसिले मे रहने लगी। एम. ए. फाइनल में वह एक बच्चे का पिता भी बन गया था।

मिसेज के साथ रहने पर थोड़ा बहुत रवि की आदतों पर नियन्त्रण स्थापित हो गया था। कनक के जाने के बाद वह पुनः अपने पुराने फार्म मे आ गया, वैसे ही घूमना-फिरना तथा आमोद-प्रमोद मे लगे रहना। उसने चाहा था कि पत्नी सर्विस न करे पर उसने उसका अनुरोध स्वीकार नही किया क्योकि वह आर्थिक रूप से आत्म निर्भर होना चाहती थी। रवि सेक्सुअल इन्ज्वायमेन्ट को ही प्यार मानता था। उसका विश्वास था कि प्यार की चरम परिणति सेक्स मे ही है, उसके अभाव मे प्यार भी अधूरा है। एम. ए. फाइनल मे पढ़ते समय उसने स्मिता को देखा था, जब उसने कालेज ज्वाइन किया ही था, तभी उसे लगा कि उसके सम्पर्क में आई अभी तक सभी लड़कियो मे स्मिता सबसे बढ़कर है। स्वाभाविक रूप से वह उसके प्रति लालायित हो उठा। उसने निश्चय कर लिया कि येन-केन-प्रकारेण इसको पाकर रहूँगा, लेकिन काफी दिनो तक कोई सम्पर्क सूत्र नही बन पाया। उसने दो एक बार बात करनी भी चाही कालेज कम्पाउन्ड म, लेकिन उसने महसूस किया कि बातें केवल औपचारिक ही रही। अत्यन्त अन्यमनस्क होकर ही स्मिता ने संक्षिप्त रूप से पूछी गयी बातो का उत्तर दिया। हतोत्साहित तो वह हुआ लेकिन निराश नही। एक बार रवि की पत्नी कनक शापिंग करने मार्केट गयी हुयी थी रवि के साथ। वही स्मिता भी मिल गयी। उसने देखा कि स्मिता और उसकी मिसेज बड़े जोश से मिली। उसका भी परिचय हुआ। स्मिता ने पहले तो कनक को इतने दिन न मिलने का उलाहना दिया। बाद मे रवि को मालूम हुआ कि स्मिता और उसकी पत्नी दोनों सहेली रह चुकी हैं। दूसरे दिन राखी का पर्व था। रवि आज के दिन जाना तो नही चाहता था लेकिन मिसेज के आग्रह को वह टाल न सका। वहाँ जाने पर उन दोनो का खूब आदर सत्कार हुआ। स्मिता के डैडी राजनाथ जी बड़े प्रसन्न हुये। वह कनक को उसके विवाह के पूर्व से ही स्मिता की सहेली के रूप मे भली-भाँति जानते थे इसलिये उन्होने

स्मिता से कहा, "आज बहुत दिनों बाद मैं बेटी से मिल रहा हूँ साथ ही इस बार बेटे से भी भेंट हो गयी।" स्पष्ट रूप से उनका संकेत कनक और रवि के प्रति था। स्मिता जब अपने छोटे भाई को राखी बाँध रही थी तो उसके डैडी बोले, "अरे बेटी! तुमने अपने बड़े भाई को यूँ ही छोड़ दिया, राखी नहीं बाँधी?" झेंपते हुए स्मिता ने राखी बाँध दी और कहा, "वैसे तो मैं आपको सहेली के हस्बैण्ड होने के नाते कुछ और ही सम्बोधित करती, लेकिन अब तो भाई साहब ही कहना होगा।" रवि कुछ न बोला, केवल मुस्करा भर दिया। मन ही मन वह सोच रहा था कि सम्बोधन का कोई विशेष अर्थ नहीं होता। यह तो सुविधा की बात है, मन जिस सम्बन्ध को स्वीकार करता है, वही उसका वास्तविक अर्थ है।

अमित उस दिन स्मिता के यहाँ नहीं जा सका था। बाद मे भी कोई प्रसंग ऐसा उपस्थित न हो सका कि वह मिस्टर एवं मिसेज रवि के स्मिता के यहाँ जाने के सम्बन्ध मे कोई जानकारी प्राप्त कर सकता। रवि से अमित का सामान्य परिचय तो अवश्य था लेकिन उसे रवि का स्वभाव पसन्द नहीं था। अमित जहाँ भावुक प्रकृति का संवेदनशील व्यक्ति था, वही रवि कह-कहे लगाने का अभ्यस्त था। गम्भीरता से उसका कोई वास्ता न था। रवि का कहना था कि औरत प्यार का एक ही अर्थ समझती है, और वह है शरीर का सम्बन्ध। प्रेम को विभिन्न अवस्थाओ से गुजर कर वह अन्त मे अपना शरीर ही अर्पित करती है। रवि जान गया कि स्मिता सामान्य किस्म की लड़की नहीं है। वह कुछ असाधारण किस्म की प्रतिभाशालिनी है, अतः उसके हृदय को जीतने के लिए उसे अन्य लड़कियों की प्राप्ति के लिए अपनाये गये ढंग से भिन्न प्रकार का बनना पड़ेगा। इसी ऊहापोह की स्थिति मे स्मिता के यहाँ वह काफी दिनों तक न जा सका। उसे यह भी ज्ञात हो चुका था कि स्मिता, अमित के प्रभाव मे है। उसकी बी. ए प्रीवियस की शानदार सफलता से भी वह अवगत हो गया था। फाइनल मे अमित द्वारा ट्यूशन न करने से उसे अब अपना प्रभाव जमाना सुगम प्रतीत हुआ। वैसे अमित अब भी स्मिता के यहाँ जाता था, कभी कभार। रवि को दोनो साथ-साथ आते जाते भी दिखाई पड़ते थे पर अमित बीच-बीच में अपने रिसर्च एवं लेखन कार्य मे ऐसा व्यस्त हो जाता कि कई कई दिन तक वह न जा पाता। रवि अमित की गतिविधियों की खोज खबर अपने ढंग से प्राप्त करता रहता। इधर उसकी मिसेज के सर्विस ज्वाइन करने पर उसे लगने लगा था कि पत्नी के प्रति यौवन के प्रारम्भ मे किया गया प्यार स्थायी नहीं है। वह प्यार तो आवेश एवं गति के वशीभूत हुआ था। उस प्यार को वह सच्चे प्रेम को संज्ञा नहीं दे सका। उसकी धारणा बन गयी कि दृष्टिकोण और आदतों के विकसित हो जाने से उसमे और उसकी मिसेज मे समायोजन मे कठिनाई उत्पन्न हो गयी है। अब वह स्मिता के

यहाँ अमित की अनुपस्थिति मे जाने लगा था। स्मिता पता नही क्यों रवि के आगमन की बात अमित से सदैव छिपाती रही। सम्भवत: वह अब स्वयं को रवि के प्रति आकर्षित महसूस करने लगी थी। रवि को ज्ञात था कि स्मिता में प्रकृति प्रेम प्रचुर मात्रा में है। इसलिये वह स्मिता के साथ ऐसे स्थानों जैसे बाग-बगीचे, पार्क या पिकनिक स्पाट आदि पर भ्रमण के लिए जाता, जहाँ प्रकृति की हरियाली देखने को मिलती। वह उसके अध्ययन मे भी रुचि दिखाता, भले ही उसमे योग्यता इतनी नही थी कि वह मार्ग-दर्शन अध्ययन सम्बन्धी कर सके। स्मिता इस बात को समझती थी, लेकिन उसे रवि की लच्छेदार बातों मे मजा मिलता। दोनों जब मिलते, पूर्ण सज-धज कर। रवि ने सौन्दर्य भाव अपने मे पहले से ज्यादा विकसित कर लिया था क्योंकि स्मिता की कलात्मक अभिरुचि से वह अवगत हो गया था। स्मिता के माता-पिता रवि को बेटे के समान मानते थे। उनका विश्वास बना था, रवि पर फिर उन्हें स्मिता की प्रबुद्धता पर यकीन था। उनकी अनुशासन सम्बन्धी धारणा उदार थी। अतः कोई रोक टोक तो थी नही। रवि जब-तब अमित की आलोचना भी इस ढंग से करता कि स्मिता इस आलोचना के गूढार्थ को न समझ पाये और धीरे-धीरे अमित से विमुख होती जाये।

रवि विभिन्न प्रकार के वायदे करता रहता और स्मिता को मोहक बातो से लुभाए रखता। वैसे रवि समझता था कि कमजोर क्षणो मे किए गए वायदे अधिक अहमियत नही रखते। अमित के प्रति स्मिता मे आकर्षण अवश्य था, पर प्रेम भी था, वह निश्चित न कर सकी क्योंकि न तो उसने और न अमित ने अपनी-अपनी प्रेम सम्बन्धी भावनाओं का अभी तक इजहार किया था। इसलिये रवि के प्रेम के प्रति अग्रसर होने मे स्मिता को कोई विशेष रुकावट महसूस न हुई। अब वह रवि के घर भी जाने लगी थी। घर पर अवकाश के दिनो म भी एक्स्ट्रा क्लास या पिकनिक आदि का बहाना कर देती और वे दोनों घूमते या पिक्चर देखते या रवि के ड्राइंग रूम मे दोनों की परस्पर घण्टो बातें होती। कोई बात अधिक दिनों तक छिपती तो है नही, अमित के साथी देखते तो उन्हें ताज्जुब होता क्योंकि जहाँ वह पहले स्मिता को अमित के साथ देखते थे वही अब प्रायः रवि के साथ देखते। उन्होने अमित से जिक्र भी किया लेकिन अमित सहसा विश्वास न कर सका था। सन्देह के बीज मन मे अवश्य पनपे लेकिन जब तक प्रत्यक्ष प्रमाण न हो उसे विश्वास करना कठिन प्रतीत हुआ। जब उसने देखा तो देर हो चुकी थी। उसने कल्पना भी न की थी कि मामला इतनी जल्दी इतना अधिक बढ़ जायेगा। कभी उसने सोचा था कि स्मिता को रवि के सम्बन्ध मे सारी बातें बता दे जिससे वह सतर्क रहे, लेकिन यह सोचकर कि कहीं वह उसे

सन्देही न समझने लगे, उसने जिक्र न किया और स्मिता ने भी तो उसे कुछ नहीं बताया था। इसलिये अब प्रत्यक्ष जानकारी मिलने पर वह निर्णय न कर सका कि वह क्या करे ? फिर भी उसने अपना कर्तव्य समझा कि वह स्मिता से इस सम्बन्ध मे एक बार स्पष्ट बातें कर ले। यह सोचकर वह स्मिता के यहाँ पहुँचा। आज पहली बार निःसंकोच वह भीतर न जा सका। गेट पर ही नौकर मिल गया। उसने नौकर द्वारा स्मिता को अपने आगमन की सूचना भिजवायी और ड्राइंग रूम में ही इन्तजार करने लगा। अप्रत्याशित रूप से स्मिता देर से आयी। पहले तो उसने सोचा कि शायद तैयार हो रही हो। इसलिये देर लग रही है, लेकिन उसने देखा कि आज मेक-अप भी कोई विशेष नहीं है। इस सादगी के सौन्दर्य पर वह विमोहित हो उठा। स्मिता को वह एक टक देखता रहा।

"कहो, किन ख्यालों मे खो गये ? आज बहुत दिनों बाद आना हुआ।" स्मिता बोली।

"कुछ नहीं। इधर रिसर्च वर्क मे काफी लगे रहना पड़ा। इसलिये आना न हो सका।"

"कुछ दिन पहले भी सुना है, कि तुम आये थे, पर बिना मिले ही चले गये, आखिर क्यों ?"

"सोचा कि तुम बिजी हो इसलिये डिस्टर्ब नहीं किया।"

स्मिता की पलकें झुक गयी। लेकिन वह कुछ न बोली। अमित के बोलने का इन्तजार करती रही। अमित ने सोचा माहौल भारी हो गया है, अतः विषयान्तर कर वह बोला, "पढाई कैसी चल रही है ?" "ठीक ही है। तुम्हे अब समय तो मिलता नहीं कि कभी कभार ही कुछ मदद कर दो।"

"देखो स्मिता। कुछ अन्यथा न लेना। मैं जानना चाहता हूँ कि रवि से तुम कब से मिल रही हो ?"

"मैं जानना चाहती हूँ कि ऐसा तुम किस अधिकार से पूछ रहे हो ?" स्मिता आवेश मे आकर बोली।

"कोई सा भी अधिकार समझ सकती हो। न समझो तब भी कोई बात नहीं। रवि मेरा क्लास फेलो रह चुका है। मैं उसे तुमसे अधिक जानता हूँ। काश तुमने कभी उसके विषय मे चर्चा की होती तो मैं तुम्हें सब कुछ बता देता।"

"देखो, क्या अच्छा है और क्या बुरा ? इतना सोचने का विवेक मुझमे है। आवश्यकता होती तो मैं अवश्य पूछती।"

"फिर भी मैं बताना चाहूँगा कि रवि शादीशुदा है उसके एक बेटा भी है। कालेज लाइफ में कुछ छात्रायें उसकी अंक शायिनी बन चुकी हैं। मैं

चाहता हूँ कि सोच समझ कर निर्णय लो, जिससे कोई ऐसी वैसी बात न हो जाये।"

"वैसे तो लोग बदनाम करते है कि स्त्री की ईर्ष्या भयानक होती है, लेकिन मैं देखती हूँ कि पुरुष इसमे पीछे नही हैं। तुम घबराओ नही, मैं कोई ऐसा वैसा कदम नही उठाऊँगी जिसमे कोई लज्जा की बात हो।"

अमित को लगा कि स्मिता समझती है कि मैं बाधा उत्पन्न कर रहा हूँ, इसीलिए इस समय स्मिता का जैसे खूँखार स्वरूप सामने आ गया है। वह सोचने लगा कि अब कहने को रह भी क्या गया है?

"अगर तुम कुछ भी मुझे समझती हो तो मैं चाहूँगा कि तुम रवि का साथ छोड दो।" इतना कहकर वह चलने को उद्यत हुआ, यह सोचते हुए कि अब तक वह समझता था कि औरत की आँखो मे आँसू होते हैं, आज उसे ज्ञात हुआ कि उसमे भी अधिक दहकते हुए अंगारे भी होते है। स्मिता जो अभी तक आवेश-पूर्ण बातें कर रही थी अचानक रोने लगी। अमित के उठे हुए पैर वही स्थिर हो गये। वह इस परिवर्तन को समझ न सका। स्तब्ध-सा खडा रहा। उसका रुदन पहले तो धीमा हो रहा थोडी देर बीतने पर जब सिसकियाँ तेज हो गयी तो उसकी मम्मी किचन से काम छोडकर आ गयी। उन्होंने दोनो को देखा और स्मिता से पूछा, "क्या हुआ बेटी? तू क्यों रो रही है?"

स्मिता ने कोई उत्तर नही दिया। तब अमित की ओर नाराजगी के भाव लिए हुये वह बोली,

"क्यों अमित, तुमने क्या कह दिया जो स्मिता रो रही है?"

अमित क्या कहता? कैसे वह सारी बातें बताता। उसने इतना ही कहा—"कुछ नही माँ जी। मैंने स्मिता से केवल इतना ही कहा था कि परीक्षा निकट है, इधर उधर न घूमकर पढाई पर ध्यान दो।"

"तो तुम्हें इसमे क्या? समय पर वह पढती रहती है।"

अमित ने देखा कि स्मिता रोषपूर्ण मुद्रा मे उसकी ओर देख रही है वह स्मिता के पास जाकर बोला, "मुझे माफ कर देना। मेरी बातों को अनसुना कर देना। मैं अपने कहे हुए सारे शब्द वापस लेता हूँ।" स्मिता का रोना अब तक बन्द हो चुका था। अमित विदीर्ण हृदय लिए हुए वापस लौट आया। उसने वैसे तो जीवन मे सफलता और असफलता कई देखी थी क्योकि ये जीवन के साथ लगी रहती है, पर आज हुए अपमान के प्रभाव को वह महसूस कर रहा था कि यह कम नही हो पा रहा है। इस चुभन की अनुभूति उसे तीव्रता से हो रही थी। उसने सोचा कि किसी से इसकी चर्चा करना व्यर्थ ही है। वह स्वयं को स्मिता के कितना निकट समझने लगा था। उसे विश्वास था कि अपने लिए वह स्मिता की स्वीकृति प्राप्त

कर लेगा, लेकिन यह भ्रम रहा। वास्तव मे स्त्री बडी सतर्क होती है इसलिए वह स्पष्ट स्वीकृति नही देती। बदले हुए परिवेश मे क्या वह थीसिस पूरी करके डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त कर सकेगा ? नही, क्या होगा डाक्टरेट प्राप्त करके ? अब तो सर्विस की खोज करनी चाहिए। जब तक नही मिलती तभी तक इस काम को करना होगा पर प्रेरणा के रूठ जाने पर क्या वह अपने लेखन कार्य को गति दे सकेगा ? शायद नही''' तो फिर क्या करे वह ? सर्विस भी बाहर मिले तभी ठीक होगा जिससे वह स्मिता और रवि या जो भी वह चुने, से दूर रह सके। लेकिन दूर रहकर क्या वह उसे भूल सकेगा ? जब तक पास थी अप्राप्य का भाव स्मिता जगाती रही, दूर हो जाने पर क्या लालसा का भाव न जगायेगी ? पुरुष होकर वह स्मिता को पूर्ण रूप से नही समझ सका कोई बात नही पर स्मिता स्त्री होकर क्या उसे समझ नही सकी या समझना हो नही चाहा अथवा समझने मे भूल कर गई। शायद नही'''' '''''शायद हाँ। उसे लगने लगा कि स्मिता की निकटता को पाने की सारी राहें बन्द हो चुकी है चाहे वह कितना भी प्रयास करे। वह जान रहा था कि स्मिता अभी युवावस्था मे है। इस उम्र मे उस पर लगाया गया बन्धन उसे कतई स्वीकार नही होगा। नारी होने के नाते तो और भी नही। सारे बन्धन बालू की भीत सिद्ध होगे। क्योकि स्मिता का मन वेगवान पानी की तरह उसे ढहा देगा। यही सब सोचते हुए अमित उधेड़-बुन मे रहता और उसका काम मे मन नही लगता।

इधर रवि को स्मिता से सारी बातें जब मालूम हुई तो वह प्रसन्न हो उठा क्योकि उसकी राह का काटा निकल गया था फिर भी उसने विशेष प्रसन्नता व्यक्त न की। केवल इतना ही कहा, "तुमने उसे अनड्यू इम्पार्टेन्स दिया तभी वह तुम्हे इतनी बात कह सका, खैर इन छोटी-छोटी बातो पर ध्यान न दिया करो।" सोच-विचार मे डूबी हुई स्मिता इतना ही कह सकी--"हाँ" पर क्या अमित उसके लिए इतना ही इनसिग्निफिकेन्ट व्यक्ति था ? यही प्रश्न उसे उद्वेलित किए था क्योकि भावात्मक तादात्म्य तो उसके साथ था ही।

"तुम अपनी प्रतिभा को इस प्रकार जाया न करो। यह क्या गमगीन सी बैठी हो। मस्त रहा करो।" यह कहते हुए रवि सोच रहा था कि स्त्री अपनी प्रतिभा नही केवल शरीर देती है। अमित द्वारा स्पष्ट रूप से स्वीकारोक्त न मिलने मे ही स्मिता का झुकाव उसकी ओर हो सका है और वह प्रतिहिंसा का भाव अमित के प्रति स्मिता के मन मे जगाने मे सफल हो सका है। रवि को अब अपने लक्ष्य प्राप्ति मे कोई बाधा नही दिखाई देती थी, पर वह संयम वरत रहा था। सोच रहा था कि जल्दबाजी करने से कही वह असफल न हो जाये। वह उसे छिछोरा समझने लगेगी खास कर ऐसी स्थिति मे जब कि अमित संयम की साक्षात प्रतिमूर्ति था और स्मिता उससे भावात्मक लगाव स्थापित कर चुकी थी। रवि,

स्मिता को अब प्यार करने लगा था पर प्यार तो वह पहले भी कर चुका था, कई लोगों से। खुद उसने प्रेम-विवाह किया था। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो नवीन अनुभूतियों के लिए सचेष्ट रहते हैं, नये-नये सम्बन्ध भी बनाते हैं, ऐसी स्थिति में यह कहना मुश्किल होता है कि वह वास्तव में किसे प्यार करते है। रवि भी इन्ही व्यक्तियों में से एक था।

रवि का प्रेम के आदर्श स्वरूप में बिल्कुल विश्वास नही था। वह छल या फरेब द्वारा भी स्वार्थ को सिद्ध करना बुरा नही समझता था। इधर उसने यह बात प्रचारित कर दी थी कि आई. ए. एस. की लिखित परीक्षा में वह सफल हो गया है उसका इन्टरव्यू अमुक तिथि मे होने वाला है। उसके उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं को लक्ष्य कर उसके मित्रगण उसकी तारीफ करते। अमित खामोश था उसे वास्तविकता मालूम हो चुकी थी कि लिखित परीक्षा मे वह सफल नही रहा। यह बात उसके एक सहपाठी ने, जो अब संघ लोक सेवा आयोग मे लिपिक के पद पर था, बतायी थी। इधर रवि ने लोगो के ध्यान को आकर्षित करने के लिए होटल ओबराय मे एक पार्टी भी दी थी। स्मिता भी यह सोचकर प्रसन्न थी कि कहाँ एक लेखक जो अधिक से अधिक थीसिस पूरी कर डिग्री कालेज मे लेक्चरर हो जाता और कहाँ एक प्रशासनिक अधिकारी। दोनों की तुलना कैसे हो सकती है? इधर कालेज का एक टूर ऐतिहासिक स्थानों दिल्ली, आगरा एवं उदयपुर के भ्रमणार्थ गया जिसमे छात्र एवं छात्राएँ दोनों सम्मिलित थे। आगरे के एक पार्क में छात्र, छात्राएँ एकत्रित हुए। गीत का प्रोग्राम भी हुआ। "साथी न समझ कोई बात नही जरा पास तो आने दे" इस पंक्ति वाले गीत को पहले एक छात्रा ने फिर स्मिता ने भी गाया। स्वर के माधुर्य ने ऐसा समां बाँधा कि लोग खो गये और गीत की समाप्ति के बाद स्वर-माधुरी मे लोग कुछ क्षण तक इस प्रकार खोए रहे कि उन्हे प्रशंसा करने की भी याद नही रही और जब बोध हुआ तो न केवल तालिया ही बजी बल्कि पुन. उसी गीत को सुनाने का अनुरोध किया गया। वह चाहती तो न थी पर क्या करती उसे अनुरोध स्वीकार करना पड़ा।

रवि ने अपने कैमरे से स्मिता के विभिन्न एंगिल्स से फोटो इस प्रकार खीचे जिससे उसका यौवन और उभार ज्यादा प्रस्फुटित होते हुए दिखाई पड़ें। आगरा में दो दिन के भ्रमण का कार्यक्रम था। प्रोफेसर इन्चार्ज से स्मिता ने अनुमति ले ली कि उसे अमुक रिश्तेदार के यहाँ मिलने जाना है, अतः वह दूसरे दिन निर्धारित स्थान पर आ जायेगी। उधर रवि भी किसी मित्र से मिलने को कह कर चला गया। दोनों एक होटल मे एक ही कमरे मे रुके। एक ही बेड पर दोनों काफी रात तक लेटे बातें करते रहे। रवि की बार-बार इच्छा होती थी कि स्मिता को आगोश में भर ले। उसे ख्याल आया कि यह प्राप्ति शायद आगे के

सम्बन्ध को कहीं बिगाड़ न दे। थोड़ी बहुत छेड़छाड़ से ही उसे सन्तुष्ट रहना पड़ा क्योंकि स्मिता में हिचक और झिझक बनी थी, यद्यपि वह भी उत्तेजना महसूस कर रही थी। रात जब बिना किसी घटना के व्यतीत हो गई तो स्मिता को सोचना पड़ा लोग रवि को व्यर्थ ही बदनाम करते। यदि होता तो क्या वह इतना संयम बरत सकता था ? इसमें उसे सन्देह था। उस रात शारीरिक रूप से एकाकार हुए बिना वे मन से एक हो चुके थे। उस रात रवि ने स्मिता का हृदय जीत लिया और पूर्ण रूप से प्रभावित करने में सफल रहा। टूर की निर्धारित अवधि बीतने के बाद सभी प्रसन्नचित्त वापस आ गये। अमित को टूर का समस्त विवरण ब्योरेवार मिल चुका था। उसके दिल में हूक सी उठी लेकिन वह दिल मसोसने के अतिरिक्त कर भी क्या सकता था ? वह प्यार की इस लड़ाई को हार चुका था। बहुत चाहा उसने कि स्मिता को वह भूल जाये। समस्त गुणावगुणों के बावजूद भी स्मिता के प्रति उसकी चाह खत्म न हो सकी। यह नहीं कि उसने भूलने का प्रयास न किया हो पर उसे लगता कि कभी-कभी किसी से पिंड छुड़ाने का चाहे जितना प्रयास करो उससे निस्तार नहीं पाया जा सकता। दूर जाने पर भी व्यतीत किए गये मधुर क्षण यादों के चित्र के रूप में बने रहते हैं।

स्मिता के माँ-बाप रवि को चाहे जिस रूप में या रिश्ते में देखते रहे हों, रवि जानता था कि रिश्ते तो केवल रिश्ते होते हैं। वास्तविक रिश्ता तो मन का ही होता है या प्यार का होता है। यही सर्वोपरि है किसी भी व्यक्ति के लिए। अब रवि का आना जाना स्मिता के घर काफी बढ़ गया था। कभी-कभी रात्रि को वह वहीं रुक भी जाता। स्मिता के माँ-बाप आधुनिक विचारों के थे जहाँ स्वतन्त्रता की प्रधानता रहती है। वे, यह सोचकर कि उसके अध्ययन में व्यवधान न हो, प्रायः स्टडी रूम में नहीं जाते थे। कभी-कभी रात में देर हो जाती तो स्मिता के एक बार कहने पर ही वह रुकने को तैयार हो जाता और रुक भी जाता। घण्टों बातें होती रहतीं रवि तो यह चाहता ही था कि अधिक से अधिक उसे सान्निध्य प्राप्त हो। एक बार बंसल रेस्टोरेन्ट में अमित चाय पीने गया। वहीं उसने फैमिली केबिन में रवि और स्मिता के बात करने की आवाज सुनी। स्वर वह दोनों के पहचानता ही था। वेटर ड्रिंक्स लेकर केबिन में गया तो उसने झलक भी देखी। वेटर के चले जाने के बाद हवा के झोंके से परदा थोड़ा हट गया और अमित ने देखा कि रवि स्मिता को "किस" कर रहा था। अमित बैठने का साहस न जुटा पाया और बिना चाय पिये ही वह वापस आ गया। आज उसे क्षोभ हो रहा था स्वयं पर कि कैसे वह सहन कर रहा है ये सब ? लेकिन वह कर भी क्या सकता था ? किसके बूते पर करता ? उसे तो

प्रतीक्षा ही केवल करनी थी। इधर होली के दिन वह सोच रहा था कि स्मिता के यहाँ जाये अथवा नही। उसकी जाने की इच्छा तो नही हो रही थी लेकिन स्मिता के डैडी राज नाथ जी ने एक दिन पहले आग्रह किया था। होली के दिन आने का निमन्त्रण दिया था। राज नाथ जी अमित को पसन्द भी खूब करते थे। वह जब-तब उसकी प्रशंसा भी करते थे। वैसे तो वह दबग थे लेकिन बच्चो पर नियन्त्रण नही रखते थे। मन मार कर अमित स्मिता के यहाँ गया देखा रवि और स्मिता दोनो रंग मे सराबोर हैं तथा होली खेलने मे मस्त हैं। स्मिता ने अमित की उपस्थिति का कोई ध्यान नही दिया। स्मिता के भाव को देखकर रवि अमित मे केवल "हैलो" कहकर ही रह गया। स्मिता के भाई अनिल ने अवश्य अमित पर रंग डाला। अमित ने केवल अबीर, गुलाल का इस्तेमाल किया, होली मिलते समय। अनिल ने रवि से स्नैप्स लेने का आग्रह किया। रवि आग्रह को कैसे टालता? वह तो स्मिता के अतिरिक्त घर के प्रत्येक सदस्य को भी प्रसन्न करने की चेष्टा करता रहता था। स्मिता की ओर रवि ने देखा स्मिता ने रवि के कान मे कुछ कहा। उसने सिर हिलाया और ग्रुप फोटो ली गई दो-तीन। अमित ने अन्दाज लगाया कि स्मिता ने ग्रुप फोटो के प्रति अनिच्छा व्यक्त की है। फिर भी वह सोचता रहा कि शायद उसकी आशंका गलत हो। यदि ऐसा है तो ग्रुप फोटो में स्मिता के साथ उसकी भी फोटो हो जाएगा लेकिन उसकी आशंका ही सत्य निकली क्योकि बाद मे रवि ने बताया था कि सारी फोटो खराब हो गई थी तब अमित जान गया कि फोटो तो खीची ही नही गई। केवल उपक्रम मात्र ही किया गया अर्थात् फोटो खीचने का अभिनय केवल फ्लैश चमका कर। अमित ने सोचा, चलो, ठीक हुआ। अनिच्छापूर्वक खिचाई गई फोटो में मुख-मुद्रा भी तो अच्छी न होती। होली के बाद वह चुभन दिल में ही लिए रहा और स्मिता के घर उसका जाना न हो सका। उधर रवि और स्मिता के प्रेम की पेंगे निरन्तर बढती ही रही। इसी बीच रवि ने कब, कहाँ और कैसे यह तो मालूम नहीं पर शायद स्मिता के घर पर ही अपने उद्देश्य की पूर्ति कर ली थी, और करता भी क्यों नही? वह अमित की तरह तो था नहीं जो अवसर को हाथ से जाने देता। जीवन मे एकाध अवसर ही मिल पाते हैं जो उसका समुचित उपयोग कर लेते-है, वे ही सफल होते हैं, नही तो हाथ मलते रहना पड़ता है। हो भी क्यो नही? पुरुष और स्त्री के मध्य प्रेम का खेल अन्तहीन है। इसको खेले बिना रहा भी कैसे जा सकता है? प्रारम्भ मे इसका सूक्ष्म स्वरूप भले ही कुछ सीमा तक हो फिर तो स्थूल की ओर बढ़ने लगते हैं। यही प्रेम का यथार्थ रूप है।

परीक्षा निकट आ गई। स्मिता अध्ययन के प्रति एकाग्र नहीं हो सकी थी। रवि तो अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति से ही सन्तुष्ट था। उसे पास फेल होने की

परवाह नहीं थी। परीक्षा के समय भी केवल व्यापार की पुनरावृत्ति होती रही और दोनों का प्रेम धीरे-धीरे शारीरिक स्तर पर आ गया। इस प्रकार यान्त्रिक प्रक्रिया प्रेम की जारी रही। अन्त में परीक्षाफल भी निकला। स्मिता के पेपर्स अच्छे नहीं हुए थे अतः उसे बी. ए. में सेकेण्ड डिवीजन ही प्राप्त हो सकी। रवि भी जैसे-तैसे एम. एस. सी. फाइनल ईयर में उत्तीर्ण हो गया था वैसे तो उसे मार्जि-नल पास मार्क्स ही मिल पाये थे। अमित को स्मिता का यह हश्र देखकर हार्दिक दुःख हुआ। उधर स्मिता के डैडी ने भी रवि के सम्बन्ध में कुछ चर्चा सुन ली थी। उन्होंने स्मिता को समझाने का प्रयास किया लेकिन कोई प्रभाव होते न देखकर उन्होंने स्मिता को अन्यत्र पढ़ाने के लिए भेजने का निश्चय किया। स्मिता को अधिक कुछ कहने में उसके डैडी अपने को असमर्थ पाते थे वह जानते थे कि स्मिता भावुक प्रकृति की है। भावना के आवेश में वह कुछ भी कर गुजर सकती है क्योंकि इसी प्रकार एक बार उसने स्लीपिंग पिल्स का सेवन अधिक मात्रा में कर लिया था। आत्महत्या उसने करनी चाही थी। लेकिन अन्त में समय पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो जाने से तथा योग्य डाक्टरों की देख-रेख में उसे जीवन दान मिल गया था। स्मिता को डैडी के निर्णय पर दुःख तो अवश्य हुआ लेकिन उसने विरोध नहीं किया। रवि ने भी उसे आश्वस्त किया कि वह चिन्ता न करे। वह तो मिलने के लिए आता ही रहेगा। अमित का भोगिस वर्क इधर इन सब घटनाओं से कुछ भी आगे न बढ़ पाया था। वह शहर को जल्द से जल्द छोड़ देना चाहता था। काम्पीटीशन्स में भी वह बैठ रहा था। पर स्थिर चित्त न होने और इन हादसों को झेलते हुए तैयारी भली-भांति न हो पा रही थी, इसलिए वह सफलता के प्रति आश्वस्त कम ही था। विज्ञापन देखता और एप्ली-केशन भेजता रहता। इन्टरव्यू भी उसने दिए कई एक। अब उसे असलियत मालूम हुई कि प्रतिभा का मूल्य क्या है? भाई-भतीजावाद और रिश्वत का जमाना है। उसके पास कोई एप्रोच भी तो नहीं है, वैसे वह सिद्धान्ततः एप्रोच के विरुद्ध था। आखिर वह दिन भी आ गया जिस दिन स्मिता को एम. ए. में एडमिशन लेने हेतु अपने ननिहाल जाना था। अमित ने सोचा कि अब तो वह जा ही रही है रवि से सम्भवतः अलगाव भी हो जाएगा। नये ढग से जीवन जीने और सोचने-समझने का मौका मिलेगा। अतः वह विदा करने और शुभ कामनाएं देने स्टेशन पहुंचा। स्टेशन पहुंचकर प्लेट फार्म से उसने देखा कि स्मिता ट्रेन के कम्पार्टमेंट में बैठी है और रवि प्लेट फार्म पर खड़ा स्मिता से बातें कर रहा है। अमित ठिठक कर खड़ा रह गया। रवि ने लक्ष्य किया और वह थोड़ी देर के लिए हट गया। अमित इसे सुयोग समझ कर स्मिता के पास पहुंचा और कहा —
"कहो, स्मिता कैसी हो?"

स्मिता कुछ न बोली। पलकें नीचे किए वह बैठी रही।

"अब तुम नये शहर मे एम. ए. ज्वाइन करने जा रही हो। मेरी शुभ-कामनाएं साथ हैं, नये ढंग से जीवन जियो और अब तक के जीवन का विश्लेषण करते हुए अपने लिए मार्ग निर्दिष्ट करना।"

"प्लीज। ये सब बातें रहने दीजिए।" स्मिता की निगाहें रवि को प्लेट फार्म पर खोज रही थी।

"फिर भी अब तुम जब जा रही हो तो इस विदाई के समय यही कहना चाहूँगा कि मेरी बातें कभी भी अगर नागवार लगी हों तो उसे भूल जाना"
"अच्छा, और कुछ?" इतना ही वह बोली।

अमित अब कुछ आगे न कह सका। उसे लगा कि स्मिता को उसकी उपस्थिति खटक रही है। तभी उसने रवि को आते देखा। वह खाने की सामग्री दोने मे ला रहा था। अब स्मिता से नमस्कार कर उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना अमित चल पड़ा। स्मिता ने हलके स्वर मे नमस्ते का प्रत्युत्तर जो दिया था, उसे अमित न सुन सका। वह आहत सा भग्न हृदय लिए हुए जा रहा था। स्मिता और रवि को पुनः देखने की चेष्टा भी वह न कर सका।

स्मिता ने इंगलिश लिटरेचर मे एम. ए. ज्वाइन कर लिया। अपने ननि-हाल वाले शहर के एक पोस्ट ग्रेजुएट कालेज मे उसने एडमिशन ले लिया था। रवि की एल. एल. बी. फाइनल इयर की पढाई पूर्व स्थान पर जारी थी। दोनों मे पत्र-व्यवहार जारी था। पत्र मे प्रेम की बेचैनी, शीघ्र मिलन की [illegible] और कसमे-वायदे तथा शेर-ओ-शायरी का इजहार होता। कभी स्मिता [illegible]—
"यह जवानी और ये हसी रातें, याद आती है मुझको वो पिछली [illegible]" [illegible] इसी प्रकार वह अपने उद्गार व्यक्त करती क्योंकि उसमें [illegible] थी ही और रवि संग्रह किए हुए शेर लिखता तथा भेंट [illegible] बताता। स्मिता सहज विश्वास कर लेती क्योंकि प्रेम मे [illegible] नहीं रहती। कभी-कभी रवि स्मिता से मिलने के लिए [illegible] में ही वह स्मिता से मिल लेता और होटल का नाम और [illegible] जहाँ वह ठहरता। स्मिता होटल जाकर रवि से [illegible] और वापस आ जाती। इस प्रकार ननिहाल वाले [illegible] के सम्बन्ध में। सच भी तो है औरत [illegible] सकता। वह वासना की पूर्ति करना [illegible] इस मामले मे उसकी युक्तियों को [illegible]।

अमित ने स्मिता के [illegible] शहर छोड़ने का निर्णय कर [illegible]

एक दैनिक हिन्दी न्यूज पेपर मे सब एडीटर ट्रेनी की नियुक्ति मिल गई थी। एप्वाइन्टमेन्ट लेटर हाथ मे लिए हुए वह अतीत की यादों मे खो गया। उसे याद आ रहा था कि स्मिता के जाने के पूर्व एक बार वह समय गुजारने के लिए "दास्तां" फिल्म देखने गया था जिसमे दिलीप कुमार और शर्मिला टैगोर हीरो-हीरोइन थे। वहीं स्मिता अपनी सहेली कामिनी और रवि के साथ फिल्म देखने आई थी। टिकट अमित ले चुका था। अब क्या वह वापस लौट जाए ? निश्चय नहीं कर पा रहा था। फिल्म शुरू होने मे देर थी। वह बुकिंग विन्डो मे हटकर सिगरेट पी रहा था। जब उसे मानसिक उलझन होती थी तो वह सिगरेट का सहारा लेता था। वैसे वह कभी कभार ही सिगरेट पीता था, लेकिन उस दिन सिगरेट एक के बाद एक पीता चला गया जैसे वह चैन स्मोकर हो। इसी प्रकार तीन-चार सिगरेट पीने के बाद फिल्म शुरू होने की घन्टी की आवाज से वह चौंक पड़ा। देखा, भीड़ छँट गई थी और लोग हाल मे प्रविष्ट हो चुके थे। उन लोगों ने भी उसे देखा था लेकिन कोई कुछ न बोला। वे लोग देखकर अनदेखा कर गये और बातो मे मशगूल रहे। इत्तफाक से अमित की सीट कामिनी के पीछे की पंक्ति मे थी। कामिनी की बगल मे स्मिता और रवि बैठे थे। इन्टरवल तक तो वह जैसे तैसे बैठा रहा। उसके बाद पूरी फिल्म देखे बिना वह लौट आया। वह दर्द का एहसास कर रहा था। कुछ जलन भी महसूस हो रही थी। दूसरे दिन उसका मन घर पर नहीं लग रहा था। उसने सोचा कि कहीं पार्क मे घूमने चला जाये। पार्क के निकट ही एक मन्दिर था, वह वहाँ गया और पहले से ही स्मिता और रवि को वहाँ उपस्थित पाकर बगैर दर्शन किए वह शीघ्रता से लौट आया। इस बार भी परस्पर कोई बात नहीं हो पाई। अमित को जाने क्यों विश्वास था या शायद एक भ्रम था कि सत्य आखिरकार उजागर होकर ही रहता है। जो चीज़ जितनी तेजी से बढ़ती है वह उतनी शीघ्रता से खत्म भी होती है और समय स्वयं बता देता है कि कौन व्यक्ति कैसा है ? भले ही उसमे कितना समय लगे लेकिन परस्पर सम्पर्क टूटने की स्थिति उसे सह्य नहीं हो पा रही थी इसलिए स्मिता के जाने के बाद उसने दो-एक माह बाद ही सर्विस ज्वाइन कर ली।

इधर रवि और स्मिता के चर्चे कनक तक भी पहुँचे। यह महसूस कर कि रवि उसके पास अवकाश के दिनों मे कभी आता है, कभी नहीं आता और आता भी है तो कम ही दिन ठहर कर किसी बहाने से वापस चला जाता है। वह स्मिता को भली-भाँति जानती थी अतः उसने सोचा, चलकर सच मालूम करें। सबसे पहले उसने स्मिता की अन्तरंग सहेली कामिनी, जो उसकी भी परिचित थी, से असलियत की जानकारी ली। विवाह से पूर्व कनक, रवि और अमित की क्लास फैलो रह चुकी थी। अमित से भी उसने बात की थी। अमित ने स्पष्ट रूप से

यद्यपि कुछ विशेष न कहा, लेकिन अमित के चेहरे के भाव और बात करने के ढंग से वह मर्म को समझ गई। उसने सोचा पहले वह रवि की प्रेमिका थी फिर पत्नी बनी। पत्नी यदि प्रेमिका का रोल अदा करे तो अधिक सुखकर स्थिति आती है पर प्रेमिका भी पत्नी बनने पर प्रायः केवल पत्नी ही रह जाती है। अतः काफी सोच-विचार कर उसने सर्विस से रिजाइन कर दिया और स्थायी रूप से रवि के साथ रहने लगी। उसने रवि पर नियन्त्रण रखना शुरू किया अब रवि उतने सहज रूप मे तो न जा पाता, लेकिन भेंट जब तब हो जाया करती थी। इस परिवर्तन को स्मिता नें महसूस किया और डैडी के निर्णय को स्वीकार कर लिया बाहर जाकर पढ़ने के सम्बन्ध मे। रवि और कनक के सम्बन्ध अब सामान्य हो चले थे। कनक की डिलीवरी होने वाली थी दशहरा और दीपावली के सम्मिलित अवकाश मे स्मिता ननिहाल से अपने घर आयी हुई थी, पिछली बार रवि ने भेंट होने पर स्मिता को आने के लिए कहा था। रवि ने अब जुडीशियल मजिस्ट्रेट की पोस्ट ज्वाइन कर ली थी। इस कम्पटीशन मे आरक्षित वर्ग के अभ्यार्थी के रूप मे उसे सफलता प्राप्त हो गई थी, कनक को वह अपने साथ ले गया था। डिलीवरी वही कराने का इरादा था। स्मिता ने मम्मी डैडी से कनक और रवि के पास जाने के लिए अनुमति प्राप्त करनी चाही लेकिन उसे अनुमति न मिल सकी। फिर डैडी के बाहर चले जाने पर मम्मी से जिद करके उसने अनुमति प्राप्त कर ही ली। वैसे उन लोगों को कनक पर बड़ा भरोसा था। नये स्थान पर उन्मुक्त होकर भ्रमण और खूब जी भर कर बातें करने मे समय बीतता चला गया। कनक को इस बार कन्या रत्न की प्राप्ति हुई। वैसे तो रवि और स्मिता के दिन वापस लौट आए थे पर घर पर पहुँचते ही उन दोनों को लगता कि कनक की बेधती हुई नजरें उनका पीछा कर रही है। अतः घर पर उन्हे कुछ रिजर्व रहना पड़ता। कनक खुले मन से स्मिता का स्वागत न कर सकी। वह आशंकित रहती और सतर्क भी। इस प्रकार ऐसा लगता कि तीनों लोग कवच या आवरण ओढ़कर व्यवहार कर रहे हों और समझ रहे हों कि दूसरो को भ्रम मे डाले हुए हैं पर क्या वे स्वयं भ्रम मे नही हैं ? आखिरकार स्मिता कब तक वहाँ रहती ? उसे कुछ दिनों बाद वापस लौटना पड़ा। रवि का मन रखने के लिए वह उसका साथ अवश्य देती लेकिन यह सोचकर कि रवि प्रेम का एकमात्र सम्बन्ध शारीरिक धरातल से ही लगाता है उसे कभी-कभी विरक्ति भी होने लगती। ऐसे अवसर पर उसे अमित के भावात्मक प्रेम की याद आती और कहीं उसे अच्छा भी लगता। इस बार उसे वहाँ रहने के दौरान वह ताजगी, उमंग और तृप्ति न मिल सकी जिसकी उसे अपेक्षा थी। उसका जी भी कुछ उचाट हो गया था जिसे उसने प्रकट न होने दिया क्या अमित उसे अब भी चाहता है ? यह प्रश्न उसे बेचैन कर देता, लेकिन जो उसका व्यवहार

रहा है उसको देखते हुए इस प्रकार की आशा करना दुराशा मात्र ही है। यह सोचते हुए उसे टीस और कसक की अनुभूति होती। अमित कभी-कभी घर आता लेकिन वह स्मिता के घर अब न जाता, वैसे जब-तब समाचार अपने परिचितो से मिल जाया करते थे। उपेक्षा स्मिता ने दिखाई थी इसलिए अब वह क्योंकर जाय उसके समक्ष। इस प्रकार इन्ही अवधारणाओं मे सोचते-विचारते उसका जाना न हो पाता। स्मिता ने स्वय के लिए भावी मार्ग निर्दिष्ट करने का निश्चय किया और उसने जीवन साथी के चुनाव के लिए सचेष्ट हो जाना चाहा। इसलिए उसने निर्णय कर लिया कि रवि से उसे दूर हटना ही होगा। रवि का तिलस्म अब टूट चुका था उससे सम्बन्ध जारी रखकर वह आधारहीन बनी रहेगी। अपनी दिशा उसे स्वय निर्धारित करनी होगी। इसी सोच-विचार के साथ वह अपने घर दो-एक दिन ठहर कर, एम. ए. फाइनल की पढाई मे विधिवत जुट जाने का निश्चय कर चली गई क्योकि अवकाश समाप्त हो चुका था।

स्मिता अब परिवर्तन की ओर उन्मुख थी। उसे जीवन मे विविध अनुभव प्राप्त हो चुके थे और ये अनुभव ही उसके व्यवहार को निर्दिष्ट करने मे सहायक हो रहे थे। एम. ए. प्रीवियस उसने कर लिया था, अब वह फाइनल की छात्रा थी। कभी-कभी वह अपने अनुभवो का और जीवन का विश्लेषण करती। वह सोच रही थी कि डैडी को रिटायर हुए कितने दिन हो गये आखिर कहाँ वह तक पढे ? एम. ए. करके पढाई को तिलांजलि ही दे दे तो अच्छा रहे। डैडी आखिर कब तक उसका भार उठायेंगे ? उसकी कुछ सहेलियो ने अपने घर भी बसा लिए थे और एक या दो बच्चो की माँ बन चुकी थी। उसके जीवन मे अब तक आये व्यक्तियो मे अमित और रवि दो प्रमुख व्यक्ति रहे जिनसे वह किसी हद तक जुडी भी और फिर दोनो ही जैसे पर्दे के पीछे चले गये। अमित तो जाने-अनजाने उसकी उपेक्षा का शिकार हुआ और रवि परिस्थितियो से समझौता करके हट सा गया। उन दोनों के पूर्व नितिन, जो उसकी हम उम्र ही था और पडौस मे ही रहता था, से सम्पर्क जुडे थे। दोनो आकृष्ट भी हुए थे एक दूसरे की ओर। अपने-अपने माँ-बाप की दृष्टि बचाकर मिलने का अवसर भी जब तब मिल जाता था लेकिन किशोर वय का यह खेल शीघ्र ही खत्म भी हो गया। वह स्लिम, आकर्षक और नाजुक-सा था। प्रतिभा उसमें कोई विशेष नहीं थी, फिर उसमे साहस का भी अभाव था। वह माँ-बाप से विरोध कर उसको अपनाने का साहस नही कर सकता था। स्मिता ने उसकी परख कर ली थी इसलिए उसने बढावा नही दिया। स्वयं अन्यमनस्क रहकर किनारा कर लिया था। अमित ने उसकी भावनाओं की कद्र की, उसके व्यक्तित्व को समझा। रवि से सम्बन्ध बनाए रखकर भी वह अमित के प्रति भावात्मक लगाव अक्सर महसूस करती रही। उसे विश्वास था कि अमित ऐसा व्यक्ति है जो उसको सहेज कर रख सकता है, उसको सवार सकता है, निखार भी

ला सकता है। उसकी छोटी से छोटी इच्छा की पूर्ति में वह स्वयं [illegible] ान्वित महसूस कर सकता है। आनन्द और तृप्ति भी दे सकता है। प्रतिभा भी उसमें थी। उसका भविष्य उज्ज्वल होना चाहिए लेकिन यह आवश्यक तो नहीं। कई बार ऐसा भी होता है कि प्रतिभा कुण्ठित रह जाती है, प्रस्फुटन का अवसर ही नहीं मिल पाता। अभावग्रस्त भी रहा है वह। यदि वह इस हादसे का शिकार हो गया तो उसका भविष्य भी अनिश्चित सा ही रहेगा। वह जानती थी कि अमित उसे अपनी प्रेरणा समझता है और एक के द्वारा ही भली-भाँति परखे जाने में विश्वास करता है। उसका साथ पाकर आशंका रहित जीवन वह व्यतीत कर सकती है। लेकिन इस प्रकार समरसता आ जाएगी। रोमांच और विविधतापूर्ण जीवन जो उसकी रुचि के अनुरूप है, शायद वह न जी सके। वह रोमाण्टिक उपन्यास पढ़ने में रुचि रखती थी, गम्भीरता से दूर थी पर जाँचने-परखने का उसका नजरिया पैना था। वह उद्वेगपूर्ण थी, वेगमय जीवन वह पसन्द करती थी। रूढ़िगत मान्यताओं की वह विरोधी थी। कुछ हद तक विद्रोहिणी भी। अपने विरोध को वह कतई सहन नहीं कर पाती थी और इस मामले में बड़ों के समक्ष भी उसका विरोध मुखर हो उठता था। प्रेम में सेक्स से उसे परहेज नहीं था। वह इसे अनिवार्य समझती थी लेकिन सहज ही वह किसी के प्रति आकृष्ट नहीं हो पाती थी जब तक कि उसमें विशिष्टता न व्याप्त हो। वह ऐसे व्यक्ति के प्रति खिंचाव महसूस कर सकती थी जिसका व्यक्तित्व उस पर छा जाने की क्षमता रखता हो। उसके अपने तर्क और अपनी विचारधारा थी, सही हो या गलत पर उसी के आधार पर वह परख करती थी। उसे चुप बैठना पसन्द न था। वह विशिष्ट प्रकार के व्यक्ति से बात करने में या घनिष्ठता बढ़ाने में रुचि रखती थी। इस प्रकार एक समय में एक से अधिक व्यक्तियों के प्रति आकर्षित हो सकती थी पर प्रेम भी उनसे हो, यह आवश्यक नहीं था। अब वह उम्र के उस मोड़ पर पहुँच चुकी थी जहाँ विषम-लिंगीय व्यक्ति के प्रति जबर्दस्त खिंचाव व्यक्ति महसूस करता है। जीवन साथी या प्रेम की चाहत पनपने लगती है। प्लैटानिक लव या आदर्श प्रेम में उसका विश्वास नहीं था। वह जिस प्रेम में विश्वास रखती है उसे व्यावहारिक प्रेम की संज्ञा दी जा सकती है।

प्रेम कोमलतम अनुभूति अवश्य है पर नारी चाहती है कि कोई शक्तिशाली पुरुष इस प्रकार उसको झकझोर कर रख दे कि उसका सम्पूर्ण अस्तित्व हिल उठे। ऐसी स्थिति में अमित में बोल्डनेस की कमी को उसने महसूस किया था। जिन क्षणों में वह चाहती थी कि अमित आगे बढ़े, पहल करे, वह भावनाओं के ज्वार में उतरता रहता था, संयम धारण करे रहता, इसलिए कभी-कभी उसे उसके सान्निध्य में ऊब भी महसूस होने लगती फिर आकर्षण के बजाय विकर्षण की

स्थिति ग्रा जाती। वैसे वह जानती थी कि एक बार खुलकर वह अपने भावों को व्यक्त कर दे तो वह उसके सहारे सब कुछ कर गुजर सकता है लेकिन औरत अपने रहस्य की सभी परतें शायद ही उघाड़ती है। स्मिता समझती थी कि नारी की समर्पण की प्रवृत्ति उसकी कोमलता से सम्बन्ध रखती है लेकिन नारी हो या पुरुष, उनका या उनमे से एक का अहं एक दूसरे को चुनौती देता है और समर्पण से रोकता है। अमित ने रिस्क नहीं लिया। वह स्मिता के मनोभाव को नहीं समझ सका। नारी-मनोविज्ञान को अधिकांश लोग नहीं समझ पाते, इसलिए अमित का यह कोई विशेष दोष नहीं था और स्मिता ने भी सब कुछ जानते हुए नारी सुलभ लज्जा के कारण पहल नहीं की। प्रतीक्षा ही करती रही और तभी रवि ने पहल कर बाजी अपने हाथ मे ले ली। ठीक है, उसे कामयाबी मिली, उसके अहं को संतुष्टि मिली। विजयी होने की भावना से वह सराबोर भी हुआ। स्मिता के शरीर को पाकर रवि समझता रहा कि उसने उसका विस्तार तैर कर नाप लिया है पर क्या वास्तव मे ऐसा है? शायद नहीं, यदि ऐसा होता तो अन्ततोगत्वा दोनो एक दूसरे से विलग न होते। रवि ने स्मिता को चकाचौंध कर दिया था जिससे वह भलीभाँति सोच विचार न कर सकी, अनायास ही आकृष्ट हुई वह और खिंचती चली गई डोर के समान जिसे रवि ने प्रत्यंचा पर चढ़ा ही लिया। जिस प्रेम या तृप्ति की स्मिता को अमित से अपेक्षा थी वह उसे न मिल सकी फिर तो यह स्वाभाविक ही होता है कि प्रेम मे विषम-लिंगीय व्यक्ति या जीवन साथी से तृप्ति न मिलने पर व्यक्ति एक को छोड़ कर दूसरे और दूसरे से फिर तीसरे, इसी प्रकार बहाव की स्थिति मे बहता रहता है क्योंकि तृप्ति और प्रेम है तो एक दूसरे के पूरक ही।

स्मिता ने कभी नहीं चाहा कि वह अमित का अपमान करे लेकिन उसकी भी हिमाकत देखो कि जिसे वह स्वयं नहीं दे सका और दूसरे से स्मिता ने प्राप्त करना चाहा तो उसने समझाना चाहा, उसे रोकना चाहा उपदेश देकर फिर आखिर वह बिफर क्यो न पड़ती? अमित शुरू से ही गम्भीर किस्म का युवक था। उसे अपनाने मे स्मिता को अमित की ओर से कोई रुकावट न थी। उसके मम्मी डैडी भी शायद तैयार हो जाते या वह जिद करके तैयार कर लेती। आज वह सोचती है आखिर यह सब जो हुआ क्या उचित हुआ? शायद हाँ या शायद नहीं। उचित-अनुचित की बात तो वह नहीं जानती लेकिन यह जो कुछ भी हुआ, स्वाभाविक ही था, इसमे अस्वाभाविक कुछ भी नहीं था। उम्र के इस पड़ाव पर यह तो हो जाया करता है फिर इसकी ग्लानि या क्षोभ क्यो? कभी न कभी तो यह अनुभव प्राप्त होना ही था, विवाह के बाद या विवाह से पूर्व इससे क्या अन्तर

पडता है ? हाँ, अब वह यह महसूस करने लगी थी कि वह परिपक्व हो गई है
वह शोख और अदा से भरपूर थी लेकिन उसमें गंभीरता भी समाविष्ट हो गई थ
क्या एक पुरुष से सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर कौमार्य नष्ट हो जाता है ? कु
भी हो, नये व्यक्ति से जीवन मे यदि कभी सम्बन्ध स्थापित होता है तो कौमार्यभ
भी विद्यमान हो जाता है।

रवि, स्मिता के जीवन में तूफान बन कर आया और सुध-बुध खोकर उ
तूफान में लहरों के थपेड़ो मे वह डूबती-उतराती रही। कब तक ? पता नहीं, क्य
क्या घटित हुआ, याद नही। ऐसा लगता था कि जीवन मे एक ही लक्ष्य एक
आस विश्वास रह गया था निकटता और भी निकटता प्राप्त कर लेना लेकि
तूफ़ान गुजर जाने के बाद अब वह शान्त, धीर और गम्भीर भी दिखाई पडती उ
उसके स्वभाव के प्रतिकूल थे। अब भी उमंग, जोश, चंचलता और चपलता उ
पर हावी हो जाते फिर वह भावनाओ के प्रवाह मे बहने लगती। अब उसक
व्यक्तित्व मिश्रित प्रकार का हो चुका था, पूर्व का नवीन परिवर्तन के साथ। उ
रवि से कोई शिकायत नही थी क्योकि उसने तो उसका प्राप्तव्य भरपूर दिय
था। फिर भी उसे कही यह भी लगता कि रवि ने एक मजे हुए खिलाड़ी की तर
उसकी भावनाओ को उभार कर उसे उत्तेजित कर भरपूर लाभ उठाया है। अमि
और रवि दोनो उससे अधिक परिपक्व थे, आयु और अनुभव की दृष्टि से लेकि
दोनों मे कितना अन्तर। अमित जहाँ उसे अपने प्रेम की अधिष्ठात्री समझता थ
वही रवि उसे अपनी वासना पूर्ति का माध्यम क्योकि रवि प्रेम और वासना क
एक दूसरे का पर्याय समझता था और स्वयं स्मिता भी कुछ ऐसे ही विचा
रखती थी।

स्मिता अब प्रेम और वासना के अन्तर को समझने लगी थी। प्रेम क
अन्तिम परिणति वासना या सेक्स मे हो सकती है लेकिन इसके बिना भी तो प्रे
किया जा सकता है। क्या जरूरी है कि प्रेम करने वाले सभी व्यक्ति इसके अन्ति
सोपान पर पहुँचते हों ? नही ..........बहुत से ऐसे भी है जो अन्तिम सोपान प
कभी नही पहुँच पाते हैं। उनका प्रेम या तो बीच मे ही खत्म हो जाता है, द
तोड देता है या आजीवन संयोग से वंचित रहते हुए भी प्रेम करते रहते है
अमित इसी प्रकार का व्यक्ति है। अब वह सोचती है तो उसे क्षोभ होता है, इ
बात पर नहीं कि उसने रवि से प्रेम किया बल्कि इस बात पर कि उसके द्वार
अमित को अपमान के कडुए घूँट पीने पड़े और अमित आज भी उसकी चाह
लिए हुए है। वास्तव में भावात्मक त्याग अन्य त्याग से किसी भी दशा में क
महत्वपूर्ण नहीं। अमित के लिए उसके हृदय मे आज भी कोमलतम अनुभूति किसी

कोने में व्याप्त थी। काश, अमित उसे मिल जाता तो एक बार वह उससे क्षमा-याचना कर लेती। इतना सब कुछ बीत जाने पर अमित के मन में उसके प्रति पूर्व की वे ही भावनाएँ क्या अब भी विद्यमान हैं ? कह नहीं सकती, मुश्किल ही है, पर क्या पता शायद ...... " । अमित उसे जीवन साथी के रूप में मिले या न मिले पर एक बार भेंट हो जाती। एक बार उसे देखने की उसे समझने की इच्छा स्मिता में बलवती हो उठी। पता नहीं किस हालत में है वह ? अमित के विषय में ज्ञात हुआ था कि उसने सब एडीटर ट्रेनी के रूप में काम करना शुरू कर दिया है फिर उसने सुना कि उसने रिजाइन कर दिया है। अब कहीं और उसने ज्वाइन कर लिया है। उसे निश्चित पता नहीं था कि वह कहाँ सर्विस कर रहा है इस समय। अब तो पढ़ाई का यह आखिरी साल है, इसके बाद अब वह नहीं पढ़ेगी। जीवन को स्थायित्व प्रदान करेगी। इक्कीसवें वर्ष में वह पदार्पण कर चुकी है। डैडी इस वृद्धावस्था में उसके लिए कहाँ मारे-मारे फिरेंगे ? सीमित पेन्शन की आय में उन पर और बोझ डालना उचित न होगा। दहेज की भारी माँग वह पूरी न कर सकेंगे। वैसे भी वह अपने मम्मी-पापा की लाडली है, अपने भाई-बहनों में सबसे ज्यादा उसी के नखरे बर्दाश्त किए जाते हैं लेकिन अनुचित लाभ उठाने की प्रवृत्ति उसमें कभी नहीं रही है। उसे अब जीवन साथी का चुनाव कर लेना चाहिए।

स्मिता अपने प्रति लोगों के आकर्षण से अनभिज्ञ नहीं थी। वह यह भी जानती थी कि इसमें कुछ तो उसके रूप के लोभी ही हैं और कुछ उसे जीवन संगिनी के रूप में स्वीकार करने को तत्पर हैं। क्या वह इन्हीं में जीवन साथी का चुनाव करे या अन्य किसी का ? अमित उसे एक बार मिल जाता तो भावी दिशा निर्धारित करने में उसे सुविधा हो जाती। इस बार अवकाश में घर जाऊँगी। तो पता लगाऊँगी कि अमित कहाँ है, क्या कर रहा है आजकल ? इधर उसकी कोई रचना भी तो पढ़ने को नहीं मिली। "नहीं ........अमित, मैं तुम्हें मिलूँ या न मिलूँ लेकिन तुम्हारी प्रतिभा को कुण्ठित नहीं होना है। तुम तो सर्जक हो। तुम मुझे प्रेरणा मानते हो यह मेरा अहोभाग्य है लेकिन मैं जानती हूँ कि तुम्हारी रचनाएँ बहुत से लोगों को जीवन की अनुभूतियों से तादात्म्य स्थापित कराने में सहायक हैं, इसलिए तुमको कुण्ठित नहीं होना है। अभाव को तुमने जिया है तभी तुम अनुभव को कितना मूर्तिमान रूप देते हो पाठक को। लगता है कि यह यह तो उसकी कहानी है, आम आदमी के जीवन में गुजरी घटना है। जहाँ भी रहो, सुखी रहो।" यही स्मिता के मनोद्गार थे अमित के प्रति।

रवि से भेंट फाइनलइयर में अब बन्द हो गई थी, यद्यपि स्पष्ट रूप से कोई ऐसी बात नहीं हुई थी कि सम्बन्ध एकदम टूट ही जाये। पर लगता था कि रवि

और स्मिता अपने-अपने मे व्यस्त हो गये हो। रवि अपने पर-ससार मे लीन हो गया था या शायद किसी अन्य की तलाश मे अथवा पाने की स्वार्थ सिद्धि मे नये-नये ढग अपना रहा हो और स्मिता पढाई मे तथा अपने परिवेश मे चाहने वालो को मन ही मन परख रही थी कि उसकी कसौटी पर कौन उपयुक्त हो सकता है जीवन साथी बनने के लिए। उसने रवि को कभी दोष नही दिया क्योंकि वह समझती थी कि अगर उसे दोष दिया जाये तो क्या स्वयं उसका दोष नही था ? इस भोग मे दोनो समान रूप से भागीदार थे फिर एक पर दोष मढ देना अन्याय नही तो और क्या है ? जीवन मे प्राप्त इस अनुभूति से उसने कुछ सीखा ही है। उसके नजरिए मे परिवर्तन हो चुका था अब वह अल्हड़ किशोरी नही थी। युवावस्था मे पदार्पण कर चुकी थी। जो चीज जितनी अधिक प्रतीक्षा के बाद मिलती है, उसका महत्व उतना ही अधिक बढ जाता है। रवि के सम्बन्ध मे प्रेम की पराकाष्ठा पर पहुँचने मे उसे अधिक प्रतीक्षा नही करनी पड़ी थी, इसलिए शायद अब उस प्राप्ति का उतना महत्व उसके लिए नही रह गया था। फिर वह ऐसी लड़की नही थी जो अतीत मे ही खोयी रहे। उसका व्यक्तित्व बिसर नही सका। ताजगी और सौन्दर्य से भरपूर थी, गदराया मासल जिस्म, लम्बी-घनी केश राशि, सुडौल देहयष्टि, झील सी आँखें और रक्ताभ होठ ऐसे प्रतीत होते मानो किसी को मौन आमन्त्रण दे रहे हो या ऐसे लगते मानो कुछ कह रहे हो। इन सभी के समन्वित रूप मे स्मिता की मोहक रूप राशि के प्रति बरबस लोग आकृष्ट हो जाते। वह इसके प्रति अनजान नही थी, सदैव आकर्षक रूप मे दिखायी पडने के लिए सुसज्जित रहती थी। वह रूपरूपा थी, मोननी भी। फिर उसके रूप जाल मे, सम्पर्क मे आने वाले लोग कैसे न उलझते ? लेकिन वह अब सतर्क रहती। वह नही चाहती थी कि पुनरावृत्ति हो पूर्व अनुभव की, इस प्रकार कि वह किसी पुरुष की भोग्या बन जाये और फिर उसे लगे जैसे कि उसने चादर ओढ़ ली हो मुँह ढककर गिरावट को रोने लिए। नही, ऐसा वह कदापि नही होने देगी, अब तो वह उसी के प्रति समर्पित होगी जिसे वह जीवन साथी चुन सके, जो उसमे विवाह कर सके। आधारहीन वह नही रह सकेगी। एक बार भोग का रसास्वादन पाकर प्यास और भी बढ जाती है। वह स्वय जानती थी कि पुरुष के बिना अधिक समय तक नही रह सकती तो वह क्या करे ? चुनाव तो करना ही होगा, सहारा उसे ढूँढना होगा, लेकिन केवल तृप्ति के लिए नही जीवन को स्थायित्व प्रदान करने के लिए जीवन साथी को पाकर। अधिक समय प्रतीक्षा वह नही कर सकती इसलिए शीघ्र निर्णय लेना होगा। इस प्रकार ऊहापोह की स्थिति में भावनाओ के उतार-चढाव मे बहती रहती स्मिता। अमित से मिलने की ललक प्रबल हो उठी थी, इन्ही सब सोच विचार मे निमग्न रहते हुए नीद के आगोश मे कब वह खो गई, उसे मालूम न हो सका।

× × ×

"स्मिता, एक बार केवल एक बार मुझे पुनः अवसर दो" मयंक गिड़गिड़ाते हुए विनती कर रहा था, उसकी आंखें आंसुओं से नम हो चुकी थीं।

"नही मयंक, तुमने देर कर दी। मेरी बातो को गम्भीरता पूर्वक नहीं लिया।" स्मिता ने दो टूक स्वर मे कहा।

"प्लीज। मेरा कहा मान लो। मैं प्रत्येक दशा में घर और समाज से भी विद्रोह कर तुम्हें अपना लूंगा।"

"सारी। अब मैं किसी और के प्रति वचनबद्ध हूँ। मैं अब किसी की वाग्दत्ता हो चुकी हूँ। तुम्हारे उत्तर की मैंने प्रतीक्षा की और अन्त मे जीवन साथी का मैंने चुनाव कर ही लिया।"

"काश मुझे पहले पता होता तो यह दुर्भाग्य मेरे हाथों न आता। कोई भी रास्ता निकाल लो, मेरे जीवन का प्रश्न है। मैं सब कुछ कर गुजरने के लिए तैयार हूँ।"

"नही अब कुछ नही हो सकता मैं चाहूँ तो भी नही। दोष तुम्हारा ही है, तुम समय से चेते नही। अवसर न दिया होता तो शायद कही मन मे अफसोस भी होता। विवाह के लिए परिवार से स्वीकृति तुम न ला सके। अब तो इन्गेजमेन्ट भी हो चुका है। शायद किस्मत मे यही था। तुम लौट जाओ कोई भी विकल्प नही रहा अब।"

मयंक स्तब्ध हो उठा। काफी देर तक वह निश्चल खड़ा रहा। सोच रहा था कि शायद उसके आँसुओं का स्मिता पर कुछ असर हो, लेकिन स्मिता पाषाण सी बनी रही उद्वेगहीन, शान्त और स्थिर। अन्त मे मयंक उसकी ओर करुण दृष्टि से देखते हुए लौट पडा यह सोचते हुए कि सुख-दुख आते है और चले जाते है। पर मनुष्य की त्रासदी यह है कि उसे जीवन का सफर तय करना पडता ही है। हाँ सच ही मैं अभागा हूँ।" स्मिता ने कहा भी था कि वह विवाह के लिए तैयार है पर अपने माँ-बाप को उसे ही राजी करना होगा। एक हफ्ते मे यदि वह अनुकूल उत्तर दे देगा तो उसके डैडी प्रस्ताव लेकर जायेंगे उसके माँ-बाप के समक्ष डैडी की तबियत इधर ठीक नही रहती। अतः वह अधिक प्रतीक्षा नही करेगी। मयक ने स्मिता की बातों को सामान्य रूप से ही ग्रहण किया। उसने सोचा कि अनुकूल अवसर मिलने पर वह माँ-बाप को राजी कर लेगा इसमें समय कुछ अधिक भले हो लग जाये। क्या अन्तर पड़ता है? स्मिता उसे पसन्द करती है इसलिए उसके द्वारा निर्णय से पहले स्मिता उसकी प्रतीक्षा ही करेगी, कोई और कदम नही उठाएगी। काश उसे ज्ञात होता तो आज यह दृश्य न देखना पडता। पिछले कुछ माह मे दोनों कितने करीब आ गये थे। एक दूसरे के प्रति आकर्षण भी महसूस करने लगे थे। दोनो क्लास फैलो थे। मयंक सोशल किस्म का व्यक्ति था। वह शहर के विभिन्न क्लबों से जुडा था। सामाजिक आयोजनों मे उसकी रुचि थी। स्वभाव से वह वाचाल था। शहर के प्रतिष्ठित परिवार का वह

युवक था स्मार्ट भी। कभी-कभी वह स्मिता के घर भी आता, बैठता, बातें भी होतीं। ज्यादातर औपचारिक ही बातें होती। वह स्मिता के रूप-लावण्य पर मुग्ध था। मन ही मन उसे अपनी जीवन-संगिनी बनाने का संकल्प भी कर लिया था उसने। स्मिता अब सतर्क थी, जरूरत से कुछ ज्यादा ही, विवाह से पूर्व खुली छूट देने के पक्ष में वह न थी। संयमित प्रेम के महत्व को वह समझने लगी थी। उसने अपने चाहने वालों में देखा कि मयंक के अतिरिक्त राजेश भी उसको बेहद चाहता है। दोनों के व्यक्तित्व में काफी अन्तर था। मयंक जहाँ वाचाल था, राजेश गम्भीर। राजेश सुदर्शन और बलिष्ठ युवक था। वह जब-तब स्मिता को चाहत का भाव लिए हुए गहरी दृष्टि से देखता रहता। वह मितभाषी था तथा मध्यमवर्गीय सम्पन्न परिवार से सम्बद्ध था। मयक बहिर्मुखी किस्म का था तो राजेश अन्तर्मुखी। राजेश सोचता कि स्मिता में कुछ ऐसा आकर्षण अवश्य है जिससे वह अपने को मुक्त नही रख पाता। उसे जीवन में एक-दो अन्य लड़कियों ने भी चाहा था लेकिन उनके प्रति उसने तीव्र आकर्षण का अनुभव इतना नही किया था जितना स्मिता के प्रति उसे महसूस होता। कॉलेज मे उसने भी स्मिता से कुछेक अवसरों पर बातें की थी पर वे बातें इतनी औपचारिक रहती कि किसी आकर्षण की अनुभूति का अनुभव उन्हे नहीं हो पाता कि स्मिता उसे किस रूप में देखती है ? वह भी स्मिता के घर जाने लगा था, नोट्स या किताबों के आदान-प्रदान के बहाने। स्मिता के घर वह देर तक बैठता लेकिन कम ही बोलता। स्मिता ही ज्यादा बातें करती और वह रसास्वादन करता रहता उसकी बातो का, उसके रूप सौन्दर्य को निरखता रहता। स्मिता यह तो जानती थी कि दोनों युवक उससे विवाह की आकांक्षा रखते हैं पर दोनो मे कौन उपयुक्त है, यही निर्णय वह नही कर पा रही थी।

स्मिता अब परिपक्व हो गई थी, उम्र और अनुभव की दृष्टि से। वह यह जानती थी कि परिपक्व हो जाने पर किए गए प्यार मे गहराई होती है। इस प्रकार बाद में किया गया प्यार, भावना के वशीभूत होकर नही वरन सोच समझ कर किया गया होता है। फिर पहले प्रेम को भूलने में विलम्ब भी नही होता। पूर्व प्रेम को वह भूलती जा रही थी, कही मन में कभी-कभी पश्चाताप भी होता कि उसने भली भाँति परख न कर प्रेम को स्वीकार कर गलती की लेकिन फिर यह सोचती गलती उसकी उतनी न थी जितनी रवि की क्योंकि वह तो किशोरावस्था के उस नाजुक मोड़ पर थी जहाँ आसानी से सब्जबाग दिखाकर, झूठे-सच्चे वायदे कर, कसमें खाकर, सेक्स की भावना को उभार कर व्यक्ति को बरगलाया जा सकता है। रवि ने उसे स्वार्थ सिद्धि और भोग-लिप्सा का साधन बनाया जैसा कि पुरुष वर्ग सदैव से करता आया है तब उसमें रवि के प्रति विरक्ति, अरुचि और क्षोभ की भावना उदित होती, कभी उसे माँ-बाप के प्रति भी शिकायत होती कि

उन्होंने अनुशासन इतना उदार क्यों रखा ? अनजानी राहों पर चलने का एक नैसर्गिक सुख होता है, वह सुख उसे भी प्राप्त हुआ क्योंकि उसमें आकर्षण था, लेकिन घूम-फिरकर उसे अपने पूर्व स्थान पर आना पड़ा और जीवन साथी की खोज में प्रवृत्त होना पड़ा। क्या अधिकार था रवि को विवाहित होकर उस अविवाहित से मिलने का, इच्छापूर्ति का माध्यम बनाने का ? क्या प्यार सेक्स सन्तुष्टि ही है या इसके अतिरिक्त कुछ और भी ? नहीं, यदि ऐसा होता तो प्यार और वासना में क्या अन्तर रह जायेगा। वस्तुत. वासना से प्यार निश्चित रूप से अधिक व्यापक है और श्रेयस्कर भी। यह ठीक है कि रवि को प्रत्यक्षत उसने कुछ नहीं कहा, दोषारोपित नहीं किया लेकिन मुख्यतः रवि ही दोषी था उसे भोग्या बनाकर। हाँ, अपने दोष को भी वह एकदम नकारती नहीं है। इस प्रकार जब वह इस प्रकरण पर सोचती तो यह पाती कि यद्यपि जो कुछ हुआ, वह अस्वाभाविक भले ही न रहा हो पर उचित भी तो नहीं रहा। तब गलती एवं पश्चाताप की मिली-जुली भावना वह अन्तरतम में महसूस करती और कहीं उसे लगने लगता कि गलती स्वीकारना महानता हो या न हो लेकिन स्वीकारोक्ति से आंशिक रूप से मुक्ति की अनुभूति अवश्य होती है।

राजेश ने भी स्मिता से विवाह का प्रस्ताव रखा। वह अब जीवन साथी की आवश्यकता तीव्रता से महसूस करने लगी थी जिससे वह स्थायी रूप से अपने दैहिक और मानसिक जरूरतों को पूरी कर सके। परिवार की स्थिति अब उतनी अच्छी नहीं रह गई थी। पेंशन से गुजारा तो हो सकता है लेकिन सुख-सुविधा के साधन नहीं जुटाए जा सकते। उसके डैडी अब बीमार रहने लगे थे। स्मिता को आभास होता शायद वह अब अधिक दिन जी न सकेंगे। उसके घर वाले भी विवाह के प्रति चिन्तित थे और प्रयास जारी रख रहे थे। स्मिता कोई ऐसी लड़की तो थी नहीं कि जिस किसी से विवाह कर दिया जाये। जब तक उसकी परख के अनुरूप वह पुरुष न हो, वह विवाह के लिए राजी न हो सकती थी। अनजान व्यक्ति के हाथों वह अपने जीवन की बागडोर सौंपने के लिए कदापि तैयार न थी फिर उसे आत्म-विश्वास था कि जिसे वह चुनेगी वह उसके माँ-बाप द्वारा चुने गये व्यक्ति से निश्चित ही बेहतर होगा। वह जानती थी कि विवाह से पूर्व ही प्रेम भाव यदि विद्यमान रहता है तो जीवन अधिक आनन्दित होगा क्योंकि वे दोनों एक दूसरे की रुचि, इच्छाओं, आकांक्षाओं को अच्छी तरह जानते हुए निश्चित ही बेहतर एडजस्टमेन्ट कर लेंगे। उसने बहुत सोचा कि राजेश और मयंक में कौन अधिक उपयुक्त होगा ? मयंक को जहाँ वह अपने स्वभाव के अधिक अनुकूल पाती वहीं राजेश को फिजिकल एपीयिरेन्स मयंक से बेहतर थी। उसकी निगाह में शारीरिक सौन्दर्य का महत्व अधिक ही था, शायद इसका कारण यह रहा हो कि वह स्वयं इस दृष्टि से बढ़ चढ़ कर थी। फिर यह चीज तो ईश्वर

प्रदत्त है। मानसिक गुणों को तो अर्जित भी किया जा सकता है। स्वभावगत विशेषताओं को भी मद्देनजर रखती थी क्योंकि परस्पर विरोधी प्रवृत्ति के व्यक्तियों से उसका साबका पड़ चुका था। अन्तरंग सम्बन्ध भी बने थे इसलिए राजेश के प्रेम में जहाँ उसमें स्निग्धता, शान्ति और स्थिरता महसूस होती, वहीं मयंक में उतावलापन, उद्वेग और आवेश को वह महसूस करती। दोनों से उसकी भेंट होती रहती। यह ठीक है कि उसने एक से अधिक व्यक्तियों से प्यार किया लेकिन पुरुष हो या स्त्री कौन ऐसा है जो जीवन भर अर्थात विवाह से पूर्व और बाद तक एक ही व्यक्ति से प्रेम करता है? साथ ही वह महसूस करती थी कि एक से अधिक व्यक्तियों से प्यार करने पर भी सबके प्रति एक जैसा प्यार नहीं हो पाता। बहुत चाहा उसने कि किसको चुने? समस्या का समाधान कर ले पर वह सफल न हो सकी और वह इस समस्या के समाधान के लिए चिन्तातुर रहने लगी।

ऐसे समय में उसे अमित की याद आयी। वह इस समस्या को सुलझा सकता है, सही राय दे सकता है लेकिन वह तो खुद चाहत लिए बैठा है। क्या वह जलन महसूस न करेगा? पर वह दुखी और निराश हो लेगा, अपने जज़बातों को अपने तक ही सीमित रखेगा। लेकिन अब तो उससे भेंट भी नहीं हो पाती। अब कभी घर गई और ज्ञात हुआ कि वह आया है तो उससे अवश्य मिलेगा। काश उसने मिलना न छोड़ा होता तो क्या पता मैंने मयंक और राजेश के प्रेम प्रसंग आरम्भ होने के पूर्व उसी का चुनाव कर लिया होता पर अब इतना आगे बढ़ जाने के बाद इन दोनों को एकदम छोड़ देना सम्भव न हो सकेगा। उसे अमित के सान्निध्य में संवेदना और अनुभूति के ऐसे क्षण प्राप्त हो जाया करते थे जब वह अपने को परत-दर परत खोलती रहती थी क्योंकि वह उस पर विश्वास करती थी अपने मन की उन बातों को भी व्यक्त कर देती थी जिसे साधारण तथा अन्य किसी निकट के व्यक्ति के समक्ष वह नहीं कह सकती थी। यहाँ तक कि वह अपनी कमजोरी को भी जाहिर कर देती थी यद्यपि वह कभी यह नहीं चाह सकती थी कि अमित या कोई भी उसकी बातों को दोहराए। जीवन के इस नाजुक मसले पर अमित अवश्य ही उपयोगी सलाह दे सकेगा। मैंने उसको स्वीकारोक्ति नहीं दी तो घर के दरवाजे भी बन्द नहीं किए। उसको आने के लिए कभी मना नहीं किया। इधर कुछ घटनाएं घट गईं। वह जहाँ सरल है वहीं स्वाभिमानी भी। इसीलिए तो मेरी उपस्थिति में या मेरी अनुपस्थिति में घर नहीं पहुँचा। मेरे द्वारा उपेक्षित वह हुआ, शायद अपमान भी अनजाने हो गया। मिल जाए तो कनफेस करूँगी मुझे विश्वास है कि कनफेस करूँ या न करूँ, अमित मन में कुछ भी सोचे पर कोई शिकायत नहीं करेगा। वह अमित के परिचितों से जब-तब भेंट होने पर उसके सम्बन्ध में पूछती रही। उससे मालूम हुआ कि सब-एडीटर ट्रेनिंग की अवधि पूरी करके वह सब एडीटर बन गया था। न्यूज पेपर में कभी-कभी उसके आर्टिकिल

प्रकाशित होते भले ही इधर उसकी कोई रचना पुस्तक के रूप में प्रकाशित न हो सकी। सब एडीटर के रूप में अमित के कार्य से उसके सुपीरियर्स सन्तुष्ट थे इसलिए जल्द ही वह सीनियर सब एटीटर हो गया। इधर विभिन्न न्यूज पेपर्स अपने एडीशन विभिन्न स्थानो से निकालने लगे थे इसलिए जब चीफ सब एडीटर रिजाइन कर चला गया तो अमित की योग्यता को देखते हुए उसे वह पद दे दिया गया लेकिन जितनी पे का वह हकदार था वह उसे नही मिल सकी। उसने अपनी पे की बढोत्तरी के सम्बन्ध मे कई बार कहा लेकिन यहां भी कैपिटलिस्ट के शोषण से वह मुक्त न हो सका। आखिर वह स्वाभिमानी तो था ही उसने रिजाइन कर दिया और किसी अन्य न्यूज पेपर मे दूसरे शहर मे उसे चीफ सब एडीटर के पद पर नियुक्ति मिल गई। इस न्यूज पेपर का सर्कुलेशन भी ज्यादा था अतः वेतन सम्बन्धी कोई उलझन नही आई। स्मिता अवकाश मे अपने घर भी गई, कही उसे आशा थी कि शायद अमित से भेंट हो जाए पर प्रतीक्षा अनब्याही ही रही। आखिर उसे कोई हमदर्द तो चाहिए ही था जिससे वह अपनी बात कह सके, सही राय प्राप्त कर सके। उसने अपनी अनन्यतम सहेली कामिनी से सविस्तार बातचीत की। कामिनी उसकी क्लास फैलो रह चुकी थी। वह मयंक और राजेश दोनों को जानती थी। स्मिता के साथ वह उन दोनो से मिल चुकी थी। उसने कहा "मेरे विचार से यदि तुम्हें प्रेमी की जरूरत है तो मयंक तुम्हारे लिए ठीक रहेगा। और यदि पति चाहती हो तो राजेश अधिक उपयुक्त है या यह कह लो कि प्रेमी के रूप मे राजेश तथा पति के रूप मे मयक ठीक नही रहेगे।" तब स्मिता ने उससे कहा था, "अब तो मैं पति चाहती हूँ। मुझे भी तुम्हारी राय ठीक जान पड़ती है। फिर भी मैं मयंक को पहला अवसर देना चाहती हूँ क्योकि वह मेरी भावनाओ के अनुरूप प्रतीत होता है।"

"जैसा तुम चाहो, निर्णय तो तुम्हे ही करना है। तुमने राय जाननी चाही थी, मैंने अवगत करा दिया।"

स्मिता ने मयंक को पहले अवसर दिया। इस बीच राजेश के विवाह के प्रस्ताव पर उसने कुछ दिन मे सोचकर जवाब देने के लिए कह रहा था। निर्धारित अवधि बीत गई और मयंक आया भी नही। तब वह क्या करती? इधर राजेश प्रतीक्षारत था, एकाध बार उसने पूछा भी था उसके निर्णय के बारे मे। आखिर उसे राजेश के पक्ष मे अपना निर्णय देना पडा। उसने यह भी चाहा था कि वह राजेश को अपने जीवन के वृत्तान्त से अवगत करा दे जिससे कोई समस्या बाद मे उत्पन्न न हो। निर्णय से अवगत कराते समय ही स्मिता ने कहा था, "अब जब हम विवाह के बन्धन मे बंधने जा रहे हैं तो मै चाहती हूँ कि तुम मेरे और मेरे घर-परिवार के बारे मे सब कुछ जान लो।" वह कुछ और भी कहने जा रही थी कि राजेश का स्वर उसे सुनाई पडा, "स्मिता, मैं तुम्हे जानता हूँ। मुझे केवल तुम्हारी

ही जरूरत है, तुम्हारी अन्य किसी चीज की नहीं। घर या परिवार के बारे में जितना जो कुछ भी मैं जानता हूँ, उससे ज्यादा जानने की इच्छा भी नहीं रखता।" बात वहीं समाप्त हो गई। राजेश का अपने घर वालों पर नियन्त्रण था, इसलिए इधर से कोई रूकावट तो थी नहीं। अब स्मिता के डैडी को सम्बन्ध पक्का करने के लिए औपचारिक रूप से जाना ही शेष रह गया था। उसके डैडी चाहते थे कि लड़का सर्विस करता हो। उन्होंने संकेत भी दिया स्मिता को पर वह अपने निश्चय की दृढ़ थी। अन्त में अधिक कुछ न कहकर सादे तरीके से राजेश के यहाँ जाकर इनगेजमेन्ट की रस्म वह पूरी कर आए थे। मयंक अब स्मिता के जीवन से जा चुका था। इधर एम. ए. फाइनल की परीक्षा आरम्भ हो चुकी थी। आखिर परीक्षाफल भी निकला। स्मिता और राजेश को आशानुरूप परीक्षा में सफलता प्राप्त हुई। स्मिता के मार्क्स अच्छे थे यद्यपि उसे सैकेण्ड डिवीजन ही मिला। विवाह की तिथि भी तय हो गई थी। अब स्मिता राजेश के प्यार और उसकी सुखद स्मृतियों में निमग्न रहने लगी। भविष्य के रूपहले स्वप्न वह देखने लगी। कोई रोक-टोक तो थी नहीं अतः अब वे प्रायः साथ-साथ घूमते दिखाई पड़ते। स्मिता को विश्वास था कि मित्रता हो और फिर विवाह कर लिया जाए तो निश्चित ही एक सशक्त आधार प्राप्त हो जाएगा, स्थायित्व आ जाएगा। पर क्या वास्तव में ऐसा है?

अमित आज बहुत प्रसन्न था, कारण अभी कुछ देर पहले ही चपरासी द्वारा सूचित किए जाने पर वह एडीटर के चेम्बर में गया था। भीतर प्रवेश करते ही एडीटर ने गर्म जोशी से उससे हाथ मिलाया और आह्लादित होकर कहा— "कान्ग्रेचुलेशन्स माई ब्वाय। यू हैव बीन एप्वाइन्टेड डिप्टी न्यूज एडीटर। आई एम प्राउड आफ यू।" "अमित आश्चर्य एवं हर्ष के मिले-जुले भाव से अभिभूत हो उठा था। उसके मुँह से स्वतः निकल पड़ा, " मैनी मैनी थैंक्स सर। द क्रेडिट गोज टू यू। विदआउट योर रिकमन्डेशन इट वाज नेवर पासिबिल।

"अमित मुझे तुम्हारी योग्यता पर पूर्ण विश्वास है। तुम परिश्रमी हो, काफी राइज करोगे। मैं आने वाले वर्षों में तुम्हें एडीटर के पद पर देखना चाहता हूँ। मैं दो चार वर्ष में रिटायर हो जाऊँगा। तुम्हें तो अभी बहुत कुछ बनना और देखना है।"

"सर, आई शैल लीव नो स्टोन अनटर्न्ड टू फुलफिल योर डिजायर्स ऐन्ड माई एम्बीशन्स" एडीटर बुजुर्ग और अत्यन्त योग्य व्यक्ति थे। देश के दो-चार गिने चुने एडीटर्स मे से वह एक थे। अपना जीवन उन्होने पत्रकारिता मे अर्पित कर रखा था। अमित को भी जब-तब वह उत्साहित करते रहते थे, मार्गदर्शक थे, उपयोगी सलाह भी देते रहते थे। अमित को वह पुत्रवत मानते थे। अमित भी उन्हे अभिभावक तुल्य मानता था। उनका बड़ा आदर करता था। वह जानता था कि इस पद के लिए काफी सिफारिशें आई थी पर एडीटर अडिग रहे। उन्होंने अमित के पक्ष का जोरदार समर्थन कर उसे इस पद पर नियुक्ति दिलवा दी। अब उसे विश्वास हो चला कि योग्यता का भी सम्मान कभी न कभी हो जाया करता है। इस समय वह अपने केबिन मे रिवाल्विंग चेयर पर बैठा एप्वाइन्टमेंट लेटर ही पढ रहा था, उमंगों और खुशी से भरपूर दिखाई पड़ रहा था, उसी समय उसकी निगाह टेबुल पर रखी डाक पर पड़ी, सबसे उपर ही एक बड़ा लिफाफा था जिस पर चिर-परिचित राइटिंग देखकर वह उत्सुकता न रोक पाया। लिफाफा खोलते ही उसने कार्ड पढा उसके चेहरे पर विभिन्न भाव आ जा रहे थे। कही गहरी उदासी ने उसे घेर लिया था। काफी देर तक हाथ मे कार्ड लिए वह निश्चल बैठा रहा। बेजान सा दिख रहा था वह। आंखे दूर कही खोई हुई थी। भाव शून्यसा था वह। कोई सोच भी नही सकता था कि यह व्यक्ति थोड़ी देर पहले ही ताजगी और स्फूर्ति से सराबोर था। लग रहा था कि अत्यन्त मायूस है वह व्यक्ति। आखिर अर्धचेतन अवस्था से वह चैतन्य हुआ। नियति की क्रूरता पर वह मुस्कराया लेकिन यह मुस्कराहट सहज नही थी, बरबस मुस्करा रहा हो कोई जिसके पीछे दर्द का अहसास भी छिपा था। हाँ स्मिता के विवाह का कार्ड था। केवल दस दिन रह गये थे उसके विवाह मे। एक बात तो तय थी कि वह कुछ दिनो तक सामान्य न रह पाएगा तो क्यों न वह पन्द्रह दिनो की अर्न्ड लीव ले ले, माँ की बीमारी को बताकर। जाना, न जाना तो बाद मे तय होगा। आखिरकार वह एडीटर को एप्लीकेशन दे आया। उसकी छुट्टी स्वीकृत हो गई थी। घर आते ही बेड पर लेटे-लेटे विचारों के भंवर में डूबने-उतराने लगा।

आखिर स्मिता ने जीवन-साथी चुन ही लिया। वह अपना मार्ग खुद ही प्रशस्त कर लेती है, उसकी इन्टेलीजेन्स मे उसे कभी सन्देह नही रहा। उसके जीवन में भटकाव भी रहा और गुत्थियाँ भी, साथ ही उनको सुलझाने के लिए अटूट फैसला करने की शक्ति भी है उसमे। उसकी यह विशेषता रही है कि गहरी निराशा की स्थिति मे भी वह डूबती नही, गहराई मे भले ही वह पहुँच जाए फिर प्रयास कर उतरा आती है और भावी मार्ग निर्दिष्ट कर लेती है। यह ठीक है कि उसने उपेक्षा दिखाई, कभी कुछ कहा भी जिससे उसका अहं आहत हुआ। पर क्या ये पर्याप्त कारण हैं विवाह मे न जाने के लिए? क्या वह इतना तुच्छ एवं संकीर्ण

विचारों का है, कि विवाह मे न जाकर बदले की भावनों से अपने सेल्फ को संतुष्ट करे ? गुणों से तो सभी प्यार कर लेते हैं या यूँ कहो कि प्रशंसा करते हैं पर व्यक्ति को चाहना या प्यार करना तो सम्पूर्ण रूप से ही सम्भव होता है। कमियां किसमें नही होतीं ? कमियां और गुण ही तो व्यक्ति को उसकी विशिष्टता प्रदान करते हैं। इस विशिष्टता से ही दूसरा व्यक्ति प्रभावित होता है। प्रेम में आत्मसात करने की प्रवृत्ति होती है। क्या प्रेम प्रतिदान चाहता है ? हाँ या नही दोनों उत्तर हो सकते हैं, शायद, लेकिन यह तो तय है कि समर्पण की भावना अवश्य होती है। फिर स्मिता ने कोई झूठे सच्चे आश्वासन नही दिये। बगैर लाग लपेट के जो उसके मन मे आया कह दिया। उसने कोई धोखा नही दिया जिसकी शिकायत की जाये। यह तो अपना अपना भाग्य है, किसी को चाहत के बदले चाहत मिल जाती है और किसी की एक पक्षीय ही बनी रहती है। उसने स्पष्ट रूप मे कभी अपने को व्यक्त भी नहीं किया फिर स्वीकार, अस्वीकार का प्रश्न ही कहाँ उठा ? साथ साथ खान-पान, मिलने घूमने मे अन्तरंग क्षण जो उसने दिये क्या उसमे कोई दुराव या छिपाव था ? नही। आज वह स्मिता की यादों में जो खोया हुआ है वह तो स्वाभाविक इसलिये भी है कि व्यक्ति को प्रेम पाये हुये व्यक्ति का ख्याल कम आता है पर जो अप्राप्य है उसकी यादें ही हमे ज्यादा झिझोड़ती हैं। शायद इसीलिए वह स्मिता को भूल नही पा रहा है। वह तो वैसे भी स्मिता से दूर हो गया था फिर स्मिता ने किसी भी रूप मे सही जब उसे बुलाया है, निमंत्रित किया है तो क्या उसमे इतना साहस है, कि वह आमन्त्रण को ठुकरा दे ? नही, वह ऐसा नही कर सकता और नैतिकता का तकाजा भी यही है। वास्तव मे नारी हृदय को पूर्ण रूप से शायद ही कोई पाता है और यदि पा जाये तो उससे बढकर सौभाग्यशाली कौन है ? अमित इस संदर्भ में अभागा ही था। इसका एक कारण यह भी था कि चाहत का प्रत्युत्तर चाहत से न मिलने पर वह अपनी चाहत को किसी अन्य की ओर उन्मुख न कर सका। कुछ व्यक्तियों के प्रारब्ध में लगता है कि मिलन का सुख नही होता। उनकी भावनाएँ मचलती रहती है। हुलस और ललक भी बनी रहती है लेकिन मिलन उनके लिए एक स्वप्न ही बना रहता है जो उनके अब तक के जीवन मे साकार नही हो पाया होता है। अमित इन्ही व्यक्तियों की श्रेणी मे था।

भले ही स्मिता ने औपचारिकतावश ही निमन्त्रण दिया हो या क्या पता वह उसकी उपस्थिति वास्तव मे चाहती हो। स्मिता और अमित मे कही बहुत कुछ साम्य भी था, यह नही कि सर्वथा प्रतिकूलता ही विद्यमान हो। एक बार उसने डायरी मे लिखा था—"हमारी कामनायें ही दुःखों का मूल होती हैं कभी अनुकूल

और कभी प्रतिकूल होती हैं" कितना बड़ा सच है। स्मिता और अमित दोनों भावुक है दोनों ने दुःख भी भोगा है पर स्मिता डायनिमिक है इसलिए स्वयं को परिवर्तित कर सुख की तलाश मे आगे बढ़ जाती है लेकिन अमित उस दुख को ढोता रहता है। अतीत को विस्मृत नही कर पाता। उससे पिंड नही छुड़ा पाता। स्मिता उसे हर रूप मे स्वीकार है अगर उसे किसी भी रूप मे सान्निध्य मिले। प्रिय व्यक्ति को देखकर ही मन में प्रसन्नता का संचार होता है, उससे बातें कर या उसका विश्वास भी यदि थोड़ा बहुत पाया जा सके तो यह प्रसन्नता द्विगुणित हो जाती है। अब उसे स्पोर्टसमैन स्पिरिट की भावना का परिचय देना ही होगा। क्या उसके जीवन की अन्यतम अभिलाषा स्मिता को सुखी देखने की नहीं रही है? निश्चित ही हाँ, तो अब स्मिता ने जब अपने सुख की तलाश कर ली है तो इस शुभ अवसर पर वह उपस्थित रहकर न केवल मंगल कामना और बधाई ही व्यक्त करेगा बल्कि बगैर किसी शिकवे के वह इस समारोह की सम्पन्नता मे अपेक्षित योगदान के लिए तत्पर होगा। स्मिता की खुशी क्या उसकी खुशी नहीं बन सकती? अवश्य ही बन सकती है फिर उसे तो यह मानकर चलना चाहिए कि स्मिता ने जीवन साथी के रूप मे जिसका वरण किया है वह उससे बेहतर ही होगा। स्मिता के चुनाव की भी तारीफ करनी होगी क्योंकि वह और उसके भावी पति दोनो इसके हकदार भी हैं। इसी प्रकार सोचते-विचारते जाने का निश्चय कर ही लिया अमित ने और अन्ततः दूसरे दिन उसने माँ से मिलने और स्मिता के विवाह समारोह मे सम्मिलित होने के लिए प्रस्थान किया।

× × ×

"अरे, अमित तुम! कब आए?" ड्रेसिंग टेबुल के समीप मेक-अप मे व्यस्त स्मिता बोली। उसने शीशे मे अमित का प्रतिबिम्ब देखा तो वह पुलकित हो उठी। किसी प्रकार की कोई आहट न होने से वह जान न पायी कि अमित कितनी देर से खड़ा है। काफी दिनों बाद लगभग डेढ़-दो वर्ष के अन्तराल पर अमित ने स्मिता के कमरे में चुपचाप प्रवेश किया तो वह देखता रह गया। उसे लगा कि स्मिता के सौन्दर्य पर निखार आ गया है। उसके मदराये हुये शरीर से लग रहा था कि वक्ष ब्रेसियर्ज मे न समा रहे हों और बाहर निकलने को व्याकुल हो रहे हों। उसके केश कमर तक झूल रहे थे। उसके लिपिस्टिक युक्त होठ रस से सराबोर थे। उसके चेहरे की ललाई, अंगों का भराव तथा कमर के ऊपर नीचे

उभरे वक्ष और नितम्ब उसे आकर्षक और मोहक बना रहे थे। उसकी बड़ी-बड़ी आंखें दर्पमुक्त थी। उसका चेहरा भाव-प्रवण था। वह सौन्दर्य की उन्मादक मूर्ति थी जिसमें अव्यक्त सम्मोहन निहित था। अमित ने पहले तो उसे डिस्टर्ब करना उपयुक्त न समझा और उसके सौन्दर्य को निरखता रहा। उसका मन तृप्ति से भर उठा और जब उसने देखा कि वह मेक-अप लगभग पूरा कर चुकी है तो हटकर वह इस प्रकार खड़ा हो गया कि स्मिता उसे दर्पण में देख ले। "आज ही, अभी लगभग दो घण्टे पूर्व। मां से मिलकर सीधा यहीं चला आ रहा हूं।" अमित ने स्मिता के प्रश्न का जवाब दिया।

"नीचे तुम मम्मी, डैडी से मिले ?

"हां, उन्होंने ही कहा, तभी सीधा इस कमरे मे चला आया हूं।"

आओ, बैठो। तुमसे बहुत सी बातें करनी है, पर पहले तुम बताओ कैसे हो ?"

"ठीक हूं। तुम्हारा कार्ड मिला। निमन्त्रण पत्र पाते ही चला आया।"

"अमित, तुम तो जानते ही हो, बहुत सी जिम्मेदारियां हैं, सारी व्यवस्था तुम्हें ही देखनी है। डैडी की तबियत तुम देख ही रहे हो। वैसे तुम्हारे आ जाने से राहत महसूस कर रही हूं। अब केवल एक हफ्ता रह गया है, लेकिन अब मैं चिन्तित नही हूं, तुम्हारे आ जाने से।।"

"स्मिता, तुम जिससे भी सहयोग लेती, वह सहयोग तुम्हें देता ही। तुमने मुझे चुना इस कार्य के लिए। विश्वास दिलाता हूं कि भरसक रिसपान्सिबिलिटी को पूरा करूंगा।"

"तुमने तो मेरी कोई सुधि ली नही, इस बीच मैंने तुम्हे कई बार याद किया, मिलना भी चाहा। मालुम भी होता रहा कि जब-तब तुम इस शहर मे मां से मिलने आते रहे, लेकिन तुम यहां न आ सके। इतनी निष्ठुरता तुमसे कैसे सम्भव हो सकी ? मुझे इसी बात का आश्चर्य है।"

"क्या तुम मुझे ही दोष दोगी ? खैर तुम्हारे आरोप का मैं कोई उत्तर नही दूंगा। तुम्हें अधिकार है जो चाहे कह लो।"

"मैं जानती हूं कि अब शिकायत या उलाहने का समय नहीं है। लेकिन यह सच है कि मैं तुमसे बात करना चाहती थी, कुछ परामर्श लेना चाहती थी।"

"परामर्श की आवश्यकता तो रही नही अब बातें जितनी चाहो करलो।"

"नही अमित ! कही तुम मुझसे किनारा न कर लो, इसलिये तुमसे विवाह के विषय में राय न ले सकी ! अन्यथा मत लेना वैसे इच्छा बहुत थी, पर आशंका भी थी।" मन ही मन स्मिता ने कहा।

इस बीच मम्मी दोनों के लिए नाश्ता रख कर चली गई थीं। नाश्ता करने के साथ ही बातें होती रही। समय गुजरता रहा पता भी नही चला, कितना समय बीत चुका है ? समय व्यवधान न बन सका। अमित ने अपनी सर्विस सम्बन्धी प्रगति से उसे अवगत कराया। स्मिता ने उससे कहा भी कि वह अपनी रचनात्मक प्रतिभा को कुण्ठित न होने दे। इस बीच उसकी कोई रचना भी उसने नही पढ़ी थी, इसलिए वह प्रेरित कर रही थी अमित को, लिखने के क्रम को टूटने न दे। अमित सोच रहा था कि प्रेरणा के अभाव मे वह क्या कर सकेगा ? स्मिता प्रणय की डोर मे बंधने जा रही है आजीवन, अब वह उसकी प्रेरक क्या बन सकेगी ? नही, और जीवन के इस मोड पर उसे इसकी अपेक्षा भी नही करनी चाहिए। स्मिता तो अपनी बात जो मन मे आती है उससे कह देती है। वह भी टूट चुका था। निःशब्द और निस्तब्ध। कोई बर्तन टूटता है तो आवाज होती है लेकिन वह अपनी आवाज अपना दर्द किसे सुनाए, समझाए या अनुभूत कराये ? खैर इन सब बातों से क्या लेना देना ? वह तो स्मिता को सुखी देखना चाहता है अतः चेहरे पर मायूसी की झलक उसे कतई स्पष्ट नही होने देनी है। इसके लिए तो बाद में भी समय है उसे सब कुछ भूलकर स्मिता की इच्छा पूर्ति मे सहयोग देना होगा। स्मिता के मम्मी डैडी भी अमित की व्यवस्था की जानकारी देने के सम्बन्ध मे बाते करना चाहते थे इसलिए जब आवाज दी गई तो दोनो को जाना पड़ा। काफी देर तक चारों मे बातें हुईं फिर अमित तैयारी मे लग गया। अमित को स्मिता के साथ शापिंग के लिए जाना पड़ा।

अमित को याद है उसने स्मिता से पूछा था, "स्मिता एक बात बताओ। तुम विवाह के सूत्र में बंधने जा रही हो। क्या तुम सोचती हो कि विवाह के पश्चात पूर्व प्रेमी की याद न आयेगी ?"

स्मिता ने बगैर कोई देर किये कहा, "प्रेम भूला जा सकता है यदि विवाह के रूप में विकल्प पहले से अच्छा मिला हो।" उसी दिन शाम को स्मिता ने अमित को राजेश से भी मिलाया। राजेश वैसे तो मितभाषी था लेकिन कुल मिलाकर अमित को राजेश ठीक लगा और उसे स्मिता के चुनाव की मन ही मन सराहना करनी पड़ी। तीनो एग्जीबिशन देखने गये। अमित जाना तो नहीं चाहता था क्योंकि वह स्मिता और राजेश के ही जाने के पक्ष मे था। लेकिन वह स्मिता के आग्रह को नकार न सका। राजेश ने भी आग्रह किया था एक बार, पता नही मन से अथवा फार्मेल्टी मे। अमित ने सोचा उसे स्मिता प्रिय है और स्मिता का प्रिय राजेश है इसलिये राजेश को प्रिय मानना ही होगा। दोनों का सान्निध्य अमित के लिए अच्छा ही रहा।

अमित ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रजेन्टेशन के लिए कुछ चीजें खरीदीं। स्मिता की पसन्द के अनुसार और अपनी पसन्द से भी। जब वह इन चीजों को ला रहा था तो स्मिता ने प्रसन्न होकर कहा, "वास्तव में तुम तो भोले शंकर हो रहे हो।" अमित ने कुछ भी उत्तर न दिया। वह सोच रहा था कि स्मिता को शायद यह संभावना थी कि अमित उलाहने देगा, शिकवे-शिकायत करेगा, लेकिन वह तो चन्द अपनत्व भरी बातों से ही अर्थात जल्दी ही प्रसन्न हो जाता है। अमित ने रिक्शे पर बैठे हुये स्मिता की हथेली थाम ली और कहा, "स्मिता, एक बात मानोगी", वह चौंक उठी, आशंकाग्रस्त हुई। सन्देह अंकुरित हो उठे, बगैर हथेली को हटाये उसने कहा, "कहो।"

"नहीं, पहले हां कहो तभी कहूंगा।"

भावनाओं के अन्तर्द्वन्द में फंसी वह कुछ तय नहीं कर पायी फिर भी उसके मुंह से स्वतः निकल पड़ा। "अच्छा, हां।"

"तुम अपने पति को अपना सर्वस्व देना। तन के साथ मन भी। वह सभी कुछ जो एक पत्नी अपने पति को अधिकतम रूप में दे सकती है। मैं तुम्हें, तुम्हारा दाम्पत्य जीवन सुखी देखना चाहता हूँ!"

स्मिता जैसे किसी भारी बोझ से मुक्त हो गयी। अमित को स्मिता की हथेली का स्पर्श आश्वस्त करता रहा। स्मिता सोच रही थी इतनी जरा सी बात के लिए इतनी बड़ी भूमिका। पर क्या यह जरा सी ही बात थी? भविष्य के गर्त में क्या छिपा है उसको उस समय कौन जान सकता था? स्मिता ने स्वीकारोक्ति दे दी।

स्मिता जानती थी कि उसके लिए ऐसा पति उपयुक्त होगा जो उसके जैसा संवेदनशील हो, जो उसकी भावनाओं को समझ सके। आवश्यक नहीं कि भावनायें व्यक्त की जायें। आखिर निकटता अन्तर्मन के भाव को स्वयं ही जानने और समझने का अवसर प्रदान करती है। राजेश आत्म-केन्द्रित था इसलिए वह सोचती थी कि वह भावुक भी होगा और उसकी अपेक्षाओं के अनुरूप सिद्ध होगा। कभी वह संशयग्रस्त भी होती क्योंकि अब तक के जीवन में उसने पाया कि प्रेम और सुख उसके लिए मृगतृष्णा ही रहे। इसकी तलाश में वह भटकी। उसने चाहा कि कोई उसके अस्तित्व को सम्पूर्ण रूप से समझे उसकी सम्पूर्ण इकाई को बेहद प्यार करे, संवारे और अन्तर्मन की गहराई में झांके। कभी लगा कि अमुक ने उसे समझ लिया फिर पाया नहीं, उसने चुनाव में गलती की और शायद जिसने उसे समझा जैसे अमित ने, भले ही पूर्णतया न सही, फिर भी दूसरों की अपेक्षा ज्यादा ही समझा, उसके प्रति वह स्वयं इनिशिएटिव न ले सकी। चाहत के बीज अंकुरित तो हुए। पर पता नहीं क्यों पनप न सके। इस प्रकार मारीचिका के पीछे वह कोशिश करती रही सुगन्ध की तलाश की।

इधर धीरे-धीरे दिन सरकते जा रहे थे और विवाह का शुभ दिन निकट से निकटतर होता गया। अमित सारे इन्तजाम को बखूबी अन्जाम दे रहा था। प्रात: ही वह सात या आठ तक आ जाता और रात देर तक नौ या दस कभी-कभी इससे भी देर में वह वापस लौटता। इस प्रकार दिन-रात का अधिकांश समय स्मिता के यहाँ बीतता। उसे स्मिता के भावाकाश को जानने-समझने का कुछ और मौका मिला, लेकिन अब उसकी स्थिति मे कोई परिवर्तन तो होने वाला नही था, इसलिये शान्त रहकर व्यस्त रहता। वैसे वह चाहता यही था कि स्मिता से बात न करे अपने को काम मे तल्लीन रखे लेकिन स्मिता हो सामने जिससे वह देख सके तसकीन प्राप्त कर सके और स्मिता भी कुछ महसूस कर सके पर शायद हो""। वह जब कोई बात छेड़ देती तो उसे बोलना पड़ता अच्छा भी लगता। यह अमित की कमजोरी थी जिसे स्मिता जानती थी कि उसे कितना भी ठेस पहुँचा लो इस हद तक कि वह टूटने लगे फिर बात कर लो कन्फेशन के साथ वह कुछ न कहेगा कहता तो वैसे भी नहीं हाँ किनारा कर लेता। स्वाभिमान अमित को भी प्रिय था। उसको गंवाकर वह कोई समझौता नही कर सकता था। फिर चाहे कितनी बड़ी उपलब्धि से वंचित क्यों न हो यहाँ तक कि स्मिता भी। उपेक्षा तटस्थता और निर्विकार भाव वह सह सकता था लेकिन लांछन और अपमान नही। किसी और के द्वारा उसे ये मिले तो वह अपने वजूद के मिटने तक संघर्ष के लिए उतारु हो जाता चाहे कितनी बड़ी हानि क्यों न उठानी पड़े, लेकिन अपनो के द्वारा, प्रिय व्यक्ति के द्वारा इनके मिलने पर मन ही मन पीड़ा से बगैर उफ किये सिसकता रहता और कोशिश करता कि उसकी जिन्दगी से दूर चला जाये, इस प्रकार कि उससे जल्दी भेंट न हो। स्मिता को भी अमित की सभी बातें पसन्द नही आती थी। एक बार अमित के पूछने पर कि वह उसे किस रूप में लेती है, उसने अस्पष्ट सा कहा था; "मैं चाहती हूँ कि तुम जिस रूप में हो, उसी प्रकार बने रहो। यदि तुमने स्वयं को परिवर्तित करने की चेष्टा की तो मौलिकता खो बैठोगे। तुम्हारे प्रति जो भी भावनाएं है मेरी चाहे तुम अवगत न भी हो, वे वैसे ही बनी रहे यही मैं चाहती हूँ। तुम्हारे पास आकर मुझे भरोसा बना रहता है, सुरक्षित भी महसूस करती हूँ जानती हूँ, कि मेरी इच्छा के विरुद्ध तुम कोई कदम नही उठाओगे।" मन ही मन कभी स्मिता ने अमित के विषय मे सोचा था "काश तुम अतीत को विस्मृत कर सकते तो शायद मैं तुम्हे चाह सकती थी। कड़ुआहट को भूलना भी जरूरी है, नही तो सुख की अनुभूति की ही तलब न हो जाये। फिर अतीत मे डूबे रहने से क्या कुछ मिलता है ? नही, मैं तो अतीत को नहीं देखती वर्तमान को ही सत्य मानती हूँ। वर्तमान मे जीने का प्रयास करो तो मधुर सम्बन्ध मे बढ़ोत्तरी हो सकती है।" लेकिन स्मिता ने उसे इस सम्बन्ध मे कोई संकेत कभी नही दिया। उन दिनो मे जब अमित दूर चला गया मिलना-

जुलना बन्द सा था। एकाध मौके पर वह उससे मिलना चाहती थी, उन क्षणों मे अमित का विश्लेषण उसने किया तब पाया कि अमित उसे अच्छा लगता है। चाहती है कि घण्टों बैठकर उससे बातें करे, मानसिक तुष्टि भी मिलती। वह अमित के सान्निध्य मे शीतलता और स्निग्धता का अनुभव तो करती स्वयं मे लेकिन उष्णता का नही जो प्रेम-प्रदर्शन मे आवश्यक होता है। हो सकता है कि प्रेम के जिस रूप की उसे खोज है और जो वह खोजती रही है इसलिए उसकी खोज सार्थक नही हो पाई। तो क्या वह इस रूप को भी परखे लेकिन निश्चय अधूरा ही रह जाता। फिर भी इस प्रकार के सुख का भरोसा करना उसे मन ही मन अच्छा लगता। अमित के सम्बन्ध मे गहराई से विचार करती तो पाती कि वह उससे तृप्ति पा तो सकती है पर क्या यह स्थायी रहेगा? अस्थायी चीज का महत्त्व अधिक है तो क्यों न मानसिक तृप्ति को ही प्रमुखता दी जाए। इसलिए वह भावात्मक लगाव ही केवल अमित के प्रति बनाए रखती अन्य प्रकार के संबध की ओर वह अग्रसर न हो सकी।

स्मिता के डैडी और मम्मी दोनो अमित की कार्यपटुता को देखकर खुश थे। छोटी और बडी सभी प्रकार की व्यवस्था उसे सौंप देते। वे केवल सुपरविजन रख रहे थे और सन्तुष्ट प्रतीत हो रहे थे। स्मिता उनकी लाडली या इसलिए विवाह मे बहुत कुछ करने की तमन्ना रखते हुए भी सीमित आर्थिक साधनो को देखते हुए विवश पा रहे थे अपने को। फिर भी प्रयास कर रहे थे कि कोई कमी न रह जाये। इस बीच राजेश से भी दो एक बार और अमित की भेंट हुई। अमित देख रहा था कि राजेश और स्मिता दोनो भविष्य के पहले ससार मे डूबे हुए हैं। वे स्वप्नो को साकार करने हेतु विभिन्न प्रकार की योजनाएं बना रहे हैं। ऐसे समय मे अमित दूर ही रहता, अन्य कार्यों मे स्वयं को व्यस्त रखकर। इस उम्र में ऐसा होना स्वाभाविक ही था। सभी अपनी जिन्दगी को अपने ढंग मे जीने का प्रयास करना चाहते हैं। आखिर शादी का दिन भी आ पहुंचा। रवि भी सपरिवार इस समारोह मे शिरकत करने के लिए आ पहुंचा। अमित को उपस्थित देखकर वह चौंका। अमित को प्रतीत हुआ कि स्मिता से बातें करते देखकर रवि को अच्छा नही महसूस हो रहा है। रवि मे रहा नही गया उसने स्मिता से कहा, "मुझे ताज्जुब हो रहा है तुम्हे अमित से बातें करते देखकर जिसको हम दोनो ने मिलकर नेगलेक्ट किया उसी को तुम महत्त्व दे रही हो।" स्मिता कुछ न बोली। नजरें झुकाए औपचारिक बातें वह करती रही। रवि ने ब्रीफकेस से सौ के नोटो की एक गड्डी निकाली और उससे कहा, "मैं तुम्हें क्या उपहार दूं जो भी तुम चाहो चलो तुम्हे खरीद दूं।" नोटों को देखकर स्मिता की भृकुटी में बल पड़ गये पर स्वयं को नियन्त्रित करते हुए इतना ही उससे कहा,

"मुझे कुछ न चाहिये। चाहिये तो केवल आशीर्वाद। यही मेरे लिए काफी होगा।" भौतिकता के परिवेश में पला रवि इस बात से हतप्रभ रह गया। वह तो अपना प्रभाव दिखाना चाहता था लेकिन स्मिता ने वह अवसर खत्म कर दिया। रवि समझ गया कि स्मिता अमित के प्रभाव में है तभी वह मैटीरियलिस्टिक चीजों को महत्व नहीं दे रही है। अमित चाहता था कि रवि से बातें न हों पर कलासफेलो होने के कारण तथा सफल प्रतिद्वंद्वी के रूप में अपने सुख चैन को छीनने वाले रवि की उपेक्षा भी वह किस आधार पर करता? अमित से रवि ने कहा, "मैं तो होश छोड़कर मदहोश हो बैठा था लेकिन मैं देख रहा हूँ कि तुम होश कभी नहीं खोते।" अमित क्या कहता संकेत उसने समझ लिया था कि स्मिता की निकटता को देखकर ईर्ष्या से ग्रस्त होकर रवि ने कटाक्ष किया है। शाम को बारात आ गयी। अमित जनवासे की भी व्यवस्था देख रहा था, रवि अनमने ढंग से उसके साथ हो लिया।

आज चाँद जैसे धरती पर उतर आया हो। शृंगार एवं परिधान से सुसज्जित थी स्मिता। नये जीवन और नये संसार में वह प्रवेश करने जा रही थी। उसके अंगों से सुरभि निसृत हो रही थी। पुलक भरी सिहरन वह महसूस कर रही थी। कभी-कभी भावुक उत्तेजना के कारण उसकी सुन्दर पलकें बन्द हो जा रही थी मानो लाज से वह दुहरी हुई जा रही हो। नवोढ़ा सी शर्माने वाला उसका रूप अन्य दिनों की अपेक्षा कितना भिन्न था। ऐसा लगता था कि उसके शरीर में बसन्त गदरा गया हो। आँखों के ऊपर उसकी लम्बी बरोनियाँ कमान सी दिखाई पड़ रही थी। वक्ष और नितम्ब के भार ने उसकी कमर को थोड़ा झुका दिया था। फूलों एवं आभूषणों का शृंगार उसे कमनीय, कान्तियुक्त और आकर्षक बना रहे थे। उसकी देह यष्टि जैसे साँचे में ढली हो। उसके चिबुक लुनाई से भरपूर थे। नाभि दर्शना साड़ी में उसके शरीर का उभार, कटाव और भराव उजागर हो रहे थे। लावण्यमयी दीप शिखा सी वह देदीप्यमान हो रही थी। ताजे फूल सी खिली हुई वह दिखाई पड़ रही थी। सुन्दरता नारी की शोभा बढ़ाती है, वस्त्र उसे भव्यता प्रदान करते हैं, शृंगार उसे आकर्षक बनाते हैं और अदाएँ चार चाँद लगा देती हैं। इन सभी दृष्टि से भरपूर मन्थर गति से गीत की पंक्तियों के मध्य सहेलियों का सहारा लिए हुए जयमाला हाथों में लेकर, स्टेज की ओर बढ़ी जा रही थी स्मिता। आखिर गीत समाप्त होते ही वह स्टेज तक पहुँच गई। स्मिता और राजेश द्वारा एक-दूसरे को जयमाला पहनाने के पश्चात् तालियों की गड़गड़ाहट के साथ बैठे हुए अमित और रवि की एकाग्रता भंग हुई। स्मिता के इस नवीन और उन्मादक रूप को देखकर दोनों विचारों में खोए थे।

रवि फसक महसूस कर रहा था कि कनक को न चुनकर स्मिता का चुनाव यदि उसने किया होता तो अच्छा होता। रवि विभिन्न लड़कियों के सम्पर्क में आ चुका था। उसकी मान्यता थी कि स्त्री जलाशय है आकंठ इसमें डूबने की चाह वह लिए रहता। शारीरिक भोग का आनन्द भी कुछ अजीब होता है। उन क्षणों में स्त्री अपने को शिला समझती है और पुरुष अपनी शक्ति का जो प्रयोग करता है तो ऐसा लगता है कि जैसे वह शिला को तराश रहा हो। उसे सन्तुष्टि थी तो केवल यह कि वह स्मिता के तराशने का कार्य कर चुका था। उसने अभिजात्य वर्ग की विभिन्न लड़कियों में सहवास का आनन्द भी भिन्न-भिन्न रूपों में महसूस किया था। स्त्री के शरीर की प्राप्ति सम्बन्धी क्रियायें ऐसी हो होती हैं जैसे पर्वत यात्रा की जा रही हो। इस यात्रा के रास्ते में उभार और घाटी दोनों होते हैं। इसके विभिन्न सोपानों से गुजरने पर आस्वाद भी भिन्न-भिन्न होता है। स्मिता के रसास्वादन की अनुभूति को वह विस्मृत नहीं कर सका था। उसे वह दिन याद आ रहा था जब वह एक पार्टी से लौटा था। वाइन का दौर भी चला था। हल्के नशे में था वह और स्मिता से मिलने चला आया था। स्मिता के नथुनों में शराब की महक पहुँची तब वह बिफर पड़ी थी। सिसकियां लेते हुये उसने कहा था "मैंने आपको क्या नहीं दिया जो एक औरत किसी पुरुष को दे सकती है। फिर यह हालत आपने क्यों बनाई?" मेरे रहते हुए आपको इसकी जरूरत क्यों पड़ी?" तब वह स्तब्ध सा खड़ा रह गया था। तय नहीं कर पाया कि वह क्या कहे? स्मिता ने पहली बार उसे नशे की हालत में देखा था। वह क्या जाने कि नशा करना तो उसकी आदत में शुमार है। हाँ, स्मिता की उपस्थिति में वह इससे कतराया रहता। इसका सेवन न करता। वास्तविकता यह है कि स्त्री से संसर्ग होने पर पुरुष को अपनी पात्रता के अनुसार ही फल की प्राप्ति होती है। यह अच्छी भी हो सकती है और बुरी भी। रवि को वेदना भी हो रही थी क्योंकि वह स्मिता के साथ प्रेम में आबद्ध हो चुका था, उसने जीने मरने की कसमें भी खायी थीं। ऐसी स्थिति में उसे दूर होना पड़ा तो स्वाभाविक ही है कि स्थिति दारुण तो होनी ही थी। उसने स्मिता के प्रेम और विश्वास को जीतने के लिए अच्छे और बुरे दोनों माध्यम अपनाए थे, यहाँ तक कि वह हद से भी आगे बढ़ गया था। उसका विचार था कि धरती और औरत जब जिसके अधिकार में हो, उसी की होती है और आज यह अधिकार राजेश छीन चुका था। वह प्यार के स्वरूप को आदर्श नहीं मानता था। छल और फरेब द्वारा स्वार्थ सिद्धि को वह अपना अभीष्ट मानता था। वह एक नारी से जीवन भर बंधे रहने के लिए तैयार न था। ठहराव नहीं, बहाव की ओर उसकी प्रवृत्ति थी यही कारण है कि स्मिता उससे विलग हुई तो रवि के चर्चे अन्य लोगों के साथ जुड़ने

की, जब-तब सुनाई पड़ते। यहाँ तक कि स्मिता और अमित ने भी इन चर्चों को सुना था। तब स्मिता को लगा कि रवि ने उससे प्यार नहीं शायद फ्लर्ट किया था, तभी से स्मिता ने किनारा कर लिया था बगैर कुछ कहे सुने। नवपरिणीता के रूप में स्मिता की रूप-सज्जा देखते ही बनती थी। आज भी रवि की नजरें उसके शरीर को वेध रही थीं। उसे लग रहा था कि उसकी निगाहें स्मिता के शरीर की, उसके नख-शिख की परिक्रमा कर रही हों और मन ही मन वह स्मिता को बाहों में भरने के लिए आतुर हो उठा। लेकिन क्या यह सम्भव था? आखिर उसे मन मसोस कर रह जाना पड़ा पहले उसे चाहे जो कुछ और कितनी ही बार क्यों न उपलब्ध हुआ हो पर आज वह अतृप्ति का आभास कर रहा था और बार-बार बेचैन होकर कुर्सी पर बैठे-बैठे वह पहलू बदल रहा था। वह कामना लेकर आया था कि विवाह से पूर्व एक बार फिर वह पूर्व क्रिया दोहराएगा लेकिन परिवर्तन परिवेश मे उसे लग रहा था कि उसका यहाँ आना सार्थक नहीं हुआ। यदि वह हालात से अवगत होता तो शायद ही आता। लेकिन विदा होने तक किसी प्रकार उसे समय तो व्यतीत करना ही था।

रवि की बगल मे बैठा हुआ अमित भी भावना के प्रवाह मे लीन था। स्मिता के आज के रूप से वह चकाचौंध था। उसे लग रहा था कि स्मिता को वह समझ नहीं पाया है पूर्ण रूप से और शायद स्मिता भी उसे समझ नहीं सकी है। निकटता के क्षण बहुतेरे मिले। दोनों ने अपनी-अपनी बातें कई बार कही थी पर वह स्मिता जैसा मुखर नहीं था। वह सोच रहा था कि दूसरों की निकटता पाकर भी स्त्री अपने प्रिय को निकटता की चाह में आतुर रहती है। पहले रवि और अब राजेश....... शायद वह एक विशेष अर्थ मे स्मिता का प्रिय कभी न बन सका। संयमित प्रेम का कोई महत्त्व नहीं होता, कम से कम स्मिता के लिए तो नहीं ही है। उसने प्रतीक्षा भी की थी, उद्वेगग्रस्त हुआ था वह, पर उसे आशा थी प्राप्ति के क्षण उतने ही अधिक सुखकर और उपलब्धि से पूर्ण बन जायेंगे। लेकिन प्रतीक्षा और संयम ने उसके प्रेम को तिरोहित कर दिया था। जब तक वह दूसरे की ओर उन्मुख हो चुकी थी। स्मिता के विविध रूप अमित के मानस पटल पर अंकित हो रहे थे। जब भी वह स्मिता के ख्यालों मे खोता एक युवती का चित्र स्पष्ट या अस्पष्ट सा उभर उठता जो अलग-अलग अवसरों पर अलग-अलग परिधान में होती। कभी स्लीवलेस ब्लाऊज और उसी से मैच करती हुई साड़ी, पर्स और लिपिस्टिक में दिखाई पड़ती, कभी सलवार कुर्ते के सूट मे सौंदर्य से भरपूर गदराया हुआ जिस्म, सुडौल बाजू, मासल जंघाएं, परिपुष्ट नितम्ब और स्थूलताविहीन देहयष्टि कमनीय और मोहक ऐसे लगते जैसे मौन आमन्त्रण दे रहे हों। कभी पूर्व के किशोरी रूप मे बेल-बाटम के सूट मे वह उभरती जिसमे अमित

ता के दर्शन करता। स्मिता की आंखें उसे ऐसी लगती जैसे
अल्हड़ता और चंचल स्वीकारोक्ति है या अस्वीकारोक्ति, प्रशंसा है या तिरस्कार,
कुछ कह रही हों परभिव्यक्ति इसे समझ नहीं पाता फिर भी कुछ तो ऐसा था
उलाहने हैं या प्रे ध्यान से अपने को मुक्त नहीं रख पाता था। अमित निष्काम
कि वह स्मिता के गा मनुष्य की तरह उसके भी जजबात थे, उमंगें और विषय-
तो था नहीं साधारावयस्क विषमलिंगीय व्यक्ति के प्रति। फिर वह इन अन्तरंग
वासना भी थी, समझों न होता ? कभी हल्के से भी स्मिता के शरीर का स्पर्श
क्षणों में उद्वेलित जाता तो उसे लगता कि स्मिता में गरमाहट है, उष्णता के
जाने-अनजाने हो उ तब स्मिता के आगोश में उसका जी खो जाने का होने
साथ स्निग्धता भी कि उसके आगोश में वह अपने अस्तित्व को तिरोहित कर दे
लगता। वह चाहता रहे जिससे बातों का रसास्वादन तो हो ही साथ ही वह
या घण्टों बातें करता का अवलोकन भी करता रहे पर यह इच्छा मात्र ही बनी
स्मिता के रूप-माधुकरने का अवसर उसे अब तक नहीं मिल पाया था। शायद
रहती और साकार र या नहीं, इसमें उसे संशय था क्योंकि यह दूसरा अवसर था
उसे कभी मिलेगा भीसे किसी को अर्पित होने जा रही थी और दोनों बार किसी
जब स्मिता तन-मनकि स्वतन्त्र रहकर उसने खुद निर्णय लिया था। वह भी
के दबाव में नहीं ब रूप को गौर से देख रहा था। चाह रहा था कि ये क्षण
स्मिता के इस नवीनह इसी प्रकार सजी-संवरी स्मिता के सौन्दर्य को निरखता
कभी खत्म न हो। वैसा हो रहा था, अच्छा ही हुआ जो स्मिता के समक्ष स्वयं
रहे। आज उसे महसूकिया क्योंकि यदि उसे अस्वीकार या तिरस्कार मिल जाता
को उसने व्यक्त नहीं दगी और भी भार स्वरूप हो जाती। वास्तव में एक पक्षीय
तो शायद उसकी जिाते हैं, वही अस्वीकार, उपहास और तिरस्कार से बचाते
प्रेम जहाँ उलझने ब उसी से आंशिक रूप से आनन्दित होता रहे ? लेकिन अब
भी हैं फिर वह क्यों ई सम्भावना न रही। एक हफ्ते की भाग दौड़ से वह
तो आंशिक की भी क बुझा-बुझा सा वह महसूस कर रहा था। क्या वह अपनी
क्लान्त हो रहा था। ने आया था। समापन उसके द्वारा ही होना था। कहीं
चाहत का यही हश्र स लड़की से तुम प्रेम करते हो, उसकी शादी करा दो
उसने सुना था कि जी होता है कि वह तुम्हारी कृतज्ञ भी बनी रहे और प्रेम
तो कभी-कभी ऐसा लेकिन इसका भी तो उसे अवसर नहीं मिला। उसे लगता
भाव भी बनाए-रखे। कैसे-कैसे मोड़ ले लेती है और वह इस कदर उसे प्रभावित
था कि परिस्थितियां लित करने की या मोड़ने की क्षमता उसमे नहीं रह जाती।
करती हैं कि उन्हें संचंचालित होता रहता है। उसको नियति क्या दुःख भोगने
वह स्वयं उनके द्वारा या आनन्द के क्षण क्या उसके जीवन में नहीं हैं ? वह
के लिए ही है ? प्राप्ति

नजदीक पहुँचकर आखिर वंचित क्यों हो जाता है ? उसे लग रहा था कि वास्तव मे स्मिता एक पहेली है, रहस्यमयी भी । वह इस पहेली को हल नही कर पाया, उसे सुलझा नही पाया । स्मिता ने जब जैसा चाहा, उसे निर्देशित कर संचालित करती रही । ऐसा नही कि उसने अपना विवेक खो दिया था । अगर ऐसा होता तो वह अपने मान को बनाए रखने मे सफल न हो पाता । उसे दया या सहानुभूति की नही वरन प्रेम की जरूरत थी जिसे वह किसी के सहयोग पर नही अपने गुणो या व्यक्तित्व के आधार पर पाना चाहता था । कभी वह सोचता कि उसके व्यक्तित्व मे ही शायद कोई खामी है जिससे वर्षों का सान्निध्य पाकर, निकटता भी पाकर वह सफल नही हो पाया । क्षणिक सफलता से स्थायी असफलता उसे ठीक लगती क्योंकि क्षणिक सफलता के बाद की असफलता दारुण दु:ख देती है और स्थायी असफलता तो एक आदत सी डाल देती है दु:ख को झेलने और भोगने के लिए । कभी उसने कल्पना की थी कि स्मिता के आगोश ने उसे आवृत कर लिया है और वह तिनके की तरह बहा जा रहा है । पर स्वप्न या कल्पना जितनी मधुर होती है यथार्थ उतना ही कटु । यथार्थ के धरातल पर ही जीवन की वास्तविकता का, निर्मम सत्य का आभास हो पाता है । स्मिता उसे अच्छी लगी थी । उसे जीवन मे दो-एक अन्य लडकियो ने भी चाहा था लेकिन उनके प्रति वह रिसपान्सिव नहीं हो पाया था शायद वे उसे अपील नही कर सकी । *स्मिता उसकी आकांक्षाओ और अपेक्षाओ के अनुरूप थी, उसने उसे चाहा था,* उसको पाने का, उसके हृदय को जीतने का उसने सार्थक प्रयास भी किया था लेकिन नियति की विडम्बना यह रही कि स्मिता उसके प्रति रिसपान्सिव नहीं *हो पायी, जैसा उसने चाहा था । वह उसे अपने मन-मन्दिर मे प्रतिष्ठित नहीं* कर सकी । उसने उसे हमदर्द, दोस्त के अतिरिक्त भी कुछ समझा था पर इस अतिरिक्त में प्रेमी का स्वरूप शायद नही था । समवयस्क अपोजिट सेक्स के व्यक्ति के रूप मे आकर्षित भी हुई थी पर वह आकर्षण दोस्ती और प्रेम के बीच मे ही कही रुक गया था, प्रेम के रूप मे परिणत नही हो सका था शायद उसके सकोच और अहं ही इसके लिए जिम्मेदार थे अवरोध के रूप मे । सामान्य संबंध दो युवा हृदयों मे, जो अपोजिट सेक्स के हों, विकसित होते होते प्रेम के स्वरूप मे थोड़ी देर के लिए परिवर्तित होते हैं यही वह समय होता है, भरपूर लाभ उठाने का, उसे स्थायित्व प्रदान करने का, जो इस अवसर को चूक गया फिर तो प्रेम जनित भावनाएं समाप्त हो जाती हैं और पुन: सम्बन्ध सामान्य स्थिति मे आ जाते हैं । इसी मे अमित लाभान्वित न हो सका था, वह व्यावहारिक अधिक न था । भौतिक उपलब्धि की अपेक्षा वह मानसिक परितोष को अधिक महत्त्व देता था । दया की भीख को वह हेय समझता था । उसे अपने बल या पौरुष पर

विश्वास था। दान में मिली हुई चीज की अपेक्षा सम्मान के साथ, चाहत के साथ या अधिकार के साथ मिली हुई चीज का महत्त्व अधिक होता है। प्रेम तो वैसे भी अनमोल है। इसको उच्चता की भावना के साथ ग्रहण करना चाहिए। निज के अस्तित्व को बनाए रखकर। दूसरे का अस्तित्व स्वयं में तिरोहित हो जिससे अपना अस्तित्व भव्य रूप धारण कर सके या कम से कम समानता के स्तर पर एक दूसरे में स्वयं को तिरोहित किया जाए तभी प्रेम का वास्तविक सुख और आनन्द है। उसे स्मिता की निकटता मिली। कई बार उसे लगता कि वह निकट से निकटतर हो गया है, मंजिल अब करीब आ गई है। वह मंजिल को पाने का प्रयास करता और तभी उसे परिस्थिति-जन्य थपेड़ों का ऐसा आघात लगता कि मंजिल दूर हो जाती। वह मझधार में निरुद्देश्य भटकता हुआ स्वयं को पाता। यही उसके जीवन में होता आया है। इस प्रकार अमित की कोशिश पूर्ण न हो पाई। हर कोशिश उसे लगती कि अधूरी ही रही। वह पाने के लिए संकल्प करता, जैसे ऊँचाई पर चढ़ने की कोशिश कर रहा हो और आगे बढ़ता फिर उसे लगता जैसे वह सरक गया हो, इस प्रकार वह पीछे लौटता रहता। उसने मन-मन्दिर में स्मिता की मूर्ति प्रतिष्ठित की लेकिन उसकी अर्चना स्वीकारी न जा सकी। बहुत चाहा लेकिन प्रतिफल क्या मिला? अस्वीकार, हाँ यह प्रत्यक्ष न सही तो परोक्ष ही सही। स्वीकृति के अभाव में क्या अस्वीकृति नहीं समझनी चाहिए?

विचारों के सागर में अमित डूबा हुआ था। वह इस समारोह में अपनी उपस्थिति की सार्थकता पर विचार कर रहा था। रवि और अमित दोनों इस प्रकार से अपने-अपने ख्यालों में डूबे हुए थे कि उन्हें परस्पर बातें करने का ख्याल ही न रहा। वैसे भी उनमें निकटता कभी नहीं रही और स्मिता के कारण औपचारिकता के हद से वे आगे कभी न बढ़े। उधर जयमाला के कार्यक्रम के पश्चात् स्मिता और राजेश स्टेज पर कुर्सियों पर बैठे रहे। स्नैप्स लिए जा रहे थे। दोनों पक्ष के लोग बारी-बारी से आकर उन दोनों के साथ फोटो खिंचवा रहे थे। कोल्ड ड्रिंक्स चल रही थी। रिकार्डिंग हो रही थी। गीत-संगीत का समा बंधा था। इन दोनों यानि रवि और अमित को फोटो खिंचवाने की इच्छा नहीं थी शायद या उन्हें याद ही नहीं रहा। तभी स्मिता के डैडी ने आकर फोटो खिंचवाने के लिए कहा। उनकी तन्द्रा भंग हुई। अब उन दोनों को जाना ही पड़ा। अमित ने राजेश और स्मिता को बधाई दी। स्मिता ने अमित को कुछ संकेत किया। अमित ने सोचा कि स्मिता उससे कुछ कहना चाह रही है। वह स्मिता के पास गया तो ज्ञात हुआ कि स्मिता चाहती है उसकी चेयर के बगल में वह खड़ा हो

जाये। विवशतः रवि को राजेश के बगल मे खड़ा होना पड़ा। थोड़ी देर बाद डिनर के लिए सभी डिनर हाल में पहुँचे। अमित ने सारी व्यवस्था देख रखी थी। अतः उसे केवल सुपरविजन ही करना पड़ा। एक घंटे में डिनर का कार्यक्रम समाप्त हुआ। राजेश से अमित का परिचय हो ही गया था। इसलिये कोई बात कहनी हुयी तो वह अमित से कह देता था। स्मिता के मम्मी और डैडी अमित की सराहना करते क्योंकि उसने उनका हाथ बंटा दिया था। रवि को ऐसा लगा कि उसका मैग्नेटिक आकर्षण समाप्त हो चला है। पहले उसका इतना प्रभाव था कि जो वह कहता स्मिता उसे आँखें मूंदकर स्वीकार कर लेती जो उसकी आलोचना करता उसे वह कतई बर्दाश्त नहीं करती थी। अमित से सम्बन्ध टूटने के कगार पर आ गये, पर उसने जरा भी संकोच नहीं किया वह मध्यममार्गी नहीं थी, जिसे अपनाती, उसके दोष भी उसे गुण नजर आते। इधर समय के अन्तराल ने स्मिता को जीवन, जीने और समझने का अवसर दिया था उसके नजरिये में परिवर्तन आ चुका था। फिर भी कितना भी परिवर्तन क्यों न हो व्यक्ति अपनी मौलिकता नहीं छोड़ता। मध्य, रात्रि में विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम मन्त्रोच्चारण के साथ आरम्भ हुआ। सप्तपदी आदि सभी औपचारिक रस्मे पूरी की गयी। विवाह के समय पण्डित जी द्वारा प्रतिज्ञाएँ करायी गयी। दोनो ने एक दूसरे को वचन दिया। अमित रात्रि भर जागरण करता रहा। चाय तथा अन्य अपेक्षित सामग्री के जुटाने मे भी व्यस्त रहा। वचन के समय वह उदास भी हुआ। सोच रहा था काश उसे अवसर मिला होता, लेकिन सारी इच्छाएँ पूरी कहाँ होती है? तृप्ति भी तो एक प्रकार की आँख मिचौनी है। अधिकांश लोग अतृप्त ही रहते हैं। सभी बातों मे तृप्ति मिल भी कैसे सकती है? रात्रि बीती। प्रातः विदा की वेला आ पहुँची। सुबह नाश्ते के पश्चात् रात्रि जागरण का अलस भाव लिये हुये बैन्ड बाजों और शहनाई की मधुर ध्वनि के बीच विदा की रस्म पूरी की जा रही थी। वातावरण बोझिल हो उठा था। स्मिता के मम्मी डैडी के नेत्र अश्रुपूरित थे। होते भी क्यो न? आज उनकी लाडली नाज नखरों मे पली अपना नया घर बसाने जा रही थी। साथ ही उनका अब वह अधिकार नही रह गया था जो पहले था। स्मिता ने कहा, 'देखना, मैं तो कतई नही रोऊँगी। हंसते-हंसते ही विदा होऊँगी।" लेकिन अपने निश्चय पर वह कायम नही रह सकी। अमित की माँ भी इस विवाह में सम्मिलित हुयी थी। रवि का परिवार भी। रवि सोच रहा था कि बारात विदा हो तो वह प्रस्थान करे। अमित ने देखा स्मिता के नेत्र आँसुओं से भर गये हैं। वह सिसक रही है। मम्मी, डैडी और अन्य बन्धु-बान्धवों से गले मिलकर वह विदा हो रही थी। एक बार उसने अमित की ओर भी देखा। अमित ने दूर से ही हाथ उठा

दिया जैसे आशीर्वाद दे रहा हो। वह सोच रहा था कि स्मिता के साथ कितनी ही स्मृतियाँ जुड़ी हैं, मधुर भी और कटु भी भी। अब जब वह जा रही है तो क्या गिला और शिकवा ? उसके भाग्य में जितना बचा था, उतना उसे मिला। वह यही चाह रहा था कि स्मिता सुखी रहे। जीवन साथी के रूप में उसका चुनाव उसकी आकांक्षाओं के अनुरूप खरा उतरे। शायद सम्बन्ध की यह कड़ी अब टूट जाये क्योंकि विवाह हो जाने पर स्त्री हो या पुरुष विभिन्न व्यक्तियों से अपने सम्बन्धों पर पुनर्विचार करता है, विश्लेषण करता है इस प्रकार वह कुछ को अस्वीकार करता है और कुछ को स्वीकार। पता नहीं उसकी क्या स्थिति हो ? कुछ भी सही यदि सम्बन्ध जारी भी रहते हैं तो औपचारिक ही होंगे। इधर माँ का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। वह इतना व्यस्त रहा कि माँ की सेवा सुश्रुषा का अवसर ही नहीं मिल पाया। दो-चार दिन का अवकाश और रह गया है। इस बार मां को साथ ही ले जायेगा जिससे उनकी उचित देख-रेख हो सके। इस शहर में लुटी हुई हसरतों और यादों की टीस के अतिरिक्त रह भी क्या गया है ? स्मिता विदा होकर जा रही थी। घर के लोग कुछ दूर तक साथ गये। अमित भी पीछे रहकर जा रहा था। वह भारीपन महसूस कर रहा था। स्मिता बार-बार पीछे मुड़कर देख रही थी लेकिन कब तक ? आखिर वह विदा हो गयी। चली गयी नया घर बसाने, नया जीवन आरम्भ करने। इस प्रकार यह चैप्टर क्लोज हुआ। सदियों पुरानी चली आ रही इस प्रथा की एक बार और आवृत्ति हुई। कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था अमित को। स्मिता के मम्मी डैडी निढाल से पड़े थे। स्मिता चली गई तो क्या वह लौट जाये ? चाह तो यही रहा था, मायूसी की हालत में भी वह उत्साह और उल्लास बनाये था, शायद इसका कारण था स्मिता की मौजूदगी। शादी के बाद सभी चीजों की वापसी का कार्य भी महत्वपूर्ण होता है। किसी प्रकार उसने ये कार्य भी निपटाये और थका हारा वह घर पहुँचा। सभी नाते रिश्तेदार विदा हो चुके थे। घर पहुँचते ही निढाल सा वह लेट गया। स्मिता के विषय में वह सोच रहा था कि वह निर्णय शीघ्र कर लेती है। इन्टेलीजेन्ट होने पर भी समस्या के विविध पहलुओं पर गहराई से विचार करने की क्षमता का उसमें अभाव है। जब भी कोई निर्णय लेती है चाहे वह व्यक्ति का चुनाव ही क्यों न हो, सोचती है कि यह अन्तिम है, उसने अपनी मंजिल पा ली है, कुछ समय बाद वह असन्तुष्ट दिखाई पड़ती है जब उसे लगता है कि मंजिल की तलाश में कहीं कोई गलती या भूल हो गई इस प्रकार से वह फिर से जीवन संवारने में अपना मार्ग प्रशस्त कर लेती है। इतने पर भी अमित चाह रहा था कि यह तलाश उसके लिए स्थायी सिद्ध हो ! सुख-सुविधा से भरपूर

हो उसका दाम्पत्य जीवन ! इन्हीं बातों को सोचते हुए कब वह निद्रा में निमग्न हो गया, उसे पता न चला ।

× × ×

"स्मिता, क्या बात है तुम लगातार रोये चली जा रही हो ? कुछ बताती ही नहीं हो ।" आश्चर्यचकित होकर अमित ने पूछा । उसकी छुट्टियाँ समाप्त हो गई थी और दूसरे दिन माँ को साथ ले जाने का वह निश्चय कर चुका था । उसने सोचा स्मिता ने कहा था कि उसकी अनुपस्थिति में भी वह कभी उसका हाल जानने उसके घर नहीं पहुँचा था । यद्यपि उसका मन इस शहर से भर गया था और जल्द से जल्द से वह शहर को छोड़ देना चाहता था फिर भी उसने स्मिता के मम्मी डैडी से मिल लेना उचित समझा । जब वह स्मिता के यहाँ पहुँचा तो मालूम हुआ कि उसके मम्मी डैडी कहीं गये हुए है और स्मिता ड्राइंग रूम में बैठी सिसक रही है । वह हतप्रभ सा खड़ा रहा । उसे प्रतीत हुआ कि स्मिता को उसके बारे में पता नहीं चल पाया है । कुछ देर बाद उससे रहा नहीं गया तो वह पूछ बैठा । स्मिता ने उसकी ओर देखा पर कुछ उत्तर न दिया उसकी सिसकियाँ और तेज हो गई । अमित की समझ में नहीं आया कि वह किस प्रकार उसे सान्त्वना दे ? इतना तो वह समझ रहा था कि कोई अनहोनी हो गई है । वह सोच रहा था कि नये परिवेश मे, नये जीवन में वह इतनी लीन हो गई होगी कि प्रारम्भ के कुछ दिनों मे वह अपने पूर्व संसार को विस्मृत कर चुकी होगी, लेकिन इस नवीन और अप्रत्याशित रूप की तो उसे कल्पना भी नही थी । अन्त में वह स्मिता के आँसू पोंछता हुआ बार-बार आग्रह करने लगा । स्मिता का विवाह उसी शहर में हुआ था अतः उसका अपने माँ-बाप के घर आना-जाना सहज ही था । स्मिता ने डबडबाई आँखो से उसकी ओर देखा और बोली, "क्या बताऊँ अमित ? अपने दुर्भाग्य को रो रही हूँ ।"

"नहीं, दुर्भाग्य की बात मत कहो । सौभाग्य तो तुम्हारा अब प्रारम्भ हुआ था ।"

"मैंने भी यही सोचा था, लेकिन लगता है उसका अन्त भी अब जल्दी हो गया ।"

"मेरी कुछ समझ मे नही आ रहा है यह दो-तीन दिन मे ही सौभाग्य के साथ दुर्भाग्य की कालिमा कैसे आ गई ?" अमित ने लक्ष्य किया जैसे स्मिता रात-

भर ठीक से सो न पाई हो। उसकी आँखें कुछ सूजी सी लग रही थी। चेहरे पर दुख की गहरी छाप दिखाई पड़ रही थी।

"यह दुर्भाग्य मेरे ही हाथों आ गया है, एक रात सुख-शान्ति से दाम्पत्य सुख से परिपूर्ण बीत पाई थी मुझे लगा जीवन मे सब कुछ मिल गया है, भावनाओं के अनुरूप पति एक सक्षम पति जिसकी कामना कोई भी स्त्री कर सकती है फिर मन में ख्याल आया कहीं अतीत मेरा पीछा न करे इसलिए भावुकता के क्षण मे मैंने अपने अतीत के पृष्ठ खोल दिये।"

"क्या तुमने विवाह से पूर्व जीवन की बातें यानी प्रेम प्रसंग जैसे अत्यन्त गोपनीय तथ्य को भी उजागर कर दिया। यह क्या किया स्मिता तुमने ? कहने से पहले विचार तो कर लिया होता।"

"मैंने एक बार तुमसे पूछा था शायद तुम्हे याद हो कि क्या सभी बाते स्पष्ट बताकर बोझमुक्त होकर क्लीन स्लेट की तरह विवाह के पश्चात् जीवन *आरम्भ करना उपयुक्त न होगा ?"*

"हाँ, मुझे याद है और मैंने कहा था कि सामान्य स्थिति मे ऐसा नही करना चाहिये। काफी परखने, सोचने और समझने के बाद ही यदि यह अटूट विश्वास हो जाए कि कोई प्रतिकूल प्रतिक्रिया नही होगी तभी अपरिहार्य स्थिति में बताने के विषय मे सोचा जा सकता है, अन्यथा न कहना की उपयुक्त होगा।"

"मुझे तो ऐसा लगता है कि गलतियां शायद जीवन भर पीछा नही छोड़ती एक ही रात दाम्पत्य सुख का *भली-भाँति अनुभव किया होगा फिर वह अशुभ* रात भी आ गई जिसमे राजेश ने अपनी जीवन की एक दो घटनाएँ जो इसी प्रकार के प्रसंग से सम्बन्धित थी बताकर कहा, "तुम्हें भी चाहने वाले मिले होंगे। ये सब तो जीवन मे स्वाभाविक रूप से लगे ही रहते है। तुम निश्चिन्त होकर बताओ। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अन्यथा नही लूँगा।" पहले तो मैं खामोश रही। टालना भी चाहती थी लेकिन आग्रह प्रबल हो उठा और विश्वास भी जाने कैसे हो गया कि प्रतिकूल प्रतिक्रिया न होगी फिर भावना के प्रवाह मे मैं व्यक्त कर गई जो शायद मुझे नहीं करना चाहिये था।" स्मिता ने दीर्घ निःश्वास लेते हुए कहा।

"मैं जानता हूँ कि तुम सामान्य किस्म की लड़कियो मे से नहीं हो। तुमसे कुछ असामान्य या विशिष्ट व्यवहार की मैं अपेक्षा करता था लेकिन जिस बात को तुम इस रूप मे व्यक्त कर गई, सामान्यतः लड़कियाँ जीवन भर उसे छिपाए रखती है। लेकिन अब तुम्हें इतना मातम मनाने की क्या जरूरत पड़ गई, क्या तुम्हारा *विश्वास खरा नहीं उतरा ?"*

"इसी बात का रोना है, तब से उन्होंने बात करना तक बन्द कर दिया है। सोचती हूँ कि आरम्भ ही जब इस प्रकार हुआ तो जीवन किस प्रकार बीतेगा ?"

"तुरन्त तो शायद इस समस्या का कोई हल नही है लेकिन मुझे विश्वास है कि समय जो भी लगे तुम अपनी कर्तव्य-परायणता और अटूट प्यार से सम्बन्ध को सामान्य स्थिति मे ले आओगी।" अमित ने समझाते हुए कहा, "वैसे तो तुम स्वयं सक्षम हो फिर भी जीवन में किसी भी मोड़ पर यदि मेरी कोई आवश्यकता पड़े तो निःसंकोच कहना।"

उसी समय स्मिता के मम्मी-डैडी ने कमरे मे प्रवेश किया। स्मिता पहले की अपेक्षा कुछ सामान्य हो चली थी। अमित ने सोचा कि अब देर तक रुकने से कोई लाभ नही। उधर मम्मी और डैडी स्मिता से हाल-चाल पूछ रहे थे। अमित ने सबसे विदा ली और चला आया।

स्मिता संघर्ष करना और दृढ़ता से कठिनाईयो का सामना करना जानती थी उसने सोचा कि मम्मी और डैडी को सारी बात बताकर दुःखी करने से क्या लाभ ? यह तो उसकी अपनी समस्या है उसमे वे लोग भी क्या कर सकेंगे ? सिवा दुःखी होने के अतिरिक्त। पति के साथ रहकर ही समस्या का निदान सम्भव है। इसलिए थोडी देर औपचारिक बातों के पश्चात वह अपने नये घर मे पति के पास लौट आयी। उसने तो राजेश को विवाह के पहले ही सब कुछ बता देना चाहा था, पर उस समय उसने कुछ सुनना ही नही चाहा। उसे बताने की कोई जल्दी न थी, आवश्यक भी नहीं था। यदि आग्रह न किया गया होता और वह भावुक न हो गई होती तो शायद वह भी औरो की तरह इस चैप्टर को क्लोज ही रखती। यदि उसकी कोई गलती न हो तो वह अन्तिम दम तक जुझारु बनी रह सकती थी। लेकिन यहाँ पर वह अपने पक्ष को कमजोर समझती थी। कभी-कभी आक्रोश भी होता कि ये मर्द अपनी बातें बताते समय गर्व की अनुभूति करते हैं, दूसरे की बातों को जानने की प्रबल इच्छा रखते है, हर तरह का विश्वास दिला चुकने पर यदि किसी प्रकार वे जानने मे समर्थ हो जाते है तो बाद मे उसी को अस्त्र के रूप मे इस्तेमाल करते है। आखिर नारी कमजोर जो ठहरी, सोचते हैं कि वह उसका क्या कर लेगी ? क्या वे इस बात को नहीं समझते कि वे जो कुछ भी कर गुजरते है उसमे भी तो नारी होती है कही न कही। तो इसमें अस्वाभाविक क्या हुआ ? यदि कोई बात अस्वाभाविक है तो दोनो के लिए, नही तो किसी के लिए भी नही। वैसे पुरुष उदार बनेगा पर यह सिद्धान्ततः ही होगा, जहाँ व्यवहार की बात आएगी, यह उदारता न जाने कहाँ चली जाती है ? खैर, राजेश उससे

नहीं बोलते हैं, न गहो। वह अपना अधिकार नहीं मांगेगी, केवल अपना कर्तव्य किए जाएगी। अब वह उनकी छोटी से छोटी बातों और आवश्यकताओं का ख्याल रखती। इस प्रकार दिन बीतने लगे। वह जानती थी कि उसे सहारे रूपी धन की जरूरत है और यह स्थायी सहारा पति से ही मिल सकता है।

उधर राजेश ने कल्पना की थी कि स्मिता उससे लड़ेगी, झगड़ेगी फिर रोएगी तथा गिड़गिड़ाएगी। इससे उसके अंह को सन्तुष्टि मिलेगी लेकिन उसने देखा कि मौन रहकर वह उसकी सारी जरूरतें पूरी कर रही है। उसका दिल पसीज उठा। अपनी शारीरिक जरूरतों को पूरी करने के लिए वह उसे बाहों में भरने के लिए आतुर हो उठता। लेकिन फिर वह किसी प्रकार अपने को नियन्त्रित करता कि इस प्रकार यह पहल क्यों करें ? स्मिता उन औरतों की तरह नहीं थी जो सोचती हैं कि विवाह हो गया और अब सजने-संवरने की कोई जरूरत नहीं रह गई। यह भावना स्त्री में आयी नहीं कि वह उपेक्षा का शिकार हो जाती है। स्मिता इस तथ्य से खूब परिचित थी। इसलिए वह स्वयं को इस दिशा में जागरूक बनाए रखती। राजेश और स्मिता के इस नये वैवाहिक जीवन में दोनों की स्थिति यह थी कि देह के अस्तित्व को किस प्रकार सुख से परिपूर्ण बनाया जाये, कौन पहल करे ? राजेश यह बात भूल चुका था कि स्त्री चाहे पत्नी ही क्यों न हो पहल प्रायः नहीं करती। इस प्रकार एक रात दोनों बेचैनी से बिस्तर पर करवट बदल रहे थे दोनों की ही इच्छा एक दूसरे में खो जाने की, कुछ पाने की, कुछ देने की हो रही थी। दोनों में प्रत्येक को यह आभास था कि दूसरा भी जग रहा है। फिर राजेश को लगा जैसे उसने सिसकी की धीमी आवाज सुनी हो। उसने लाइट आन की तो देखा स्मिता ने करवट बदल ली, आखिर उससे रहा नहीं गया स्मिता के चेहरे को अपनी ओर घुमाया तो देखा वह आंसुओं से तर थी। फिर कैसा मान-मनौवल ? उसने आंसू पोंछे और फिर उद्वेग सा आ गया, हाथ शरीर की परिक्रमा करने लगे। स्मिता भी कुछ कह नहीं सकी। संयम का बांध टूट गया। फिर तो प्रवाह ही प्रवाह रह गया। प्रकृति की शाश्वत लीला आरम्भ हुई। वे एकाकार हो गये। सारे शिकवे शिकायत उस प्रवाह में बह गये। उस आनन्द के क्षण में सुख के साथ सुरक्षा की भावना भी निहित थी जिसने व्यापक आधार प्रदान किया था प्रेम सम्बन्ध को दृढ़तर बनाने में।

स्मिता ने चाहा कि वह अथवा राजेश या दोनों सर्विस कर लें जिससे आर्थिक सुरक्षा प्राप्त हो सके। खाली बैठने से दिमाग में व्यर्थ की खुराफात ही उत्पन्न होती है। अधिक से अधिक व्यस्त रहा जाये तभी खुश रहा जा सकता है। सर्विस के बिना जीवन-यापन तो हो सकता है घर के आर्थिक ससाधनों को देखते हुए लेकिन मनोनुकूल जीवन नहीं बिताया जा सकता। भौतिक जरूरतों को

यथेष्ट रूप मे पूरा नही किया जा सकता। उसने पति को भी प्रेरित किया और स्वयं इस दिशा मे सचेष्ट हो गई। वे न्यूजपेपर्स के "सिचुएशन वैकेन्ट" कालम को देखते और एप्लीकेशन भेज देते। छात्र जीवन मे बेरोजगारी का भयावह अनुभव नही हो पाता। छात्र जीवन मे उमगें और उल्लास होते हैं, उत्साह की अधिकता रहती है। यथार्थ का कटु अनुभव तो छात्र जीवन के पश्चात ही हो पाता है। स्मिता अपनी पर्सनाल्टी और बुद्धि चातुर्य से इन्टरव्यू मे प्रभावित तो करती पर बहुत जगहों पर वह देखती कि इन्टरव्यू से पहले ही सब कुछ तय हो चुका रहता है। इन्टरव्यू तो केवल फार्मेल्टी ही है फिर उसे यथार्थ के नग्न रूप को देखकर वितृष्णा भी होती। सर्विस के अलावा कोई विकल्प भी तो नही था। वह प्राइवेसी को प्रसन्द करती थी। इसी क्रम मे उसने अपना एक अलबम भी बना रखा था, जिसमें उसके बचपन से लेकर अब तक के सारे चित्र संग्रहीत थे। वह और उसका पति, इन दोनों के अलावा वह नही चाहती थी कि कोई तीसरा आकर उसकी सुख-शान्ति मे किसी प्रकार खलल डाले इसलिए वे दोनों अधिक किसी से मिलते जुलते नहीं थे। पर इस प्रकार का जीवन तो थोड़े दिनों तक जिया ही जा सकता है? समाज मे रहते हुए यह कैसे सम्भव है कि अन्य व्यक्तियों से सम्पर्क न हो, सर्विस करने की स्थिति में तो विशेष रूप से। स्मिता की सर्विस करने की कोई विशेष इच्छा नही थी। प्रारम्भ में वह यही चाहती थी लेकिन उसने देखा कि राजेश को सर्विस प्राप्त करने में सफलता के आसार धूमिल नजर आ रहे हैं तो उसने सोचा कि वह भी प्रयास करे। कुछ तो समस्या हल होगी, किसी एक को भी सर्विस मिल जाने पर। स्मिता को एक जगह रिसेप्शनिस्ट की जगह मिल गई लेकिन यह सर्विस उसके अनुकूल नही थी। उसे वहां की मार्डन लाईफ को देखकर अरुचि होती थी और जब उसने पाया कि लोग भोगलिप्सा का साधन बनाना चाहते हैं तो उसने बगैर देर किए रिजाइन कर दिया फिर वह एक मान्टेसरी स्कूल मे टीचर हो गई। यहाँ केवल आर्थिक शोषण ही था अर्थात वेतन बहुत कम दिया जाता था जिससे जीवन की जरूरतें पूरी नही हो सकती थी। इस सर्विस को भी वह छोड़ना चाहती थी लेकिन जब तक कोई ढंग की जॉब न मिल जाए तब तक इसे छोडना उपयुक्त न होगा, यही सोचकर वह सर्विस करती रही। वह विभिन्न कम्पटीटिव इक्जामिनेशन मे भी बैठी, कुछ और भी इन्टरव्यू दिये। एक दो बार ऐसा भी हुआ कि राजेश प्रतियोगी परीक्षा देने बाहर गया हुआ था, स्मिता को भी उन्ही डेट्स मे जाना था। इत्तफाक से अमित मां से मिलने आया हुआ था क्योंकि उसकी मां थोडे दिनों तक उसके साथ रहकर अपने पुश्तैनी मकान मे वापस आ गयी थी। स्मिता से अमित की भेंट हुई। स्मिता के डैडी के कहने पर अमित को साथ जाना पड़ा एग्जामिनेशन दिलाने या इन्टरव्यू दिलाने के लिये। तब उसने स्मिता का संघर्षशील रूप देखा था। मन ही मन उसने उसकी कर्तव्यनिष्ठा की प्रशंसा भी की। स्मिता अब कुछ रिजर्व रहने

लगी थी, अमित को कुछ भी नहीं खला। उसे लगा कि वह अपनी समस्याओं को अपने विवेक के अनुसार हल करना चाहती है। अमित ने यही कामना की कि उसे अपने उद्देश्य मे सफलता प्राप्त हो। उसे विश्वास हो चला था कि स्मिता पूर्व की भाँति इसमे भी सफल हो कर रहेगी।

दुर्भाग्य जब आता है तो मुसीबतें लाता है। यह मुसीबत अकेले ही नही आती जब आती है तो साथ और भी मुसीबतें ले आती है यह उक्ति यथार्थ रूप मे कितनी साकार हो रही थी इसका प्रत्यक्ष अनुभव स्मिता को हो रहा था। पति के साथ सन्तोषजनक रूप मे वह तालमेल बैठा भी नही पाई थी। उसे ढग की जाब भी अभी तक नही मिल पायी थी सिर्फ कहने भर के लिये वह एम्प्लाएड थी। इसी बीच राजेश का एक्सीडेंट हो गया। गम्भीर रूप से वह दुर्घटनाग्रस्त हुआ। हास्पिटल में उसे एडमिट कराया गया। स्मिता ने देखा तो उसका तन-मन काँप उठा। पूजा-पाठ मे उसे अधिक विश्वास नही था। एकदम अविश्वास हो, ऐसी भी बात नही थी। असहाय अवस्था में संकट के उपस्थित होने पर व्यक्ति ईश्वर की शरण मे जाता है। स्मिता भी इसकी अपवाद न थी। अपने लिये उसने आज तक कोई मनौती नहीं मानी थी। लेकिन राजेश के लिये या अपने जीवन सर्वस्व के लिये उसे झुकना पड़ा, ईश्वर के समक्ष। विनीत एवं दयनीय भाव से उसने याचना की, ईश्वर से। वह अब व्रत सम्बन्धी अनुष्ठान भी करने लगी थी। उसकी मम्मी और डैडी भी आये, ससुराल के लोग भी आये। अमित ने सुना वह भी चला आया। अन्य आत्मीय लोग भी आये। सभी ने यथासंभव ढाढस बंधाया और सान्त्वना दी। अमित को याद है वह समय जब आपरेशन के समय ब्लड की आवश्यकता पड़ी। बी ग्रुप का ब्लड राजेश का था। स्मिता और अमित का भी। अमित ने ब्लड देना चाहा। इसके लिये उसने पहल की थी। लेकिन स्मिता ने शान्त भाव से अमित को रोक दिया। "नही अमित, यह अधिकार मेरा है। इसलिये मेरे सक्षम रहते मैं नहीं चाहूंगी कि कोई और कष्ट उठाये।" अमित कुछ कह नही सका था। वह जानता था कि स्मिता किसी की बात नही मानेगी। बड़े आत्म विश्वास के साथ वह सजग रहकर देखभाल तथा अन्य परिचर्या मे व्यस्त रही। आडिग और जागरूक रहकर उसने दिनरात सेवा की, राजेश की। डाक्टर एवं नर्स से सम्पर्क करना उनसे परामर्श कर हिदायतें लेना और अनिवार्य रूप से उसका पालन करने के प्रति वह सचेष्ट रहती। सभी लोग थोड़े समय बाद चले गये थे, रह गयी अकेली स्मिता। सर्विस भी उसे छोड़नी पड़ी क्योंकि टैम्परेरी सर्विस में उसे इतनी लम्बी छुट्टी नहीं मिल सकती थी। संयोग से आपरेशन सफल रहा। स्मिता के इस जुझारू रूप को देखकर ईश्वर को भी मानो उस पर कृपा

हयी। आपरेशन की सफलता के पश्चात भी खतरा अभी स्थायी रूप से दूर नही हुआ था। इसलिये कुछ और दिन हॉस्पिटल मे रहना पड़ा। स्मिता ने आर्थिक सहयोग भी किसी से स्वीकार नही किया। अपनी जमा-पूँजी वह खर्च करती रही और जब वह समाप्त हो गई तो दो एक गहनों का मोह त्यागने मे उसे कोई देर नही लगी। पल भर भी उसने सकोच नही किया। इस प्रकार धन की व्यवस्था कर वह सारे इन्तजाम पूरे करती रही। उसने अपनी वेदना और मर्मान्तिक पीडा को अकेले ही झेला क्योंकि वह अपने दुःख को यथासंभव किसी के समक्ष व्यक्त नही करती थी। लगभग एक माह बाद आखिर जीवन-मरण के संघर्ष में उसने विजय प्राप्त कर ही ली और वह राजेश को घर ले आयी। वास्तव मे स्मिता की सेवा-सुश्रुषा का ही यह चमत्कार था जो राजेश को नवजीवन मिला और तेजी से वह रिकवर हो रहा था। अभी भी देखभाल की यथेष्ट जरूरत थी लेकिन स्थिति अब खतरे से बाहर थी, उसकी मेहनत सार्थक हुई और लगभग दो माह के उसके अथक एव अनवरत प्रयास के फलस्वरूप राजेश पूर्ण स्वस्थ हो गया। स्मिता ने मन ही मन ईश्वर को कोटि-कोटि धन्यवाद दिया, कृतज्ञ हुई जो उस सर्वशक्तिमान ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। राजेश भी स्मिता के इस नवीन रूप के समक्ष नतमस्तक हो उठा। स्मिता के प्रति आन्तरिक प्यार मे राजेश स्पष्ट रूप से इजाफा महसूस कर रहा था।

स्मिता ने चाहा कि उसे कोई सर्विस मिल जाये। संयोग से लीव वैकेन्सी पर उसे एक कालेज मे टीचर की जाब मिल गयी। अभी उसे ज्वाइन करने मे कुछेक दिन का समय बाकी ही था तभी उसे दारुण आघात का सामना करना पड़ा। उसके प्रिय डैडी का स्वर्गवास हो गया। उसे याद आ रहा था कि उसके डैडी उसको कितना मानते थे, सभी बच्चो मे उसी के प्रति उनकी ममता सबमें अधिक थी उन्होंने हमेशा उसका उत्साहवर्द्धन किया था, कभी निरुत्साहित नही किया। उसकी जिद्द के समक्ष वह झुक जाते थे भले ही उसकी जिद्द जायज न भी रही हो। अब कौन उसे प्रेरणा देगा ? उसे लडकी नही लडके के रूप में वह मानते थे। हर स्थिति मे उसका साथ दिया करते थे। मम्मी के नाराज हो जाने पर वह उसी का पक्ष लेकर मम्मी को समझा देते थे। लगता था कि उसे सच्चे रूप मे चाहने वाले सभी उससे दूर होते जा रहे है और जीवन सागर मे नितान्त अकेली रहकर ही उसे जूझना है। वह बिलख-बिलख कर रोई। राजेश के साथ जाकर डैडी की चिता जलते हुए वह देख रही थी बचपन से लेकर अब तक बिताए गये समय मे उनके सान्निध्य की विभिन्न यादें उसके मानस पटल पर अंकित हो रही थी। मम्मी को भी ढाढस बँधाना होगा। वह बेचारी तो टूट चुकी है, कितनी तो जिम्मे-

दारियां हैं उन पर। इस प्रकार वह अपने पति के साथ मम्मी के यहाँ ही रही। हर प्रकार से मम्मी को तथा परिवार के सदस्यों को इस दुःखद स्थिति का आघात कम हो सके, इसके लिए प्रयासरत रहती। ऐसा लग रहा था कि वह उम्र में मानो बड़ी हो गई हो, और सबको सान्त्वना दे रही हो। आखिर उसे लौटना ही पड़ा क्योंकि सर्विस जो ज्वाइन करनी थी। वह इस बात को भली-भाँति जानती थी कि किसी दुखद स्थिति को जानने का दर्द तब और बढ़ जाता है, जब हम जानते हैं कि उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता है।

इस बीच स्मिता और राजेश का दाम्पत्य जीवन यद्यपि सामान्य तो नहीं हो पाया था जैसा होना चाहिए था फिर भी कुल मिलाकर अधिक असन्तोषजनक स्थिति नहीं थी। यही कहा जा सकता था कि सामान्य की ओर अग्रसर था। दाम्पत्य सुख की परिणिति के रूप में स्मिता अब गर्भवती हो गई थी। उसके गर्भवती हो जाने के कारण उसके अंगों की स्थूलता दृष्टिगत होने लगी थी। उसके शरीर में भराव आ गया था जिससे उसकी देहयष्टि आकर्षक हो गई थी। गर्भवती होने की स्थिति में प्रारम्भ के महीनों में भरा-भरा सा शरीर ऐसी प्रतीति देते है कि लगता है भरी नदी सा ठहराव आ गया हो, यही स्थिति स्मिता की थी। अब वह खान-पान के प्रति सतर्कता बरतने लगी थी। नये मेहमान के स्वागत के लिए वह स्वयं को तैयार कर रही थी। धीरे-धीरे पति के सान्निध्य के प्रति वह बेखबर सी भी होने लगी जो ऐसी हालात में स्वाभाविक रूप से होता था। सर्विस अब भी वह कर रही थी पर सर्विस तो एक सीमित अवधि के लिए ही थी। अवधि पूर्ण होते ही सर्विस समाप्त हो गई। वह अपने पति की देख-रेख, सर्विस तथा आने वाले शिशु की तैयारी में व्यस्त रहने लगी थी। सर्विस समाप्त होने पर उसे एक से तो मुक्ति मिली, अब उसे बाकी पर ही ध्यान देना रह गया था। गर्भकाल के पूर्ण होने पर उसने पुत्र को जन्म दिया। वह हर्षित हुई। स्त्री की पूर्णता उसके मातृत्व में ही है। इस प्रकार पूर्णता प्राप्त कर उसको बेहद खुशी हुई। उसने पहले से ही सोच रखा था कि पुत्र हुआ तो अंकित और कन्या हुई तो स्मृति नाम रखूँगी। धूम-धाम से नामकरण संस्कार सम्पन्न हुआ और पुत्र का नाम अंकित ही रखा गया। अमित को भी निमन्त्रण मिला था पर परिस्थितिजन्य विवशता के कारण वह इस समारोह में सम्मिलित न हो सका था। नाम के विषय में स्मिता ने कभी अमित से अपने विचार व्यक्त किए थे इसलिए उसने अनुमान लगाया कि संभवतः वही नाम रखा गया होगा। उसने ग्रीटिंग्स टेलीग्राम प्रेषित कर दिया था।

स्मिता को जीवन के यथार्थ रूप का अनुभव प्राप्त हो रहा था। परिस्थितियों से संघर्ष करने में उसका जो रूप प्रकट हुआ उससे उसमें आत्मविश्वास की

वृद्धि हुई। वह स्वयं मे परिवर्तन महसूस करने लगी थी। समय अपने आप व्यक्ति मे बहुत कुछ परिवर्तन ला देता है। समय खुद एक शिक्षक है जो व्यक्ति को बहुत कुछ सिखा देता है। समय व्यतीत होने के साथ सुख-दुख के प्राप्त किए गए अनुभव यादो का इतिहास बन जाते है। स्मिता अब अपने वर्तमान मे ही सन्तुष्ट रहने का प्रयास कर रही थी। अतीत की बातें कभी-कभार ही उसे याद आती, वह वैसे भी अतीत मे नही वर्तमान मे जीने की आदी थी। वर्तमान के आधार पर ही वह भविष्य के स्वप्नो का जाल बुनती थी। कहा जाता है कि पहला प्यार न भूलने वाली चीज है और यह प्यार प्रायः किशोर वय मे ही होता है। जिसमे व्यक्ति विकास की ओर तेजी से उन्मुख रहता है तथा सावेगिक रूप से अ-िथर भी। इस प्यार मे जोश-खरोश होता है, उद्वेग भी लेकिन यह स्थायी नही होता क्योंकि उसमे गहराई नही होती। इसलिए बाद मे सोच-समझकर किया गया प्यार पहले प्यार से भी अधिक प्रभावी हो सकता है। स्मिता अब राजेश के प्रति अपने प्यार को संवेदनशीलता के साथ अधिक प्रभावी रूप मे ग्रहण करना चाह रही थी जिससे उसका दाम्पत्य जीवन सुखी हो सके।

सुख-दुख जीवन मे धूप-छाँव की तरह लगे रहते हैं। प्रायः यह देखा जाता है कि सुख या दुख ज्यादा स्थायी नहीं होते हैं, अपवादो को छोडकर। जिस प्रकार दुख या मुसीबत अकेली नही आती, अन्य कठिनाइयों या समस्याओ को भी लाती हैं उसी प्रकार सुख के दिन भी जब आते है तो वह भी शायद अकेले नही आते हैं। उस दिन स्मिता को लगा कि उसका परिश्रम, उसकी साधना व्यर्थ नही गई जब एक प्रतियोगी परीक्षा मे सफलता उसने प्राप्त की। उसे एक नेशनलाइज्ड बैंक मे कलर्क की पोस्ट पाने मे सफलता मिल ही गई। इसके लिए वह लिखित परीक्षा और बाद मे साक्षात्कार मे सफल रही। जिस दिन उसे एप्वाइन्टमेन्ट लेटर मिला, उसकी खुशी का कोई अन्त न था। उसे लगा कि उसके विश्वास का दीपक प्रज्ज्वलित हो उठा है। सर्विस ज्वाइन करने के लिए उसे निकट के शहर मे ही जाना था। उसके मन मे भ्रम के घेरे बन रहे थे कि क्या वह अपने दाम्पत्य जीवन को संवार सकेगी? वे सभी घेरे अब टूट चुके थे। वह समझ रही थी कि अब उसे आर्थिक सुरक्षा का आधार प्राप्त हो रहा है। वह आत्मनिर्भर रहकर अपने परिवार का पालन करने मे सक्षम हो गयी है। अपनी भौतिक जरूरतो को पूरा करने मे अब उसे कठिनाई का सामना नही करना पडेगा। उसके दाम्पत्य जीवन के सुख में आर्थिक समस्या भी एक अवरोधक के रूप में थी। उसे लग रहा था कि फर्म डिटरमिनेशन से व्यक्ति अपने प्राप्य को प्राप्त कर ही लेता है। अभी कुछ दिनों पूर्व दाम्पत्य जीवन उसे एक ऐसे कगार पर दिखाई पड़ रहा था। जहाँ छिन्न-भिन्न

होने की भयावह सम्भावना उपस्थित हो गई थी। फिर धीरे-धीरे सभी समस्यायें दूर होती गईं। दाम्पत्य जीवन सामान्य नही तो लगभग सामान्य हो चला था। स्त्री के रूप में पुत्र को प्राप्त कर वह अपनी पूर्णता प्राप्त कर चुकी थी। उसके दाम्पत्य रूपी वाटिका मे पुत्र के रूप मे पुष्प खिल चुका था। पति को नवजीवन मिल चुका था। डैडी के प्रभाव मे उनसे प्राप्त प्रेरणा से वह अपने मे संकल्प एव आत्मविश्वास और अधिक संजो चुकी थी। परिस्थितियों से संघर्ष कर उसने अवरोधों पर विजय प्राप्त कर ली थी। उस शहर मे जहाँ उसे ज्वाइन करना था, कोई वर्किंग वीमन होस्टल नही था, इसलिए रहने की समस्या हल करने मे थोडा समय उसे जरूर लगेगा। तब तक वह अपने रिलेटिव के यहाँ रहकर आवास की व्यवस्था कुछ दिनों मे कर लेगी। अंकित को तो वह अपनी मदर-इन-ला की देख-रेख में सौंपकर निश्चिन्त हो सकती है। वह राजेश के साथ अपनी सर्विस ज्वाइन करने गई। अमित को पता नहीं कैसे सभी बातो की जानकारी होती रहती थी। जिस दिन स्मिता ने ज्वाइनिंग रिपोर्ट दी उसी दिन अमित का काग्रेचुलेशन्स का टेलीग्राम उसे मिला।

"ओह, यह अमित भी अजीब है, मेरी छोटी से छोटी बातो की जानकारी भी खूब रखता है। लगता है जैसे उसे और कोई काम ही नही है। खैर भेंट होने दो पूछूँगी कि नामकरण पर आना क्यो नही हुआ?" मन ही मन उसने कहा लेकिन उसे अच्छा लगा कि कोई तो ऐसा है जो बगैर सूचना दिए ही उत्साहवर्द्धन के लिए तत्पर रहता है। अब राजेश और स्मिता आवास ढूँढ़ने के प्रयास मे जी-जान से लगे हुए थे। आखिर किराए पर रहने लायक क्वार्टर मिल ही गया। अब राजेश को जाकर माँ और अंकित को लेकर कुछ दिनो में आना था। स्मिता को कुछ दिनों का यह वियोग रुचिकर तो नही था पर क्या करती? उसने यही सोचकर स्वयं को सान्त्वना दी कि प्रेम का सही अर्थों मे रसास्वादन करना हो तो वियोग भी जरूरी होता है, थोडे समय के लिए। पति और पुत्र के साथ भावी सुख की कल्पना मे वह निमग्न रहने लगी। विभिन्न प्रकार की योजनाएँ उसके मस्तिष्क मे पनपने लगी। समय के साथ वह नये परिवेश मे समायोजित हो गई। वह जाब-सेटिसफैक्शन महसूस कर रही थी। कितनी कोशिशो के बाद उसे ढंग की योग्यता के अनुरूप जाब मिली फिर इसके फ्यूचर प्रोसपेक्ट्स भी हैं। कोशिश कर योग्यता के आधार पर वह राइज् कर सकती है। वैसे भी उसे परिवर्तनशील जीवन प्रिय था। साथ ही उसमें यह चाहना भी होने लगी थी कि राजेश को भी कोई उपयुक्त जाब मिल जाती तो जीवन कितना सुखमय हो जाता। पत्नी सर्विस कर रही हो और पति अनएम्प्लाइड बैठा हो तो क्या यह स्थिति ठीक होगी?

कदापि नहीं, इससे तो पति भी कुण्ठाग्रस्त हो सकता है। नहीं, वह यह स्थिति ज्यादा समय तक नही रहने देगी। उसे पति को प्रेरित करना ही होगा जिससे वह और भी सचेष्ट होकर जाब के लिए प्रयास करें। चाहे योग्यता के आधार पर सर्विस मिले या सिफारिश से अथवा चलन के मुताबिक दे दिलाकर ही क्यों न, अब तो उनकी सर्विस ही उसका एकमात्र लक्ष्य रह गया था। भले ही कोई आर्थिक कठिनाई न रह गई हो लेकिन सामाजिक दृष्टि से पति का पत्नी पर निर्भर रहना उपयुक्त नहीं होता। वह स्वयं भी इस स्थिति को नही चाहती थी। कुछ दिनो बाद राजेश, उनकी माँ और अंकित के आ जाने पर स्मिता ने राहत महसूस किया।

स्मिता के द्वारा प्रेरित किए जाने पर राजेश अब सर्विस के लिए प्रयत्नशील था। उसे भी अच्छा नही लग रहा था कि उसकी पत्नी सर्विस करे और वह खाली बैठा रहे। अपनी नजरो मे वह स्वयं को हेय महसूस करने लगा था। कभी उसे लगता कि स्मिता का बौद्धिक स्तर उससे उच्च है। उसका शैक्षणिक रिकार्ड भी स्मिता से इनफीरियर ही था। इससे कभी-कभी वह कुण्ठाग्रस्त भी होता। लगातार प्रयास के बावजूद भी जाब का न मिल पाना, धीरे-धीरे उसमे ग्रन्थि को जन्म दे रही थी। इन्टरव्यू मे अपनी परफार्मेन्स से भी वह सन्तुष्ट नहीं हो पाता, इसलिए परिणाम निकलने से पूर्व ही उसे सफलता के आसार धूमिल नजर आते। अब वह सोचने लगा था कि यदि निकट भविष्य मे शीघ्र सर्विस नहीं मिलती तो वह ओवर एज हो जाएगा। तब उसकी क्या स्थिति रहेगी, क्या वह जीवन भर अनएम्प्लाएड ही रह जायेगा ? फिर स्मिता क्या सोचेगी ? क्या वह समानता के स्तर पर पति के अधिकारों का पूर्ण रूप से उपयोग कर पाएगा ? ये प्रश्न उसे कुरेदते रहते और निराशा एव अन्तर्द्वन्द के भंवर मे वह डूबता उतराता। कभी कभी उसे लगता कि स्मिता के प्रति उसके मन में कोई काम्पलेक्स सा बन रहा है। हाँ, यह सत्य था, भले ही स्मिता ने उसकी सेवा सुश्रुषा की है, उसे पूर्ण समर्पण भी दिया है। यद्यपि उसकी पत्नी ने कनफेम कर लिया था लेकिन उसका कनफेशन उसे ऐसा प्रतीत होता जैसे उसने अपनी गल्तियों की जिम्मेदारो दूसरों के कन्धे पर डालकर मुक्त होने का प्रयास किया हो। फिर वह स्मिता के प्रति अपने व्यवहार को सामान्य नही बना पाता था। स्मिता भी इस बात को महसूस कर रही थी कि जैसा उसने सोचा था, आशा की थी कि दाम्पत्य जीवन सामान्य हो जाएगा वैसा नहो हो पाया। प्रारम्भ मे उसे कुछ प्रतीति भले हुई हो लेकिन बाद में उसने पाया कि वह भ्रान्ति निकली। राजेश, स्मिता के अतीत को कितना भी भूलने का प्रयास करता, उससे मुक्त नहीं हो पाता था। पत्नी के साथ रहते हुए भी अकेलापन वह महसूस करता, यद्यपि उसकी जरूरतें पूरी हो

रही थी। वासना की पूर्ति भी वह कर लेता पर कभी-कभी उसे महसूस होता कि विशेष इच्छा न होने पर भी स्मिता के दुख को कम करने के लिए उसने वासना की आपूर्ति कर ली हो या आपूर्ति कर दी हो। स्मिता थकी हारी आफिस से लौटती, प्रेम के दो बोल सुनने के लिए तरस जाती। उसे आशा थी कि घर के काम में पति उसका हाथ बटाएगा लेकिन उसे आफिस जाने के पूर्व और लौटने के पश्चात् घर के काम स्वयं निपटाने पड़ते। एक व्यक्ति की कमाई से घर का खर्च तो चल रहा था लेकिन इतनी आय नहीं थी कि फिजूल-खर्ची की जाती। बहुत आवश्यक होने पर ही वह राजेश को समझाती क्योंकि वह स्वयं समझती थी कि कहीं उसका कुछ कहना राजेश के अहं को चोट न पहुँचा दे और ऐसा हुआ भी। कुछेक मौकों पर स्मिता और राजेश के अहं में टकराहट हुई जिसके कारण दरार उत्पन्न होने लगी। इसके बाद स्मिता ने कुछ कहना-सुनना छोड़ दिया फिर भी जब तब राजेश स्मिता पर अनुशासन थोपने का प्रयास करता जिससे वह तिलमिला जाती, लेकिन अपने दर्द को वह पी जाती। अब भी वह विश्वास बनाए हुए थी कि पति को सर्विस मिल जाने पर, उसके व्यस्त हो जाने पर इन छोटी-छोटी बातों पर किसी का ध्यान न जाएगा और उसका दाम्पत्य जीवन सुखमय हो जायेगा।

बहुत भाग-दौड़ के पश्चात् राजेश को क्षेत्रीय यातायात एवं परिवहन विभाग में सर्विस मिल गई। वह क्लर्क नियुक्त हो गया। उसकी नियुक्ति इस शहर से काफी दूर प्रदेश के सीमान्त नगर में हो गई। पति-पत्नी दोनों सर्विस करते हों तो यह आवश्यक नहीं कि सदैव साथ ही रहें या एक ही शहर में सर्विस करें फिर राजेश की तो यह फर्स्ट पोस्टिंग थी इसलिए दूर क्या और पास क्या? स्मिता को बेहद खुशी हुई, राजेश भी कम खुश न था। वह जानता था कि उसका वेतन स्मिता की तुलना में कम भले ही हो लेकिन उस जाब में एक्स्ट्रा बेनिफिट को देखते हुए उसकी स्थिति कमजोर नहीं होगी। राजेश को ज्वाइन करने जाना था। पहले वह माँ और अंकित को घर पहुँचा आया, फिर वह ज्वाइन करने चला गया. स्मिता भी साथ गई। राजेश के सर्विस ज्वाइन कर लेने पर स्मिता लौट आयी। अब गृहस्थी दो जगहों में बँट गई थी। स्मिता पुनः अकेली रह गई थी। उसे अकेलापन खलता। छुट्टी के दिनों में कभी वह राजेश के पास चली जाती, दो-एक दिन बिता कर वापस आ जाती। कभी राजेश स्वयं आ जाता। यदि कभी ज्यादा दिनों की छुट्टियाँ होती तो पहले से ही प्रोग्राम तय कर वे दोनों अंकित और माँ को देख आते। इस प्रकार दिन गुजरते रहे। अब कभी-कभी ही वे लोग मिलते और दो-चार दिन साथ रहकर अलग हो जाते। अलगाव का दुख तो होता पर स्मिता अवश्य यह महसूस करती थी कि तृप्ति मिले या न मिले

उसे पुरुष के सहारे की आवश्यकता बनी रहती है। वह जानती थी कि पति का स्थानान्तरण एकाध साल से पूर्व न हो सकेगा। फिर भी स्थिति पहले से बेहतर थी। टकराव की स्थिति उत्पन्न नहीं हो पाती थी। स्थानान्तरण के लिए राजेश प्रयत्नशील था। स्मिता पहले से ही उत्तर प्रदेश के एक महानगर में पोस्टेड थी। अन्ततोगत्वा राजेश को अपने प्रयास मे सफलता मिली। उसका स्थानान्तरण उसी शहर मे हो गया जहाँ स्मिता कार्यरत थी। अंकित अब कुछ बड़ा हो गया था। उसके लिए माँ को वृद्धावस्था मे कष्ट देना उपयुक्त नहीं समझा गया। आया की व्यवस्था कर ली गई जिससे दोनों के आफिस चले जाने पर अंकित की देख-रेख सम्भव हो सके। इस प्रकार राजेश, स्मिता और अंकित परिवार की इकाई के सभी सदस्यों का साथ रहना सम्भव हुआ। आर्थिक संसाधन पहले की अपेक्षा बढ़ गये थे अतः जैसा कि स्वाभाविक ही था वे भौतिक साधनों को जुटाने में व्यस्त हो गये।

× × ×

"क्या मैंने यही सब चाहा था ? मन की शान्ति के लिए मैटीरियलिस्टिक चीजें ही क्या पर्याप्त होती है ?" स्मिता हताश होकर आक्रोश व्यक्त करते हुए बोली।

"तुम चाहती क्या हो ? क्या इन सब चीजों को मैंने केवल अपने लिए ही जुटाया है ?" राजेश ने स्मिता के प्रश्न का उत्तर प्रश्न मे ही देते हुए कहा।

"शादी हुए तीन वर्ष बीत चुके है, इतने दिनो मे यदि तुम मुझे या मेरी इच्छाओं को नहीं समझ सके तो मुझे यही कहना पड़ेगा कि शायद तुम कभी नहीं समझ पाओगे।"

आर्द्र स्वर मे वह बोली।

"अब तो मुझे भी ऐसा लगता है कि न तो मैं तुम्हें शादी के पूर्व ही समझ पाया और न बाद मे ही।" उद्वेगहीन स्वर में राजेश ने कहा।

"क्यों, मैंने तो तुम्हें शादी के पूर्व भी अपने बारे में सब कुछ बताना और समझाना चाहा था, लेकिन तुमने जरूरत ही न समझी।"

"अच्छा होता कि विवाह से पूर्व ही मुझे सही मायने में तुम्हे समझने का प्रयास करना चाहिए था। ऐसा न कर वाकई मैंने गलती की।"

"गलती तुमने नही, राजेश शायद मैंने की जो एक खुली किताब की तरह जिंदगी के सारे पन्ने खोलकर रख दिए।" गहरे निःश्वास के साथ उसने कहा।

"हां स्मिता, तुम ठीक कहती हो, तुमने न कहा होता तो शायद अच्छा रहा होता। ये हर समय कांटों की चुभन तो मुझे न होती।"

"तो सच कहने का मुझे यही पुरस्कार मिला।"

"मैं क्या करूं, जब तुम्हारे अतीत को देखता हूं तो अजीब सी अनुभूति होती है जिसे मैं व्यक्त नही कर सकता।" राजेश सब्र न कर सका।

"शायद इसीलिए तुम्हारे मन में मेरे प्रति उपेक्षा के भाव पैदा हो गये हैं।" दुखद स्वर में स्मिता ने कहा।

"तुम इसे उपेक्षा कहती हो पर मैं तो यही कहूंगा कि मैंने तुम्हे सदैव चाहा है। व्यवहार में कभी कुछ विपरीत प्रदर्शित हो जाता है तो उसे तुम मेरी उलझन मान लो।"

"तुम्हारे व्यवहार से मुझे क्या अनुभूति होती है बताऊं........महीनो कटे रहना बोलचाल बन्द कर देना, खैर............रहने दो इन सब बातो को, कहने से लाभ ही क्या? तुम्हें दूसरो की अनुभूति से क्या मतलब?" स्मिता ने रो पड़ने के अन्दाज में कहा।

"तुम आरोप लगा कर मेरा अपमान कर रही हो। मैंने सभी बातों को भूलने की चेष्टा की और तुम देख रही हो कि अब हम लोग खुशहाली के दिन बिता रहे हैं।"

"नही राजेश। तुम समझते हो कि स्कूटर, फ्रिज, टी. वी., कूलर आदि ये सब क्या खुशी दे सकते हैं? इन बेजान चीजो से आराम भले ही मिल जाए पर खुशी तो इन्सान को इन्सान ही दे सकता है।" यथार्थ को व्यक्त करते हुए उसने कहा।

"अगर तुम समझती हो कि मैंने तुम्हें अब तक दुःख ही दिया है तो इससे अधिक मैं तुम्हे और कुछ नही दे सकता।" राजेश के स्वर मे कठोरता थी।

"यानी तुम कहना चाहते हो कि तुमने मेरे लिए काफी त्याग किया है।"

"नही, त्याग का ठेका तो तुम ही ले सकती हो। मेरे तुम्हारे विचारों में बहुत अन्तर है। मैं ही था जो अनदेखा करता रहा।"

"अगर अनदेखा ही करते रहते तो बात-बात पर सन्देह और अविश्वास न बनाए रखते।"

"क्या करूं, जो जिसके योग्य है, उसे वही तो मिलेगा।"

"तुम इसी रूप मे मेरा मूल्यांकन करते हो। मेरी कर्तव्यनिष्ठा, समर्पण और प्यार का प्रतिफल तुमने खूब दिया है।"

"मैंने भौतिक सुविधाओं की सारी आवश्यक चीजें जुटा दी। इससे अधिक की और क्या आशा तुम करती हो ?"

"भौतिक सुविधा की बात भी तुमने खूब कही। आज तक मैंने अपने या अंकित की किसी जरूरत के लिए तुमसे कुछ कहा और सच बताओ क्या तुमने जानना चाहा हमारी जरूरतों को ? तुम तो आत्म-केन्द्रित बने रहे, अपनी जरूरतों को पूरा करना चाहा। हमें चाहे अभाव रहा हो लेकिन तुम मनी माइन्डेड बने रहे। तुम्हारे लिए तो हर चीज का मापदण्ड सिर्फ एक है और वह है रुपया।"

"देखो स्मिता, तुम हद से आगे बढ रही हो, अब भी मैं कहता हूँ कि चुप हो जाओ अन्यथा अच्छा नहीं होगा। राजेश चीख पड़ा।"

"हाँ तुम तो यही कहोगे ही। अपने बल-पौरुष का गर्व है। उस आरजू को भी पूरी कर लो क्योंकि शक्ति प्रदर्शन तो तुम्हारे लिए कोई नयी बात नहीं रही।" स्मिता स्वयं को नियन्त्रित नहीं कर पाई और भावावेश मे कह बैठी।

राजेश ने किसी प्रकार स्वयं को नियन्त्रित किया और क्रोध में उफनता हुआ बाहर चला गया। स्मिता सोच रही थी कि अब तक उसको वैवाहिक जीवन मे क्या मिला ? पति से उपेक्षा, तिरस्कार और अपमान, यही न नारी का स्वभाव भी अजीब होता है, इनकार चाहे वह सह भी ले पर पुरुष की उपेक्षा या तटस्थता बर्दाशत करना उसके लिए अत्यन्त कठिन होता है। अब तक के विवाहित जीवन मे उसे खुशी के, दाम्पत्य सुख के सीमित क्षण ही मिले थे। अधिकांश मे तो उसे दुख ही झेलना पड़ा था। उसे सन्तोष था तो केवल इस बात का कि वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर थी। अब उसे अपनी जरूरतों के लिए पति पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं रह गई थी लेकिन परिवार में पति का स्थान पत्नी से गुरुतर ही माना जाता है, इसलिए पति को ही अर्थ के मामले मे सर्वाधिकार उसने सौंप रखा था। अपनी आवश्यकता के लिए अपरिहार्य स्थिति मे वह संचित राशि में से खर्च अवश्य करती फिर भी उसकी इच्छा बनी रहती कि पति स्वयं, उसका उसके बेटे की जरूरत को महसूस करते हुए इसमे पहल करे। उसे लगता कि उसमे और राजेश मे वासना सम्बन्धी कमजोरी, आवेश और प्यास है तो अवश्य ही लेकिन राजेश जब स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रख पाता तो वह उसके सान्निध्य मे इस जरूरत की पूर्ति कर लेता है, दैहिक सन्तुष्टि प्राप्त कर लेता है, और उन्हीं क्षणों में वह उसके प्रति प्रेमपूर्ण भी होता है। तब स्मिता को महसूस होता कि उसका पति उसको चाहता भी है। इस प्रकार वह अपने मन के भ्रम को बनाए रखती लेकिन अधिकांश समय मे राजेश की तटस्थता या उपेक्षा तथा अतीत को

दाम्पत्य जीवन को मधुर ढग से जीना है। इस पर भी उसने प्रयास किया
राजेश अनुगामी न बने कोई बात नही, वह ही अनुगामिनी बनी रहेगी
फिर भी अपेक्षित दाम्पत्य सुख उसे नसीब न हो सका। राजेश के साथ
समायोजन के अभाव मे वह अकेलापन महसूस कर रही थी जो स्वाभाविक
।

वह एक ही दायरे मे बँधकर जोते रहना और रोजी-रोटी के रोजमर्रे की
को ढोते रहने को जिन्दगी का मकसद नहीं मानती थी। वह चाहती थी
नया आम ढर्रे मे हटकर जोखिम भरा कार्य करे, चाहे उसे जिन्दगी को
पर क्यों न लगाना पड़े या अपना सब कुछ क्यों न खोना पड़े, अगर
ी सन्तुष्ट होती तो इस प्रकार की चाह उतनी प्रवल नहीं होती पर
होने की स्थिति में इसकी चाहत और भी बढ गई थी। विवाह से पूर्व
श मे आकर वह जिन्दगी से खेल गई थी वह तो संयोग ही था कि तत्काल
एड मिल गई और वह बच गई। कभी उसे लगता कि जीवन के प्रति
ाकर वह क्या करे अगर उसकी अभिलाषायें पूर्ण नहीं होती? ऐसा नही
न के प्रति उसमें कोई उमंग या उत्साह न हो आखिर वह स्वयं में जीवन्त
फिर भी वैराग्य एवं अवसाद के क्षणो मे वह सोचती, इस प्रकार के जीवन
अर्थ रहा? तो क्या वह जीवन समाप्त कर ले? नहीं, यह तो समस्या
नहीं है। इस प्रकार वह समस्या से विमुख हो जाएगी। उसकी जिन्दगी
ी ही है? कैसे कह दे वह जब कि पति और सन्तान किसी न किसी
ससे जुड़े है। जीवन पर इतना ही वश रहा होता तो यह जीवन इसके
माप्त न हो गया होता? क्या उसने प्रयास नहीं किया भले ही उद्वेग
ी लेकिन वह सफल नही हो पाई तभी तो वह प्राब्लम से जूझती रही।
नही कि उसे अपने जीवन में आनन्द के क्षण न मिले हों। मिले और
उमके स्वयं के प्रयास से लेकिन स्थायी न हो सके और तब उसे महसूस
उसकी खोज सार्थक नहीं रही। वह सच्चे अर्थों मे जीने का स्वाद और
ाप्त करना चाहती थी लेकिन स्थायी तौर पर।

मता सोचती कि उसे जीवन मे यह भटकाव, निराशा, आकांक्षाओं की
जीवन का अंधेरा उसी के लिए क्यो है? उसकी स्पष्टवादिता, निष्ठा,
त्याग का यही पुरस्कार है, इससे तो अच्छा था कि अन्य स्त्रियों की
अपने लिए पति के मन मे भ्रम बनाए रखती और रहस्यमयी ही बनी
ीवन का खेल खेलती रहती, आनन्द प्राप्त करती रहती पर वह जानती

थी कि यह उसकी रुचि के अनुकूल नहीं होता। ऐसा जीवन जो दोहरे माप-दण्ड से युक्त हो, वह जी नही सकती। उसने थोड़ा सा ही सुख पति से चाहा चाहे वह फिजिकल से ज्यादा मेन्टल ही होता। कभी उसे लगता कि सुख उसके पास आखिर देर तक क्यों नहीं रहता ? धूप-छाँव की तरह आता है और स्पर्श करते हुए थोड़ी सी सुखद अनुभूति देकर चला जाता है। उसे राजेश से सुख की चाँदनी नसीब न हो सकी। उसने राजेश से एक बार कहा था "क्या हम मतभेद को भूलकर जी नही सकते" ?

"इसके लिए तुम्हें विश्वास दिलाना होगा, अपने को आमूल परिवर्तन करना होगा, तभी कुछ हो सकता है" राजेश ने उत्तर दिया।

"मेरा विश्वास तो तुमने है, तुम्हारा जिसमे भी हो, अपने अपने विश्वास को लिए हुए मैं चाहती हूँ कि हम लोग मधुर जीवन बितायें"।

"स्मिता तुम महत्वाकांक्षिणी हो, अपनी इच्छाओं पर अंकुश नही रख पाती हो। अपने ही घर वालों के प्रति मैंने तुमसे व्यवहार मे परिवर्तन लाने को कहा था, लेकिन तुमने ऐसा करना नही चाहा, पति और पुत्र से ज्यादा तुम अपने बारे में सोचती हो।"

"तुम जो चाहो कह लो लेकिन स्थिति का यह वस्तुपरक विश्लेषण नही है।"

"तुम कहना चाहती हो कि मैं ही गलत हूँ।"

"यह तो मैंने नही कहा, राजेश तुम समझते क्यों नही ? मैंने तुमसे अपने लिये, बेटे के लिये किसी जरूरत को पूरा करने को नही कहा, यही सोचकर कि तुम इसे अपव्यय समझोगे। मैंने हमेशा यही प्रयास किया कि मैं तुम्हारे लिये सहारा बनी रहूँ।"

"जिन चीजों की जरूरत मैंने समझी उसे पूरा किया ही। तुम बताती तो क्या वह पूरी न होती ?" राजेश का लहजा कुछ तीखा-सा हो गया था।

स्मिता ने बात बढ़ाना उपयुक्त न समझा। तर्क-वितर्क से या बात बढ़ाने से समस्यायें नही सुलझती। ऐसा लगता कि वह टूटती जा रही है जैसे उसमे कोई बनी हुई चीज खण्डित हो गई हो। उसकी भावनाओं का भवन ढहता जा रहा है। फिर भी वह चाह रही थी कि सहारा देने की शक्ति उसमे बनी रहे। जीवन रहते उसे राजेश के लिए सहारा बनना ही पड़ेगा लेकिन वह राजेश से अपेक्षा करती थी कि वह भी उसे सहारा दे। एक व्यक्ति दूसरे को कब तक सहारा दे पायेगा ? राजेश को भी उसका पूरक बनना ही पड़ेगा राजेश द्वारा

इसके लिये कोई पहल या तत्परता न दिखाये जाने पर उसका दिल गहरे कुएं में डूब जाता।

उसने पति का वरण कर विश्वास का दीपक जलाया था पर संशय और सन्देह उस दीपक को बुझा देना चाहते हैं ऐसा उसे लगता फिर उसका हृदय विदीर्ण हो जाता। उसे आभास होता कि उसकी सुख तक की खोज अंधेरे में की गयी खोज रही है। मानो मन और मस्तिष्क के समन्वय से वह अर्थपूर्ण खोज नहीं कर सकी। स्मिता विभिन्न व्यक्तियों के सम्पर्क में आयी। सर्विस करने वाली स्त्री को घर की चारदीवारी से बाहर निकलना पड़ता है, नहीं तो सर्विस कैसे हो ? पुरुषों की कामुक निगाहों एवं उनकी स्वार्थ लिप्सा से वह अपने को सुरक्षित बनाए रखती। विभिन्न व्यक्तियों के सम्पर्क में आने पर सामाजिक अन्तःक्रिया होती है अपना-अपना व्यक्तित्व एक दूसरे को प्रभावित करता है। ऐसे समय में कोई मन को भा भी सकता है फिर यह जरूरी तो नहीं कि उसके प्रति वह समर्पित भी हो या समर्पण भाव रखे ही। अपने ही दायरे में रहते हुये उनसे हँस-बोल लेना उसके प्रेम का प्रतीक नहीं बन सकता। स्मिता ऐसा सोचती थी, उसकी मान्यता थी कि इस प्रकार सम्पर्क में आये हुये व्यक्तियों में से किसी के प्रति लगाव भी हो सकता है लेकिन लगाव प्रेम में परिणत हो, यह जरूरी नहीं है। हो सकता है कि लगाव सिर्फ लगाव ही बना रहे। दूसरी अवस्था यानी प्रेम तक बढ़ने के पूर्व सम्बन्ध की समाप्ति भी हो सकती है। इस तरह फ्रस्ट्रेशन की स्थिति में वह लोगों से जुड़ी भी और सम्बन्ध को विकसित होने देने से पहले उसने सम्बन्ध तोड़ भी दिया। दूसरे लोगों ने इसका अर्थ चाहे जो समझा हो पर इन छोटी-छोटी बातों की परवाह की जाए तो जीना हो चुका। इस बीच वह कुछ व्यक्तियों से प्रभावित भी हुई, राजीव जो ग्रामीण परिवेश में पला था, उसको अनन्य भाव से चाहता था। स्मिता उसके प्रति आकर्षित तो नहीं हुई पर उसके मन को टटोलने पर उसने पाया कि वह उससे हँस बोल ले, अपनत्व भरी बातें कर ले, इसी से उसे सन्तुष्टि मिल जाती है। कभी-कभार ही उससे भेंट होती। प्रारम्भ में उसके प्रति वह उपेक्षा प्रदर्शित करती रही लेकिन अपने प्रति उसके अनन्य भाव को देखकर उसके मन में सहानुभूति के भाव आ गये। वह हार्मलेस व्यक्ति था और फिर उससे आत्मीयता पूर्ण व्यवहार करने में कोई हर्ज भी नहीं था। वह इसी से संतुष्ट हो जाता फिर उसका आना लगभग बन्द सा हो गया। शायद उसने कुछ और अपेक्षा की हो पर कोई स्तरीय सम्बन्ध न होने से कुछ और प्राप्ति की आशा में निराश होने पर उसने सम्पर्क बनाए रखने का साहस छोड़ दिया हो या उसकी स्वयं की कुछ जिम्मेदारियां अथवा परिस्थितियां ऐसी आ गई हो। उसके प्रति

कोई लगाव तो था नहीं इसलिए वह विस्मृत स्वमेव हो गया। इसी प्रकार राहुल एक अन्य विभाग में उसके समकक्ष पद पर कार्यरत था। उसका व्यक्तित्व आकर्षक था। बौद्धिक स्तर या मानसिकता भी अनुरूप थी। भावात्मक स्तर पर वह उसके साथ जुडी भी। थोड़े दिनों तक साथ रहा पर यह साथ घूमने एवं पिक्चर देखने तक ही सीमित रहा। वह चाहती थी कि केवल मित्र के रूप में ही वह जुड़ी रहे पर वह इतने से सन्तुष्ट रहने वाला न था। स्मिता को इसका आभास पाने में देर न लगी। वह उससे विरत रहने लगी, उसने तटस्थता के भाव अपना लिए। उसने भी अधिक प्रतीक्षा न कर अन्य किसी के साथ कोर्ट मैरिज कर ली। व्यक्ति जब सन्तुष्ट रहता है, घर-परिवार में, यौन तृप्ति में तब वह जल्दी किसी की ओर आकृष्ट नहीं होता और आकृष्ट हो भी जाए तो प्रायः सम्बन्ध को हद से आगे बढ़ाने में रुचि नहीं रखता लेकिन अतृप्ति की स्थिति में मन की भटकन उसे चैन नहीं लेने देती। उसके आफिस में उसका एक सहकर्मी रोहित भी उसकी ओर आकृष्ट हुआ जो स्मिता की हम उम्र ही था। वे दोनों मित्रता के स्तर पर ही जुड़े रहे। यद्यपि अन्य कई लोगों ने भी उसे चाहा, चाहत न कहकर स्वार्थलिप्सा या भोगलिप्सा का साधन उसे बनाना चाहा, यदि कहा जाये तो अधिक उपयुक्त होगा पर स्मिता के लिए उनका कोई महत्व नहीं रहा भले ही वह अधिकारी रहा हो या अन्य कोई। हाँ, रोहित के साथ मित्रता के स्तर पर जुड़े रहना उसे अच्छा लगता। उसे राहत मिलती। काफी दिनों तक इसी प्रकार सम्बन्ध जारी रहे, दोनों में से किसी ने भी आगे बढ़ने की पहल न की। मानसिक स्तर पर या भावात्मक रूप से वह उसे अपना हितैषी और अच्छा दोस्त मानती थी। स्मिता अब पच्चीस वर्ष पूरे कर चुकी थी। उसकी रूपरेखा और शारीरिक गठन की मादकता और आकर्षण में कोई कमी नहीं आ पाई थी फिर भी वह मेकअप और बनाव शृंगार के प्रति सतर्क रहती। शायद इसके मूल में यह भाव निहित हो कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ नारी समझती है कि उसका आकर्षण कम हो रहा है। वह अपने को कमजोर समझने लगती है फिर वह इस कमी की आपूर्ति के लिए भरसक चेष्टा करती है जिससे दूसरों के चाहे जाने की लालसा बनी रहे। दाम्पत्य जीवन के बिखराव की सी स्थिति में स्मिता के दिन इसी प्रकार बीत रहे थे। अपनी बोल्डनेस के कारण उसे स्वयं पर जरूरत से ज्यादा विश्वास रहता था। वह समझती थी कि अपनी समस्याओं को हल करने में वह सफल हो जाएगी फिर भी संघर्ष करते-करते कभी-कभी क्लान्त होने पर या निराशा और दुःख के क्षणों में वह किसी भरोसेमन्द व्यक्ति का सहारा चाहती थी जिससे अपने दिल के बोझ को कम कर सके। कभी उसे अमित से यह राहत मिली थी लेकिन वर्तमान में उससे सम्पर्क के अभाव में उसे यह सहारा रोहित से प्राप्त होने लगा। वह

कुरेदने वाली बात मे उसे ऐसी मर्मान्तक पीड़ा होती कि वह तिलमिला जाती थी। उसने लोगो को ऐसा कहते सुना था कि टूटा प्यार नहीं जुड़ता लेकिन वह इसे सत्य नहीं मानती थी, उसका विश्वास था कि गलती यदि स्वीकार कर ली जाये तो पुरुष और स्त्री दोनों एक हो सकते हैं और उनके मन जुड़ सकते है। यही तो चाहा था उसने और इसके लिए उसने कितना प्रयास भी किया था पर उसके प्रयास आंशिक रूप से सफल भले ही हुए हों लेकिन अपेक्षा के अनुकूल सफल नहीं हो पाए।

यह ठीक है कि उसका आवास अब सुसज्जित रहता। उसके और राजेश दोनों के पास अपने-अपने स्कूटर थे जिस पर वे आफिस आते जाते। सोफा, डबलबेड, डाइनिंग टेबुल, स्टील आलमारी, कलर्ड टी. वी., टू इन वन, फ्रिज, कूलर आदि घर मे आ गये थे। स्मिता को फूलों का बड़ा शौक था। यहां बागवानी की सुविधा तो नहीं थी पर घर मे गमलों का इन्तजाम कर लिया गया था। सभी चीजें करीने मे व्यवस्थित रहतीं। दोनो को घर की साज-सज्जा का शौक था। उन्होंने महंगा सा एक कैमरा ले लिया था जिससे विभिन्न अवसरों पर मनचाहे रूप मे फोटो खींचते रहने से कई अलबम तैयार हो गये थे। दोनों जब भी घर से बाहर निकलते अप-टू-डेट दिखायी पड़ते। मिलने-जुलने वाले सोचते कि पति-पत्नी दोनो कमा रहे है, ठाठ मे सुखी जीवन बिता रहे हैं। लोगो को उनकी किस्मत से रश्क होता लेकिन सभी चीजें जो बाहर से चमकदार दिखाई पड़ती हैं, वह तो दिखावा है, आन्तरिक रूप तो कुछ और ही है। स्मिता को प्रतीत होता कि इस भौतिक समृद्धि से उसे क्या मिला ? मन की शान्ति जो सबसे जरूरी चीज है, वह तो अब भी उसके पास नहीं है।

स्मिता इगोइस्ट थी। वह जब देखती कि वह गलती पर नहीं है तो किसी की बात उसे बर्दाश्त नहीं होती थी। फिर चाहे वह पति ही क्यों न हो ? वह गलत बात स्वीकार नहीं कर सकती थी। उधर राजेश पति के रूप मे स्मिता को अपने अधिकार मे रखना चाहता था। वह अपने अधिकार की बात कैसे भूल सकता था ? परिणाम यह होता कि स्मिता और राजेश मे अहं की टकराहट उत्पन्न होने लगती जिससे दाम्पत्य सम्बन्ध मे दरार पैदा हो जाती और बिखराव की स्थिति आने लगती। स्मिता अपने को बिखराव की स्थिति में पाती। दाम्पत्य जीवन में देखा जाये तो बिखराव एक दूसरे के प्रति अन्डरस्टैंडिंग की कमी के कारण होता है। पति हो या पत्नी किसी मे या दोनों में किसी स्तर पर कोई दुर्बलता हो सकती है, उनमे परस्पर वैचारिक मतभेद भी हो सकता है इस स्थिति मे यदि सहिष्णुता, सद्भाव और उदारवादी दृष्टिकोण बनाए रखा जाए तो

सम्बन्ध बेहतर भी हो सकता है। राजेश अपने नजरिये से स्मिता को देखता और वैसा ही व्यवहार करता, उसने स्मिता के नजरिये को जानने की चेष्टा नहीं की कि उसकी भावनायें, उमंगें और इच्छाएं क्या हैं ? वह जीवन को किस रूप में जीना पसन्द करती है ? नतीजा स्वाभाविक रूप में इसका यही होना था कि परस्पर मतभेद पनपें। इसी प्रकार उनमें मतभेद विकसित होते रहते।

स्मिता के मन में यह भी विचार आता कि जिस पति और परिवार के लिए उसने जीवन की बाजी लगा दी, संघर्ष किया और अपनी इच्छाओं पर अंकुश भी रखा लेकिन क्या सिला मिला ? यही न कि राजेश मुझे इच्छापूर्ति का साधन समझते रहे, उन्होंने मुझसे अपेक्षाएं रखीं और चाहा कि मैं उनकी दैहिक और भौतिक जरूरतों को पूरी करती रहूँ लेकिन मैं कोई हाड़-मांस की पुतली तो हूँ नहीं, आखिर इन्सान हूँ। मेरी अपनी जरूरतें भी हैं चाहे वे सेक्स सबंधित हों या सेक्स से इतर परिवार और समाज से सम्बन्धित हों पर क्या उन्होंने मेरी जरूरतों और अपेक्षाओं को, मेरे अन्तर्मन को जानने और समझने की कोशिश कभी की ? अगर वह वास्तव में मेरे प्रति घृणा का भाव रखते हैं तो क्या जरूरत थी मुझसे दैहिक सुख प्राप्त करने की ? वस्तु-स्थिति से अवगत हो जाने के बाद भी। इसके माने यही हैं कि वह समझते हैं कि पति का पत्नी के शरीर पर और उसके जीवन पर जन्मसिद्ध अधिकार है। वह जिधर जिस दिशा में चाहे उसे मोड़ सकता है पर शायद वह भूल गये कि एक जैसी मान्यताएं सभी पर समान रूप से लागू नहीं होतीं, कम से कम मैं उन सामान्य स्त्रियों की भांति नहीं हूँ कि इंगित करने पर उसके अनुसार स्वयं को मोड़ लूँ या परिवर्तित कर लूँ। अगर कोई मुझे कनविन्स कर ले तब तो अपने भीतर परिवर्तन लाना सम्भव भी है पर जबर्दस्ती के परिवर्तन से या मोड़ से टूटने की स्थिति आ जाया करती है। शायद मेरे द्वारा प्रदर्शित सेवा भाव को उन्होंने मेरी कमजोरी समझा हो और सोचा हो कि जिस प्रकार वह चाहें मुझे अपने प्रभुत्व में रख सकते हैं बाध्य होकर मैं उनका प्रभुत्व स्वीकार कर लूंगी। तब तो मुझे स्वीकार करना होगा कि वह नारी मनोविज्ञान को नहीं जानते। वह यह भूल जाते हैं कि स्त्री सेवा भाव पति के प्रति दर्शाती है अवश्य लेकिन वह उसका प्रभुत्व आन्तिरिक रूप से स्वीकार नहीं करती।

राजेश और स्मिता के एक ही स्थान पर कार्यरत हो जाने पर स्मिता ने सोचा था कि सभी समस्याओं का अन्त सन्निकट था वह अपने ढंग से जीवन जी सकेगी। कुछ दिनों तक ऐसा जरूर महसूस हुआ फिर जरूरतों की विभिन्न चीजों के क्रय करने की योजनाएं बनाना और कार्यरूप में परिणत करने के लिये सचेष्ट

हो जाना, इन सबमें व्यस्त भी हो जाते, इस प्रकार जीवन की कटुता कुछ समय के लिये ग्रोझल हो जाती लेकिन हर समय व्यक्ति व्यस्त तो रहता नही। खाली समय में यह कटुता जब तब उभर भी ग्राती। राजेश की ग्रतीत को कुरेदने वाली ग्रादत उसे सख्त नापसन्द थी। ग्रब जब कि वह विवाह के पश्चात एक निष्ठ हो गई थी। तो इन सब बातो को सुनकर वह तिलमिला जाती क्या उसी का जीवन ऐसा रहा है। राजेश क्या स्वयं इन सब बातो से ग्रछूता है? तो फिर उसी पर लांछन क्यो? वह भी तो राजेश का तिरस्कार कर सकती है पर इस सबसे लाभ भी क्या? उन लोगो को तो पिछली बातें भुलाकर, मनोमालिन्य दूर कर सामान्य रूप में सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करना चाहिए। कितना भी नियन्त्रण स्वय पर स्थापित करने का प्रयास वह करती लेकिन कभी-कभी ऐसे क्षण ग्रा जाते जब वह भी कुछ सत्य कहने से स्वयं को रोक नही पाती। इस पुरुष प्रधान समाज मे राजेश उसकी स्पष्टवादिता को कैसे बर्दाश्त कर पाता। सदियों से चली ग्रा रही मान्यताएं उसके संस्कार के रूप मे उससे ग्रभिन्न रूप मे जुड़ी जो थी। ऐसे समय में राजेश उग्र रूप धारण कर लेता ग्रौर ग्रावेश मे वह उसे मार भी बैठता। इस प्रकार की घटनाएं दो-चार बार, नही, शायद इससे भी ग्रधिक बार घटित हो चुकी थीं। वह तो इसको भी सह लेती पर दूसरों के समक्ष जलील होने की स्थिति उसे नितान्त ग्रसह्य थी। ग्रब राजेश ग्रकेला घूमने चला जाता, कभी मित्रों की सोहबत में, कभी पार्टी ग्रादि मे वह नशे मे होकर रात देर तक वापस लौटना तब स्मिता का दिल दो टूक हो जाता। वह सोचती कि इससे ग्रच्छा तो यह था कि रोज-रोज की घुटन झेलने की ग्रपेक्षा एक बार स्पष्ट फैसला हो जाता फिर चाहे जीवन भर का विद्रोह या ग्रलगाव ही उसे क्यों न बर्दाश्त करना पड़ता? कम से कम वह स्वयं के लिए मार्ग निर्दिष्ट कर लेती। वह थकी हारी ग्राफिस से लौटती तो उसे ग्रपना जीवन घुटन भरा सा प्रतीत होता। ग्रंकित का भविष्य यदि समक्ष नही होता तो शायद वह कोई स्पष्ट निर्णय लेने की ग्रोर ग्रग्रसर होती। घर पहुँचने का एक ग्राकर्षण होता है, किसी के स्नेह भरे ग्रात्मीय बोल सुनने को मिलते है, थकान काफूर हो जाती है। कार्य करने के लिए प्रेरणा ग्रौर शक्ति प्राप्त हो जाती है, उसे कोई उत्साह नही रहता घर पहुँचने का ग्राफिस में जितना समय बीत जाता उसको वह घर से ग्रच्छा ही समझती थी इसलिए ग्रोवर टाइम के लिए रुकना खलता नहीं था। वह थकी हारी, बुझी-बुझी सी उत्साहहीन होकर घर पहुँचती। महीनो बीत जाते उसे पति के साथ कहीं जाने का ग्रवसर प्राप्त किए हुए। वह ग्रपनी व्यथा किससे कहे, कहां जाये? उसे नींद भी ठीक से नही ग्राती इसलिए कभी-कभी सोने के लिए उसे स्लीपिंग पिल्स का सहारा लेना पड़ता।

इसी प्रकार दिन बीतते रहे । स्मिता और राजेश के वैवाहिक जीवन को लगभग चार वर्ष होने को आए लेकिन उनका दाम्पत्य जीवन इसी प्रकार तनाव, टकराहट और अवसादपूर्ण व्यतीत हो रहा था । अंकित अब इंगलिश मीडियम के स्कूल मे पढने जाने लगा था । स्मिता चाह रही थी कि उसके दाम्पत्य जीवन की कटुता का प्रभाव अंकित पर न पड़े पर बालक क्या परिवार के वातावरण से अछूता रह सकता है ? वह प्रयास करती कि बेटे को कोई कमी महसूस न हो पर उसके बाल मन पर प्रभाव पड़े बिना न रह सका । वह प्रायः महसूस करता कि पापा उसे इतना प्यार नही करते जितना मम्मी । स्मिता वैसे तो उसे स्वयं पढाती थी लेकिन मन की अशांति की वजह से वह देखती कि प्रभावी ढंग से उसकी शिक्षा नही हो पा रही है, तब उसने ट्यूटर की व्यवस्था कर दी अब वह केवल सुपरविजन बनाए रखती । कभी-कभी स्मिता भी राजेश द्वारा अंकित की उपेक्षा को लक्ष्य करती तब उसका हृदय विदीर्ण हो जाता । पता नही मन से या उसे जलाने के लिए अंकित के पापा स्वय के होने पर राजेश ने शंका भी जाहिर कर दी थी एक बार । तब स्मिता रो पड़ी थी और उसे महसूस हुआ कि *सम्बन्ध अब शायद ही सामान्य हो पाये । जिन्दगी भी कितनी अजीब है जिसके* साथ दिन-रात का अधिकांश समय व्यतीत होता है उसे भी हम ठीक से समझ नही पाते । न तो राजेश उसे और न वही राजेश को समझ पाई है, ऐसी अनुभूति स्मिता को होती । उसके मन मे जब तक उथल-पुथल मचती रहती वह स्वयं का विश्लेषण करने बैठती तब अतीत की घटनाए यादों के साए के रूप मे तस्वीर बनकर उसके मानस पटल पर उभरती रहतीं । ऐसे समय मे यादों की घाटी मे उतरते ही थोडी देर के लिए वह उसी मे खो जाती ।

स्मिता ने अपने दाम्पत्य जीवन के कैसे रूपहले ख्वाब देखे थे, क्या सोचा था और क्या हो गया ? वास्तव मे जीवन मे कभी-कभी अप्रत्याशित घटनाएं घट जाती हैं जिनकी कभी सम्भावना नही रहती । आशा के विपरीत घटनाओं के घटने और फलस्वरूप उत्पन्न स्थिति में समायोजन करना बड़ा मुश्किल होता है । उसने कभी सोचा भी न था कि जीवन के एक कटु सत्य को उजागर कर देने मात्र से ऐसी दारुण *स्थिति उत्पन्न हो जाएगी । यह स्थिति उसी के द्वारा लाई गई* है जिसका अर्थ हुआ अपने ही पैरों पर कुल्हाडी मार लेना । उसने विचार किया था कि नारी और पुरुष मिलकर दम्पत्ति बनते हैं यदि उनमे पृथकता बनी रही तो दाम्पत्य कैसा ? पति और पत्नी परस्पर अभिन्न हों तो समझो अर्द्धनारीश्वर की प्रतिमूर्ति हैं और तभी वास्तविक रूप मे उनमे दाम्पत्य वह और राजेश इस अभिन्नता वाली स्थिति को शायद ही प्राप्त कर पाये हो । स्मिता मानती थी कि केवल स्त्री ही पुरुष की अनुगामिनी नहीं है । पुरुष को भी अनुगामी बनना पड़ता

सोचती थी यह सहारा दोस्ती के रूप में बना रहेगा और दोस्ती तक ही सीमित रहेगा लेकिन फिर उसे लगा कि ऐसा नही है। शायद स्त्री के पास छठी इन्द्रिय या कोई अतीन्द्रिय शक्ति ऐसी होती है जिसे हाइपर सेन्स या एक्स्ट्रासेन्सरी परसेप्शन भी कहा जा सकता है जिसके द्वारा वह पुरुष के हाव-भाव, उसके मन के भाव और हलचलों को आसानी से समझ लेती है, भले ही स्त्री कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करे अथवा नहीं इसलिये आवश्यकतानुसार वह सतर्कता बरत लेती है। रोहित के मन के भाव और हलचलों को समझते ही स्मिता ने सतर्कता बरत ली लेकिन निश्चय-अनिश्चय के मध्य वह कोई निर्णय न ले सकी। उसमे अनागत का भय व्याप्त हो गया था क्योंकि यह अप्रतीक्षित था और अप्रत्याशित भी। इससे उसका वर्तमान प्रभावित होने लगा था जिसके कारण उसमे असुरक्षा की भावना उत्पन्न होने के साथ-साथ आत्म-विश्वास में कमी आने लगी।

स्मिता के संयम का बांध पराकाष्ठा तक पहुँचने के बाद ढहने को हो रहा था। वह धीरे-धीरे टूटती जा रही थी। सोचती थी कि बिखराव की स्थिति न आने पाए क्योंकि टूटने की स्थिति मे कुछ भाग नष्ट अवश्य होता है पर आधार बना रहता है। बिखरने की स्थिति में वह जुड़ नहीं पाएगी। उसे अब लगने लगा था कि टूटा हुआ प्यार सम्भवतः नही जुड़ता। कभी उसके मन मे प्रश्न उठता, "क्या पति ही सब कुछ होता है, सबसे अधिक आत्मीय? शायद हाँ या शायद नहीं। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि नारी को अन्य कोई अधिक प्रिय हो जो उसके जीवन की रिक्तता और शून्यता को भरने मे अधिक सक्षम हो। रोजमर्रे की जिन्दगी मे साथ बने रहने पर भी अकेलापन महसूस हो सकता है और दूसरे का क्षणिक साथ भी ऐसा आश्वासन दे सकता है जो पति से नही मिलता।"

वह राजेश के सम्बन्ध में विश्लेषण करती तो पाती केवल अतीत ही समायोजन मे बाधक हो, ऐसी बात नही है। उसके और राजेश के सोचने के ढंग और जीने के ढंग मे भी अन्तर था। मानसिकता भी अलग-अलग थी। राजेश परम्परावादी विचार रखता है। जीवन को आनन्द के साथ जीना नहीं बल्कि आय के स्रोत बढाने मे विश्वास रखता है। वह सोचता है कि धन अधिक से अधिक संग्रह किया जा सके तो समाज में सम्माननीय बना जा सकता है, भले ही इच्छाओ का दमन क्यो न करना पड़े? बहुत सी जरूरतें ऐसी होती जिन पर खर्च करना वह बेकार समझता है। साथ ही सीरियस रहने की उसे आदत है, हंसी और कहकहे के अवसर उसके जीवन मे कम आते। वह उपयोगिता की दृष्टि से सोच विचार कर खर्च करता और अधिक से अधिक मितव्ययिता बरतने मे विश्वास

रखता है। धन वह उन्हीं चीजों पर खर्च करना चाहता है जिससे दूसरे लोग स्पष्ट रूप से महसूस कर सकें, उन चीजों को घर में देखकर। स्मिता का नजरिया था कि दूसरे लोग क्या और कैसा महसूस करते हैं, इससे कोई मतलब नहीं टिप-टाप और अपटूडेट रहा जाए। अच्छे-अच्छे वस्त्र और भोजन आदि में मन चाहे ढंग से खर्च किया जाये। जीवन को सही अर्थों में जीकर जीने का आनन्द उठाया जाये। वह पुरुष के लिए वाइन आदि का निषेध नहीं चाहती थी पर उसे आवश्यक भी नहीं समझती थी। अगर सीमित रूप से उसका इस्तेमाल इस प्रकार किया जाये कि दूसरों को आभास न हो तो उसे एतराज नहीं था। वह कभी-कभी डायरी लिखती थी जिसमे अपने दुःख-दर्द एवं भावनाओं को वह व्यक्त करती थी जिसमें साहित्यिक अभिव्यक्ति होती। कविता, कहानी या अनुभव की मीमांसा के रूप में वह अपने अन्तर्मन की भावनाओं को व्यक्त करती। इस प्रकार वह रेचन करती रहती अपनी अनुभूतियों का सुखद या दुखद किसी रूप मे भी हो। वह अपनी रचनाओं को एक-दो बार पत्रिकाओं मे प्रकाशित भी करवा चुकी थी पर प्रेरणा के अभाव में इसको वह विस्तार नहीं दे पा रही थी। राजेश इस सबको व्यर्थ की बकवास के अतिरिक्त और कुछ न मानता था इसलिए उत्साहवर्द्धन तो दूर रहा, वह हतोत्साहित ही परोक्ष रूप मे करता। शायद राजेश के मन में यह भावना थी कि स्मिता उससे ज्यादा इनटेलेक्चुअल है। जहाँ स्मिता साहित्यिक कृतियों को पढ़ती थी, राजेश बाजारू या अत्यन्त सामान्य किस्म के साहित्य पढ़ने में ही रुचि रखता था। उसने प्रयास किया था कि स्मिता की पसन्द की किताबों को पढ़े पर उसे उसमें रसास्वादन न मिलता। बातचीत का विषय उन दोनों मे जो होता वह रोजाना के जीवन से सम्बन्धित होते। स्मिता चाहती थी कि आम लीक से हटकर ऐसे विषय पर बात की जाये जिससे विचारों एवं भावनाओं का आदान-प्रदान हो सके पर राजेश इस सबसे उदासीन रहता। अपनी महत्ता स्थापित करने के लिए राजेश स्मिता पर कठोर अनुशासन की पाबंदी लगाना चाहता तब स्मिता उसे हल्के-फुल्के ढंग से लेती और उसे स्वीकार न करती। तब राजेश उसकी आलोचना करता और अपनी बात मनवाने के लिए शक्ति प्रदर्शन से भी बाज न आता। स्मिता शक्ति के समक्ष झुकने वाली युवती न थी, नतीजा यह होता कि उनमे तनाव की स्थिति आ जाती और राजेश यद्यपि स्वयं भी कष्ट भोगता लेकिन महीनों एक ही छत के नीचे रहते हुए अलग ही बना रहता। स्मिता के लिए यह स्थिति असह्य हो जाती लेकिन वह भी स्वाभिमानी थी, अतः वह झुकने के लिए तैयार नहीं होती। अक्सर यह देखा जाता कि इनटेलेक्चुअल लोग समझौता पसन्द कम ही होते हैं। इस लड़ाई-झगड़े या मनोमालिन्य का आभास

उन दोनों के अतिरिक्त गिने चुने एक दो लोगों को ही या जिनसे स्मिता का भावात्मक तादात्म्य बना रहता। बाकी नाते-रिश्तेदार तथा परिचित लोग तो यही सोचते कि वे सुखद जीवन व्यतीत कर रहे हैं। पहल कौन करे इस पहलू पर दोनों में से कोई विचार न करता। काफी दिन बीत जाते, स्मिता पहल कर भी देती, स्वेच्छा से नहीं वरन् यह सोचकर दाम्पत्य जीवन सामान्य ढंग से व्यतीत हो पर उसे यह मलाल बना रहता कि राजेश यह पहल क्यों नहीं करता? प्रत्यक्ष न सही तो परोक्ष रूप से ही राजेश उसकी इच्छा और रुचि का ख्याल करते हुए इसकी आपूर्ति कर सकता था। इसलिए ऐसा न होने पर विग्रह की स्थिति लम्बी खिंच जाती। अब वह महसूस कर रही थी कि शादी एक जुआ है और वह इस जुए में सफलता प्राप्त नहीं कर सकी। राजेश को उसके अतीत को जब तब लक्ष्य बनाना तो वास्तव में एक माध्यम भर है। उसमें और राजेश में पृथकता कई स्तरों पर बनी है। इस प्रकार यह जिन्दगी को कब तक ढोती रह सकेगी? उलझन की स्थिति में समस्या का कोई हल न निकलने पर उसे लगता कि इस प्रकार एक से बंधे रहना कब तक सम्भव हो पाएगा? उसने राजेश से जो दाम्पत्य सुख के क्षण प्राप्त किए वे उसे सहज ही नहीं मिले बल्कि उसने तो एक प्रकार से वे क्षण अपने प्रयास से प्राप्त किए या दूसरे शब्दों में छीने। अब उसे प्रतीत हो रहा था कि यह ठहराव की स्थिति उसकी धार को, उसके जीवन के बहाव को कुण्ठित कर रही है।

सुख के दिनों में हर पल या हर घटना सुख की नहीं होती, इसी प्रकार दुख के दिनों में सभी बातें दुख की नहीं होती हैं। किसी समय विशेष में सुख या दुख में से जिसकी प्रधानता होती है उसी के आधार पर हम अपने को सुखी या दुखी मान लेते हैं। संघर्ष और नैराश्य के दिनों में भी स्मिता प्रोबेशनरी आफिसर की परीक्षा में बैठी थी, यथासम्भव जो भी तैयारी कर सकी थी, उसी तैयारी के साथ। उसमें प्रतिभा थी। प्रतिभा और परिश्रम का प्रतिफल देर-सबेर मिलता ही है। परिणाम अपेक्षा के अनुकूल रहा और वह दिन उसके जीवन में अत्यन्त खुशी का दिन था जब उसे प्रोबेशनरी आफिसर के पद को ज्वाइन करने का आदेश मिला। वह अब अधिकारी हो गई थी। राजेश को भी क्या इस नियुक्ति से खुशी न होगी? यह प्रश्न उसे कुरेदता रहा पर यह अनुमान न लगा पाई क्योंकि जो स्थिति वह भोग रही थी उसमें कुछ निश्चय करना कठिन था। उसे इस बात की भी प्रसन्नता थी कि वह ऐसे शहर में कार्यरत होने जा रही है जहाँ अमित एक ख्याति प्राप्त न्यूज पेपर के एडीटिंग विभाग में कार्यरत है। तीन वर्ष हो गये। कितना बड़ा अन्तराल है? उसने इस बीच न तो कोई पत्र ही लिखा, और न भेंट

की। केवल एक बार इस बीच उसका उपन्यास जो "रास्ते और पगडंडिया" शीर्षक से प्रकाशित हुआ था, अमित ने शुभकामनाओं सहित भेंट स्वरूप प्रेषित किया था। नायिका प्रधान उपन्यास था यह। भेंट होने की ललक से वह पुलकित हो उठी थी। राजेश के साथ जाकर ज्वानिंग हो तो अच्छी बात है यही सोचते हुए संशय के भंवर मे फँसी हुई वह राजेश के आगमन की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करने लगी।

× × ×

राजेश अन्यमनस्क बैठा था। चार वर्ष उसके वैवाहिक जीवन को व्यतीत हो चुके थे। दाम्पत्य जीवन के सम्बन्ध मे मधुर कल्पनाएँ उसको धूल-धूसरित हो चुकी थी। कितने रूपहले ख्वाब उसने संजोए थे और अब वह क्या भोग रहा है इसी सोच-विचार मे वह निमग्न था। स्मिता को उसने सम्पूर्ण हृदय से चाहा था। उसने यही तो चाहा था कि मन चाहा साथी मिल जाए तो फौरन उसे जीवन साथी बना लेना चाहिए। स्टूडेंट लाइफ मे स्मिता उसे भा गई थी। घर के लोग इस सम्बन्ध के पक्ष मे कतई न थे। उनके अरमान थे अन्य सामान्य लोगों की तरह कि राजेश के विवाह मे दहेज मे विभिन्न चीजें ली जायेंगी। जो उनके स्तर के अनुरूप होगा, उसी के यहाँ सम्बन्ध तय किया जाएगा। राजेश प्रारम्भ मे न तो पक्ष मे था और न विपक्ष में ही घर वालों की आकाक्षाओ के प्रति। फिर भी उसने यही चाहा कि जो भी जीवन साथी बने वह पूर्व परिचित हो, उसकी पसन्द का हो और आकांक्षाओं तथा उपेक्षाओ के अनुरूप हो। इसलिए स्मिता ने जब अपनी स्वीकृति दे दी तो घर वालो का विरोध करके उसने आखिर परिवार के सदस्यों को राजी कर ही लिया। उसने स्मिता के जीवन और उसके परिवार के सम्बन्ध में कोई खोज-बीन भी नही की। वैसे उसने विवाह से पूर्व दो एक लडकियाँ देखी थी, जिनके अभिभावक राजेश से अपनी कन्या का वैवाहिक सम्बन्ध चाहते थे। अगर केवल रूप सौंदर्य को ही लिया जाए तो एक प्रस्ताव तो ऐसा था ही जो स्मिता से कम न था लेकिन प्रभाव केवल रूप का ही नही होता, सम्पूर्ण व्यक्तित्व का पडता है। शिक्षा, बौद्धिक स्तर, भाव प्रवणता, व्यवहार एवं अदाओं मे स्मिता से बढ-चढकर कतई न थी वह लड़की। इन दृष्टियो से स्मिता ही सुपीरियर थी फिर स्मिता ने घरेलू परिस्थिति भी बयान की थी जिससे वह प्रभावित हुआ था। तभी उसने दृढ निश्चय कर लिया था कि वह स्मिता से ही विवाह करेगा। उसने स्मिता से या उसके घर वालो से किसी चीज की अपेक्षा न

की थी, कभी कोई जरूरत भी न बताई थी, किसी मांग की पूर्ति के लिए कहा भी नहीं। वह यहाँ तक तैयार था कि स्मिता जो भी कपड़े पहने हो उसी में सामाजिक स्वीकृति सहित उसकी हो जाये और कुछ नहीं। स्मिता की देहयष्टि और रूप आकर्षक थे निःसन्देह लेकिन वह केवल इसी से प्रभावित नहीं हुआ था। मन जिसे चाहता है, सम्पूर्ण रूप से चाहता है, ऐसी स्थिति में यदि पूछा जाए कि किस गुण ने विशेष प्रभावित किया तो बता सकना मुश्किल होता है। बस यही कहा जा सकता है कि स्मिता उसे समग्र रूप में अच्छी लगी थी, बेहद अच्छी। उसने राजेश के हृदय को स्पन्दित किया था, उद्वेलित किया था जिसके फलस्वरूप चाहत के बीज अंकुरित हुए थे उसके मन में। जब स्मिता ने उसके प्रस्ताव पर निर्णय देने के लिए समय मांगा था तो वह आशा-निराशा के मध्य झूल रहा था। क्या निर्णय होता है अनुकूल या प्रतिकूल, इसी अन्तर्द्वन्द से वह ग्रस्त था फिर निर्णय फेवर में होने पर उसने समाज की कोई परवाह नहीं की थी, नाते-रिश्तेदारों की भी नहीं। अपनी जिद के आगे उसने विवश कर दिया था घरवालों को अपनी बात मानने को। उनके समक्ष कोई विकल्प भी नहीं था। इच्छा या अनिच्छा से सभी लोग इस विवाह में सम्मिलित हुए थे। विवाह हुआ और सामान्य रूप से अच्छे ढंग से सम्पन्न हुआ। एक बार व्यवधान आया भी था उसकी सर्विस सम्बन्धी बात को लेकर लेकिन स्मिता की बोल्डनेस के कारण वह व्यवधान दूर हो गया था। विवाह के पश्चात् की मधुयामिनी को वह अभी तक भूल नहीं सका था। कितना सुखद अनिवर्चनीय, अवर्णनीय और नैसर्गिक आनन्द से परिपूर्ण था वह अनुभव जब दो शरीर एकाकार हुए थे। उसे लगा कि स्मिता के रोम-रोम से वह परिचित हुआ था फिर जैसे कुठाराघात हुआ। उसके अतीत से परिचित होकर उसे ऐसा लगा जैसे ईश्वर ने उस पर कहर बरसा दिया हो। वह दिन और आज का दिन, वह कभी सामान्य न हो सका। भले ही उसने पिछली बातों को भुलाने की कोशिश की पर आन्तरिक रूप से ऐसा कभी हो सका हो, उसने महसूस नहीं किया। उसे प्रतीत होता कि वह मुखौटा अथवा आवरण ओढ़कर व्यवहार कर रहा है। स्मिता के सम्बन्ध में वह सोचने पर मजबूर हुआ कि व्यक्ति अक्सर वह नहीं होता जो दिखाई पड़ता है।

उसके सारे सपने खाक में मिल गये थे। हम जब किसी व्यक्ति को चाहते है तो समग्र रूप से चाहते है इसलिए उसकी बहुत सी कमियों को अनदेखा कर देते है लेकिन जब चाहत नफरत में बदल जाती है तो उस व्यक्ति के गुण भी अवगुण नजर आने लगते हैं, यही स्थिति वह भोग रहा था। जो दारुण आघात उसने सहा था, उसकी त्रासदी उसे भयंकर प्रतीत हुई। यह ठीक है कि स्त्री भोग्य है लेकिन विवाह से पूर्व शील भ्रष्ट नारी का शील क्या कभी लौट सकेगा, नहीं।

इसी उधेड़बुन में वह पड़ा रहता। उसके विचार मे भला या बुरा दोनों का प्रति-शय रूप यदि देखा जाये तो वह स्त्री मे ही देखना संभव है। स्मिता के आरज़ू-उसके आंसू और मिन्नतों के कारण राजेश ने पिछली बातों को भुलाना चाहा, चाहा कि सम्बन्ध सामान्य हो जाए, आन्तरिक रूप में न सही तो बाह्य रूप मे ही जिससे दूसरे लोग तो इस दरार और कटुता से परिचित न हों। यथासंभव उसने ऐसा किया भी फिर भी स्मिता को बनाव शृंगार की ओर प्रवृत्त होते देखता और किसी पर-पुरुष से हँस बोलकर बात करते देखता तो उसके तन-बदन में आग लग जाती। वह महसूस करने लगता कि स्त्री मे स्वार्थ की मात्रा अधिक होती है, शायद वह यह सोच नही पाती कि उसे छोड़कर पुरुष अन्य की ओर आकृष्ट हो सकता है और जब ऐसा हो जाता है तब वह उस पुरुष को स्वयं के प्रति आकर्षण को बढ़ावा देती है लेकिन क्या वह सचमुच उससे प्रेम कर रही होती है, शायद नहीं। उसके सारे प्रयास अपने अपमान का बदला लेने के लिए होते हैं। उसने स्मिता के प्रति तटस्थता और उदासीनता का व्यवहार काफी दिनों तक बनाए रखा था, उस समय स्मिता को यह सन्देह उत्पन्न हुआ था कि संभवतः राजेश उसे छोड़कर किसी अन्य की ओर आकृष्ट हो गया है। उन दिनों मे स्मिता ने अपनी रूप-सज्जा को और भी आकर्षक बना रखा था। पर इसके बावजूद उसे लगता कि स्मिता के ये सारे प्रयास स्वाभाविक रूप से उसके हृदय को जीतने के लिए न होकर शायद उपेक्षा के कारण तथा अपमानित महसूस किए जाने से प्रतिक्रियास्वरूप हो गये हैं इसलिए राजेश आकर्षित होने का आभास तो देता लेकिन वस्तुस्थिति बिल्कुल ऐसी न थी। वह गुजरे हुए पल याद करता तो यादों से उसे टीस उत्पन्न होती। शायद कुछ यादें ऐसी होती हैं जो जिन्दगी का सबसे बड़ा अन्धेरा होती है। वह जानता था कि स्मिता उससे अधिक इन्टेलिजेन्ट है तो क्या वह इसी कारण उसकी सारी बातें मान ले? आखिरकार वह पुरुष है, उसे पत्नी को अपने अधिकार में रखने का पूरा हक़ है। पत्नी की सभी बातों को यदि वह मान लेता है तो लोग उसे, उसके पौरुष को क्या समझेंगे? वह स्मिता से कहता भी था कि लोग तुम्हारी तारीफ करते हैं तो वस्तुतः तुम्हारे शरीर को पाने की चाह रखते हैं। कोई व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से स्मिता को किसी प्रकार का सहयोग क्यों कर देगा? जब तब वह स्मिता को अनुशासित रखने के लिए कठोरता भी बरतता, लेकिन वह भूल जाता ऐसे समय की दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए कभी-कभी अनुशासन की लगाम ढीली भी छोड़नी पड़ती है। स्मिता को जिस रूप में वह ढालना चाहता था उसमें सफल न हो सका इसलिए वह कभी-कभी मार-पीट पर भी उतारू हो. जाता भले ही इस प्रकार की स्थिति यदा-कदा नशे की स्थिति मे होने पर ही होती। राजेश सोचता था कि स्मिता बोल-चाल से

दूसरों को प्रभावित भले ही करती हो लेकिन उसका मन स्थिर नही रहता। वह भावुक है भावुकता या संवेदनाजन्य अनुभूति के प्रवाह में वह बह जाती है तब उचित-अनुचित क्या करने जा रही है वह, इसका ज्ञान उसे नही रहता। उसका विचार था कि स्त्री की वाणी में मधुरता होती है लेकिन हृदय प्रायः कलुषित होता है शायद इसीलिए उसके अधरों का जहाँ पान किया जाता है वहीं वक्ष का मर्दन भी किया जाता है। कभी-कभी उसे स्मिता पर शक होता कि अधिक समय तक एक पुरुष से बंधे रहना उसकी प्रकृति नही है लेकिन उसे इसका कोई आधार नहीं मिला था, केवल पुरुषों के साथ हंस बोल लेने से ही वह इस प्रकार उसके सम्बन्ध में सोचने लगता। स्मिता को सहारा बनाना चाहा था उसने, लेकिन उसे स्मिता पर भरोसा पूर्णरूपेण नही हो पाता था।

राजेश स्मिता से प्रेम भी करता था तथा उपेक्षा भी प्रदर्शित करता रहता था। प्रेम और घृणा ये दो शब्द ऐसे है जिनका आपस में कुछ सम्बन्ध भी है। कभी प्रेम का अन्त करना हो तो घृणा करनी पड़ जाती है और कभी बदले की भावना से या योजनानुसार घृणा प्रदर्शित करनी हो तो प्रेम करके, निकटता तक लाकर किनारा कर लिया जाता है, इस प्रकार घृणा के लिए भी कुछ लोग प्रेम करते हैं। राजेश इन्हीं व्यक्तियों में से था, कई बार उसने स्मिता के प्रति उपेक्षा और नफरत के भाव भी व्यक्त किए और प्रेम प्रदर्शित करते-करते निकटता तक लाकर किनारा कर लिया था जिससे स्मिता अतृप्त रह जाती थी फिर कई-कई दिन हो जाते उनमे शारीरिक मिलन नहीं हो पाता। राजेश को यह कल्पना नही थी कि वह जो यह भयावह खेल-खेल रहा है इसका कितना बड़ा दुष्परिणाम हो सकता है। अतृप्त रहने की स्थिति मे अगर स्मिता किसी की ओर आकृष्ट हो जाती है तो यह उसका दोष किस प्रकार हो सकता है? सामर्थ्य की मजबूरी इसका मूल कारण तो था नहीं कि वह किसी प्रकार सन्तोष कर लेती? यह तो जानबूझ कर पैदा की गई स्थिति होती। एक ही घर में रहते हुए अलगाव की स्थिति दोनों के लिए असह्य होती। उसके जीवन का वह नाजुक मोड़ था जब उसने स्मिता को अपनाना चाहा था, उससे भी ज्यादा नाजुक मोड़ अब वह अलगाव जैसी स्थिति को मानता। उसे यह भी खलता कि उसके द्वारा सहयोग न दिए जाने पर भी स्मिता अन्य के सहयोग से इच्छित कार्य पूरा कर लेती है। वह अपेक्षा करता था कि स्मिता उसके समक्ष रोए, गिड़गिड़ाए तब वह पसीजे और एहसान दिखाते हुए उसे उचित सहयोग प्रदान करे लेकिन वह इस अवसर से प्रायः अपने को वंचित पाता। जब कभी स्मिता अपनी त्रुटियों को स्वीकार करती तो राजेश स्वयं को सन्तुष्ट महसूस करता। उसे स्मिता की नयी नियुक्ति के सम्बन्ध में

जानकारी मिल चुकी थी उसके आफिस के ही एक व्यक्ति से। स्मिता की पदोन्नति से उसे जहाँ प्रसन्नता हुई थी, वहीं आशंका भी कि अब उसके अहं में और भी वृद्धि हो जाएगी।

उसे याद आ रहा था कि उस दिन वह जब घर पहुँचा तो स्मिता बड़ी प्रसन्न नजर आ रही थी। उसने प्रफुल्लित होकर कहा, "आज बड़ी देर कर दी, मैं काफी देर से तुम्हारा इन्तजार कर रही थी।"

"इन्तजार और मेरा--खैर कहो क्या बात है ?" उसने कहा।

"सुनोगे तो खुश हो जाओगे, बात ही ऐसी है।"

"खुशी की बात तुमने खूब कही, एक अरसा हो गया, हम दोनों के बीच ऐसा अवसर नही आया।"

"देखो शिकवे तो करो नही, तुम भी जानते हो इसके लिए कौन जिम्मेदार है ?" स्मिता का कंठ अवरुद्ध हो गया था।

"हाँ, कसूरवार तो मैं ही हूँ सभी बातों के लिए ! तुम्हारा तो कोई दोष रहता नही।" राजेश स्वयं को नियन्त्रित न कर सका।

"खैर छोडो इन बातों को, मेरी नियुक्ति प्रोबेशन आफिसर के पद पर हो गई। शीघ्र ही मुझे ज्वाइन करना है।"

"नयी पोस्टिंग के लिए कान्ग्रेचुलेशन ! पोस्टिंग यही है या कही बाहर ?"

"मुझे एक सप्ताह मे कानपुर मे ज्वाइन करना है।" स्मिता राजेश की ओर देखते हुए बोली।

"तब तो वाकई तुम्हारे लिए अच्छी बात हुई। अब तुम अधिकारी हो गईं। चलो अलग रहकर तुम्हे रोज-रोज की किच-किच से मुक्ति मिली।"

"राजेश, मैं तुम्हारी पत्नी हूँ। अधिकारी होऊँ या कुछ और, इससे क्या फर्क पड़ता है ? पति, पत्नी तो वही रहेंगे। मैंने चाहा था कि यही पोस्टिंग हो जाये लेकिन ऐसा सम्भव नही हुआ। कुछ दिनों बाद कोशिश करूँगी कि ट्रान्सफर हो जाये।" स्मिता ने समझाते हुए कहा।

"तो तुम कब जा रही हो ?"

"जब तुम कहो।"

"मैं क्या कहूँ ? जैसा उचित समझो, करो ! तुमने अपनी योजना तो बना ली होगी।"

तटस्थ भाव से उसने कहा।

"उसी के लिए ही बात कर रही हूं। तुम्हारे साथ जाकर ज्वाइन करूंगी। रहने की व्यवस्था भी तो करती है। ज्वाइन करके मैं लीव लेकर आ जाऊंगी। तुम्हारे साथ। तुम्हारी और अंकित की समुचित व्यवस्था हो जाने पर ही पुनः मैं वहां जाऊंगी।"

'मेरे जाने या न जाने से क्या फर्क पड़ता है फिर इधर आफिस में मैं भी बिजी हूं। अतः मैं नहीं जा सकूंगा।" राजेश ने अपनी असमर्थता व्यक्त की।

"यह तुम कैसी बात कर रहे हो? तुम ज्वाइन न कराने जाओगे तो कौन जाएगा? क्या तुम्हें खुशी नहीं हुई मेरी इस नियुक्ति को लेकर?"

"अगर हां कहूं तो तुम सच मानोगी, तुम्हें सहयोग देने वालों की क्या कमी है? मैं जानता हूं कि तुम अकेले भी सभी काम कर लोगी।"

"नहीं राजेश। पिछली बातों को इस समय मन में रखने से क्या लाभ? अन्य लोगों में और तुम में बहुत फर्क है क्या तुम इसे नहीं समझते? पति नहीं तो और किसके साथ जाऊंगी ज्वाइन करने?" स्मिता रो पड़ने के अन्दाज में बोली।

"सारी स्मिता! तुम अपना इन्तजाम खुद कर लो। रही अंकित की बात तो तुम जैसा चाहो वैसी व्यवस्था कर लो।" राजेश के स्वर में उपेक्षा थी।

"तो तुम विवश कर रहे हो कि मैं अकेली ही जाऊं।"

"अकेली क्यों और जिसको चाहो, तुमसे हमदर्दी रखने वाले तो हैं ही।"

"मुझे किसी की हमदर्दी की कोई जरूरत नहीं। जब पति ही अपने कर्तव्य को नहीं समझे तो दूसरे मेरे कौन हैं जिनसे मैं किसी प्रकार की अपेक्षा करूं? कोई बात नहीं, अकेले ही सही, अमित तो वहां है ही, उससे मुझे मदद मिल जाएगी पर तुम्हारे न जाने की कसक मुझे सालती रहेगी।" स्मिता रो पड़ी।

"लगता है कि कर्तव्य का पाठ मुझे तुमसे सीखना पड़ेगा। पिछले कई दिनों से हम लोग अलगाव सी जिन्दगी जी रहे हैं, जब तक इसके कारणों का हल नहीं निकलता मैं नहीं जा सकूंगा।" राजेश ने दो टूक स्वर में कहा और घर से बाहर चला गया। स्मिता को अन्दाज था कि वह कहां जाएगा और इस प्रकार नाराज होकर जाने पर देर में वह लौटेगा। कितनी आशा संजोए थी वह कि इस खबर से घर का वातावरण बदल जाएगा लेकिन कुछ भी तो परिवर्तन नहीं हुआ। राजेश सोच रहा था कि स्मिता चाहेगी तो किसी को ले ही जाएगी और अकेली गई तो अमित से उसे सहयोग मिल ही जाएगा। अमित उसके परिवार

का सदस्य जैसा है, वह मिल भी चुका है उनसे। राजेश ने चाहा था कि स्मिता पिछले व्यवहार पर अफसोस जाहिर करते हुए क्षमा मांग ले तो वह चला जाएगा पर वह समझौता परस्त तो है नही। स्मिता अपनी विशिष्टता को बनाए रखती है। वह उन लड़कियों की तरह नही है जो समझौता परस्त जिन्दगी जीती हैं और उनके लिए इनडिविजुअलिटी का कोई अर्थ नही रह जाता। राजेश महसूस कर रहा था कि सख्ती करने से कोई विशेष लाभ नही हुआ बल्कि विद्रोहिणी वह बनती जा रही है। स्मिता के विरोध के स्वर जब तब मुखर हो उठते थे तो राजेश को निराशा होती। सुख-सुविधाएँ प्रदान करने से भी लाभान्वित वह नही हो सका। उसने भौतिक जरूरतो की विभिन्न चीजो की पूर्ति की, घर को सुसज्जित किया। मध्यमवर्गीय परिवार की दृष्टि से उसे अब कोई विशेष अभाव नही था। कलात्मक रुझान दोनो का था, इसलिए उनके परिचित उनके रहन-सहन और रख-रखाव की प्रशंसा ही करते थे। कितना जुगाड़ करना पड़ा था उसे, यदि वह मितव्ययी न होता और बचत न करता तो क्या स्कूटर, कलर्ड टी. वी., फ्रिज, कूलर, डबलबेड, ट्विन बन, आदि चीजो की व्यवस्था इतने सीमित समय मे हो पाती। वह ये सब चीजे केवल अपने लिए ही तो लाया नही था, सभी की सुविधा के लिए ही उसने इन वस्तुओ को खरीदा था। इन वस्तुओ को जुटाने मे स्मिता ने भी अपेक्षित सहयोग दिया था लेकिन यह कोई विशेष बात नही दोनो कोई अलग तो हैं नही। फिर भी स्मिता को शिकायत बनी रही कि उसने उनकी जरूरत पर ध्यान नही दिया, वह मनी माइन्डेड है तथा केवल भौतिक चीजो से ही सुख प्राप्त नही किया जा सकता। इस प्रकार के दोषारोपण से वह तिलमिला उठता और सोचता कि उसके और स्मिता की मानसिकता मे बड़ा फर्क है। वह वास्तव मे नही समझ पाया कि स्मिता क्या चाहती है? अब भी संशय मे पड़े हुये वह स्मिता को अनबूझ पहेली या रहस्यमयी समझता। उसके मन की थाह दुष्कर है इस प्रकार वह देखता कि स्मिता को उसके प्रयास से क्षणिक सुख या प्रसन्नता भले ही मिली हो लेकिन देर तक नहीं टिक सकी अतः उसने अब स्मिता से बोलना छोड़ दिया था। स्मिता भी बहुत आवश्यक होने पर ही बात करती, अक्सर वह अपनी बात अंकित से कहलवा देती। इस प्रकार दोनो दाम्पत्य जीवन के दुःख को महसूस कर रहे थे राजेश सोचता कि इस प्रकार जीवन कैसे बीतेगा? अब बगैर कुछ कहे अपने सारे काम स्वयं पूरा करता, खामोश रहता, गम को भूलने के लिए शराब का सेवन भी करता। धीरे-धीरे वह उसका आदी होता जा रहा था स्मिता यह सब देखकर दुखी होती, सोचती राजेश परिस्थिति का रिइ-लाइजेशन क्यों नही करता अगर कभी वह बहक गई तो उसके लिए स्वयं को

रोकना मुश्किल होगा। राजेश सोचता कि इस अलगाव वाली जिन्दगी से अच्छा है कि स्थायी अलगाव हो जाये जिससे विकल्प ढूंढ सके कभी यह भी विचार करता कि यदि स्मिता ने किसी स्तर पर अपने लिये कोई विकल्प ढूंढ लिया तो वह शान्तिपूर्वक उसके जीवन से हट जायेगा इस प्रकार दुखी जीवन व्यतीत करने मे अच्छा है कि दोनो अपने अपने लिये कोई विकल्प ढूंढ लें ताकि चैन से जी सकें पर वह यह भी चाहता था कि इस प्रकार की पहल उसके द्वारा न होकर स्मिता के द्वारा ही हो उसे सन्तोष इस बात का रहेगा कि स्थायी अलगाव का कारण वह नही है स्मिता बनी फिर वह स्वयं पर इसकी जिम्मेदारी के बोझ को महसूस नहीं करेगा। ये विचार एक क्षण को आते, दूसरे ही क्षण वह सोचता कि स्मिता में चाहे जो खामियाँ हो पर उसकी कुछ विशिष्टताओ को भुलाया नही जा सकता।

स्मिता जोर या दबाव से कोई बात मानने वाली नही है, उसे तो प्रेम से ही जीता जा सकता है। राजेश विचार चाहे जो करता पर अपने विचारो को कार्यरूप मे परिणत नही कर पाता। वह जानता था कि जिस अलगाव के विषय मे वह सोचता है वह इतना आसान नही है। स्मिता कोई विकल्प ढूंढ ले इसे वह बर्दाश्त नही कर सकेगा। अंजाम चाहे कुछ भी हो स्मिता को वह कभी भूल नही सकता। उपेक्षा वह चाहे जितनी दिखाए पर प्यार भी तो उसके प्रति है ही। वह स्मिता से यही कहता है कि वह उसकी इच्छाओ के अनुरूप स्वयं को ढाल ले। कठोरता एवं निर्ममता के व्यवहार से वह प्रसन्न नही होता था बल्कि स्वयं टूटा सा महसूस कर रहा था। इन दिनो उसे कहीं यह आशा भी बंधी थी कि एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब वह अपनी गलतियो को महसूस करेगी लेकिन समय जितना बीता जा रहा है उसके बाद कनफेस कर भी लिया उसने तो क्या वह सहज हो जाएगा इसमें उसे सन्देह था। वह स्मिता की मानसिकता को जितना भी समझने का प्रयास करता उतना ही उलझता चला जाता। यदि स्मिता ने कभी न मिलने के लिए उसकी जिन्दगी से हमेशा के लिए जाने का प्रयास किया तो इसे वह कतई बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। उस नाजुक और भयावह क्षण की कल्पना मात्र से वह सिहर उठता। उसने यह भी योजना बनानी चाही थी कि स्मिता जिस हाल मे जीवन व्यतीत करना चाहती है वह इच्छानुसार रहे वह स्वयं अपना स्थानान्तरण करवा कर दूर चला जाएगा। स्मिता जब उसकी जरूरत महसूस करेगी और सच्चे रूप में उसकी इच्छाओ के अनुरूप चलने का संकल्प करेगी तथा विश्वास दिला देगी तो वह वापस लौट आएगा पर वह सोचता ही रह गया था और संयोग ऐसा आया

कि स्मिता स्वयं उससे दूर जा रही है, हमेशा के लिए नहीं, अस्थायी रूप में। स्मिता के जाने का उसे दुख था भले ही यह परिस्थिति अच्छाई के लिए, बेहतर स्थिति लाने के लिए आ गई थी पर इन सबको समझते हुए भी वह सहज नहीं हो पा रहा था। स्मिता चाहेगी तो अंकित को वह अपने पास ही रखेगा, वह तो पुल है उन दोनों के बीच जो जोड़े हुए है और वह भी तो स्मिता से जुड़ा हुआ है भले ही उसे वर्तमान में इसका विश्वास न हो। प्रेम और नफरत भी उन्हीं के लिए होती है जिनसे गहरे रूप में हम जुड़े रहते हैं। फिर भी वह नहीं चाहेगा कि वर्तमान स्वरूप ही दाम्पत्य जीवन का बना रहे। इस प्रकार का जीना भी क्या है? वह यह भी देख रहा था कि उसके द्वारा एकदम खामोश और मूकदर्शक के स्वरूप को अपनाने से स्मिता अचंभित हुई है और पहले की अपेक्षा अब अधिक असहज हो गई है। संशय, सन्देह, आशा और निराशा के घेरे में वह जीवन जी रहा था। उसे आशा थी कि जाने के पूर्व स्मिता मान-मनौवल कर उसे मना लेगी पर ऐसा हुआ नहीं और फिर वह दिन भी आ गया जब स्मिता उसकी अनुपस्थिति में चली गई। ट्रेन का समय ऐसा था कि उस समय वह आफिस में था। यदि स्मिता ने मनुहार किया होता तो भी आफ करके वह अवश्य जाता। अंकित उसके पास था, वह उसकी सुख-सुविधा का ख्याल भी रख रहा था। लेकिन अब स्मिता के अभाव को वह बेहद महसूस कर रहा था। कभी मन होता कि सब कुछ भूल कर वह उसके पास पहुँच जाए, उसे भरोसा और विश्वास दिला दे कि उसके बिना उसका जीवन असहज होता जा रहा है लेकिन पुरुषोचित भाव एवं अहं के जागृत होते ही ये बातें तिरोहित हो जाती। इसी प्रकार वह अंतर्द्वन्द भावनाओं के उतार चढ़ाव और अहं के व्यामोह के मध्य अस्थिरता, बेचैनी, हताशा और दुख से परिपूर्ण दिन बिताए जा रहा था।

स्मिता की आँखें अचानक खुल गई। उसने चारों ओर देखा। केबिन में कोई और न था तो क्या वह स्वप्न देख रही थी। ओह कितना भयानक स्वप्न था। अभी भी वह भय से मुक्त न हो पाई थी। उसे डूबने का अहसास हुआ था। स्वप्न में उसने देखा कि वह एक किश्ती में सवार है। अचानक किश्ती भंवर में फंस गई और चक्कर खाते हुए डूबने लगी। उसे दूर नदी के किनारे राजेश खड़ा दिखाई दिया उसने सहायता के लिए आवाज दी पर उधर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। उसने हाथ-पाँव मारे और निकलने का प्रयास करने लगी थी लेकिन उसके प्रयास

असफल ही रहे। उसे लगा कि वह नदी के जल की अतल गहराई से नीचे और नीचे डूबती जा रही है। तभी वह जाग उठी। वह सामान्य होने की चेष्टा करने लगी। शरीर कम्पन की अनुभूति अब कम हो गई थी। आखिर उसे एक झटका सा लगा। वह गिरते-गिरते बची। उसने देखा कि ट्रेन किसी स्टेशन पर रुकी थी। उसे हाकर्स की आवाजें सुनाई पड रही थी। उसे चाय पीने की इच्छा हो रही थी। कुछ सामान्य होने पर जैसे ही उसने किसी हाकर को आवाज देनी चाही, ट्रेन चल दी।

वह फर्स्ट क्लास के कूपे मे सफर कर रही थी। सफर के प्रारम्भ होने से लेकर अब तक वह कूपे में अकेली ही थी। रात्रि का समय था। उसने ट्रेन की रवानगी के समय दरवाजे को भीतर से बोल्ट कर दिया था।

वह सोचने लगी कि उसकी वर्तमान जिन्दगी परिस्थितियों के भंवर में फंसी हुई है। राजेश की निलिप्तता और उपेक्षा के कारण उसे जीवन संघर्ष मे अकेले ही जूझना पड़ रहा है और अपना मार्ग स्वयं निर्दिष्ट करना पड़ रहा है। क्या वह इन समस्याओं से जूझते हुए सफल होगी या अनिश्चितता का जीवन उसे जीना पडेगा यही प्रश्न उसे उद्वेलित कर रहा था।

उसे याद आ रहा था कि उसके दाम्पत्य जीवन की शुरुआत ही कुछ अजीब रही। प्रथम रात्रि वैवाहिक जीवन का थी, वह राजेश की प्रतीक्षा कर रही थी। एकाएक लाइट आफ हो गई। वह लैम्प ढूंढने लगी अंधेरे मे। लैम्प कार्निश पर ही रखा हुआ था। वह लैम्प को टटोल रही थी कि उसका हाथ किसी चीज से टकरा गया और फर्श पर कोई चीज गिरकर चकनाचूर हो गई। शीशे के एकाध टुकडे की चुभन उसे पैरों मे हुई। थोडी देर मे लाइट आ गई तभी राजेश ने कमरे में प्रवेश किया। उसने देखा कि स्मिता फर्श पर बिखरे टुकड़ो को समेट रही है। फ्रेम जड़ित फोटो राजेश और स्मिता की थी जो उन्होंने विवाह से कुछ समय पूर्व इनगेजमेन्ट के बाद खिचाया था। एक पल के लिए वह आशंकाग्रस्त हुई कि यह शुभ नही रहा, दूसरे ही पल खयाल आया कि वह भी क्या दकियानूसी बातें सोच रही है। अब उसे स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि चाहे जिस कारण से हो पर दाम्पत्य जीवन कदापि सुखकर नही था। पति के साथ एडजेस्टमेन्ट न होने की वजह से उसमें प्यार की अतृप्त आकांक्षा अब भी विद्यमान थी। एक सच्चे साथी की जरूरत उसे महसूस होती थी और तब वह पाती कि अब तक के जीवन मे उसकी वह खोज शायद खोज ही बनी रही। अभी तक उसे मंजिल नही मिल सकी। राजेश उसको क्या कभी समझ पाएगा, उम्मीद तो नही है अब तक के रवैये के कारण। देखो भविष्य मे क्या होता है, अभी से कुछ कहना मुश्किल है।

स्मिता ने वाटर बैग से पानी पिया। उसने सूटकेस से एक-दो मैगजीन निकाली। पन्ने पलटे पर उसका मन पढ़ने में न लग सका। वर्तमान स्थिति में उसे यातना के दौर से गुजरना पड़ रहा है, क्यों हुआ ऐसा, क्या यह उसके पूर्व जन्म के कर्मों का फल है जिसके कारण उसकी नियति में यह सब भोगना पड़ा है। वह देखती अपने परिचितों में बहुतों को जो अपने वैवाहिक जीवन से सन्तुष्ट होकर तृप्ति का भाव लिए आमोद-प्रमोद में जीवन व्यतीत कर रही थीं। तब उसे उनके भाग्य से रश्क होता, अपने दाम्पत्य जीवन की तुलना उनके दाम्पत्य जीवन से करने पर। वह सोच रही थी कि लोग कहते हैं कि नारी में पुरुष पर हावी होने की प्रवृत्ति होती है और यह प्रवृत्ति उसे विरासत में मिलती है लेकिन वह इसको व्यवहार कुशलता एवं चतुराई से इस प्रकार पूरा करती है कि पुरुष को इसका आभास नहीं हो पाता लेकिन उसने तो ऐसा कुछ नहीं किया और न चाहा ही। वह तो सिर्फ राजेश के प्रेम की भूखी थी। उसने तो केवल घर बसाना चाहा था, परिवार की प्रगति चाही थी और इसके लिए सब कुछ होम करने को तैयार थी पर वास्तविक अर्थ में उसे घर भी कहाँ नसीब हो सका। जिसको वह नितान्त अपना कह सके।

स्मिता मध्यम मार्गी नहीं बनना चाहती थी। वह सोचती कि आम स्त्रियों की तरह समझौता करने का अर्थ होगा यथास्थिति को स्वीकारना जायज, नाजायज सभी बातों को मानना। इस प्रकार से वह जीते जी नष्ट हो जाएगी फिर उसकी विशिष्टता का क्या होगा, उसमें निजी जैसी कोई बात नहीं रह जाएगी व्यक्तित्व के सन्दर्भ में। किसी को अपना सहारा बना ले वह पर क्या यह झूठा विश्वास दिलाना न होगा ? फिर इस प्रकार की जिन्दगी जो वह बिताएगी वह दोहरी जिन्दगी होगी जो उसे पसन्द नहीं। छद्म जीवन वह नहीं बिता सकती क्योंकि वह सदा से स्पष्टवादी रही है। साथ ही राजेश हो या कोई अन्य वह सभी से अपेक्षा करती है स्पष्टवादी होने के लिए। राजेश भी कभी उसके गुणों पर मुग्ध था पर यह स्थिति विवाह से पूर्व की थी। अब भी लोग उसकी तारीफ करते है। प्रशंसा की चाह या रेकगनिशन की चाह प्रत्येक को होती है यदि वह झूठी न हो। उसे भी चाह है इस तथ्य से वह इन्कार नहीं करेगी।

स्मिता को लग रहा था कि आजकल की दुनियाँ ऐसी है कि सभी स्वार्थ सिद्ध करना चाहते है। किसी व्यक्ति के द्वारा सहानुभूति या सान्त्वना व्यक्त होती तो वह आशंकित होती कि इस अभिव्यक्ति के पीछे कहीं कोई स्वार्थ तो नहीं छिपा है फिर वह विविध ढंग से उस व्यक्ति को परखती अगर वह व्यक्ति उसकी कसौटी पर खरा उतरता है तभी वह उससे मित्रता स्थापित करने के

सम्बन्ध में कोई निर्णय लेती। ऐसा न होने पर उस व्यक्ति से सम्बन्ध तोड़ने में उसे कोई देर नहीं लगती।

जब व्यक्ति दुखी होता है तो वह चाहता है कि उसे कोई सच्चा दोस्त मिले, एक ऐसा हमदर्द जो उसे समझाये। दोनों एक दूसरे की महानुभूति से अवगत हो सकें। स्मिता भी अपनी अनुभूतियों में किसी को सहयोगी बनाने की चाह लिए थी, वह चाहती थी कि कोई मिले जो उसे सम्पूर्ण रूप से समझ सके जिससे वह तनाव मुक्त हो सके और राहत पा सके। अमित का ख्याल उसे आता तब वह महसूस करती कि भावात्मक निकटता अमित के प्रति औरों की अपेक्षा ज्यादा ही है और यह सच भी था, उसने स्मिता के भावाकाश को गहनता से समझा था।

स्मिता वेदना से संतप्त थी। यह वेदना मानसिक ज्यादा थी। वह समझती थी कि वेदनाजन्य स्थिति में यदि कोई सहयोगी मिल जाता है तो यह जीवन की उपलब्धि होती है लेकिन सह अनुभूति का रिश्ता स्वाभाविक रूप से होना चाहिए औपचारिकता या कृत्रिमता लिए हुए नहीं। अमित के सान्निध्य में उसे लगा था कि अमित की सहानुभूति की भावना उसके प्रति थी। कितना अच्छा लगता है किसी आत्मीय व्यक्ति का कोमल स्पर्श। संवेदना जन्य स्पर्श से महसूस होता है कि वह व्यक्ति दूसरे को ढाढस बँधा रहा है या आश्वासन दे रहा है। सह अनुभूति की उपलब्धि जीवन में दो एक व्यक्तियों से ही प्राप्त हो पाती है। अधिकांश सम्बन्ध तो औपचारिक होते है या आवरणयुक्त।

राजेश के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति उसकी चाह का विकल्प कैसे बन सकता है स्थायी रूप से तो शायद कभी नहीं। शायद राजेश से वह सम्बन्धविच्छेद की बात भी सोचती कभी लेकिन अंकित के भविष्य की कल्पना से वह बन्धन भी छोड़ा नहीं जा सकता। उसे याद आ रहा था कि ये परिस्थितियाँ जो उत्पन्न हुई इसका सर्व प्रमुख कारण राजेश द्वारा उसकी नितान्त उपेक्षा ही थी। कई बार उसे महसूस होता कि बोलचाल के अभाव में तन का सम्बन्ध विवशता का ही था मन का नहीं। आखिरकार वह उसका पति है इसलिए तन का सुख देने के लिए वह बाध्य है। चाहे वह बदले में मानसिक सुख प्राप्त न कर सके या तैयारी के साथ वह इसके लिए उद्दीपन न हो। मन और तन दोनों का सम्बन्ध राजेश के साथ गिने चुने बार ही हुआ होगा। दूसरे की जरूरत को समझने का प्रयास राजेश द्वारा नहीं किया गया जिससे प्यार शारीरिक व्यापार के रूप में यान्त्रिक रूप सा बन गया था जिसमें तृप्ति कम केवल क्रिया की पूर्णता होती। इसलिए सम्बन्धों में दरार बढ़ती ही गई।

उसके जीवन मे प्यार की खोज बनी रही। सही अर्थ में उसे मंजिल न मिली। प्यार के लिए वह तरसती रही। पति के साथ उसका एडजस्टमेन्ट सारे प्रयासो के बावजूद भी मन चाहे ढग से या सन्तोषजनक रूप मे नहीं हो सका। उसने साथी की खोज की पर उसकी खोज अब तक सार्थक नही हो सकी। जिस प्रकार का हमदर्द या सच्चे साथी की उसे तलाश थी वह उसे कहाँ नसीब हो सका लेकिन कुछ भी हो वह अपना वह हश्र कभी न होने देगी कि वह आजीवन प्यार के लिए तरसती रहे। अपना प्राप्तव्य वह पाकर ही रहेगी। काश उसका पति उसके जीवन के सारे अभाव की पूर्ति कर देता, यही तो चाहा था उसने, सारे सपने, आशायें, मनोकामनाएँ, उसी के प्रति केन्द्रित कर रखी थीं, उसे तो केवल प्यार चाहिए पति का वास्तविक रूप मे, दोहरे मापदण्ड मे बँधकर नही। लेकिन यदि ऐसा नही हो पाया तो..........इसके आगे वह सोच नही पाती। इस तरह कुंठाग्रस्त होकर जीना एवं बँधे रहकर जीना क्या यह ठहराव उसकी धार को कुण्ठित नही कर रही है ? उसे ठहराव नही बहाव प्रिय है क्योकि यही क्रिएटिव है। उसे तो प्रेम का बहाव राजेश का चाहिए था लेकिन यदि ऐसा नही ही हुआ तो शायद वह कह नहीं सकती कि कब तक वह उसकी प्रतीक्षा कर सकेगी। प्रतीक्षा की भी एक सीमा होती है और जब सीमा का अन्त हो जाता है तो उसकी परिणिति दुखद ही होती है। कभी-कभी नियति भी उसके साथ कितना क्रूर खेल खेलती है।

कितना चाहा था उसने कि ज्वाइनिंग के समय राजेश भी उसके साथ आए पर सारे प्रयास निरर्थक रहे। उसका मान-मनोबल बेकार ही रहा। उसका वश पति पर नही चल पाता नही तो कितने और लोग है जो उसकी सहायता को इच्छुक रहते है, पलक पांवडे बिछाए रहते है। चाहते हैं कि स्मिता उनसे सहयोग ले। सहयोग की स्थिति मे उन्हे निकटता मिलेगी। स्मिता निकटता के अर्थ को खूब समझती थी। वह स्वाभिमान को स्वयं महत्त्व देती थी। विषम परिस्थितियों में भी स्वाभिमान की बिना पर उसने कोई समझौता नही किया था। उसे ऐसे पुरुष की मित्रता नही भाती थी जिनमें स्वाभिमान नाम की कोई चीज न हो।

पिछली बार वह ज्वाइन करने गई थी तो अमित ने कितने उत्साह से उसका स्वागत किया था। हरसंभव सहयोग दिया था ? वह तो उसको न जाने कितना अधिक सुख-सुविधा उपलब्ध कराना चाहता था पर उसे ही संकोच सा महसूस हो रहा था। उसमे मिलने पर उसे यह भी ज्ञात हुआ कि डिप्टी न्यूज एडीटर के पद पर प्रोमोट हो गया था। उसमे प्रतिभा है जब वह एस्टब्लिस्ड भी हो गया है वह उसके पहुँचने पर उत्साह और उमंग से कितना भरपूर दिखायी दिया था। आज वह ज्वाइन करने के पश्चात् लगभग एक माह बाद पुनः लौट

रही थी, पोस्टिंग वाले शहर में। अमित ने आवास की समस्या हल कर दी थी पत्र से उसे सूचना मिली थी लेकिन वह उसे कोई पत्र नहीं लिख सकी थी, इस बात पर उसे अफसोस था। वह पूछेगा तो क्या कहेगा? जिस स्थिति में वह रह रही थी, उसमें पत्र लिखने की मन:स्थिति में उसने स्वयं को नहीं पाया, अन्य कोई विशेष कारण नहीं था। जैसा उसने चाहा था वैसी व्यवस्था वह सन्तोष-जनक रूप में वहाँ पर पाई। घर की परिस्थितियाँ कुछ भी तो नहीं बदली, केवल काल चलाऊ व्यवस्था ही वह कर पाई। आखिर कब तक वह लीव पर रहती।

उसे लगता कि अमित उसे आज भी उतना ही चाहता है जबकि बदले हुए हालात में वह इतना तो जानता समझता है कि वह उसकी नहीं हो सकती। कभी यह भी सोचती कि उससे सहयोग न लिया जाए पर यह ख्याल आता कि वह दुखी होगा पहले ही दुख वह उसे दे चुकी है अब उसको पुनः दुखी करना कदापि उचित नहीं होगा। जो भी वह करेगा उसके भले के लिए ही, उसको सुखी बनाने के लिए ही। कभी वह सोचती कि अमित को ही चाह लिया होता तो शायद यह स्थिति न आती। क्षण भर के लिए गलती के बोध जैसा भाव भी जागृत होता पर दूसरे ही पल सोचती कि भाग्य के आगे किसी का क्या वश? प्रयत्न तो उसके हाथ की बात है इसलिए इसी को प्रमुखता देते हुए भविष्य को सजाने, संवारने में प्रयासरत होना ही ठीक होगा। वह तनावपूर्ण जीवन जी रही थी। सांवेगिक रूप से असन्तुलित भी हो जाती। कभी वह उद्वेगग्रस्त दिखाई पड़ती। अब तो उसे लम्बे समय तक वहीं रहना होगा, अमित से मिलना होता रहेगा। यही सब सोचते हुए उसे झपकी आ गई और वह तभी जागी जब ट्रेन गंतव्य वाले स्टेशन पर पहुँच गई।

स्मिता प्लेटफार्म पर उतरी सूटकेस लिए हुए तो कुली को उसने पुकारा जिससे वह ट्रंक उतरवा सके। तड़के सुबह का समय था। पौ फट चली थी। उसने सोचा था कि वह अमित के घर पहुँच कर इस बार सरप्राइज पुनः देगी, साथ ही अपना वायदा भी पूरा कर सकेगी उसके यहाँ जाकर ठहरने का पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने अमित को अपनी ओर आते देखा। आश्चर्य तो अवश्य हुआ लेकिन प्रसन्नता भी हुई।

"अरे अमित, तुम यहाँ कैसे?" हर्ष एवं विस्मय के भाव में वह बोल पड़ी।

"यही तो एक एक्सप्रेस ट्रेन है जो तुम्हारे शहर से इस महानगर में आती है। पिछली बार तुमने मुझे सरप्राइज दिया था। मैंने सोचा यह अधिकार तुम्हारा ही क्यों रहे? चलो इस बार कुछ हिसाब तो बराबर हुआ।" वह बोला।

इस बीच कुली ट्रंक प्लेटफार्म पर उतार चुका था। कुली को वहीं रुकने को कहकर अमित सामने के टी स्टाल से दो कप काफी लेकर आ गया। स्मिता

की ओर एक कप बढ़ाते हुए उसने कहा, "पहले काफी पी लो, नींद की खुमारी दूर हो जाएगी।"

स्मिता की इच्छा तो नहीं हो रही थी काफी पीने की क्योंकि, वह बग़ैर फ्रेश हुए चाय या काफी नहीं पीती थी। पर आग्रह को टालना भी संभव नहीं था और सफर में इस प्रकार का व्यतिक्रम तो होता ही रहता है। काफी पीते समय अमित स्मिता को देखता जा रहा था कि स्मिता अलस भाव में चेहरे पर खुमारी के प्रभाव से युक्त कितनी मादक लग रही है। उसके नैसर्गिक सौन्दर्य में उत्तरोत्तर वह निखार देख रहा था। शायद संघर्ष में वह और चमक उठती है ऐसा उसने सोचा। चाहा कि उसके रूप की तारीफ में कुछ कहे पर कहीं वह उसे अन्यथा न ले इसी संशय में था वह कि उसे स्मिता के स्वर सुनाई पड़े। स्मिता ने कुछ कहा था, उसने शायद कुछ पूछा था पर चेहरा सामने होते हुए भी वह सोच में डूबा था। स्मिता ने इसे लक्ष्य किया और कहा, "जनाब किधर खोए हुए है ?"

"नहीं, कुछ नहीं, हाँ तुम मुझसे कुछ कह रही थी ?"

"नहीं, तुमसे नहीं और किसी से क्योंकि मेरे परिचित इस शहर में कई लोग जो हैं।"

अमित झेंप गया साथ ही स्मिता के विपरीतार्थक वाक्य को भी समझ गया।

"अच्छा छोड़ो, अब बताओ क्या कह रही थी ?"

"क्या घर ले चलने का इरादा नहीं है, क्लाक रूम में सामान रखकर सीधे बैंक ही जाना होगा।

"क्यों नहीं ? मैं तो काफी समाप्त होने का इन्तजार कर रहा था।" कहने के साथ ही कप उसने कुली द्वारा भिजवा दिए। स्टेशन के बाहर निकल कर एक आटोरिक्शा कर लिया। रास्ते में स्मिता ने पूछा, "तुम्हें मेरे आने के विषय में कैसे पता चला कि मैं आज ही आ रही हूँ।" "न्यूज पेपर में हूँ न, थोड़ी बहुत जासूसी करनी पड़ती है, समाचार जानने के लिए बैंक से ही ज्ञात कर लिया था, कि तुमने लीव कब तक की एक्सटेंड करवायी है। प्रफुल्लित स्वर में अमित ने कहा।

"पर मान लो मैं इस ट्रेन से न आती, पैसेंजर ट्रेन से भी आना हो सकता था।"

"मैं तुम्हें शायद तुमसे ज्यादा जानता हूँ। तुम्हें स्लो लाइफ पसन्द नहीं है। फास्ट लाइफ और एडवेंचर तुम्हें प्रिय हैं।"

स्मिता को अमित का यह रिमार्क अच्छा लगा। बातें करते वे घर पहुँचे। लगभग एक घण्टे में वह नहा धोकर तैयार हो गई। उसने गुलाबी रंग की साड़ी

पहन रखी थी, जूड़े को करीने से बाँध रखा था। हल्के शेड के लिपिस्टिक का प्रयोग किया था उसने जो साड़ी के रंग से मैचिंग था। वह रोमांटिक लग रही थी। अमित ने कहीं पढ़ा था कि गुलाबी और नीले रंग रोमान्टिक प्रवृत्ति के द्योतक हैं। जब तक स्मिता तैयार होती रही अमित किचन में नाश्ते की तैयारी कर चुका था। टोस्ट, ग्रामलेट, चाय और आलू भरे पराठे डाइनिंग टेबुल पर रखा जा चुका था। स्मिता ने देखते ही कहा।

"अमित तुम तकल्लुफ बहुत करते हो। तुम्हें इतनी जल्दी क्या थी इन सब चीजों को तैयार करने की। मैं तैयार हो ही गई थी क्या बना न देती ?"

"इसमें तकल्लुफ कैसा ? तुम न भी होतीं तो क्या अपने लिए न बनाता ? हाँ, कुछ विशेष नहीं खिला-पिला रहा हूँ तुम्हें, कारण तुम समझती हो। हम पुरुष पाक-कला में इतनी दक्षता ला भी कैसे सकते हैं ?"

"लगता है कि तुम तारीफ करवाने पर तुले हुए हो। मैं तो इतना ही कहूँगी कि बगैर मेहनत के जो भी मिल जाए बहुत है।"

स्मिता और अमित के लिए नाश्ता और खाना दोनों यही थे। बीच में बातें भी होती रहीं। स्मिता ने कहा, "तुमने मकान ढूँढ लिया यह बहुत अच्छा रहा। शाम को उसमें शिफ्ट हो जाऊँगी।"

"क्यों, इतनी जल्दी भी क्या है ? दो-चार दिन क्या तुम मुझे आतिथ्य का अवसर न दोगी ? तब तक उस नये मकान के लिए आवश्यक सामान जुटा लिया जाता।

मन ही मन स्मिता भी यही चाह रही थी पर इस तरह रहना क्या उचित होगा ? मन के भाव को प्रकट न करते हुए उसने इतना ही कहा, "सुविधा, असुविधा, तो लगी ही रहेगी। रहने पर जरूरत की चीजों की सही जानकारी हो सकेगी ? चलो अभी तो समय है क्वार्टर देख लिया जाए।"

अमित एतराज कैसे करता। स्मिता की इच्छा के विपरीत न तो वह कुछ सोच सकता था और न कर सकता था। बड़े अन्तराल के बाद संयोग से स्मिता का सानिध्य उसे प्राप्त हुआ था। अब वह इन क्षणों को जीना चाहता था। उसे भय बना हुआ था कि यह निकटता पता नहीं कब दूरी में बदल जाये। पहले भी तो हो चुका था उसके जीवन में ऐसा। स्कूटर पर जाते समय स्मिता यद्यपि निःसंकोच भाव से नहीं बैठी थी फिर भी उसके वस्त्र या शरीर का थोड़ा बहुत स्पर्श जो हो जाता था सुखद लग रहा था। स्कूटर की गति उसने धीमी कर रखी थी जिससे बात करने में आसानी बनी रहे। उसने स्मिता से कहा, "मैं चाहता हूँ कि यह छोटा सा सफर जितनी देर में समाप्त हो अच्छा है। तुम्हारा साथ तो बना

रहेगा।" "तुम बातें बनाना काफी सीख गए हो।" मैं तो सोचती थी कि तुम अव्यक्त रहने वाले व्यक्ति हो।"

"सच बताना स्मिता, क्या मैं टोकेटिव जरूरत से ज्यादा हो गया हूँ।"

"नहीं तो, ऐसा मैंने नहीं कहा।" स्मिता धीरे से बोली।

अमित के घर से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर शहर की भीड़-भाड से दूर सिविल लाइन्स के एक बंगले में वह क्वाटर था जिसमें स्मिता को रहना था। अमित स्मिता की प्रकृति को समझता था। उसे विश्वास था कि इस बंगले में किनारे की ओर बना हुआ दो कमरों का यह फ्लेट स्मिता को पसन्द आएगा। बैड रूम से अटैच्ड बाथरूम था। दो कमरों के बीच में एक ओर किचन बना हुआ था तथा दूसरी ओर छोटा सा आंगन था। लान रेलिंग से घिरा हुआ था। गेंदा, गुलाब और विलायती आदि विभिन्न किस्म के फूलों के गमले बरामदे में रखे हुए थे। एक रिटायर्ड जज दम्पति उस बंगले के ओनर थे। उनके दोनों लडके अमेरिका में सेटिल्ड हो गए थे। किराए पर कोई पोर्शन वह नहीं उठाते थे पर अमित की बात उन्होंने मान ली थी घनिष्ठता के कारण। सब सामान भी हटाने की आवश्यकता नहीं समझी उन्होंने क्योंकि अमित ने स्मिता के सुरुचिपूर्ण होने तथा उसके सम्बन्ध में अन्य आवश्यक जानकारी दे दी थी। स्मिता ने देखा कि उसके क्वार्टर के ड्राईंग रूम में कालीन बिछी हुई थी जो दूब की तरह घनी और मुलायम थी। सोफा, सीलिंग फैन और एक पलंग भी कमरे में था। बंगले के बाहर हाता दीवारों से घिरा हुआ था। बीच में लोहे का गेट लगा था। काल बैल लगी हुई थी। सुरक्षा की दृष्टि से एक एल्सेशियन कुत्ता भी था जिसे वृद्ध दम्पति बड़े चाव से पाले हुए थे।

स्मिता को वह क्वार्टर बेहद पसन्द आया। इससे अच्छे क्वार्टर की अपने लिए उसने कल्पना भी नहीं की थी। उसने अमित की पसन्द की सराहना की। इधर समय भी हो गया था। साढे नौ बज चुके थे। अमित उसे बैंक तक छोड़ आया। स्मिता ने अमित से कह दिया था कि शाम को वह सामान पहुँचवा दे। वह शाम को अपने क्वार्टर पर ही सीधे पहुँचेगी। उसे मार्केटिंग भी करनी थी। जरूरत की विभिन्न चीजें खरीदनी थी। उसने कह दिया था अमित को कि कोई विशेष व्यस्तता न हो तो शाम को वह वहीं पहुँच जाए जिससे मार्केटिंग में उसे सुविधा हो सके। अमित को स्वीकारना था ही, इस छोटे से काम के लिए वह जरूरी एप्वाइन्टमेन्ट भी कैंसिल कर देता। दिन भर दोनों आफिस के काम में मशगूल रहे। अमित और दिनों की अपेक्षा अधिक चुस्त दुरस्त नजर आ रहा था। बिताए हुए क्षणों की याद और शाम के मनोरम क्षणों की कल्पना में वह जब तब निमग्न भी रहा। सुख के क्षण बीतते देर नहीं लगती। जब उसकी नजर घड़ी पर पड़ी तो देखा शाम के पांच बज चुके हैं। घर जाकर वह स्मिता के

सामान सहित उसके क्वार्टर पर पहुँच गया। स्मिता प्रतीक्षा करती हुई लान में टहल रही थी। गेट की ओर उसकी दृष्टि बीच-बीच में चली जाती थी। अमित ने इसे पहले ही देख लिया था। वह उमंग और उत्साह से परिपूर्ण दिखाई पड़ रहा था।

स्मिता प्रमुदित दिखाई पड़ रही थी। उसने कहा, "तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रही थी। सोचा तुम आ जाओ तभी चाय पी जाए।"

"जैसा तुम चाहो मैं तो तुम्हारे डिस्पोजल पर हूँ।" चाय पीते समय भी बातें करते रहे वे दोनों। अमित ने पूछा, "अच्छा तुमने खरीदे जाने वाले सामानों की लिस्ट बना ली होगी।"

"हाँ, यहाँ आने के बाद समय का उपयोग इस काम में मैंने कर लिया।"

अमित मार्केटिंग के लिए स्कूटर स्टार्ट करने जा रहा था कि स्मिता ने कहा, "क्या यह अच्छा नहीं होगा कि हम लोग पैदल ही चलें ?"

"अच्छा तो यही होगा। तुम रास्तों से वाकिफ भी हो जाओगी।"

दोनों पैदल चल पड़े। सड़क पर फुटपाथ के रास्ते पर वे जा रहे थे। एक किलोमीटर की दूरी पर ही मार्केट था। स्मिता सोच रही थी कि उसकी गृहस्थी दो स्थानों पर बंट गई है। वह अपने साथ अधिक सामान नहीं लाई थी यह सोच कर कि वहाँ भी उसकी जरूरत पड़ेगी। भीड़ भरे बाजार से वे जब गुजर रहे थे तो एक मोटर साईकिल तेज स्पीड से गुजरी। रास्ते में एक औरत अपने बच्चे के साथ रोड क्रास कर रही थी। जिससे उस व्यक्ति को मोटर साइकिल अचानक टर्न करनी पड़ी। अमित पूरा एहतियात बरत रहा था। उसने स्मिता को झटके से अपनी ओर खींच न लिया होता तो एक्सीडेंट हो जाता। स्मिता पहले तो सकपका गई पर दूसरे ही क्षण स्थिति को समझते ही वह बोल पड़ी, "थैंक्स अमित, मैनी मैनी थैंक्स। यू आर ए गुड केअर टेकर।"

"स्मिता आपस में इस तरह की औपचारिकता कैसी ? प्लीज स्मिता डोन्ट से थैंक्स मुझे पता नहीं क्यों इस शब्द से सम्बन्धों में दूरी का आभास होता है।"

"ओह डोन्ट माइन्ड, आई विदड्रा माई वर्ड्स।" स्मिता ने कहा।

मार्केट पहुँच कर स्मिता ने परदों के लिए कपड़े लिये टेपस्ट्रीज के। रंग उसने हरा ही चुना अमित की पसन्द से। मेक अप का सामान, खाने से सम्बन्धित वस्तुयें, फ्लावरपाट और स्टील के कुछ बर्तन आदि खरीदे। अमित ने दिन में ही गैस कनेक्शन के ट्रान्सफर के कागजात के आधार पर सिलेण्डर प्राप्त कर उसके घर पहुँचवा दिया था। स्मिता की बगल में चलते हुए अच्छा लग रहा था अमित को। दोनों की लम्बाई में अधिक अन्तर न था, स्मिता उसके कान तक रही होगी।

अमित हृष्ट-पुष्ट औसत कद का सुरुचिपूर्ण एवं गम्भीर प्रवृति का युवक था। वह सोच रहा था, काश यह मेरी पत्नी बनी होती पर उसका भाग्य ऐसा कहां? खुशनसीब हैं वे जिन्हें स्मिता ने चाहा उसे तो इतने से ही सन्तोष करना होगा कि स्मिता की निकटता उसे मिली, दूरी बनी और फिर सामीप्य मिला। अब आगे क्या हो ईश्वर ही जाने। खैर स्मिता खुश रहे, उसकी खुशी मे वह सन्तुष्ट हो लेगा। हर एक की हर चाह पूरी नही होती। शायद यही जीवन है। सामान साथ मे होने पर अब पैदल लौटना सम्भव न था। अत. दो रिक्शे कर वे वापस आ गये। तय हुआ कि बाकी की खरीदारी फिर कर ली जायेगी। रात के नौ बज चुके थे, अब अधिक देर रुकना सम्भव न था। स्मिता भी थकी होगी। आज उसे काफी एक्जर्शन महसूस हुआ होगा। अतः दूसरे दिन शाम को आने का वायदा कर उसने विदा ली।

दूसरे दिन अमित स्मिता के यहां पहुंचा तो देखा वह लान मे उदास बैठी थी। अमित को देखकर फीकी मुस्कान से उसने स्वागत किया और पुन. गमगीन हो गयी। बातो के मध्य उसने कहा, "अमित क्या तुम बता सकते हो कि साझ के समय मन उदास क्यो हो जाया करता है?' अमित समझ न पाया कि यह प्रश्न क्यो पूछा गया है उससे। उत्तर देना था इसलिए उसने कहा, "सुबह से शाम तक दिन रहता है और सांझ के बाद ही रात शुरू होती है। साझ तो एक सन्धि-काल है दिन और रात के बीच मे। व्यक्ति दिन भर का लेखा-जोखा करता है। रात्रि यदि सुखमय व्यतीत होने वाली हो तो मन मे उदासी नही आती बल्कि उमगपूर्वक प्रतीक्षा की जाती है रात के लिए। यदि ऐसा नही होने वाला है तो उसके कुछ कारण होगे। उन कारणों का ध्यान आने पर और कुछ यादो के मानस पटल पर अंकित हो जाने से जो शायद जीवन का अधेरा होता है, मन उदास हो जाता है, ऐसा मैं समझता हूँ।"

स्मिता ने एक पल अमित की ओर देखा फिर आंखें झुका ली। अमित सोचने लगा कि पुरुष हो या नारी प्रत्येक व्यक्ति रहस्य को अपने मन मे छुपाए रखता है। पुरुष तो फिर भी कभी प्रकाशित कर देता है मन की बातो को पर नारी एक अनबूझ पहेली है। उसके हृदय मे कितनी परतें है क्या कोई पुरुष उनको कभी पूर्ण रूप से उजागर कर पाया है? स्मिता को उसने औरो की अपेक्षा भले ही ज्यादा समझा हो पर उसे पूर्ण रूप से समझ सका हो, इसमे उसे सन्देह था। स्मिता के मन को कुरेदा जाये जिससे वह दुख को व्यक्त कर दे और उसका जी हल्का हो जाये, इस बात को ध्यान मे रखते हुए अमित ने स्मिता से पूछा, "बात नितान्त व्यक्तिगत है पर यह बताओ, पिछली बार तुम्हारे जाने और एक माह साथ रहने पर तुम्हारे और राजेश के सम्बन्ध मे कुछ सुधार तो हुआ होगा?"

"काश, ऐसा होता तो रोना किस बात का था ? मैंने उनके लिए क्या नही किया, सर्वस्व दांव पर लगा दिया पर मुझे रूसवाई और प्रताड़ना के अतिरिक्त क्या मिला ?"

'क्या तुम समझती हो कि पति से तुम्हे सेटिस्फैक्शन नही मिल पाता है ?"

"सन्तुष्ट ही होती तो दुखी क्यों होती ?"

"स्मिता, मैं ऐसा नही समझता। सुन्दर सा प्यारा अंकित तुम दोनों की सन्तुष्टि की पूर्णता है।"

"अमित, बच्चे तो कोई भी दे देता जो भी पति होता। फिजिकल सेटिस्फैक्शन की बात यदि पूछते हो तो कहूंगी कि हां मिलता ही है पर मन की भटकन का क्या करूं ? स्वभाव और विचारों मे अन्तर इतना अधिक है कि मेन्टल सेटिस्फैक्शन से दूर रहती हूं फिर बीच-बीच मे सम्बन्ध जब कटु हो जाते हैं तो दाम्पत्य जीवन के सुख से दूर रहती हूं, दिन पखवारे में गुजर जाते हैं। क्या नारी को उमंग या इच्छा कुछ भी नही होती ?"

अमित हतप्रभ रह गया स्मिता की बेबाक बातें सुनकर। वह तय नही कर पाया कि वह क्या कहे ? तभी स्मिता ने पूछा, "अमित, व्यक्ति क्यो भावुक बन जाता है दुख भोगने के लिए जैसे मैं और अगर गलत नहीं कह रही हूं तो तुम भी।"

अमित ने सच्चाई को स्वीकारा मन ही मन लेकिन वह कुछ कह नही सका, मन में पीडा को अनुभूत करते हुए वह स्मिता की ओर देखता रहा। अमित चाहता था कि विषयान्तर हो पर कैसे, यही वह नहीं समझ पा रहा था। थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे भावना के प्रवाह में खोए हुए। स्मिता ने बात आगे बढाई, "प्रतीक्षा और किसी प्रकार के परिवर्तन न हो सकने की स्थिति को जानने में अन्तर होता है। प्रतीक्षा मे मिलन या प्राप्ति की आशा हो सकती है चाहे वह पूरी हो या न हो क्योकि वह तो भविष्य के गर्त मे छिपा है लेकिन जानते होने का दर्द प्रतीक्षा की तुलना मे कही ज्यादा है।"

अमित महसूस कर रहा था कि उसके सामने बैठी स्मिता अपने जीवन की कुछ परतों को खोलकर रख रही है। वह चाह रहा था कि स्मिता अपनी बात कहती जाये और वह उसे सुनता जाये। किसी प्रकार का कमेन्ट कर व्यवधान न उपस्थित करे, उसके भावों की अभिव्यक्ति मे।

"अमित, मैंने तुम्हे भी दुःख पहुंचाया है कुछ जाने और कुछ अनजाने में। तुम्हें निराशा मिली होगी पर मैं संवेदना को अच्छी तरह समझती हूं संवेदनशील जो ठहरी। ऐसा नही कि मुझे इसका पछतावा कभी न हुआ हो, यह बात मैं

अमित हृष्ट-पुष्ट औसत कद का सुरुचिपूर्ण एवं गम्भीर प्रवृत्ति का युवक था। वह सोच रहा था, काश यह मेरी पत्नी बनी होती पर उसका भाग्य ऐसा कहाँ? खुशनसीब है वे जिन्हें स्मिता ने चाहा उसे तो इतने से ही सन्तोष करना होगा कि स्मिता की निकटता उसे मिली, दूरी बनी और फिर सामीप्य मिला। अब आगे क्या हो ईश्वर ही जाने। खैर स्मिता खुश रहे, उसकी खुशी में वह सन्तुष्ट हो लेगा। हर एक की हर चाह पूरी नहीं होती। शायद यही जीवन है। सामान साथ में होने पर अब पैदल लौटना सम्भव न था। अतः दो रिक्शे कर वे वापस आ गये। तय हुआ कि बाकी की खरीदारी फिर कर ली जायेगी। रात के नौ बज चुके थे, अब अधिक देर रुकना सम्भव न था। स्मिता भी थकी होगी। आज उसे काफी एक्जर्शन महसूस हुआ होगा। अतः दूसरे दिन शाम को आने का वायदा कर उसने विदा ली।

दूसरे दिन अमित स्मिता के यहाँ पहुँचा तो देखा वह लान में उदास बैठी थी। अमित को देखकर फीकी मुस्कान से उसने स्वागत किया और पुनः गमगीन हो गयी। बातों के मध्य उसने कहा, "अमित क्या तुम बता सकते हो कि साँझ के समय मन उदास क्यों हो जाया करता है?" अमित समझ न पाया कि यह प्रश्न क्यों पूछा गया है उससे। उत्तर देना था इसलिए उसने कहा, "सुबह से शाम तक दिन रहता है और साँझ के बाद ही रात शुरू होती है। साँझ तो एक सन्धि-काल है दिन और रात के बीच में। व्यक्ति दिन भर का लेखा जोखा करता है। रात्रि यदि सुखमय व्यतीत होने वाली हो तो मन में उदासी नहीं आती बल्कि उमंगपूर्वक प्रतीक्षा की जाती है रात के लिए। यदि ऐसा नहीं होने वाला है तो उसके कुछ कारण होंगे। उन कारणों का ध्यान आने पर और कुछ यादों के मानस पटल पर अंकित हो जाने से जो शायद जीवन का अंधेरा होता है, मन उदास हो जाता है, ऐसा मैं समझता हूँ।"

स्मिता ने एक पल अमित की ओर देखा फिर आँखें झुका ली। अमित सोचने लगा कि पुरुष हो या नारी प्रत्येक व्यक्ति रहस्य को अपने मन में छुपाए रखता है। पुरुष तो फिर भी कभी प्रकाशित कर देता है मन की बातों को पर नारी एक अनबूझ पहेली है। उसके हृदय में कितनी परतें हैं क्या कोई पुरुष उनको कभी पूर्ण रूप से उजागर कर पाया है? स्मिता को उसने औरों की अपेक्षा भले ही ज्यादा समझा हो पर उसे पूर्ण रूप से समझ सका हो, इसमें उसे सन्देह था। स्मिता के मन को कुरेदा जाये जिससे वह दुख को व्यक्त कर दे और उसका जी हल्का हो जाये, इस बात को ध्यान में रखते हुए अमित ने स्मिता से पूछा, "बात नितान्त व्यक्तिगत है पर यह बताओ, पिछली बार तुम्हारे जाने और एक माह साथ रहने पर तुम्हारे और राजेश के सम्बन्ध में कुछ सुधार तो हुआ होगा?"

"काश. ऐसा होता तो रोना किस बात का था ? मैंने उनके लिए क्या नहीं किया, सर्वस्व दांव पर लगा दिया पर मुझे रूसवाई और प्रताड़ना के अतिरिक्त क्या मिला ?"

'क्या तुम समझती हो कि पति से तुम्हें सेटिस्फैक्शन नहीं मिल पाता है ?"

"सन्तुष्ट ही होती तो दुखी क्यों होती ?"

"स्मिता, मैं ऐसा नहीं समझता। सुन्दर सा प्यारा अंकित तुम दोनों की सन्तुष्टि की पूर्णता है।"

"अमित, बच्चे तो कोई भी दे देता जो भी पति होता। फिजिकल सेटिस्फैक्शन की बात यदि पूछते हो तो कहूँगी कि हाँ मिलता ही है पर मन की भटकन का क्या करूँ ? स्वभाव और विचारों मे अन्तर इतना अधिक है कि मेन्टल सेटिस्फैक्शन से दूर रहती हूँ फिर बीच-बीच मे सम्बन्ध जब कटु हो जाते है तो दाम्पत्य जीवन के सुख से दूर रहती हूँ, दिन पखवारे में गुजर जाते हैं। क्या नारी की उमंग या इच्छा कुछ भी नहीं होती ?"

अमित हतप्रभ रह गया स्मिता की बेबाक बातें सुनकर। वह तय नहीं कर पाया कि वह क्या कहे ? तभी स्मिता ने पूछा, "अमित, व्यक्ति क्यों भावुक बन जाता है दुख भोगने के लिए जैसे मैं और अगर गलत नहीं कह रही हूँ तो तुम भी।"

अमित ने सच्चाई को स्वीकारा मन ही मन लेकिन वह कुछ कह नहीं सका, मन में पीडा को अनुभूत करते हुए वह स्मिता की ओर देखता रहा। अमित चाहता था कि विषयान्तर हो पर कैसे, यही वह नहीं समझ पा रहा था। थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे भावना के प्रवाह मे खोए हुए। स्मिता ने बात आगे बढाई, "प्रतीक्षा और किसी प्रकार के परिवर्तन न हो सकने की स्थिति को जानने में अन्तर होता है। प्रतीक्षा मे मिलन या प्राप्ति की आशा हो सकती है चाहे वह पूरी हो या न हो क्योंकि वह तो भविष्य के गर्त मे छिपा है लेकिन जानते होने का दर्द प्रतीक्षा की तुलना में कहीं ज्यादा है।"

अमित महसूस कर रहा था कि उसके सामने बैठी स्मिता अपने जीवन की कुछ परतों को खोलकर रख रही है। वह चाह रहा था कि स्मिता अपनी बात कहती जाये और वह उसे सुनता जाये। किसी प्रकार का कमेन्ट कर व्यवधान न उपस्थित करे, उसके भावों की अभिव्यक्ति मे।

"अमित, मैंने तुम्हें भी दुःख पहुँचाया है कुछ जाने और कुछ अनजाने में। तुम्हें निराशा मिली होगी पर मैं संवेदना को अच्छी तरह समझती हूँ संवेदनशील जो ठहरी। ऐसा नहीं कि मुझे इसका पछतावा कभी न हुआ हो, यह बात मैं

स्वीकार करती हूँ यह समझते हुये कि मैं तुम्हें सुखी नहीं बना सकती। इतना ही कहूँगी कि तुम्हारा मेरे प्रति जो लगाव रहा है वह मुझे अच्छा भी लगता रहा है।

"तुम्हें कनफेस करने की जरूरत नहीं स्मिता। तुमसे मुझे कोई शिकायत नहीं। मेरा भाग्य इतना ही था। तुम चाहतीं तो हमेशा के लिए किनारा कर लेतीं, लेकिन नहीं, मन के कोने में कहीं तो कुछ स्थान रहा होगा अन्यथा जो निकटता मिली है यह भी नहीं मिलती।" कहते-कहते अमित का स्वर भीग गया।

इधर स्मिता की आँखों में आँसू आ गये थे। अमित से न रहा गया, स्मिता के आँसू पोंछते हुये उसने कहा, "इस तरह कमजोर मत बनो। सामान्य होने की कोशिश करो।" अमित सोच रहा था कि कनफेस करना अच्छी बात है, लगता है कि की गयी गलतियों के कारण आत्मिक बोझ से आंशिक मुक्ति मिल गई हो। स्मिता के इस रूप को देखकर वह मंत्र मुग्ध सा उसे देखता रहा। उस स्मिता का नैसर्गिक सौन्दर्य और दिनों की अपेक्षा अधिक जान पड़ा। स्मिता सोच रही थी, कि पति से दूर इस अजनबी शहर में वह अकेलापन महसूस कर रही थी, पति से समायोजन के अभाव में किसी आत्मीय का हल्का सा स्पर्श या प्रदत्त संवेदनाजन्य अनुभूति कितनी सुखद होती है जैसे विश्राम और आश्वासन मिल रहा हो, ऐसा उसे आभास हो रहा था। अमित उद्वेलित हो उठा था। आज उसे नई अनुभूति हुई थी। स्मिता को अमित पर अत्यधिक भरोसा था।

आज वह सोचने के लिये विवश हुई थी कि जिस पर भरोसा किया जा सकता है वही सहारा भी बन सकता है क्या? दोनों चीजों के लिए एक व्यक्ति की ही आवश्यकता होती है या दो व्यक्ति अलग-अलग इसकी पूर्ति कर सकते हैं। वह कुछ निश्चय न कर सकी। दोनों ने एक दूसरे की कोमलतम अनुभूतियों को आज स्पर्श कर लिया था। रात्रि काफी व्यतीत हो चुकी थी। यद्यपि स्मिता ने कहा भी था कि यदि वह चाहे और असुविधा न समझे तो दूसरे कमरे में उसके सोने की व्यवस्था हो जाएगी। पर अमित स्वयं को अनियन्त्रित सा महसूस कर रहा था। इसलिए उसे रुकना उचित नहीं लगा क्योंकि आग्रहपूर्वक यह बात नहीं कही गई थी। स्मिता की भी अपनी सीमा थी। हम सभी दायरे में ही रहकर जीवन व्यतीत करने की चेष्टा करते रहते है। दूसरे दिन अमित को माँ से मिलने के लिए प्रस्थान करना था, तैयारी भी करनी थी। स्मिता ने उसे राजेश और अंकित से मिलकर आने को कह दिया था। स्मिता स्वयं भी जाना चाहती थी क्योंकि उसे अंकित की चिन्ता बनी हुई थी। लेकिन उसे अभी यहाँ दो ही दिन व्यतीत

हुए थे इसलिए इतनी जल्दी जाना संभव प्रतीत नहीं हुआ। अतः अमित रात्रि ग्यारह बजे घर आ गया। थका भी था और स्वयं को अमित हल्का महसूस कर रहा था। इसलिए बिस्तर पर लेटते ही उसे नींद ने घर दबोचा।

दो दिन बाद ही अमित वापस आ गया था पर व्यस्तता के कारण उस दिन वह स्मिता के घर नहीं जा सका। दूसरे दिन शाम को ही वह जा सका। संभवतः वह किचन में थी क्योंकि जब वह ड्राइंग रूम में आयी तो उसके माथे पर पसीने की बूंदें मालूम पड रही थी। हाथ भी गीले थे। वह गाउन पहने थी जिसमें वह फब रही थी। इस बीच अमित ने देख लिया था कि कमरे में सामान की बढ़ोत्तरी हो चुकी है। स्मिता ने निश्चय ही इन दिनों का उपयोग मार्केटिंग में कर लिया होगा। कार्निश पर गुलदस्ते सजे हुए थे। ताजे खिले फूल उसमे लगे थे। एक आयल पेंटिंग भी कमरे में दिखायी पड़ रही थी। रैक पर सबसे ऊपर फ्रेम जडित फोटो राजेश और अंकित के साथ स्मिता की थी। कमरे में सभी वस्तुएं यथास्थान रखी हुई थी जो उसकी कलात्मक रुचि का परिचय दे रही थी।

स्मिता आकर बैठने को कहकर भीतर चली गई और जब आई तो चाय की प्लेट और चाय की ट्रे भी साथ लायी। बातों के दरम्यान अमित ने बताया कि अंकित उसे बहुत याद कर रहा था। राजेश बातचीत के मध्य उदासीन था, उसने स्मिता के समाचार जानने में रुचि नहीं ली। कब तक आएगी यह भी नहीं पूछा और न पत्र आदि के सम्बन्ध में ही कुछ कहा। कोई मैसेज भी नहीं दिया केवल इतना ही कहा कि जो भी मन हो या जैसा उचित समझे वह अपनी व्यवस्था कर ले। हां, अंकित अवश्य कह रहा था। "अंकल मम्मी के पास जाऊँगा।" स्मिता यह सुनकर चुप हो गई लगता था कि कुछ सोच रही हो। उसे चाय पीने की भी सुधि नहीं रही। अमित ने जब ध्यान दिलाया तो अनिच्छापूर्वक साथ देने की गरज से वह चाय पी गई और कुछ भी नहीं खाया। "भूख नहीं है" यह कहकर गमगीन मुद्रा उसकी हो गई थी।

अमित समझ रहा था कि वह उद्विग्नग्रस्त है इस समय। हताश होने पर जीवन के किसी मोड पर इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो जाया करती है। अमित ने उसे समझाया की वह स्थिति को सहज रूप में ले। तनाव को अपने ऊपर हावी न होने दे। यथासम्भव सन्तुलन बनाए रखने का प्रयास करे। आवेश में आकर मनमानी करने से अपने को बचाये रखे। निराशाजनक बातों से अपने को दूर रखे। यह ठीक है कि बेचैनी की स्थिति मे व्यवहार मे व्यतिक्रम हो जाता है पर भावुकता को अधिक प्रभावित न होने दे स्वयं पर। औरों पर भी स्थिति आती है अकेली वही नहीं है जो इस दुख को भोग रही है इसलिए उसे चाहिए कि एकात्म भाव अपने मे उत्पन्न करे विश्वास पात्र व्यक्ति से अपने अन्तर की बातें

अमित से पूछ ही लिया, "अमित, क्या कभी इससे पहले भी तुम किसी लडकी के साथ किसी पार्क मे घूमे हो ?"

अमित ने कहा, "नही, आज मैं महसूस कर रहा हूँ कि जीवन के कुछ पहलू ऐसे होते हैं जिनको बताने से व्यक्ति नही समझ सकता। प्रायः अनुभव प्राप्त कर ही व्यक्ति उसे समझता है।"

स्मिता आसमानी रंग का सूट पहने थी। इस समय वह टीन एज़र लग रही थी। उसके वदन के कसाव और उभार उस सूट मे ज्यादा स्पष्ट हो रहे थे। अमित अपने को स्मिता के आकर्षण मे बिधा हुआ पा रहा था। उसे प्रतीत हो रहा था कि उसमे ऐसा विशिष्ट आकर्षण है, सम्मोहन की तरह या वह वशीकरण जैसा प्रभाव रखती है अपने व्यक्तित्व म। साथ ही उसमे खूबी भी यह है कि अगर कोई उसके नजदीक आकर दूर हो गया या दूर कर दिया गया तब भी उस व्यक्ति पर उसका आकर्षण समाप्त नही होता। वह उसे भूल नही पाता। यह दूसरी बात है कि उसमे मिलने का इत्तफाक न हो पाये।

उधर स्मिता अमित को देखते हुए सोच रही थी क्या किसी व्यक्ति को पूरी तरह समझा जा सकता है ? जीवन बीत जाता है दिन रात का समय बिताते हुए पर किसी स्टेज पर मालूम होता है कि दूसरे व्यक्ति को हम ठीक तरह से समझ नही पाये हैं। तभी एक से जुडने के पश्चात् दूसरे से जुडने की आवश्यकता कभी-कभी पड जाती है। किसी के साथ व्यतीत किए गए क्षण ऐसा विश्वास दे जाते हैं कि लगता है इसने शायद सबसे ज्याद मुझे समझा है। अमित को वह इसी नजरिए से परख रही थी। उससे रहा न गया, वह पूछ ही बैठी, "सच बताना अमित। नही जानती मैं कि तुम्हारे जीवन मे अब तक कितनी लड़कियाँ आई हैं, आई भी हैं या नही, कह नही सकती लेकिन मुझे ऐसा लगता है सभी परिचितो में या यह कहूँ कि तुम शायद अन्य किसी की अपेक्षा मुझे सबसे ज्यादा चाहते हो।"

स्मिता की बात ने अमित के मन का तार छू लिया। अपलक स्मिता की ओर देखते हुए धीमे स्वर मे वह बोला "हा तुम सच कहती हो। पता नही क्यों मैं मानसिक तादात्म्य के रूप मे तुमसे सबसे अधिक जुड़ा हूँ।"

स्मिता धीरे से हँस दी। सोच रही थी कि व्यक्ति कितने आवरण मे अपने को रखना चाहता है कवच की भाँति। क्या मन और शरीर एक दूसरे के पूरक नही है, फिर मानसिक तादात्म्य ही क्यों ? लेकिन उसने कुछ कहा नही। अमित इस बीच एक फूल तोड़ लाया था। उसने स्मिता की ओर बढ़ा दिया। उसने उसे अपने जूड़े में लगा लिया वैसे यदि अमित स्वयं यह कार्य कर देता तो वह ना नही

करती। अमित पार्क के गेट के पास से सापटी ले आया और दोनों उसे खाते रहे। स्मिता ने अन्तर की बात को व्यक्त करते हुए कहा, "मैं वफादार आजीवन रही या नहीं, यह अलग बात है लेकिन इतना सच है कि राजेश को मैंने जीवन मे सबसे ज्यादा चाहा पर सदैव चाहती रहूंगी, यह कह नही सकती क्योंकि वर्तमान स्थिति मे परिस्थितियाँ मोड भी ले सकती हैं यद्यपि मैं ऐसा चाहती नही हूँ।"

अमित को कहना पड गया, "पाक होने का जो दम्भ भरते हैं वे अन्दर से और भी नापाक होते हैं फिर यहाँ ही कौन पाक साफ है अपने गिरेबा म झांककर देखा जाए तो दुर्बलता किसमे नही है और यह तो मानवीय स्वभाव है यदि ऐसा न हो तो हम सब फरिश्ते न हो जायें। मैं इतना ही कहूंगा तुम मुझे हर हाल में अच्छी लगती हो अपनी विशिष्टता के कारण।" अमित को अचानक ख्याल आया कि स्मिता के जीवन मे जो भी व्यक्ति प्रभावी हुआ है, सयोग ऐसा रहा कि उनके नाम एक विशेष अक्षर से प्रारम्भ थे। स्मिता के मन की थाह पाना अमित को दुष्कर लग रहा था। कब क्या स्टैण्ड ले लेगी, कहा नही जा सकता ? एक ओर अपनत्व जताकर निकटता का आभास देती है तो दूसरी ओर इच्छा के विपरीत कोई बात सुनकर भृकुटि तनते देर नही लगती और पता नही फिर उसे क्या सुनना पड़ जाए ? इस अंदेशे मे स्मिता से बात करते समय वह सतर्कता भी बरतता था। कभी उसे लगता कि स्मिता बातो के घेरे में लाकर उसकी परीक्षा या परख तो नही कर रही है और तब उसे उन व्यक्तियो के प्रति ईर्ष्या की अनुभूति होती रही साथ ही उनकी सराहना भी कि वे भाग्यशाली रहे। उनमे कुछ ऐसी विशिष्टतायें अवश्य रही होंगी जो स्मिता के विशिष्ट व्यक्तित्व को प्रभावित कर सकी। तब क्या उनसे अमित अपने को हीन समझे, यही बात वह स्वीकार नही कर पा रहा था।

अमित पूछ ही बैठा, "राजेश किस प्रकार की पत्नि की कामना करते हैं ?" स्मिता ने तुरन्त ही कहा, "पढी लिखी, कमाऊ, फिल्म अभिनेत्री जैसी देह-यष्टि, आँख मूंदकर पति के इशारे पर चलने वाली, पूर्ण समर्पिता, घरेलू यानी सर्वगुण सम्पन्न।"

तब अमित को कहना पडा, "इस स्थिति मे तब तो राजेश को भी सर्व-गुण सम्पन्न होना चाहिए पर सर्वगुण सम्पन्न शायद ही कोई हो।"

"मैं और सब कुछ कर सकती हूँ लेकिन आंख मूँद कर इशारे पर चलना मुझे स्वीकार नही। मैं अपने व्यक्तित्व को मिटा नही सकती। अपनी निजता के बिना व्यक्ति का अस्तित्व ही क्या है ?"

"तुम ठीक कहती हो फिर शिक्षित, अशिक्षित या कमाऊ और घरेलू स्त्री में अन्तर ही क्या रह जाएगा।" अमित ने कहा।

"पेट भरने को ही यदि जीना कहते हैं तो यह जीवन मुझे भी मिल सकता था। कम से कम मैं इस प्रकार का जीवन नहीं जी सकती।" कहते हुए स्मिता का चेहरा तमतमा उठा। अमित ने यह रूप देखा तो उसे स्मिता के संघर्षशील होने की बात याद आयी जिस समय वह परिस्थितियों के थपेड़े से जूझ रही थी। अमित के मन में विविध भाव आ जा रहे थे। उसने प्रासंगिक प्रश्न ही लिया। "तुम्हें किस तरह का जीवन प्रिय है ?"

"मैं दासी के रूप में नहीं, सहचरी वाला जीवन जीना चाहती हूँ जहां दोनों एक दूसरे की भावनाओं की कद्र कर सकें। अपनी विशिष्टता को बरकरार रखना चाहती हूँ। मन की बात खोलते हुए उसने कहा, "जीवन-साथी से मैं यह अपेक्षा करती हूँ कि वह मुझे डायमण्ड की तरह रखे और महत्व दे यदि ऐसा नहीं होना है तो टकराहट होगी। परिणाम चाहे कुछ हो मैं उसकी परवाह नहीं करती हूँ।" अमित को लग रहा था कि स्मिता एक रेखा है जिसके दोनों सिरों पर बिन्दु होते हैं। यह रेखा आकार में घट बढ़ भी सकती है। उसी अनुपात में बिन्दु के स्थान बदल जाते हैं, कभी भी यह रेखा बिन्दु की ओर से मुड़ सकती है।"

पार्क के गेट बन्द होने में थोड़ा सा समय ही रह गया था। अमित ने अपनी इच्छा व्यक्त की कि पार्क का एक चक्कर और लगा लिया जाये। स्मिता ने स्वीकृति दे दी। टहलते हुए स्मिता ने कहा, "अमित मैं समझती हूँ कि दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं एक वे जो अवसर की प्रतीक्षा करते हैं और समय आने पर लाभ उठा लेते हैं। दूसरे वे जो अवसर की प्रतीक्षा ही करते रहते हैं और जब अवसर आता है तो या तो वे जान नहीं पाते अवसर को अथवा योग्यता के अभाव में अवसर का लाभ नहीं उठा पाते है तब बाजी किसी और के हाथ में चली जाती है, या यूँ कहो कि दोनों अपोजिट सेक्स के व्यक्तियों के बीच तीसरा व्यक्ति आकर लाभ उठा लेता है।" अमित बेचैन हो गया स्मिता की यह बात सुनकर। उसने एक कटु सत्य को उद्भासित किया था। क्या यह बात उसकी असफलता के परिप्रेक्ष्य में कही गई थी ? उसकी असफलता में यही एक कारण था या कुछ और भी थे ? कहीं ऐसा तो नहीं कि वर्तमान में अवसर का लाभ उठाने के लिए उसे इंगित किया गया है। वह इसका साहस कर ले पर निश्चित भी नहीं कि यह बात वर्तमान को ध्यान में रखकर कही गई है। या अतीत की असफलता का विश्लेषण किया गया है। पर यदि जैसा वह समझ पा रहा है वैसा नहीं हुआ तो·········। प्रयास न करने पर अवसर को गंवा देने वाली बात हुई। खैर कुछ भी हो एक प्रयास तो वह अवश्य ही करेगा या तो उसे

सफलता मिलेगी या सदैव के लिए विद्रोह। सदैव के लिए विछोह वह नही चाहता है। देखा जायेगा, भाग्य मे जो भी होगा कम से कम प्रयास न कर पाने का पछतावा उसे सालता तो नही रहेगा।

पार्क में युगल अपने प्रणय को मधुर बनाये रखने हेतु घूमते हुए दिखाई पड़ रहे थे। धीरे-धीरे लोग वापस जा रहे थे। गेट से बाहर निकलने पर घर आते समय स्मिता ने कहा, "राजेश को यदि ये सब बातें मालुम हो जायें तब तुम्हारा आना सम्भव नही हो पायेगा।" अमित इस बात के मर्म को समझ नही पाया। कही यह संकेत तो वह नहीं दे रही है कि अपनी सीमा मे रहो यदि अतिक्रमण किया तो वर्तमान सम्बन्ध टूट भी सकते हैं या यह भी हो सकता है कि वर्तमान निकटता का जो रूप है, वह छिपे रूप मे ही जारी रहे। पब्लिसिटी न हो पाये, कोई अन्य न जान पाये, तभी बेहतर होगा। निश्चय, अनिश्चिय की भंवर मे फसा हुआ प्रयास को साकार करने की कामना रखता हुआ उद्विग्न अमित बैचेनी की हालत में स्मिता को उसके घर तक पहुँचा कर अपने घर लौट आया।

स्मिता इस बार अवकाश मे घर गई तो उसे उम्मीद थी कि उसकी अनुपस्थिति मे शायद राजेश की विचारधारा मे कुछ परिवर्तन आ जाए लेकिन उसने पाया कि परिस्थितियां पूर्ववत ही है या पहले से कुछ बदतर हो गई हैं अंकित उससे इस कदर चिपट कर रोने लगा कि लाख समझाने पर भी वह उससे सटा रहा। स्मिता को कसक सी हुई कि यदि अंकित को राजेश का प्यार मिला होता तो वह इस सीमा तक उसकी याद नही करता। बच्चे भी प्यार को खूब पहचानते हैं। शुरू से ही वह मम्मी पर निर्भर रहा था। पापा से उसकी बात अधिक नही होती थी। उसके मन मे ग्रन्थि सी बैठ गयी थी कि पापा उसे प्यार नही करते हैं। उसने कहा भी "मम्मी मुझे ले चलो।"

× × ×

स्मिता को कहना पड़ा, "हां बेटे मैं तुम्हें लेने आई हूँ।"

"सच मम्मी तब तो मैं खूब खेलूंगा। आपके पास सोऊंगा।"

"पर बेटे मन लगाकर पढ़ना भी होगा।"

"हां मैं पढ़ूंगा" अंकित ने कहा

राजेश उस समय कहीं जाने की तैयारी कर रहा था। दोनों की बातें सुनकर उसने कहा, "स्मिता तुम अंकित को साथ रखो तभी ठीक होगा।"

"क्यों, तुम्हें क्या परेशानी है ?" स्मिता बोली।

"देखो, आफिस से लौटने में मुझे देर भी हो जाती है फिर मुझे लगता है कि मैं उसकी ठीक से देखरेख नहीं कर पाऊंगा। आखिर बच्चों को सभालना औरतों का ही काम है।"

"मर्दों की क्या कोई ड्यूटी नहीं है। आफिस तो मैं भी जाती हूँ, देर मुझे भी हो सकती है। क्या वर्किंग वीमेन और नान वर्किंग वोमेन में कोई अन्तर नहीं है। काम की दृष्टि से ?"

यह बात कहते कहते वह रुक गई। सोचा बात बढ़ाने से फायदा भी क्या ? वह समझौता करने के मूड में थी। अतः उसने इतना ही कहा, "ठीक है, तुम्हें कष्ट होता है तो पहले ही की तरह मैं ही देखरेख करूंगी।"

"कष्ट केवल तुम्ही नहीं उठाती, हम दोनों समान रूप से भागीदार हैं। वास्तविक बात यह है कि मैंने स्थानान्तरण के लिए एप्लाई कर दिया है कभी भी आदेश आ सकता है। न भी आये तो अनिश्चितता बनी रहेगी बाद मे तुम्हें व्यवस्था करने मे परेशानी होगी।"

"ऐसी क्या बात हो गई जो ट्रान्सफर के लिए उतावले हो गये पूछा तक नहीं। मैं तो सोच रही थी कि अपना ही ट्रान्सफर करवा लूँ।"

"तुम जैसा चाहो, करो। तुम स्वतत्र हो पर जिन हालात को मैं भोग रहा हूँ उसे मैं अधिक दिन सहन नहीं कर सकता।"

"आज तक तो सहन किया ही था। अगर तुम्हें मुझसे कुछ शिकायत है, मेरी कुछ बातें ना पसन्द है तो अब तो मैं दूर चली गई हूँ।"

"दूर या पास की बात नहीं। मैं ऊब चुका हूँ यहां से इसलिए यह स्थान छोड़ना चाहता हूँ।"

"केवल स्थान से ऊब गये हो या मुझ से भी ?"

"कह नहीं सकता।" राजेश ने रुखे स्वर मे उत्तर दिया।

"नहीं तुम्हें बताना होगा जिससे हम लोग अपने फ्यूचर के बारे में कोई निर्णय ले सकें।" स्मिता कब तक बर्दाश्त करती कुछ रुककर उसने कहा मैं चाहती हूँ कि तुम यहीं बने रहो अगर तुम्हें मेरी जरूरत महसूस होगी तो मैं ट्रान्सफर की कोशिश कर लूँगी। नहीं चाहोगे तो तुम्हे कष्ट पहुँचाने के लिए स्थानान्तरण के लिए कोशिश नहीं करूंगी।

"क्या कहूँ कुछ समझ मे नहीं आता कभी लगता है तुम्हारी सर्विस न होती तो अच्छा रहता, तुम इतनी स्वतन्त्र न होती। मेरे अनुशासन को मानती। मुझ पर निर्भर रहती।"

"तो यह कहो कि तुम्हें मेरी सर्विस रास नहीं आ रही है।" जी को कड़ा करते हुए अनिच्छा से उसने कहा। "अगर सर्विस ही एकमात्र कारण है तो मैं लीव विदाउट पे ले सकती हूँ। लम्बे समय तक के लिए या कहो तो रिजाइन कर दूँ। मैं भी मौजूदा हालत से सन्तुष्ट नहीं हूँ। सामान्य होना चाहती हूँ। चाहती हूँ कि हम लोगों में अच्छा एडजस्टमेन्ट हो।"

राजेश सोचने लगा कि सर्विस छोड़ देने पर पूरा खर्च उसे ही चलाना होगा फिर वह जो बचत कर रहा है कैसे कर सकेगा, घर में यूँ बधी बधाई आमदनी होने लगे तो उसे कौन छोड़ना चाहेगा ? सर्विस छोड़ देने का अर्थ होगा समस्या का और बढ़ना तब रुपये पैसों के लिए चख-चख मचती रहेगी। यह तो अपने द्वारा परेशानी मोल लेना होगा। उसने कहा, "सर्विस तुम क्यों छोड़ोगी फिर तुम्हारी इनडिविजुएलिटी का क्या होगा ? जहाँ भी सर्विस करो, अंकित को अपने पास रखो मैं यही चाहता हूँ।"

"ठीक है अंकित को मैं अपने पास रख लूँगा। वैसे मैंने सोचा था कि तुम्हें कोई परेशानी हो तो उसे होस्टल में रख दिया जाये।" स्मिता ने समस्या का समाधान करते हुए कहा।

"होस्टल में रखो या अपने पास निर्णय तुम्हें ही करना है आखिर अंकित तुम्हारा बेटा जो है।"

"और तुम्हारा कोई नहीं ?" स्मिता को राजेश की बात गहरे तक चुभ गई थी।

"कैसे कहूँ, तुम्हीं ने एक बार कहा था कि तुम सर्विस अपने लिए और अंकित के लिए कर रही हो।" राजेश ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

"अगर इसी प्रकार तुम्हारी बहुत सी बातें मैं कहूँ तो वे ज्यादा चुभन पैदा करेंगी। लेकिन तुम उसे सह नहीं सकोगे फिर लाभ भी क्या ? मैं इतना ही कहूँगी कि तुम यहीं रहो। ट्रांसफर की बात तो तब उठती जब मैं यहीं रहती क्योंकि मैं देख रही हूँ कि मैं अब तुम्हें अच्छी नहीं लगती हूँ। यह मत समझना कि मैं शिकायत कर रही हूँ पर रियल्टी है यह।" स्मिता के स्वर में दुख का भाव परिलक्षित हो रहा था।

"तुमने जो कहा उसे झूठ नहीं कहूँगा पर इस जगह से दूर जाना चाहता हूँ।"

"देखो राजेश, मुझे लेकर तुम्हारे मन में यदि कोई भ्रम है तो अभी समय है उसे दूर कर लो नहीं तो शायद हम दोनों के लिए पछतावा ही शेष रहेगा। तुम्हारे लिए न भी हो, मेरे लिए तो रहेगा ही।"

लिया हो। पहले स्मिता रोहित के प्रेम का प्रत्युत्तर न दे सकी थी। अभी तक भी नहीं दिया था क्योंकि वह अपनी सीमा जानती थी। पर उसे कभी-कभी लगता कि मन क्या चाहता है किस समय। शायद इसे हम अच्छी तरह नही जान पाते। मन की परतो में अनजान पहलू भी छिपे होते है। इसलिए कभी हम चाहते कुछ है और हो कुछ जाता है। स्मिता ने कभी नही चाहा था कि रोहित के प्रति प्रेम भाव से उन्मुख हो पर जो नही चाहा था वही स्थिति धीरे-धीरे होने लगी थी।

रोहित स्मार्ट दुबला-पतला युवक था, रंग साफ और सोशल किस्म का व्यक्ति था। सहयोग प्रदान करने मे और भाग दौड़ करने मे भी प्रवीण, परिश्रमी, एवरेज इन्टेलिजेन्स का बातूनी व्यक्ति था। वह चुप नहीं बैठा रह सकता था। उसमें चंचलता विद्यमान थी। कोई व्यक्ति उसके सम्पर्क मे आ जाये और चुप बैठा रहे यह सम्भव नही हो सकता था। वह बात करने के लिये विवश कर देता स्वय विविध टापिक्स पर बात करके। स्मिता मे भी कुछेक गुण इसी प्रकार के थे। रोहित को ऐसा आभास हो रहा था कि स्मिता का दाम्पत्य जीवन राजेश के साथ शायद अधिक दिन तक नही चल पायेगा। स्मिता जीवन के किसी मोड़ पर विलग होने की स्थिति मे विकल्प के रूप में किसी को चुने इससे तो अच्छा यह होगा कि वह स्वयं का प्रपोज कर दे। वह यह भी महसूस कर रहा था कि जब से रीजनल आफिस वाले शहर मे होकर वे लौटे हैं स्मिता का व्यवहार उसके प्रति पूर्वापेक्षा अधिक भरोसेमन्द हो गया है।

वह अब पहले से ज्यादा प्रेम प्लावित दिखायी पडती। शायद वह भी उसको भाँति प्रेम करने लगी है यद्यपि उसने स्वीकारा नही। यही वह क्षण है जब उसे अपने को व्यक्त कर देना चाहिये क्योंकि इन क्षणों की पहचान व्यक्ति को होनी चाहिए अन्यथा व्यक्ति प्रेम बन्धन मे सफल नही हो सकता। आखिर उसने एक दिन कह ही दिया, "स्मिता मैं चाहता हूँ कि तुम सुखी रहो। दाम्पत्य जीवन राजेश के साथ व्यतीत करो पर यदि यह सम्भव न हो सके और जीवन मे साथ की जरूरत महसूस करो तो मुझे तुम तैयार पाओगी। मैं स्थायी रूप से तुम्हें अपनाने की चाह रखता हूँ।"

स्मिता इसको सुनकर अभिभूत तो अवश्य हुई लेकिन उसने यही कहा, "मुझमें और तुममे बड़ा अन्तर है। मैं अनुभव प्राप्त कर चुकी हूँ, विवाहिता हूँ, बच्चा भी है। तुम अविवाहित हो, तुम्हें अभी जीवन को बहुत कुछ देखना और समझना है।" रोहित ने स्पष्ट दिया, "मेरा जीवन तो तुम हो। तुम्हे देख और समझ लिया है अब और कुछ देखने की चाह नही फिर मैं तुम्हें बाध्य तो कर नही रहा हूँ और न कोई अनैतिक बात ही कह रहा हूँ। यदि जीवन मे ऐसा हो तो मुझे ही चुनना। मैं तुम्हारा इन्तजार करूँगा। राजेश के साथ रह सको तो मुझे

कोई आपत्ति नहीं है। वह तुम्हारे पति हैं पर यदि साथ रहना सम्भव न हो तो मैं तुम्हे किसी और का विकल्प चुनने नही दूँगा अपने सिवा।"

स्मिता पहले तो समझ नही सकी कि यह धमकी है या और कुछ, फिर उसने जान लिया कि यह तो प्रेम की दृढ़ता है या प्रेम की पराकाष्ठा। इस प्रकार की स्थिति मे ऐसे ही स्वर और भाव व्यक्त होते है। स्मिता ने इतना ही कहा—"सोचूँगी। अभी कुछ कहने की स्थिति मे नही हूँ।" बाद मे जब-जब वह विश्लेषण करने बैठती तो पाती हम सब किससे प्यार कर बैठते है इसके सम्बन्ध मे कोई गाइड लाइन नही निश्चित की जा सकती है। कभी पहले दर्शन मे ही प्रभावित होकर चाहना करने लगते हैं। कभी सालो बीत जाते हैं और एक दिन पता चलता है कि प्यार के बीज अंकुरित हो गये हैं। कभी ऐसा होता है कि प्यार करने वाले से नफरत भी करने लग जाते हैं भले ही कारण कुछ भी हो।

स्मिता को रोहित पर भरोसा हो चला था। यद्यपि उसने प्रत्यक्ष रूप से उसके प्रेम को स्वीकारा नही था पर सम्भावनाओ से इन्कार भी नही किया था। देखा जाय तो औरत मर्द से प्यार करती है तो उस पर भरोसा भी करने लगती है। सोचती है कि यह पुरुष उसी का होकर रहेगा पर क्या वास्तव मे ऐसा है. कुछ औरतें ऐसी भी होती हैं कि दिल भर जाने पर या असन्तुष्ट रहने पर दूसरा माध्यम चुन लेती है। इसी प्रकार मर्द भी औरतो से पहले ही यह काम कर डालता है। यह बात रोहित पर लागू हो अथवा नही पर सत्यांश तो है ही इसमें। इधर इन पन्द्रह दिनों में राजेश तो अलग थलग ही रहा और रोहित तथा स्मिता का साथ इतना ज्यादा रहा जितना विगत के वर्षों मे कुल मिलाकर शायद ही रहा हो। स्मिता को रोहित का साथ अच्छा लगा था। कुछ ट्रान्सफर सम्बन्धी प्रयास कुछ अपनी इच्छा तथा उदासी को दूर करने के लिए रोहित के सान्निध्य के क्षण ज्यादा और ज्यादा प्राप्त करने की अभिलाषा में उसने छुट्टियाँ बढ़वा ली थी ? पर उसे लौटना तो था ही। ट्रान्सफर की आशा तो हो चली थी पर इसमे समय लगेगा। चलो शुभारम्भ हुआ। इन दिनों मे तथा इसके पूर्व के महीनो मे भी वह राजेश से उसके हठीले रवैये के कारण दूर ही बनी रही। अंकित को साथ लेकर ही लौटना उसने निश्चित किया। उसने रोहित के प्रेम को न तो अब तक स्वीकारा ही था और न उसके प्रति प्रेम को व्यक्त ही किया था पर अव्यक्त प्रेम के प्रभाव को उसके प्रति वह महसूस करने लगी थी। अवकाश समाप्ति पर उसने बेटे के साथ कानपुर के लिए प्रस्थान किया। मन मे इस बार राकेश के प्रति कम पर रोहित से दूर जाने के दुःख की अनुभूति हो रही थी। शायद इसका कारण यह रहा हो कि प्रेम मे हर तरह की जुदाई दुःख देने वाली होती है।

स्मिता वापसी में ट्रेन में बैठी हुई अपने जीवन के बारे में सोच रही थी। उसके मन मे विविध चित्र बन-बिगड़ रहे थे। उसका भी क्या जीवन है, लोग उसे खुशहाल समझते हैं पर मन की खुशी कोसों उससे दूर है। कितने सुख के दिन उसके बीते थे। माता-पिता के सान्निध्य मे। भरा पूरा परिवार था। अभाव उसने जाना न था। उमंग, उत्साह से परिपूर्ण थी वह, कान्तियुक्त भी। गरिमा और सौन्दर्य ने उसे निखारा था। वह एक ऐसे वातावरण मे पली थी जहां उदारवादी दृष्टिकोण था। एक दूसरे की अनुभूतियों की समझ, अंकुश किसी किस्म का न था। स्वाभाविक और प्रफुल्लता से पूर्ण जीवन था उसका। अमित, रवि, राजेश और अब रोहित सभी की अपनी विशिष्टतायें थी जिनके सम्पर्क मे वह आयी, अमित ने उसे अपने मन-मन्दिर की अधिष्ठात्री बनाया, रवि ने सुख का माध्यम, राजेश का पति के रूप मे वरण किया और रोहित उसकी भावनाओ की निकटता का साथी बना। सभी से उसे विविध प्रकार की अनुभूतियां मिली। मन से वह चाहे जिससे जुड़ी हो पर तन से वह रवि से जुड़ी थी। पर कालान्तर मे यथार्थ का ऐहसास होते ही उस जाल को उसने काट फेंका था। फिर वह पूर्ण समर्पिता हुई अपने पति राजेश के प्रति। सच बोलने का गुनाह किया था उसने जिसका परिणाम वह अब तक भुगत रही है। सच क्या इतना ही कड़ुआ होता है ? दोहरी जिन्दगी जीती तो सत्य को झुठलाना होता पर शायद इस प्रकार का जीवन उसे स्वीकार न होता। वह लुके छिपे तौर पर कोई काम करना पसन्द नही करती थी और न जग जाहिर करने मे ही उसकी आस्था थी। उसे अपने परिवार से जो संस्कार मिले थे उसी के अनुरूप वह जीवन जीने का प्रयास करती रही है अब तक।

माता-पिता भाई-बहिन से उसे अपरिमित स्नेह मिला था। इस स्नेह ने ही उसे शक्ति प्रदान की थी, उसके प्रेरक बने थे। जिससे उसमे बोल्डनैस अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिये स्वय मार्ग निर्दिष्ट करने की चेतना का प्रादुर्भाव हुआ था। उसमे दृढ़ता और लगन रही है लक्ष्य प्राप्ति की। झंझावातो से वह जूझी है, डटकर मुकाबला किया है विषम परिस्थितियों का। स्थिति को अनुकूल बनाने में ही वह सफल हुई भले ही वर्तमान संदर्भ में उसे असफलता का वरण करना पड़ रहा हो। कितनी चाह और उमंग से जीवन साथी का चुनाव किया था। पर आज उसे अस्थाई जुदाई का सामना करना पड़ रहा है। यदि जुदाई अस्थाई है तो प्रतीक्षा की जा सकती है, पुनर्मिलन की आशा संजोयी जा सकती है। काश ऐसा ही हो पर यदि ऐसा न हुआ तो ..........इसकी कल्पना से उसे सिहरन हो जाती। क्या उसका जीवन दुःख झेलने के लिये ही है, उसने पति से सुख चाहा था पर उसे सुख कहाँ नसीब हो सका ?

स्टूडेंट लाइफ मे वह पढाई के साथ अन्य गतिविधियों मे बढ़ चढ कर भाग लेती थी। पिकनिक आदि में उसके कार्य कलापों से रौनक बढ़ जाती थी। लोग

उसका राग साथ काफी पसन्द करते थे पर वह सीमा से आगे कभी नहीं बढ़ती थी न ही बढ़ावा किसी को देती थी। उसने कभी नहीं चाहा कि लोग उसको लेकर अपने मन में भ्रम को पाले रखें इसलिए उसे झूठ से सख्त नफरत थी और सच से ही लगाव था, फिर सच कितना ही कड़वा क्यों न हो, उसके हितों पर कुठाराघात ही चाहे करे। वह स्वाभाविक जिन्दगी जीने मे विश्वास रखती आई है, कृत्रिमता से उसे नफरत ही रही। भावुक भी थी वह, सवेदनशीलता को समझती थी, उसको महत्ता भी प्रदान करती थी। भावनाओं को गीतों के माध्यम से उसने व्यक्त भी किया था, यद्यपि इस दिशा मे वह अपने को अधिक केन्द्रित न कर सकी थी जिसमें उसकी प्रतिभा का पूर्ण प्रकाशन न हो पाया।

उसके परिवार, परिचित और बन्धु-बान्धव उसके व्यक्तित्व के गुणों के प्रशंसक रहे हैं। उसकी स्पष्टवादिता कभी-कभी उसके आत्मीय जन को नागवार भी लगी लेकिन कुल मिलाकर उसके व्यवहार शिष्ट शालीन और प्रभावपूर्ण ही रहे हैं। कभी राजेश इन्हीं गुणों पर मुग्ध हुआ था। विवाह भी हुआ पर आज उसको ये ही गुण नहीं भाते हैं। क्यों होता है ऐसा कि प्रेयसी के स्वरूप और पत्नी के स्वरूप मे लोग अन्तर करते हैं? इसके माने पत्नी से केवल आदर्श की ही अपेक्षा की जाती है यथार्थ की या स्वाभाविकता की नहीं। उसने संघर्ष भी किया था, विवाह के पश्चात् अनएम्प्लायड रहने की स्थिति मे, पति के दुर्घटनाग्रस्त होने की स्थिति मे, फिर पति के बेरोजगार होने की स्थिति मे और अपने प्रयासों से इन सब पर सफलता प्राप्त कर उसका स्वरूप और अधिक कान्ति तथा गरिमा से देदीप्यमान हो उठा था। उसने स्वभाव के विपरीत राजेश से समझौता किया। हर बार पहल कर उसके अहं को तुष्टि प्रदान की लेकिन इसके बदले उसे जो मिला क्या वही उसका प्राप्तव्य था?

आज वह जीवन के जिस मोड़ पर खड़ी है या जिस दौर से गुजर रही है। यही उसकी साधना का प्रतिफल है, फिर उसका त्याग, समर्पण, निष्ठा, जागरूकता और जीवन की ललक अब अर्थहीन जो होते जा रहे हैं। इन परिस्थितियों मे वह क्या करे। ये बैचैनी, छटपटाहट, शोषण और अंकुश उसे सामान्य जीवन से परे हटाते जा रहे हैं। उपेक्षा और तिरस्कार ने उसके जीवन मे लिजलिजापन जो पैदा कर दिया है उसे किस प्रकार वह ढोती फिरे। पति से स्वय के लिये अधिक आशा तो नहीं रखी थी उसने क्योंकि उसने अपने और अंकित की जरूरतों को पूरी करने के लिये उसकी सर्विस पर्याप्त है। पर बदले मे प्यार अवश्य चाहा था। वह तो अपने सीमित परिवार की गाड़ी चलाने मे स्वयं सक्षम है। फिर यह त्रासदी जो वह भोग रही है उसमे वह टूटती जा रही है। निराशा के गर्त मे वह स्वयं को तिरोहित होते देख रही है। अपमान का जीवन वह किसी प्रकार नहीं देत

नहीं, भ्रम के जो घेरे थे वे, टूट गए हैं। अब जो मैं महसूस कर रहा हूँ वास्तविकता के आधार पर ही।"

"इतना तो बताते जाओ कि मुझसे दूर जाने का निर्णय तो नहीं कर लिया है, यदि ऐसा है तो स्पष्ट बता दो। कोई और जीवन में आ गई हो तो उसे भी कह दो मैं बाधा नहीं बनूँगी। इस तरह के जीवन जीने से अच्छा है कोई निर्णय कर लें जिससे स्थायी व्यवस्था संभव हो सके।" स्मिता दुख और क्रोध के मिले जुले भाव में बोली।

"क्या तुमने मुझे अपनी तरह समझा है ? हाँ, यदि तुम्हारे जीवन में कोई हो तो मैं किनारा अवश्य कर लूँगा।" राजेश अपने पर नियन्त्रण खोता जा रहा था।

"सिर्फ तुम्हारी गलत फहमी है, विवाह के बाद तुरन्त मैंने सर्विस आरम्भ नहीं की थी फिर भी दाम्पत्य जीवन सुखी न हो सका। सर्विस की, तब भी नहीं, तो सर्विस को बाधक कैसे माना जा सकता है ? वर्किंग वूमन को चार लोगों के साथ उठना-बैठना पड़ता है, बातें भी होती हैं लेकिन उसका अर्थ यह तो नहीं कि गलत अर्थ निकाला जाए। क्या तुम्हारी नजर में सर्विस क्लास लेडीज के सम्बन्ध में यही राय है तब मैं कहूँगी कि तुम्हारी विचारधारा दकियानूसी और संकीर्ण है। देखो, राजेश विवाह से पूर्व मैं या तुम कौन नहीं बहका पर विवाह के पश्चात अभी तक मेरे जीवन में कोई दूसरा पुरुष नहीं आया। हो सकता है कि कोई अच्छा लगा हो पर वह दोस्त भी हो सकता है जरूरी नहीं कि प्रेमी हो। और जीवन में जब इस प्रकार के क्षण आएँगे तो विश्वास रखो, मैं पहले की तरह कुछ छुपाऊँगी नहीं। "इतना कहते-कहते स्मिता का स्वर अवरुद्ध हो गया। राजेश को दोस्तवाली बात सालती रही वह बोला, "प्रारम्भ में दोस्त या भाई ही बनते हैं फिर प्रेमी बनते देर नहीं लगती।"

"मैं सोच रही हूँ कि तुम सन्देही होते जा रहे हो और सन्देह का कोई इलाज नहीं हो सकता।"

राजेश काफी देर तक चुपचाप बैठा रहा जैसे प्रतीक्षा कर रहा हो कि स्मिता कुछ और बोलेगी, चाहा कि कुछ कहे फिर याद आया कि उसका आज कहीं एप्वाइन्टमेन्ट था, अतः वह तैयार होकर घर से बाहर चला गया।

राजेश के जाने के बाद स्मिता काफी देर तक गुमसुम सी बैठी रही। रात्री में देर से राजेश वापस आया। आज उसने कुछ ज्यादा ही ड्रिंक कर रखी थी आते ही वह सो गया। स्मिता ने इस बीच अपनी लीव एक्सटेन्ड करवाली थी। उसने सोचा कि शायद दो एक दिन में स्थिति कुछ नार्मल हो पर वातावरण वैसे ही तनावयुक्त बना रहा।

एक माह पश्चात् वह घर आई थी। यहाँ रहते उसे एक हफ्ता होने को आया। उसने अंकित की पढ़ाई को ध्यान में रखते हुए चाहा कि यदि उसका स्थानान्तरण यही हो जाए तो अच्छा रहेगा। राजेश से उसने सहयोग देने के लिए कहा पर अपनी व्यस्तता की आड़ में उसने सहयोग न दिया। स्मिता का धैर्य जवाब देने लगा था।

स्मिता इस बीच बैंक भी गई जहाँ वह पहले काम कर चुकी थी। रोहित उसे कुछ उदास सा दिखाई पड़ा पर स्मिता को देखते ही उसके चेहरे पर रौनक आ गई। वे लन्च टाइम में एक रेस्तँरा में गये। खाने के मध्य उसने कहा,

"यह क्या स्मिता तुम हमेशा चहकने वाली आज चुपचाप क्यों बैठी हो ?"

"कुछ नहीं, ऐसे ही।"

"नहीं, कोई बात तो अवश्य है। हाँ, यह बताओ कि राजेश क्या तुम से आजकल खिचा-खिचा सा रहता है। अभी कुछ दिनों पूर्व वह मिला था। मैंने तुम्हारा हाल-चाल पूछा तो उसने बेरुखी से उत्तर दिया।"

इतना सुनना था कि स्मिता के नेत्र अश्रुपूरित हो उठे क्योंकि रोहित ने उसकी दुखती रग को छू दिया था।

"अरे तुम इतनी परेशान क्यों होती हो ? मेरे लायक कोई काम हो, बताओ मैं अपना अहो भाग्य समझूँगा यदि तुम्हारे कुछ काम आ सका।"

"मैं चाहती हूँ कि अपना ट्रान्सफर यहाँ करवा लूँ। मुझे थोड़े ही दिन वहाँ हुए हैं। यही लगभग दो ढाई महीने। सोचती हूँ कि इतनी जल्दी ट्रांसफर कैसे हो सकेगा ?"

"बस इतनी सी बात, देखो प्रयास तो कर सकते है और विशेष परिस्थिति में ट्रांसफर की अवधि की कोई सीमा नहीं होती।"

"रोहित, मैंने राजेश से कहा था पर उन्होंने सुनी अनसुनी कर दी। भाग-दौड़ में कोई पुरुष तो चाहिए ही। अकेली मैं क्या-क्या करूँगी, कहाँ-कहाँ जा सकूँगी ? फिर इस तरह अच्छा भी तो नहीं लगता।"

"तुम चिन्ता न करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। जब भी जरूरत महसूस करोगी मुझे तुम हमेशा अपने साथ पाओगी।"

स्मिता को जैसे राहत मिली। उसने प्रशंसा के भाव से रोहित की ओर देखा। रोहित ने उससे आगे कहा, "अंकित को लेकर तुम चिन्तित न होना। तुम निश्चिन्त होकर बाहर सर्विस जारी रखो। प्रयास करते रहने से देर-सवेर ट्रांसफर हो ही जायेगा। अंकित को तुम जब जितने दिन के लिए चाहो मेरे यहाँ रख सकती हो। हम लोग मिलकर उसकी देख-रेख कर लेंगे।"

स्मिता से रहा न गया। उसने रोहित से कहा, "मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूँ, तुमने मुझे चिन्ता से उबार लिया।"

"अरे, अभी काम शुरू भी नहीं हुआ और तुम ओब्लाइज्ड महसूस करने लगी। कुछ बाद के लिए भी छोड़ो।"

स्मिता सोच रही थी कि रोहित घर कभी-कभी आ जाया करता है और जब आता है, अंकित के लिए खिलौने, चाकलेट, टाफी या मिठाई कुछ न कुछ जरूर लाता है। एक दिन स्मिता ने अंकित से पूछा था, "बेटे तुम्हें पापा अच्छे लगते हैं कि अंकल।"

"अंकित ने अपनी बाल सुलभ प्रसन्नता में उत्तर दिया, "मम्मी! अंकल अच्छे।"

स्मिता को विचारों में खोया हुआ देखकर रोहित ने स्मिता का हाथ पकड़कर उठाते हुए कहा, "अब उठो भी या यहीं खोयी रहोगी।"

बिल का पेमेन्ट करने के बाद उसने स्मिता से कहा, "अच्छा देखो मुस्कराती रहा करो।"

मुझे मायूसी पसन्द नहीं। थोड़ा सा हँस दो।"

स्मिता बरबस मुस्करा पड़ी तो रोहित ने कहा, "अब ठीक रहा, तुम पहले जैसी सुन्दर दिखाई पड़ने लगी।"

अपनी प्रशंसा रोहित से सुनकर स्मिता को अच्छा लगा। वैसे भी औरत में अपनी प्रशंसा सुनने की अदम्य चाह होती है। प्यार के प्रारम्भ में संकोच होता है, लज्जा होती है जिसे संयम समझ लिया जाता है लेकिन एक बार आवरण हटा नहीं कि फिर सारे बन्धन और अवरोध स्वतः टूटने लगते हैं।

स्मिता को याद आ रहा था कि रोहित पहले भी अपलक जब तब उसे देखता रहता था। अपनी-अपनी सीट पर बैठे हुए कभी-कभी स्मिता की नजरें उधर उठती तो कई बार रोहित को उसने अपनी ओर देखते हुए पाया था। प्रारम्भ में उसने कोई नोटिस नहीं लिया था इस बात का। फिर बातचीत के दौरान उसने पाया कि बात करते समय वह अपनी नजरें झुका लेता है और वहाँ से हट जाने पर उसने उसे घूरते हुए पाया था। कभी उसे ऐसा भी आभास होता कि रोहित बात करते-करते रुक-सा जाता है जैसे कुछ कहना चाह रहा हो पर कह न पा रहा हो। प्रारम्भ में उसने उसे कोई बढ़ावा नहीं दिया। आफिशियल वर्क से आवश्यक होने पर ही वह मिलते या बात करते। रोहित की अपने प्रति चाहत की भावना से वह अनभिज्ञ नहीं रही। उसे रोहित अच्छा लगा था। पर

एक दोस्त के रूप में ही इससे अधिक उसने उसको महत्व नही दिया था। धीरे-धीरे स्मिता पर यह प्रकट होने लगा था कि रोहित उसे सिर्फ दोस्त नही मानता दोस्त के अतिरिक्त कुछ और भी जिसे प्यार कहा जाता है। हाँ, वह स्मिता के प्रति प्यार की भावनाएँ रखता था, यह जानते हुए भी कि वह शादी शुदा है, एक बच्चे की माँ है पर प्रेम शायद उम्र के बन्धन को स्वीकार नही करता। विवाहित या अविवाहित होने से भी अन्तर नही पडता। यह तो भावनाओं का सम्बन्ध है। स्मिता ने यह ज्ञात होते ही सतर्कता बरत ली थी क्योंकि वह अपने अनुभव से यह जानती थी कि इन्सान जब किसी से प्रेम करने लगता है तो प्राय वह भले-बुरे, ऊँच-नीच तथा दीन-दुनिया से बेखबर हो जाता है। वे दोनों लन्चटाइम मे साथ-साथ बैठते और अपने-अपने घर से लाए हुए टिफिन मे खाने वाली चीजों को साथ ही खाते। साथ खान-पान मे भी घनिष्ठता बढती है यदि प्रेम है तो प्रेम-बन्धन में बढोत्तरी हो सकती है।

इस बीच स्मिता का रोजाना रोहित से मिलना होता रहा। रोहित अपने आफिस के सुपिरियर्स से मिलता रहा। ट्रान्सफर के विषय मे क्या प्रयास किया जाय इसकी सम्भावनाओं को ज्ञात करता रहा। राजेश चूँकि जाने के लिए तैयार नही हुआ इसलिए स्मिता को रोहित के साथ रीजनल आफिस जाना पड़ा। रोहित अधिकारियो से मिलने के लिए और सहयोग प्राप्त करने के लिए दो-एक पत्र भी लाया था। एक अधिकारी ने जब इस दिशा मे अपनी असमर्थता व्यक्त की तो वह बिफर पडा था। उससे बहस करते-करते उग्र हो गया था वह। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे वह लडने के लिए तैयार हो रहा हो। स्मिता ने स्थिति की नजाकत को समझा और रोहित को चुप करने का संकेत कर स्वयं बातें करने लगी। स्मिता को मन-ही-मन रोहित का लडने वाला स्वरूप अच्छा लगा था यह सोचकर कि वह उसे कितना चाहता है। अपने नुकसान की परवाह न कर उसके फायदे के लिए जूझ पड़ता है बगैर दूरदर्शिता की परवाह किये।

स्मिता स्वयं भी दूरदर्शी नही थी केवल वर्तमान को ही प्रमुखता देती थी। इस प्रकार इस दृष्टि से दोनों मे साम्य था। रीजनल आफिस की यह यात्रा रोहित के साथ स्मिता को सुखकर लगी। जिस ढंग से वह उसे ले गया था, बाकायदा सकुशल वापस घर आकर उसे पहुँचा दिया था बगैर किसी प्रकार के उतावलेपन का परिचय दिये हुये, वह प्रशंसनीय था स्मिता की दृष्टि में। स्मिता को अब लगने लगा था कि वह उसकी प्रशंसिका बनती जा रही है मानो उसके मन मे उसके प्रति चाहत के बीज अंकुरित हो रहे हैं। फिर स्मिता जिस हद तक टूटती जा रही थी इस स्थिति मे डाली के टूटने जैसा किसी और झुकाव का हो जाना अस्वाभाविक नही था। रोहित के सहयोग और संयम ने जैसे स्मिता का हृदय जीत

सकती है। उसका जीवन किताब के खुले पृष्ठों की तरह है। आवरण में सच्चाई को छिपाकर उसने जीवन जीना ही नहीं चाहा था क्योंकि यह उसकी प्रकृति के विरुद्ध है। कितना चाहा उसने कि पति का सहयोग मिले पर सब कुछ उसे अकेले ही करना पड़ रहा है। जीवन का उसे सपने में भी गुमान नहीं था। हताशा की स्थिति उसके लिए वेदना बनती जा रही है।

स्मिता सोच रही थी कि वह अपनी भावुकता का क्या करे जिसकी रौ में वह अक्सर सच बोल जाती है। उसी के कारण राजेश का नजरिया बदल गया है। वह मिटना नहीं चाहती। इस प्रकार बेबस होकर घुट-घुट कर जीना, वह नहीं जी सकती। तभी तो किसी बेहद आत्मीय की सहानुभूति और स्पर्श पाकर तन से न सही पर मन से कड़ी अवश्य जुड़ जाती है केवल मन से कोई व्यक्ति कब तक जुड़ा रहेगा ? यह पूर्ण सन्तुष्टि दे भी कहाँ पाती है और एक स्थिति ऐसी आती है जब घुटन और निराशा बढ़ जाती है। ऐसे में मन चाहता है कि तोड़ डाले सभी बन्धन, मर्यादा और पारम्परिक बातों को, पर ये भी क्या उसे स्थायी हल दे पायेंगे ?

प्यार के भ्रम से वह आवृत रही पर मन चाहे ढंग से उसे प्यार का सुख नसीब न हो सका। यह ठीक है कि कोई चीज सहज नहीं मिलती पर सहज ढंग से उसने पाना भी कब चाहा था ? अपनी खुशियों और इच्छाओं का उसने त्याग किया, समर्पण भाव भी रखे, एकनिष्ठ विवाह के पश्चात बनी रही। मनसा, वाचा, कर्मणा अगर तीनों से न सही तो मन को छोड़कर वचन और कर्म से तो बनी रही पर उसे क्या मिला ? संदेह और अविश्वास ही तो लांछन भी। इस तरह अधिकांश मे उसे स्वाभाविक खुशी से महरूम रहना पड़ा। पति के लिये उसने सरोवर बन जाना चाहा था ताकि वह उसके प्यार मे आकंठ डूबा रहे पर उसने तो किनारा कस लिया। उसने भरपूर तृप्ति देना चाहा था। पर आज वह महसूस कर रही थी कि पति से मानसिक तादात्म्य समायोजित रूप मे उसका नहीं हो सका था अब तक।

लोग उससे प्रभावित होते हैं पर जिसे उसने प्रभावित करना चाहा था जब वही अपना नहीं बन सका तो उसे दूसरों से क्या ? इसीलिये किसी से मन की निकटता पाकर भी कहीं दूसरा तन की निकटता की चाह न करने लग जाये वह उससे किनारा कस लेती फिर वह पाती कि दूसरा व्यक्ति मायूस हो गया है, उसके मन की तड़प बढ़ गयी है। स्मिता को दुख भी होता पर वह कर भी क्या सकती थी ? उसे अपनी सीमाओं का भली-भाँति ज्ञान था।

अतृप्त प्रेम की कुंठा में घुलते रहने पर अगर उसका नियन्त्रण स्वयं पर से हट गया या संयम का बांध टूट गया तो प्रेम के नशे मे उसकी क्या स्थिति

होगी, यह वह समझ न पा रही थी। अपने टूटने और बिखरने जैसी स्थिति का आभास उसके लिए असह्य था। लगता था कि हताशा के भँवर में वह फंस गयी है उबरने के लिए कोई और सहारा बनाना पड़ेगा पर पति के सहारा न बनने की स्थिति मे कोई और सहारा बन गया तो उसके जीवन का वह मोड़ कैसा होगा ? कभी वह सोचती कि दाम्पत्य सुख उसके लिये इस प्रकार अलभ्य बना रहेगा यदि वह जानती तो शायद अपने जीवन साथी का चुनाव न करती या कम से कम इतने शीघ्र न करती, पर सभी को मन चाहे सुख कहाँ प्राप्त हो पाते हैं। कुछ भी हो रिक्तता और शून्यता का जीवन वह कब तक जीती रहेगी ? वर्तमान मधुर बनाना ही होगा किसी भी कीमत पर तभी कालातर में यादों के रूप मे जीवन बिताया जा सकता है।

शरीर और मन की अतृप्ति वह कब तक नकारती रहेगी। नही, इसे झुठलाया नही जा सकता। उसे अपने संकल्प की दृढता पर नाज था पर उसका यह विश्वास स्वय पर से हटता जा रहा था। भविष्य मे वह संकल्प की दृढता के कारण स्वयं को बनाये रख सकेगी इसमे उसे सन्देह होने लगा था। राजेश अपने मन में बगैर किसी काम्पलेक्स को पाले हुये स्पष्ट निर्णय बता देता यानी स्वीकार कर मधुर जीवन जीने के ढँग को अपना ले, जो सबसे बेहतर होगा, या हमेशा के लिये सम्बन्ध तोड दे तो भी वह दुःखी भले ही हो पर उफ नही करेगी।

वह जीवत ही रहना चाहती है। धोखा देने की प्रवृत्ति उसकी कभी नही रही। जिसे अपनाया, पूर्ण निष्ठा के साथ अनन्य समर्पण भाव को लिये हुये चाहे वह कदम सही रहा हो या गलत, उसने किसी को भरमाने का प्रयास किया ही नहीं। दोहरे जीवन का मापदण्ड उसे पसन्द नही, इस प्रकार का जीवन वह जीना नही चाहती थी। उसे याद आ रहा था कि उसने एक बार कहा था "ज्यादातर मर्द स्त्री पर पैसा खर्च करते है और सुख पाने का प्रयास करते हैं इसके विपरीत मैं अपने राजेश के लिये करती हूँ। उनका क्या है वह गेस्ट की तरह आकर मन चाहा सुख प्राप्त करते है और मैं इसके एवज मे उन्हे उपहार देती हूँ यह उन दिनो की बात है जब दोनो साथ नही रहते ... आना और मिलना चन्द रोज के लिये हो ..."

सुखमय हो सकेगा ? इसी उहापोह मे वह डूब उतरा रही थी पर उसे मंजिल य किनारा नहीं मिल पा रहा था।

उसे अब लगने लगा था कि राजेश से उसके सम्बन्ध कभी सामान्य य आशा के अनुरूप न हो पायेंगे चाहे वह कितना ही प्रयास करें। वह सपने देखती थी, दिवा स्वप्न भी अपने सुनहरे भविष्य का। फ्रायडियन थ्योरी मे उसे विश्वास था कि काम जीवन का ऊर्जा स्रोत है इसके बिना व्यक्ति सामान्य जीवन नहीं जी सकता। राजेश की बेरुखी, उपेक्षा और तिरस्कार मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। वह तो हंसना चाहती थी ढहना नही। फिर बचेगा भी क्या ? क्या उसका जीवन दर्द सहने के लिए ही है ? उसकी भी क्या नियति है ? उसने संघर्ष किया अटूट और जुझारु रूप से पर अब वह टूट चुकी थी। अब भी सहारा नहीं मिला तो उसे बिखरने मे देर नहीं लगेगी। वह चुप्पी का जीवन नही बिता सकती। ऐसा भी जीवन क्या जिसमे दर्द ही दर्द हो, मुस्कान न हो। ठीक है जीवन में दर्द और मुस्कान दोनों होते हैं तो फिर हँसते हुए जीवन को क्यो न बिताया जाये। वह इस प्रकार जीवन का अन्त नही देख सकती थी। अन्त यदि होना था तो तभी हो गया होता जब इसके लिए उसने प्रयास किया था। अब जीवन की उपलब्धि भी साथ है, सफलता उसे उन्नति की ओर उन्मुख कर चुकी है तब वह जीवन का आस्वाद ग्रहण करना चाहती है।

यह सब सोचते हुए उसकी आँखें डबडबा आई थी। ऐसा लग रहा था कि जीवन सफर के दौरान अगला पड़ाव निश्चित करने के लिए जूझ रही हो। इस समय उसके चहरे पर असफलता की छाया परिलक्षित हो रही थी। उसके मन में विविध भाव उत्पन्न हो रहे थे, जैसे वह मन की अन्धेरी घाटियो मे खो गयी हो। उसका मन और तन दोनों क्लान्त हो चुके थे। वह बहुत उदास दिखाई पड रही थी। उसे लग रहा था कि जंगल मे वह अकेली पड़ गयी है या किसी ऐसे मार्ग से जा रही है जिसके दोनो ओर खाई है तब क्या वह आगे बढ़ती जाये या पीछे लौट जाये। नही, पीछे लौटना तो कायरता होगी। आगे बढते जाना ही उसकी नियती है। वैसे भी एक निश्चित सीमा तक वह समझौता परस्त थी। पति के दमनकारी रवैये पर वह कब तक खामोश बैठी रहेगी। स्वय को झुकाती रहेगी ? यह भी कर सकती है लेकिन प्यार तो मिले। उसके पति ने एक दिन उससे कहा था, "मैं जानता हूँ कि तुमको अतिशय प्यार किया जाये तो तुमसे सब कुछ कराया जा सकता है। उन बातो को भी जो तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध है पर प्यार तो मैं कर चुका हूँ। जीवन मे प्यार ही सब कुछ नही इसलिये अब तुम्हें जो मैं कहूँगा वही करना होगा। मेरी इच्छाओ और इशारों पर चलना होगा। समझ

लो तुम्हारा कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। अस्तित्व को भूल जाओ, इच्छाओं को भी, तभी तुम ठीक ढंग से मेरे साथ रह सकोगी।"

उसे कथन का पूर्वार्द्ध जहाँ सटीक लगा था वहीं उत्तरार्ध ने चुभन प्रदान की थी। विद्रोह पर उतर आयी वह, "तुम जैसा चाहते हो वैसा कभी नहीं होगा। कठोरता से तुम मुझे दबा सकते हो पर मन से स्वीकार करने को जब तक तुम सहमत नहीं कर लेते हो, तुम्हारी आरजू पूरी न होगी। जोर जबरदस्ती कब तक चलेगी ? तुम्हारे जुल्म में किसी की आवाज बन्द नहीं हो जायेगी। यदि मैं भी तुम्हारी तरह अपने करने पर उतर आयी तब दोनों में कोई भी सुख से नहीं रह सकेगा" । वह सोच रही थी कि मन और तन के बन्धन अधिक दिनों तक इस प्रकार न चलेंगे। इस प्रकार वह चिन्तित और परेशान रहने लगी थी जिससे वह रात देर तक जागती। अवसाद चिंता और दबाव को वह महसूस कर रही थी बेतहाशा। उसे प्रतीत हो रहा था कि उसके जीवन से आनन्द विलुप्त हो गया है और वह असहनशील होती जा रही है क्योंकि विश्राम और सुख के पल उसे जीवन में नहीं मिल पा रहे थे। वह चाह रही थी कि वह जिसकी है उसे समग्र रूप में अपनाये या बिल्कुल तिलांजलि दे दे। बीच का काम उसे पसन्द नहीं था जहाँ स्वार्थ सिद्धि के लिये कभी कभार चाहत दिखाई जाये, शेष समय में प्रताड़ना ही मिलती रहे। उसके जीवन की कामनायें अतृप्त रह गईं। क्या सोचा था जीवन के सम्बन्ध में. दाम्पत्य सुख के सुनहरे ख्वाब देखे थे। उसको सच करने का प्रयास किया, पहले तो लगा कि आंशिक सफलता मिलती जा रही है पर बाद में पाया कि सारे ख्वाब और अरमान धूल-धूसरित हो गये। उसके मन में सुख की अनुभूति की जो तीव्रता थी राजेश में वैसी तीव्रता शायद ही कभी रही हो क्योंकि वह केन्द्रित सुख का अभिलाषी रहा है। राजेश ने उसके सुख की, उसकी इच्छाओं की कभी परवाह नहीं की, उल्टे उसका हनन ही किया है। राजेश में सहजअनुभूति का अभाव रहा है। सम्पन्नता की इच्छा तो थी पर यह स्मिता का अभीष्ट नहीं था। यदि रहा होता तो उसे चैन मिला होता। उसने कशंस एफर्ट किया था। सुख और शांति के लिये दूसरे पक्ष से कोई सकारात्मक कदम न उठाये जाने से वह उसे यथार्थ रूप में परिणत नहीं कर सकी। कभी उसे लगता कि सुख की तलाश में वह असफल तो हुई पर तलाश क्या यहीं खत्म हो गयी ? नहीं यदि उसे जीवंत रहना है तो तलाश जारी रखनी पड़ेगी।

प्रेम में बड़ी शक्ति है। अब तक की प्राप्ति से उसे सन्तोष नहीं मिल सका था। इसलिये जो उसे प्राप्त नहीं हो सका है उस प्राप्तव्य के लिये उसे सकारात्मक प्रयास करना होगा। नैतिकता आड़े आए तो आए यह नैतिकता है क्या, हमीं लोगों के लिये बनाये बन्धन ही न। नैतिकता के तकाजे ने उसे अब तक रोक कर कौन-सा सुख दिया है जिससे वह उसकी पुजारिन बनी रहे ? उसकी मानसिक घुटन उसके

अब तक के जीवन की ही देन है। मानसिक शान्ति उसके आगे के जीवन में होनी चाहिए। इसको पाने के लिये उसे कुछ करना होगा पर क्या करे वह············खैर, देखा जायेगा। इन्ही सब को सोचते विचारते उसने शरीर को ढीला छोड दिया। तनावमुक्त होने का प्रयास वह करती रही। उसने देखा अंकित मीठी नींद मे सोया हुआ है। ओह, इस बेचारे को भी हम दोनों के जीवन की कशमकश मे उतना सुख नसीब नही हो पा रहा है जितना होना चाहिये। उसकी पलकें अब बन्द हुई जा रही थी। उसे नींद आने लग गई थी। सफर की चेतना उसे जागरूक बनायें रखने का प्रयास कर रही थी। इस प्रकार कुछ सोती और कुछ जागती वह अपने गन्तव्य पर आखिर पहुंच ही गई।

× × ×

स्मिता अंकित के साथ घर पहुंच गई। वह पहले से अधिक व्यस्त हो गई थी। उसे अंकित की पढाई की चिन्ता थी। सर्विस पर जाते समय वह अंकित को हाऊस ओनर्स के संरक्षण मे छोड जाती। वे दोनों उसका काफी ख्याल रखते थे। अमित नित्य प्रति स्मिता के यहाँ शाम को पहुंचता रहा। वे प्राय· घूमने निकलते थे, पार्क, रेस्तरां तथा अन्य स्थानो पर जाते। अंकित इस बीच अमित स काफी घुल मिल गया था। स्मिता को राजेश का अभाव बना रहता, लेकिन हमदर्द के रूप मे उसे अमित मिल गया था इसलिए दिन बीतते जा रहे थे लगभग सामान्य ही। अमित के सान्निध्य में उसे राहत मिलती। स्मिता ने अमित से कहा, "मैं सोचती हूँ कि अंकित को किसी अच्छे पब्लिक स्कूल मे एडमिशन दिलवा दूँ"।

"हाँ, यहाँ आकर उसकी स्टडी ब्रेक सी हो गई है।"

"वैसे मैं उसे रोज पढ़ा देती हूँ लेकिन यह कोई स्थाई व्यवस्था तो है नहीं।"

"फिर कहाँ एडमीशन दिलाना चाहती हो?"

"जहाँ तुम कहो। वैसे होस्टल में उसे रखने का इरादा कर रही हूँ।"

"अंकित अभी काफी छोटा है, होस्टल मे रहने के लिये क्या तुम उपयुक्त समझती हो?"

"और बच्चे भी तो रहते हैं। इसके सिवा कोई चारा भी नही है।"

"बच्चों के स्कूल भी व्यवसाय बन गये हैं। अच्छी खासी फीस, डोनेशन लेकिन पढ़ाई का स्तर कोई विशेष नही।"

"हमें इन्हीं में किसी स्कूल को एडजस्ट करना पड़ेगा।"

"इस शहर में पढ़ाने से अच्छा होगा कि नैनीताल में एडमीशन दिलवा दिया जाये। जब होस्टल में रहना है तो दूरी अधिक महत्व नहीं रखती है।" अमित ने कहा।

"मैं सहमत हूँ। तुम प्रोग्राम बना डालो। अभी तक मैं पहाड़ पर कभी नहीं गयी हूँ। पहाड़ घूमना भी चाहती हूँ।"

"इधर लोग मिलती मुश्किल है पर जल्द ही कार्यक्रम बनाऊँगा। मेरे परिचित वहाँ हैं। इसलिये आशा है कि काम बन जायेगा। मैं हर साल पर्यटनीय शहरों का भ्रमण करता हूँ। मन बड़ी तृप्ति मिलती है।

इस बीच जाने का कार्यक्रम न बन सका। स्मिता अंकित को लेकर राजेश के पास गयी लेकिन राजेश से मुलाकात न हो पायी। क्योंकि उसका ट्रान्सफर हो गया था उसकी इच्छित जगह पर और वह ज्वाइन करने गया था।

"आखिर राजेश ने अपने मन की करली। मेरी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। खैर सताने में उन्हें आनन्द आता है तो यही सही, मैं स्वयं मार्ग निर्दिष्ट करूँगी। मुझे सब कुछ स्वयं करना पड़ेगा।" उसने स्वयं से कहा लेकिन उसे काफी दुःख रहा। सोचा था कि कुछ दिन अंकित यहीं रहकर पढ़ लेगा लेकिन अब तो यह सहारा भी न रहा। दो चार दिन वहाँ रहकर वह अंकित को लेकर लौट आयी। वह कहीं किसी से मिलने भी नहीं गई। अमित ने सुना तो उसे भी आश्चर्य हुआ लेकिन इसमें वह क्या कर सकता था। वह स्मिता और अंकित को प्रसन्न रखने की चेष्टा करता। मनोविनोद, भ्रमण एवं मूवी देखने के कार्यक्रम आदि द्वारा वह दोनों को बहलाने की कोशिश करता। दिसम्बर के आखिरी हफ्ते में जाने का प्रोग्राम बन पाया। सोचा गया कि नैनीताल के साथ अल्मोड़ा और रानीखेत भी देख लेंगे। स्मिता यह सोचकर प्रसन्न थी कि संभवतः स्नोफाल देखने का अवसर मिलेगा। जाड़े में पहाड़ की सर्दी बड़ी विकट होती है। कपकपाती ठंड से बचने की सभी तैयारियाँ की गईं। रिजर्वेशन हो गया था। काठगोदाम तक का, इसलिये यथासमय स्मिता, अंकित और अमित काठगोदाम ट्रेन से पहुँचे। अमित ने प्रस्तावित किया कि पहले अल्मोड़ा फिर रानीखेत और नैनीताल चला जाये।

के. एम. ओ. यू. की बस उपलब्ध थी वैसे रोडवेज की भी बस मिल सकती थी। लेकिन स्मिता ने सुन रखा था कि घुमावदार रास्ते के कारण वोमिटिंग हो जाती है। चक्कर आने लगता है "बस से जाने के बजाये क्यों न टैक्सी कर लिया जाये।" स्मिता ने कहा। "तुम कहती हो तो मैं टैक्सी तय कर लेता हूँ। इतना

कहने के बाद अमित ने टैक्सी की व्यवस्था की। स्मिता टैक्सी मे बैठी हुई यात्रा प्रारम्भ होने के साथ बाहर के दृश्य देखने लगी। टैक्सी मे बैठे हुए उसे सड़कें ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे सर्प गति से चक्कर खा रही हों। सीढ़ीनुमा खेत ऐसे दिखाई दे रहे थे मानो कतार बाँधे हुए खड़े हों। अनुपम प्राकृतिक दृश्य उसे अत्यन्त मोहक और लुभावने लगे। उसका मन प्रकृति की छटा मे खो सा गया। वह इतनी मुग्ध हो रही थी जैसे जीवन मे नवरस का संचार हो गया हो। मार्ग मे गिरते हुए सफेद झरने, पुष्प और वृक्षो से आच्छादित भूमि तथा दूर दिखायी पड़ती हरी भरी पहाड़ियां प्रकृति की छटा को मनोहारी बना रही थी।

अमित स्मिता को बता रहा था, "अल्मोडा कुमाऊँ" क्षेत्र का ऐतिहासिक नगर है। यह समुद्री धरातल से लगभग पाँच हजार पाँच सौ फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ आधुनिक और प्राचीन दोनो प्रकार की संस्कृति के दर्शन होते हैं। यहाँ शिक्षित वर्ग की बहुलता है। अल्मोडा पहुँचकर तुम देखोगी तो ऐसा लगेगा कि यह शहर घोड़े की जीननुमा पहाडी पर स्थित है जिसके दोनो ओर घाटियाँ है।"

स्मिता सोच रही थी कि पर्वतीय भाग मे घाटी झील और प्राकृतिक वनस्पति ये सब ऐसा लगता है कि प्रकृति ने इसे स्वयं सजाया है। साथ ही दुर्गम रास्तों मे ढलान पर गाँव को देखकर वह कल्पना करने लगी कि यहाँ के निवासियो का जीवन कितना कष्टप्रद और परिश्रम से युक्त होता है। ये सब उनकी कर्मठता की याद दिलाते हैं। उसे दूर मटमैली सी पतली धारा दिखायी पड़ रही थी जो पहाड़ियों के बीच बह रही थी। चढ़ाई उसे चकराने वाली लग रही थी लेकिन पहाड़ की चोटियां देखकर उसे इसकी अनुभूति कम महसूस हो रही थी। तेज और ठन्डी हवा विन्डो के रास्ते से आकर उसके जिस्म को कपकपा रही थी। उसने अंकित को सुरक्षित करने की दृष्टि से विन्डो मिरर को थोड़ा ऊपर चढ़ा लिया।

गरम पानी पहुँचने पर टैक्सी रुकी। स्मिता को चाय पीने की इच्छा हो रही थी। उसने अमित से पास के रेस्तरां मे कुछ खा पी लेने के लिये कहा। अमित ने स्मिता और अंकित के साथ चावल, रायता और डुबुके खाये। डुबुके यहाँ का विशेष खाद्य है जो भट्ट और गहत दो प्रकार की दालो से बनाया जाता है। स्वाद सभी को अच्छा लगा। खा चुकने के बाद चाय पीकर अंकित के लिए टाफी और अपने दोनों के लिये पान लेकर अमित टैक्सी मे अंकित को लिये हुये स्मिता के साथ बैठ गया और टैक्सी मंजिल यानी अल्मोडा की ओर चल पड़ी। तेज चलती हवायें आगे की विन्डो से आकर स्मिता की लटों से अठखेलियां कर रही थीं। अमित उसके इस सौंदर्य को मुग्ध दृष्टि से देख रहा था। तीन घण्टे के सफर मे वे लोग अल्मोड़ा पहुँच गये।

स्मिता की एक सहेली कामिनी विवाह के उपरान्त अल्मोड़ा में ही रह रही थी क्योंकि उसके पति सार्वजनिक निर्माण विभाग में असिस्टेन्ट इंजीनियर थे। उसने अमित से अनुरोध किया कि वह भी वहीं रुक जाये लेकिन अमित महात्मा गांधी मार्ग पर स्थित होली डे होम में एक सूट लेकर वहां रुका। स्मिता अंकित के साथ कामिनी के यहां रुकी। तय हुआ कि दूसरे दिन से घूमने का प्रोगाम शुरू हो। स्मिता ने कामिनी के यहां एक किताब देखी जिसमें कुमाऊं का ऐतिहासिक एवं भौगोलिक विवरण दिया था। उसके पढ़ने से उसे ज्ञात हुआ कि यह नगरी राष्ट्रपिता महात्मागांधी, विश्व कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर, प्रसिद्ध नृत्य और संगीतमर्मज्ञ उदय शंकर और महान चित्रकार बुस्टर की यह प्रिय स्थली है। इसका अतीत गौरवमय रहा है। पण्डित गोविन्द बल्लभ पन्त, कुमाऊं केसरी श्री बद्रीदत्त पाण्डे, महान स्वतन्त्रता सेनानी विक्टर मोहन जोशी तथा देवकी नन्दन पाण्डे, छायावादी कवि सुमित्रा नन्दन पंत और प्रसिद्ध तकनीशियन धनानन्द पाण्डे तथा अनगिनत महानुभाव कूर्मांचल के अमर पुत्र रहे हैं जिन्होंने यहां का गौरव बढ़ाया है। यहां का प्रसिद्ध बल्ढोती का जंगल कभी प्राकृतिक सुषमा और वनस्पति से भरपूर था पर पेड़ों की अवैध कटान ने कुमाऊं क्षेत्र की प्राकृतिक वनस्पति में कमी ला दी जिसके फलस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं की वृद्धि हुयी वैसे वर्तमान में चिपको आन्दोलन आदि से कुछ रोक थाम सम्भव हो सकी।

दूसरे दिन प्रातः अमित कामिनी के यहां स्मिता से मिलने पहुंच गया। कामिनी ने नास्ता कराने के पश्चात घूमने में साथ दिया। जगह-जगह पर नौले भी दिखायी पड़े। स्मिता ने जिज्ञासा प्रकट की तो कामिनी ने बताया कि कहा जाता है कि पहले यहां तीन सौ साठ नौले थे। अब भी प्रसिद्ध नौले रानीधारा, राजनौली, चम्पा नौला और कपीने का नौला आदि है। माल रोड पर सेन्ट्रल लाज में स्थित संग्रहालय देखा गया। संग्रहीत वस्तुयें दर्शनीय थी। लाला बाजार में स्मिता ने खुबानी, आडू आदि खरीदा। अपने लिए स्कार्फ तथा अमित और अंकित के लिए ठंड से बचाव हेतु बालों वाली केप भी ली। चितई जाने का कार्यक्रम बना। बस से वे लोग गये, इसकी दूरी शहर से दस किलोमीटर है वहां पहुंचने पर अमित ने स्मिता को बताया, "यह गोलू या ग्वेल देवता का मन्दिर" यहां काफी प्रसिद्ध है। जिन लोगो की मनोतियां पूरी हो जाती हैं, वे यहां घंटी या घंटे चढा देते हैं। यह देखो मन्दिर के चारो ओर घंटियो की कई कतारें दिखाई पड रही हैं। भीतर देखो तार में बिंधे हुए कई कागज हैं, जो लोगो की एप्लीकेशन्स हैं। यदि किसी के साथ कोई अन्याय हो जाता है तो वह मन्दिर के भीतर प्रार्थना पत्र टांग देता है। जल्दी फल प्रदान करने के रूप में इसकी ख्याति है।"

स्मिता मन्दिर की परिक्रमा करते हुये घण्टियों को हाथों से छूती रही जिससे मधुर ध्वनि तरंगित हो रही थी। धूप और अगरबत्ती जला कर सभी ने पूजा की और वापस आ गये।

दोपहर में अमित अपने पत्रकार मित्र के यहाँ सभी के साथ गया। उसे कल ही आग्रहपूर्वक निमन्त्रण मिला था। अमित पहले भी वहाँ आ चुका था। विविध प्रकार के व्यंजन की तैयारियाँ लगभग पूर्ण हो चुकी थी। स्मिता की तबियत ठीक नहीं थी। वह इन्डाइजेशन से ग्रस्त थी इसलिये उसके लिये जौला तैयार कराया गया। जौला दो प्रकार का बनाया जाता है भट का जौला और छजिया का जौला। अमित ने कई विशिष्ट खाद्य पदार्थ खाये जिसमे फाना और थुरूंट प्रमुख थे। गहत को भूनकर पीसा जाता है और आटे को पकाकर नीबू का रस डालते है इसको फाना करते है। इसी प्रकार थुरूंट मसूर के आटे को पानी में घोलकर उबाला जाता है। इसमें पानी की जगह मठ्ठे का भी प्रयोग करते हैं। अंकित को खाने की इच्छा नहीं थी क्योंकि घूमते समय उसने काफी कुछ खा लिया था। अतः वह दूध पीकर सो गया। अमित और स्मिता ने भी थोड़ा आराम किया और विदा ली। तब तक अंकित भी जाग चुका था। शाम को वे लखमरा मन्दिर देखने गये। होली डांडा जाते समय उन्होंने पत्थरों पर माँ शब्द लिखे देखे। थोड़ के पेड़ काफी संख्या मे थे। पेड़ों के नीचे के हिस्से थोड़े छिले हुये तथा टीन के डिब्बे लगे दिखाई दिये। अल्मोड़े में लीसा एक उद्योग के रूप में विकसित है। प्रकृति के सुरम्य वातावरण को देखकर स्मिता प्रमुदित हुई। हवा मे ठंड व्याप्त थी। तीनो वापस आये। होली होम मे थोड़ा आराम करने के बाद कामिनी के साथ स्मिता और अंकित उसके घर चले गये।

अगले दिन पाताल देवी की गुफा देखने गये और कासार देवी गये। यह स्थान शहर से दस किलोमीटर की दूरी पर है। सप्ताह भर के प्रवास में उन लोगों ने कई स्थान देखे। रोडवेज से लगभग सोलह किलोमीटर की दूरी पर कटारमल का सूर्य मन्दिर उन्होने देखा। अमित भूरे पत्थरों से बनी उस प्रतिमा को दिखाते समय स्मिता को बता रहा था, "यह मन्दिर बारहवी सदी मे बना था। महमूद गजनवी ने मूर्तिभंजक अभियान में इसको क्षतिग्रस्त किया था। यह मूर्ति तुम जो देख रही हो एक दशमलव एक मीटर ऊँची तथा साठ दशमलव छप्पन सेन्टीमीटर चौड़ी है।

स्मिता अमित के ज्ञान को देखकर आश्चर्य कर रही थी। साथ ही मन्दिर के रखरखाव तथा जीर्ण-शीर्ण हालत को देखकर उसे दुख भी हो रहा था। भारत में वैसे भी सूर्य मन्दिर गिने चुने है इसलिए साज संभार कायदे से होनी चाहिये।

कौसानी जाते समय स्मिता अंकित को कामिनी के घर पर ही छोड़ गई क्योंकि घूमने के बजाय कामिनी के बेटे जो उसी की हम उम्र का था के साथ खेलना उसे अधिक प्रिय लग रहा था। स्मिता को मालूम था कि कौसानी प्रकृति के सुकुमार कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त की जन्म स्थली है। महात्मागांधी कौसानी से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने इसे भारत का स्विट्‌जरलैण्ड कहा। यहां ठण्ड कुछ ज्यादा ही थी। इसकी ऊँचाई समुद्र के धरातल से छः हजार दो सौ फीट है जो अल्मोड़े की तुलना में अधिक ऊँचा है। यहाँ से हिम श्रृंगों की विशालता और भव्यता देखने को मिलती है। बर्फीली चोटियां जो दिखायी पड़ती हैं उनमें त्रिशूल, चौखम्बा, पंचशूली और नन्दाकोट प्रमुख हैं।

कामिनी ने जागेश्वर के मन्दिर की बड़ी तारीफ की थी। इसलिये अल्मोड़े से पैंतीस किलोमीटर की दूरी और पाँच हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित जागेश्वर मन्दिर देखने अमित और स्मिता को जाना पड़ा। यहाँ मन्दिरों का समूह है जिसमें एक सौ चौबीस मन्दिर हैं। इसको देखकर ऐसा लगता है जैसे देवदार के वन में मन्दिर स्थित है। स्मिता को देवदारु शीतलता की अनुभूति हो रही थी। वह देवदार के निकुंजों में उन्मुक्त होकर विचरण कर रही थी। अमित स्मिता के पीछे चल रहा था। कभी-कभी स्मिता के लहराते हुये आंचल का स्पर्श हवा के झोंके से हो जाता तो उसे महसूस होता जैसे वह किसी भीनी सुगन्ध वाले गात का कम्पनयुक्त स्पर्श कर रहा हो। एक जगह चौरस जमीन में हरी घास पर स्मिता बैठ गई। अमित पहाड़ की वादियों के खेतों की सीढ़ियों को दूर-दूर तक फैली हुई निरख रहा था। वह देवदार के वृक्षों की कतार की मोहकता देख रहा था। उसका मन देर तक प्रकृति के इस सुरम्य वातावरण को देखने का हो रहा था। मार्ग में झरने भी दिखायी दिये थे। ऊँचाई से गिरती हुई पानी की धार शिला पर पड़ रही थी जिससे फेनिल लहरें पानी में व्याप्त हो रही थी। स्मिता सोचने लगी थी कि जिस प्रकार से लहरें शिला से टकरा रही हैं, उसी प्रकार वह भी आज परिस्थितियों के थपेड़ों से जुझ रही है। उसके जीवन में यह तूफान भी तो आया है जिसमें वह एक डाल से टूट कर दूसरी डाल की ओर झुक रही है। क्या इसी प्रकार लड़खड़ाते हुये ही उसका जीवन बीतेगा, उसे स्थायित्व प्राप्त न होगा ?

थोड़ी देर बाद जागेश्वर से चार किलोमीटर दूर वे मिरतोला में वृन्दावन आश्रम भी देखने गये। स्मिता पगडंडियों में होकर आगे बढ़ रही थी। एक ओर ऊँची चोटियां थी तो दूसरी ओर खाई। तो क्या वह पीछे लौट जाये। इस अभिनव यात्रा को समाप्त कर दे या आगे बढ़ती रहे। नहीं, इतने आगे आकर पीछे लौटना सहज नहीं है। उसे मान लेना चाहिये कि आगे बढ़ना ही उसकी

नियति है। ऊँचाई से वह हरी-भरी घाटियों को देख रही थी। एक क्षण को उसने सोचा कि उसे किसी ऐसे ही पर्वतीय स्थान पर स्थानान्तरण करा लेना चाहिए, जहाँ मन की शांति मिल सके। लेकिन यह विचार देर तक टिक न सका। नहीं मैं यह पानी को कल-कल की ध्वनि में उसे संगीत का स्वर सुनाई पड़ा था। उसने सोचा कि अगर वह खाई मे कहीं गिर पड़े तो जीवन का अन्त होते देर न लगेगी। फिर भी अधिक असन्तोष उसे न होगा क्योंकि उसने जीवन में बहुत कुछ पा लिया है, भोग लिया है। शायद भोगना ही जीवन है फिर वह भोग किसी प्रकार का हो।

जंगल में घूमते हुये जंगल की वीरानी की तुलना वह अन्तर्मन की उदासी से कर रही थी। लोग उसे चचल और प्रफुल्लित देखते है शायद अमित भी उसके इसी रूप की सराहना करता हो पर क्या वह उसके जीवन में घुप अंधेरे और वीरानगी को भी जानता है, कह नहीं सकती।

सांझ के धुंधलके में अंकित को साथ लेकर स्मिता और अमित व्राईटिंग कोर्नर तक घूमने गये। बातें करते रात हो गई शहर की ओर देखने से ऐसा लगता था जैसे मंगल दीप झिलमिला रहे हों या दीपावली की रात हो। जुगनू जैसी चमक रास्ते के मोड़ पर ओझल हो जाती थी। हवा के चलने से स्मिता के बाल कभी-कभी उसके चेहरे पर इस प्रकार झूल रहे थे कि लगता बादलों ने चाद को ढक लिया हो। वह उंगलियों से बालों को हटाती फिर उसका गोरा चेहरा देदीप्यमान दिखाई पड़ने लगता। स्मिता को लग रहा था कि यहाँ की रातें ऐसी हैं जो इन अंधेरी घाटियो मे प्यास को और बढाती है। फूलो की मदमाती सुगन्ध धमनियों में गुनगुनाहट पैदा कर रही थी जिससे मादकता का बोध हो रहा था। स्मिता के थरथराते और लरजते होठ ऐसे प्रतीत हो रहे थे जैसे कोई सुर छेड़ना चाह रहे हों, उसके भीतर कोई रागिनी छिडी हो जो अब फूट कर स्वर के रूप मे बाहर आने ही वाली है। अमित को अतीत की बातों ने कुछ इस कदर बेचैन कर दिया कि उसकी आँखें डबडबा आईं। वह शान्त रहकर अगले प्रोग्राम के विषय में सोचता रहा। अनुभूति के बिना भाव उजागर नहीं होते।

स्मिता सोच रही थी कि विवाहित होकर समाज स्वीकृत सम्बन्ध से उसे अब तक क्या मिला है उसके अपने मन के स्वीकृत सम्बन्ध उसे सुकून तो देते ही है तो दोनों मे से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध जो मन को सुख प्रदान करते हों वही श्रेष्ठ है। आज मैं यहाँ हूँ पर राजेश को उसकी क्या परवाह है नहीं, कहीं कुछ नहीं कोई किसी की प्रतीक्षा नहीं करता सब अपने-अपने सुख की तलाश मे घूमते रहते है। फिर वही क्यों मूल्यो की परम्पराओं और मर्यादाओं की परवाह करे अगर ये उसे सुखी नहीं बना पाते हैं? अधर मे लटके रहना तो ऐसी ही है जैसे

किसी को अपना न संकना। ऐसी स्थिति में मन के सम्बन्ध को ही क्यों न मजबूती प्रदान की जाए। जीवन मे लिजलिजापन स्मिता को पसन्द नहीं था। वह दो टूक निर्णय करने मे विश्वास रखती थी। यह बात और है कि कभी कभी उसे कार्य रूप मे परिणत न कर पाती हो आखिर संस्कार भी तो एकदम से मिटाए नहीं जा सकते।

नारी का सबसे बड़ा आकर्षण लज्जाजनित स्मित भाव होता है। स्मिता मे यह भाव प्रचुर मात्रा में उसकी आधुनिकता के साथ निखरे रूप में विद्यमान था। उसके रतनारे नयन, रोमान्टिक क्षणों में उसकी साँसों का भारीपन मनुहार और कसमसाई देह अमित को मोहक लगते। उसे लगता कि स्मिता का तटबंध संयम का बन्धन कितने दिन और चलेगा? इसी के साथ उसे स्मिता का रुख इस प्रकार दिखाई पड़ता जैसे उसके मन और तन दोनों हार चुके हों, टूट चुके हों असफलता की छाया से वह आवृत हो गई हो तब उसे दुःख होता। वह स्मिता को प्रफुल्लित देखना चाहता था। उसे स्मिता का चहकता हुआ रूप ही अभीष्ट था। यह ठीक है कि स्मिता उसे नही मिली पर इसके लिए वह किसी को दोष नही देता सिवा अपने भाग्य के वह यही सोचकर सन्तोष कर लेता कि हर नाव किनारे नही लगती।

अंकित कामिनी के परिवार से इतना हिल गया था कि उसे शहर में घूमने जाते समय स्मिता उसे साथ अवश्य ले जाती लेकिन शहर से बाहर कहीं जाते समय अंकित अनिच्छुक ही रहता अतः निश्चिन्ततापूर्वक वे दोनों चले जाते। अमित के पत्रकार मित्र जोशी जी ने स्मिता और अमित से बागेश्वर घूमने का अनुरोध किया साथ ही अपने भाई के परिवार के साथ रहने की व्यवस्था हेतु पत्र लिख दिया। अमित शाम को कार्यक्रम फाइनल करने स्मिता से मिलने गया तो देखा स्मिता बाहर ही तीन-चार औरतों के साथ बैठी है। लोकगीत वह सुन रही थी। अमित ठिठक गया। उसने गीत के बोल सुने जो इस प्रकार थे– बैणा भरौणा ऐगे ऋतु रैणा। कफुवा बासण मैंगो फूलि गेछ बैणा। ओ मेरी बैणा ऐगे ऋतु रैणा।

ऐजूला कूंछी दीदी सब बैणी ऊंना। जब तेरी नराई लागी आंसू भरी ऐंना।

(यह गीत बसन्त ऋतु से सम्बन्धित है जिसमें छोटी बहन अपनी बड़ी बहन जो ससुराल मे है को याद करके मनोभावों को व्यक्त कर रही है।)

शायद देर से कार्यक्रम जारी था। अमित को अधिक इन्तजार नही करना पड़ा जल्दी ही वे सब चली गईं। स्मिता ने अमित को देखकर कहा, "आओ ... देर पहले आ जाते तो गीत सुनते।"

मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम पहाड़ी लोक गीत जल्दी सीख जाओगी फिर तुम्हीं से सुन लिया करूँगा।" अमित ने कहा।

दूसरे दिन प्रातः चलने की बात तय कर अमित लौट आया। बागेश्वर प्रस्थान करते समय अमित ने स्मिता को जानकारी दी कि गोमती और सरयू का संगम स्थल है बागेश्वर। कहा जाता है कि मार्कण्डेय ऋषि की पालिता गाय नन्दिनी ने, दुर्वासा के आगमन पर जब उन्हें पानी की आवश्यकता हुई तो कोई और उपाय न देखकर, शिला पर सींगों से प्रहार किया। चट्टान में दो छेद हो गये। वहां से निरन्तर दो धारायें निकलती हैं जो आगे चलकर एक हो जाती हैं। गोमती का पहले नाम गोमति था। यहाँ उन लोगों ने शैव मन्दिर, वैष्णव मन्दिर और शाक्त मन्दिर देखे। दो दिन के प्रवास में उन्हें वहाँ मादिरा और कोणी का भात खाने को मिला तथा तीन प्रकार की रोटियां भी जिनमें काफर की रोटी जंगल जाति के पौधे के दानों को पीसकर तैयार की जाती है। मडुए की रोटी काली और भूरी दोनों प्रकार की बनाई जाती है। लेसुवा रोटी को स्मिता और अमित ने काफी पसन्द किया। गेहूँ के आटे की लोई के अन्दर मडुए के आटे को रखकर यह तैयार की जाती है। शैव मन्दिरों में बागनाथ प्रकटेश्वर, नीलेश्वर और बागेश्वर प्रमुख हैं तथा शाक्त मन्दिरों में चण्डिका, अन्नपूर्णा शीतला, ज्वाला और उल्का देवी प्रमुख हैं। इसी प्रकार वैष्णव मन्दिरों में राम मन्दिर, राधाकृष्ण और वेणी माधव के मन्दिर प्रमुख हैं। पंचानन, शिव, नवग्रह, दशावतार, पंचदेव, चामुण्डा, महिषासुर और त्रिमुखी शिव की मूर्तियों को देखकर वे अभिभूत हो उठे। बागेश्वर से लौटने पर उस रात्रि विश्राम करने के पश्चात् तीनों ने दूसरे दिन रानीखेत के लिए प्रस्थान किया।

रानीखेत अल्मोड़े से पचास किलोमीटर दूर है, टैक्सी में ही वे गये। स्मिता ने देखा कि सड़कें, घने जंगल और इमारतें मन को आकर्षित करती हैं। प्रशान्त होटल में अमित ने स्मिता के लिए एक सूट बुक कराया और अपने लिए बगल में कार्नर का सिंगिल रूम ले लिया। उस दिन कालका देवी और झूला देवी के दर्शन कर लौट आए तीनों लोग। रानीखेत की सड़कें साफ सुथरी और चौड़ी हैं। यहाँ कैण्ट एरिया है। जो सैलानी भीड़ से बचना चाहते हैं, वे यहाँ आते हैं। वैसे भी इस जाड़े में सैलानियों की संख्या कम ही थी। दूसरे दिन वे चौबटिया गार्डन गये। यहाँ फल रोगों की अनुसन्धान शाला भी है। फ्रूट प्रिजर्वेशन से सम्बन्धित जैम और जेली आदि प्रिपेरेशन को देखकर उन्होंने स्वाद चखा। सेब खरीदे गये। थोड़े से खाकर शेष कण्डियों में रख लिए। यहाँ के डेलीसस सेब विश्व में प्रसिद्ध हैं। लौटते समय शाम हो गई थी। सूर्यास्त का दृश्य देखकर स्मिता को नशा सा लग रहा था। हो सकता है कि बर्फ से ढके पहाड़ पर सूर्य की किरणों से नीले

ग्रौर गुलाबी रंग की ग्राभा देखकर उसे ऐसा हुग्रा हो। थोड़ी देर बाद सूर्य पर्वत शिखरों के पीछे छिप गया। दिन भर जगमगाते हुये सूर्य का ग्रब ग्रवसान हो गया था। सुबह-सुबह उठकर देखने पर उसे सूर्य लाल गोले सा दिखाई दिया था। ऐसा लग रहा था कि यह गोला हिम शिखरों के ग्रत्यन्त निकट है। सूर्यास्त के दृश्य में उसे गुलाबी, लाल ग्रौर सुनहरे रंग का मिला-जुला प्रभाव देखने को मिला। स्मिता को देवदार बाज, ग्रगू, चीड़ ग्रौर चमखड़ी ग्रादि प्रजातियों के वृक्ष प्रचुर मात्रा में दिखाई पड़े थे। रंग-बिरंगे फूलों ने सुहावने दृश्य उत्पन्न करने के साथ-साथ स्मिता के मन को रस से सराबोर कर दिया।

होटल ग्राकर खाने के बाद घूमने के लिए वे निकले। ग्रंकित थक गया था इसलिए ग्रमित ने उसे गोद में उठा लिया ग्रौर स्मिता के साथ बगल में चलते हुए ग्रमित का मन हो रहा था कि वह उससे कहे, "स्मिता तुम इसी प्रकार संग चलती रहो तो तुम मिलो या न मिलो फिर भी मैं समझूँगा कि मैंने बहुत कुछ पा लिया है।" फिर कुछ सोचकर वह उदास हो गया। एक पार्क में वे लोग बैठ गये।

स्मिता ने ग्रमित को उदास देखा तो बोल पड़ी, "ग्रमित ! तुम ग्रतीत में क्यों खोए रहते हो ? मुझे देखो ग्रगर ग्रतीत से लिपटी रहती तो क्या बोझिल जिन्दगी न जी रही होती ग्रब तक ?"

"शायद तुम ठीक कहती हो, मैं भी यही चाहता हूँ पर क्या ग्रतीत से ग्रपने को बिल्कुल ग्रलग किया जा सकता है ?" ग्रमित ने उत्तर दिया।

"ग्रगर ग्रतीत सुखद रहा है तो उसकी यादें मधुर होती हैं पर दुखद ग्रतीत को समझो कि वह खो गया है जिसे हम ढूँढ कर भी पाना चाहें तो नहीं पा सकते।" स्मिता बोल पड़ी।

"तुम्हारे कहने का ग्रर्थ है कि वर्तमान पल में ही जीने का प्रयास करना चाहिये।"

"हाँ वर्तमान पल ही एहसास दिलाते हैं पाने का। ग्रतीत के पल में या तो हम पा चुके होते हैं या खो चुके होते है।" स्मिता ने स्पष्ट किया। बात ग्रागे बढाते हुए उसने कहा, "कभी-कभी ग्रनजाने या ग्रनायास ही मन खुशियों से भर जाता है, कारण भी ज्ञात नही होता, क्या तुमने भी ऐसा ग्रनुभव किया है ?"

"हाँ केवल उस दशा मे जब किसी प्रिय व्यक्ति का सान्निध्य प्राप्त हो तब बिना बात के कारण को जाने बगैर भी इस प्रकार की खुशी महसूस होती है। स्मिता ने मर्म को समझा लेकिन चुप रही। ग्रमित ने बात जारी रखी, "कभी-कभी मैं तुममें विरोधी गुणों का सम्मिश्रण देखता हूँ तो सोच नहीं पाता कि तुम्हारा वास्तविक स्वरूप कौन सा मानूँ ?"

"मसलन् ?" स्मिता की भौं पर बल पड़ गये।

"कभी तुम कोमलतम अनुभूति प्रदान करती हो तो कभी संघर्षशील रूप। विशेष रूप से जुल्म के खिलाफ बगावत करने पर उतारू हो जाती हो तो तुम्हारा वह स्वरूप देखकर लगता है कि उन क्षणों में तुम्हें प्रिय से प्रिय व्यक्ति की भी कोई परवाह नही रह जाती और आक्रोश व्यक्त करने के लिए तुम किसी भी हद तक जा सकती हो तब आशंकाग्रस्त हो जाता हूँ।"

"क्या करूँ निज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए करना ही पड़ता है, नही तो डूब के रह जाऊँ निस्पन्द। आदमी डूबता है तो आवाज तक नही होती जबकि पत्थर तक आवाज करते हैं। लेकिन तुम क्यो पूछ रहे हो तुम्हारे प्रति तो मेरा ऐसा व्यवहार नही रहा है।"

अब अमित क्या बताए कि उसने कब कैसा महसूस किया। उसने चुप रह जाना ही बेहतर समझा। स्मिता थोड़ी देर तक उसके उत्तर की प्रतीक्षा करती रही फिर बोल पड़ी।

"तुम मुझसे कहते हो कि मैं बातें करती रहूँ पर तुम कभी-कभी चुप्पी साध लेते हो। यह आदमी को विषम परिस्थितियों में डाल देती है। तुम्हारे ही खिलाफ़ वह एक अस्त्र बन जाती है। मैं तो समझती हूँ कि दिल की आवाज को होठो से व्यक्त कर देनी चाहिए।"

स्मिता, सलवार, कुर्ते और दुपट्टे मे थी। उसके महकते दुपट्टे को लक्ष्य करते हुए उसने सोचा कि दिल की आवाज को होठो को व्यक्त करना ही हो तब तो उसे होठो से कुछ अंकित कर देना चाहिए स्मिता पर लेकिन यह तो पब्लिक प्लेस है, फिर कभी! उसने इतना ही कहा, "व्यक्त करना तो सरल है पर यदि सम्मान मिले अर्थात् स्वीकारी जाए।"

दुविधा में पड़े रहकर तुम अपनी बात कह नही पाओगे और घुटते रहोगे।"

स्मिता के इस कथन के कटुमर्म को अमित न समझ पाया हो, ऐसी बात नही! स्मिता ने आगे कहा, "अमित कभी-कभी बातें करते ऐसा लगता है कि सब बातें खत्म हो गईं, शायद कहने को कुछ रह नही गया या फिर उन्ही मुख्य-मुख्य बातो का विस्तार सहित रिपीटिशन।"

अमित को प्रतिवाद करना पड़ा, ऐसा नही है, विषय तो बहुत हैं बातों के पर हो सकता है कहने वाला सोच रहा हो कि उनकी बातो का दूसरे पर पता नही अनुकूल प्रभाव पड़े या प्रतिकूल।"

अंकित पापकार्न खाने के बाद थोड़ी देर तक बातें सुनता रहा। उम्र के हिसाब से ये बातें उसकी समझ के परे थी अतः थोड़ी देर तक पार्क में अन्य बच्चों

को देखता रहा। उनके चले जाने पर उसे नींद आने लग गई थी, बेंच पर लेटे ही वह सो गया। काफी देर हो गई थी बातों में अतः अंकित को गोद में लिए अमित स्मिता के साथ लौट आया। अगले दिन उन्हें टैक्सी से प्रस्थान करना था। तैयारी भी करनी थी इसलिए अमित स्मिता को उसके कमरे तक पहुँचाकर "गुडनाइट" कहते हुए बगल के अपने कमरे में आ गया। वह काफी थक चुका था दिन भर की भाग दौड़ में। उसकी पलकें बोझिल होने लगी थी। इधर स्मिता ने ठण्डी हवा से बचने के लिए दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर ली। लाइट आफ की तथा सोने का उपक्रम करने लगी।

रानीखेत में दो दिन के प्रवास के पश्चात् तीसरे दिन आवश्यक तैयारी से निबट कर उन लोगों ने नैनीताल के लिए प्रस्थान किया। नव-वर्ष का प्रथम दिवस था आज। कल रात्रि में वर्ष के समापन के अवसर पर वह सोच रही थी कि उसे जीवन में भौतिक उपलब्धियाँ तो हैं पर यह तो उसका प्राप्तव्य नहीं था। यदि केवल इसी की चाह रही होती तो वह सन्तुष्ट दिखाई पड़ती। उसे लगा कि जिसे मनचाहा समझ बाद में महसूस किया कि यह तो उसका अभीष्ट नहीं था। तो क्या उसने कॉशस एफर्ट नहीं किया साथी को खोजने में ? कैसे कह दे वह ? उसे प्रतीत होता कि अनुभूतियाँ सागर के समान अथाह हैं। सारी अनुभूतियों की परख हो भी कहाँ पाती है ? वह गरिमा के भ्रम में पड़ी रही। उसे वास्तविक सुख कहाँ नसीब हो सका ? जीवन की घटनाओं का अवलोकन करती तो पाती मानसिक घुटन की ही प्रमुखता रही। मन और मस्तिष्क का वह उपयुक्त समन्वय नहीं कर पायी तभी तो उसे जिस सुख की तलाश थी या तो वह आगे निकल गया या पीछे छूट गया। वह प्रेम की ओर उन्मुख हुई, भरपूर प्रयास किया उसे पाने का। प्रेम उसका प्रेरक भी बना। उसे शक्ति भी मिली। प्यार बिना जीवन की सहजता की कल्पना नहीं की जा सकती।

वह परम्परागत नैतिकता को नहीं मानती थी मन की नैतिकता में ही उसे विश्वास था। समाज के बन्धन पर नहीं उसे मन के बन्धन पर विश्वास था। उसे तो जो मिला था उसने उसे सजोकर रखना चाहा था, अन्य किसी चीज का मोह भी नहीं था लेकिन जब उसे प्रयास के बावजूद भी संजो न पाई तो अपूरित कामनाओं का विकल्प वह क्यों न ढूँढ़े ? उसे स्थिरता नहीं गतिमय जीवन ही प्रिय था। पाकर खोने का दर्द वह महसूस कर चुकी थी तो क्यों न ऐसे को पाया जाए जिसको खोने की आशंका न रहे।

अमित ने सुबह ही उसे "हैप्पी न्यू इयर टू यू" कहा था। स्मिता ने भी, "थैंक्स सेम टू यू"। टैक्सी में बैठे हुये वह सोच रही थी कि क्या नव वर्ष उसके लिये सुखद परिवर्तनकारी होगा या पूर्व की स्थिति बनी रहेगी ? इन्हीं सब बातों को सोचते हुये वह नैनीताल पहुँच गयी।

नैनीताल में मल्लीताल स्थित प्रशान्त होटल में वे रुके। यहाँ आते समय रानीखेत के प्रशान्त होटल के मैनेजर ने इसी होटल में रुकने की सिफारिश की थी क्योंकि उसी होटल की यह ब्रान्च थी। चूँकि वहाँ सभी सुविधायें मिली थी। इसलिए अमित ने कोई हर्ज नही समझा। इस होटल मे रुकने के लिए। दो अलग-अलग सूट ले लिये गये जो अगल-बगल मे थे। बरामदे मे बैठने की समुचित व्यवस्था थी। यहाँ से बैठकर लेक और नैनीताल के विस्तार को देखा जा सकता था। नैनीताल सैनानियों के आकर्षण का केन्द्र है। ब्रिटिश टाइम मे यह अंग्रेजों की प्रिय स्थली रह चुकी है। पहले ग्रीष्म मे यह उत्तर प्रदेश की राजधानी हुआ करती थी। तब गर्मियों मे गवर्नर सचिवालय के कर्मचारियों सहित यहाँ आकर कार्यालय सम्बन्धी काम निपटाते थे। यहा सुन्दर भवन दिखायी पड़ रहे थे। शहर से दूर एकान्त में सुन्दर काटेज लता एवं कुंजों से युक्त दिखाई पड रही थी। दिन मे एक घोड़े पर अमित अंकित के साथ तथा दूसरे पर स्मिता इस प्रकार तीनों मल्लीताल और तल्लीताल का भ्रमण कर चुके थे। स्मिता घोड़े की सवारी के लिए सुविधा की दृष्टि से जीन्स पहने हुये थी। राइडिंग के पश्चात वे एक बड़े से मैदान मे स्थित एक होटल मे पहुँचे जहाँ लोग स्केटिंग करते दिखाई पढ रहे थे। किनारे कई लोग खड़-खड़े स्केटिंग करते लड़कों एवं लड़कियों को देख रहे थे।

स्मिता का मन हो आया कि वह भी इसमें भाग ले। उसने अमित से कहा। अमित अभ्यस्त तो था नही पर उसने स्वीकार कर लिया। दोनों ने स्केटिंग की वस्तु जो पहियेदार थी उसे पैरों मे पहन लिया। अंकित अधिक खुश था। इस तरह लोगों को सरकते हुए चलते देखकर। बैलेन्स सभालना उन लोगों के लिए मुश्किल हो रहा था। दो एक बार गिरे भी पर कोई चोट संयोग से नही आयी। शीघ्र ही वे अंकित के साथ बाहर चले आये। क्योंकि अभ्यास के अभाव में इसका समुचित आनन्द नही उठाया जा सकता था।

एक रेस्तरां में खा पीकर वे झील के पास आ गये। मल्लीताल के होटलों की छाया ट्यूब लाइट के कारण पानी में जगमग करती दिखायी पड़ रही थी। स्मिता ने देखा कि लोग चादनी रात मे नाव पर सैर कर रहे हैं। उसने कहा "क्यों न हम लोग थोड़ी देर तक बोटिंग कर लें।"

"चलो, जैसी तुम्हारी इच्छा।" यह कहकर अमित ने स्मिता की ओर देखा तो पाया कि स्मिता विह्वल दृष्टि से झील की ओर देख रही थी। अमित को लगा कि स्मिता की आँखें तो स्वयं झील के माफिक हैं। एक बोट तय कर तीनों उसमे बैठ गए।

झील में लहरें हिलोरें ले रही थीं। चप्पू के चलने के साथ छपाक की आवाज होती और निस्तब्धता थोड़ी देर के लिए भंग हो जाती थी। फिर भी नीरवता का साम्राज्य अपनी विशाल बाहें फैलाये हुए था।

अंकित स्मिता की गोद में बैठकर आनन्दित हो रहा था।

"तेज और तेज चलाओ वह नाव आगे निकलने न पाए।" अंकित ने कहा।

अब स्मिता और अमित ने स्वयं डांडें संभाल ली। इसमें उन्हें परिश्रम करना पड़ रहा था। जिससे उस सर्दी में भी परिश्रम के स्वेद बिन्दु उनके माथे पर झिलमिला उठे। मल्लाह के द्वारा ढंग बताने पर अब वे उसी के अनुसार चप्पू चलाने लगे जिसमें कुछ आसानी हो गई थी।

नाव जब बीच मझधार में पहुँच गई तो किनारे का प्रकाश हट गया। स्मिता जल्दी थक गई थी अतः अब मल्लाह और अमित ही नाव चला रहे थे। स्मिता कोच पर लेटी हुई खयालों में खोई हुई थी। चप्पू चलाते हुए लहरों के घेरे बन बिगड़ रहे थे। अमित को चप्पू चलाते हुए देखकर स्मिता सोच रही थी कि जो लहरों के मध्य मार्ग बनाते हुए बढ़ा जा रहा है वह नाविक निश्चय ही मजबूत होगा। "तो क्या वह अपने जीवन की पतवार अमित के हाथों में सौंप दे। इस प्रकार वह स्वयं को सौंपकर निश्चिन्त हो सकती है और वह जीवनरूपी झील को पार करने या किनारे पहुँचा सकने में सफल होगा ऐसा उसे विश्वास हो चला था लेकिन यदि ऐसा न हो सका तो.......।"

यह खयाल आते ही वह उदास हो गई। थोड़ी देर के लिए वह झील जैसी खामोशी महसूस करने लगी। मन आर्तनाद कर उठा। उसने झटके से विचारों को परे ढकेला। किस वहम में पड़ी हुई है वह? उसे तो आनन्दमग्न रहना चाहिए तभी जीवन निखरेगा। यदि वह ऐसा नहीं करती है तो अमित के उत्साह और उमंग का क्या होगा? वह मायूस हो जाएगा। अब वह उसे मायूस नहीं रहने देगी। उसके जीवन को रस से सराबोर कर देगी। जीवन जीना किसे कहते हैं? यह उसे वह शायद सिखा देगी। स्थायी या अस्थाई तौर पर कहा नहीं जा सकता?

थोड़ी देर बाद अमित भी पास आकर बैठ गया। स्मिता का मन झील की लहरों के समान उद्वेलित हो रहा था। विविध भाव तरंगों के रूप में बन रहे थे और मिट रहे थे। अमित ने स्मिता से कहा, "प्लीज, अगर थक न गई हो तो एक गाना सुना दो।"

स्मिता की चेतना लौटी। वह अमित के अनुरोध को टाल न सकी और एक मधुर प्रणय गीत की स्वर लहरी व्याप्त हो गई। संगीत और प्रेम में वैसे भी घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। अमित एकटक स्मिता के चेहरे को या यूँ कहा जाए कि उसके सर्वांग को निरख रहा था। आज उसे स्मिता का रूप अत्यन्त लुभावना और मादक लग रहा था। कभी-कभी उसे लगने लगता था कि वह स्वयं पर से नियन्त्रण खोता जा रहा है। फेनिल लहरों का मधुर स्वर ऐसा लग रहा था जैसे अठखेलियाँ या किल्लोल कर रहे हों। अमित को प्रतीत हुआ कि स्मिता का सौन्दर्य झील सी

गहराई लिए हुए है । उसके सामने रूप का सागर विद्यमान था जिसका वह चहेता रहा है पर पा नही सका था । उसके मन मे भावनाओं ने हलचल मचा रखी थी। स्मिता को आलिंगन पाश मे आबद्ध करने के लिए अमित व्याकुल हो रहा था पर स्मिता के मन मे क्या भाव है इसे वह जान नही पाया । आभास कुछ अवश्य हुआ पर वह आभास कितना सच है इसे वह तय नही कर पा रहा था । नाव अपनी गति मे झील के चक्कर लगा रही थी। अमित सोच रहा था कि स्मिता यदि उसे न मिल सके तो यह सफर इसी प्रकार जारी रहे, इसका अन्त न हो।

अमित, स्मिता के गीत सम्बन्धी स्वर माधुरी मे स्वय को विस्मृत कर चुका था । गीत समाप्त होने पर जैसे तन्द्रा भंग हुई । गीत की पुकार थी या मन का हाहाकार उसने स्मिता का हाथ अपने हाथो मे ले लिया । दो एक क्षण तक वह उसके हाथों को सहलाता रहा फिर जो उसने स्मिता की ओर देखा तो लगा कि तीक्ष्ण दृष्टि से स्मिता उसे देख रही है। उसने कम्पन्न सा महसूस किया और धीरे से अपना हाथ हटा लिया । अन्त मे झील का चक्कर पूरा करने के बाद वे चुपचाप नाव से उतरे और अपने होटल मे आ गये।

रात मे अमित बेड पर लेटे हुए सोच रहा था कि प्रेम मे समर्पण होता है लेकिन स्मिता मे अपने प्रति उसने समर्पण भाव नही पाया था । यह भी हो सकता है कि उस क्षण को वह महसूस न कर पाया हो, यदि इस तरह के भाव कभी स्मिता के मन मे उठे हों । यौवन भावुक होता है इसलिए गलतियां आदमी से होती हैं अमित को भी अब तक के जीवन मे कई बार विरक्ति या ऊब पैदा हो चुकी थी निराशा और असफलता चाहे इसकी वजह रहे हो । स्मिता को पाकर वह सोचता कि गलती वह कर ही डाले । अगर गुनाह ही कहा जाए इसे तो यह सुन्दर गुनाह होगा । शायद गलती या गुनाह भी नही क्योंकि प्रेम की पूर्णता के ये आवश्यक सोपान हैं लेकिन फिर यह सोचता कि ये सब तो उसके लिए मृगतृष्णा ही रहे है । छलावा सिद्ध हुए हैं । जो अनुभव उसे पीड़ा जन्य हुए हैं वे ही काफी है जीवन को भारमय बनाने के लिए । यदि दूसरे की इच्छा समझे बिना उसने कोई ऐसी चेष्टा की तो वह जीवनभर चैन न पा सकेगा ।

शायद उसके जीवन में स्मिता का साथ इसी रूप मे बढ़ा है । बार-बार किनारे तक जाकर अतृप्त रह जाना या मझधार में पड़े रहना अथवा कुछ कदम साथ-साथ फिर रास्ते और दिशाएँ अलग-अलग । उफ ·····यह भी क्या जीवन है ? बार-बार आशा का उदित होना और निराशा हाथ लगना । स्मिता भी क्या जाने कि ये सब मन को कितनी पीड़ा देते हैं ? पता नही वह समझती है या नही इन सब बातों को पर अपनी ओर से समझाने का प्रयास दुष्प्रयास ही होगा ।

स्मिता सीमित प्यार या सीमित प्रणय में विश्वास नही रखती थी उसे तो अटूट प्यार चाहिए था अमित को वह पाती कि वह उसकी भावनाओं के उपयुक्त है, कभी आशंका ग्रस्त भी होती ।

जब जब भी वह इस ऊहापोह की स्थिति मे रही उसे कोई ऐसा मिल जाता जो उसे सभी मे बढ़-चढ़ कर लगे और उसके आगे सभी पुरुष हीन लगने लगते फिर वह दिन रात उसकी प्रशंसिका बनी रहती। बाद में जब उसे अपने निर्णय पर पछतावा होता तो अमित उसके जेहन में आ जाता यही क्रम अब तक चल रहा था।

दूसरे दिन अमित स्मिता और अंकित को लेकर दो एक पब्लिक स्कूल गया एडमिशन के सम्बन्ध में। जाड़े की छुट्टिया चल रही थी। लेकिन प्रिंसिपल से भेंट हो गयी। नैनीताल के एक स्थानीय पत्र संपादक ने इस सम्बन्ध मे अमित की सहायता की। एकाध जगह डोनेशन की डिमाण्ड थी और कही पर मिडसेशन मे एडमिशन के लिये तैयार नही हुये। अंकित पढ़ने मे तेज था। काफी प्रयास करने के बाद टैस्ट के बाद एडमिशन मे सफलता मिली। तय हुआ कि वैकेशन के बाद उसे पढने भेजा जायेगा। खर्च कुछ अधिक था पर इतना नही कि स्मिता उसके व्यय भार को वहन कर न पाती। होस्टल भी अच्छा था और सबसे बड़ी बात यह थी कि अंकित इस स्कूल मे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकता था। अतः इस समस्या का हल पाकर वे निश्चिन्त होकर वापस आ गये।

थोड़ा विश्राम और खा पी चुकने के बाद सोचा गया कि चाइना पीक या टिफिन टाप तक घूम आयें। थोड़ी बहुत खाने पीने की सामग्री टिफिन बाक्स मे रख लिया। एक घोड़े वाले को तय कर लिया गया। स्मिता थोड़ी देर तक अमित के साथ घोड़े पर बैठी रही। अंकित को घोड़े की सवारी मे आनन्द आ रहा था। लेकिन हिचकोलो से स्मिता के कूल्हे और पीठ दुखने लगी। आखिर उसने पैदल चलना ही तय किया। रास्ते मे और लोग भी आ जा रहे थे। टाप पर पहुँच कर थोड़ा सुस्ताने के बाद खाने का आयोजन हुआ। लौटते समय ढलुआ विस्तार पर उन्हे आने मे आसानी हुई। जाते समय जितना समय लगा था उससे कम समय मे वापस आ गये। मार्केट पहुँचने पर एक बेंच पर थोडी देर वे सब बैठे। मार्केटिंग भी की। थकान अब उन्हें महसूस होने लगी थी। इसलिये वे वापस होटल आ गये। उस दिन फिर कही और जाना न हो सका। थकान दूर करने के लिये आराम करना ही उन्हें रुचिकर लगा।

अगले दिन वे बरामदे मे बैठे हुये प्रातःकालीन धूप का सेवन कर रहे थे और सामने का दृश्य देख रहे थे। जाड़े में पहाड़ पर धूप का सेवन करना सुखद होता है। दूर दिखायी पड़ती चोटियां और हरी-भरी पहाड़ियाँ मन को आकर्षित करती हैं। पहाड़ पर मौसम बदलते देर नही लगती। अभी धूप थी और फिर आकाश में बादल घने और बिखरे रूप में दिखायी देने लगे। ठंडी हवायें चलने लगी। जाड़े की ठिठुरन शरीर मे सिहरन पैदा कर देती है। कपकंपाती सर्दी में

शरीर को ऊनी वस्त्रों से भली-भाँति ढ़कना अनिवार्य हो जाता है। स्मिता स्कार्फ बाधे थी, अमित और अंकित सिर पर बालो वाली कैप लगाकर ओवरकोट की जेब मे हाथ डाले हुए थे। तेज ठडी हवाएँ चल रही थी फिर बारिश शुरू हो गई। ऊनी कपड़े पर्याप्त रूप से पहनने के बाद भी सर्दी से बचाव न हो पा रहा था। अब पानी थम चुका था। अचानक स्नोफाल शुरू हो गया। पहले धीरे-धीरे फिर स्नोफाल की गति मे कुछ तेजी आ गई।

स्नोफाल होते समय मन करता है कि बाहर खुले मे रूई के फाहे जैसी बर्फ के कण पुष्प के समान जो बिखर रहे हैं उस वातावरण मे घूमने का आनन्द लिया जाये। स्मिता ने प्रस्ताव रखा, "चलो अमित, बाहर घूम आयें।" अंकित तुरन्त तैयार हो गया। वे उसे ले नही जाना चाहते थे कि उसे कहीं सर्दी न लग जाये। लेकिन समझाने पर भी वह नही माना। होटल के बाहर सडक पर वे निकले। उनके कपडो पर जहां तहां बर्फ रूई के समान इधर उधर छितरा रही थी। कई घटे तक स्नोफाल होता रहा। स्मिता ने रूई के समान बर्फ को हथेलियो से समेटकर गोला बनाकर अमित पर फेंका तो अमित पहले तो चौंक उठा फिर स्मिता के शरारती मूड का ख्याल कर मुस्करा पडा। अंकित भी देखा देखी बर्फ के गोले इन दोनो पर फेंक रहा था, कुछ पहुँच रहे थे और कुछ बीच मे ही गिर पडते। अमित ने भी प्रत्युत्तर मे स्मिता पर बर्फ के गोले फेंके लेकिन स्मिता यह ख्याल किए बगैर कि कहा बर्फ लग रही है अधा धुन्ध फेंकती जा रही थी मकान की छतों और पेडो पर सफेदी दिखाई पड़ने लगी थी।

अमित ने यह सोचकर कि स्मिता या अंकित को कही ठंड न लग जाए, कहा, "काफी देर हो गयी चलो अब लौट चलें।"

स्मिता को आनन्द आ रहा था। वह चाह रही थी कि कुछ देर और इसी प्रकार व्यतीत किया जाए लेकिन सड़कों पर बिछी हुई बर्फ से फिसलने का भय, अंकित का ख्याल तथा यह सोचकर पता नही कितनी देर तक स्नोफाल जारी रहे, उसने अमित का अनुरोध स्वीकार कर लिया। होटल पहुँचने पर अपने-अपने लबादे की बर्फ उन्होंने झाड दी। अमित ने अंकित और स्मिता की इसमें सहायता की। कमरे मे आकर दीवाल के पास बनी अंगीठी मे आग जला दी गयी। तीनों ने अपनी कुर्सिया पास खिसका ली और हथेलियों को गर्म करने लगे।

बाहर अब भी बर्फ गिर रही थी। खिडकी के शीशों पर पडती बर्फ और हवा के थपेड़ों से इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता था। आँच से शरीर को ताप मिल रहा था। "ओह, कितनी ठंड है, बर्फीली हवा जैसे जिस्म को भेद रही हो।" स्मिता सोच रही थी। उसकी हल्की सी सीत्कार सुनकर अमित से रहा न

गया पूछ बैठा, "स्मिता तुम ठंड से कांप रही हो तो यह शाल ओढ़ लो, कहो तो कम्बल निकाल दूँ।"

"हाँ अमित, ठंड बड़ी भयंकर है वैसे अंगीठी के पास बैठने से राहत जरूर मिलती है, फिर भी कम्बल ओढ़कर बैठना ठीक होगा।"

अमित ने देर किए बगैर दो कम्बल निकालकर अंकित और स्मिता को ओढ़ा दिया। चारों ओर कसकर लपेटे हुए कम्बल को उन दोनों ने उसका कुछ हिस्सा अपने नीचे दबा लिया। वे मौसम की बातें काफी पीते हुए करने लगे।

"अमित क्या तुम हर साल यहाँ आते हो? स्मिता ने पूछा।

"हर साल पहाड़ जरूर आता हूँ। जगह बदलता रहता हूँ पर नैनीताल पहले भी आ चुका हूँ।"

सच अमित मैं पहली बार यहाँ आई और मुझे ऐसा लगता है कि अब तक के देखे हुए प्राकृतिक दृश्य सुन्दर लगे थे पर यहाँ तो प्रकृति का खजाना देखकर मैं अभिभूत हो उठी वास्तव मे कितने सुखद अनुभव से अब तक वंचित रही।"

"तुम चाहो तो हर साल मेरी तरह पहाड़ पर घूमने का प्रोग्राम बना सकती हो। लोग गर्मियों मे या अक्टूबर में दुर्गा पूजा के अवसर पर यहाँ आते है पर मुझे तो स्नोफाल देखना बहुत पसन्द है इसलिए मैं दिसम्बर मे या जनवरी मे आता हूँ।" अमित ने कहा।

"ठीक है कोशिश करूँगी कि अन्य मौसम मे भी आकर अनुभव मे ही बढ़ोत्तरी करूँ।"

स्मिता ने खिड़की खोलकर देखा क्योंकि शोर अब बन्द हो चुका था। अब बादल और कुहरे का साम्राज्य दिखाई पड़ रहा था। लगता था कि गर्जन तर्जन के पश्चात् अब प्रकृति शान्त हो चुकी है। अमित ने स्मिता और अंकित की हथेलियो को बारी बारी से अपनी हथेलियों से रगड़ा इससे ठंडक का असर काफी कम हो गया। आज कोई विशेष जगह जाना सम्भव नही हो पाया था।

रात मे बरामदे से उन लोगों ने देखा कि रात्रि के अन्धेरे के बावजूद बर्फ की सफेदी चमकती हुई दिखायी पड़ रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे पहाड़ पर किसी ने सफेद चादर बिछा दी हो। स्मिता के नेत्र प्रकृति के सौन्दर्य का पान कर रहे थे। रात्रि के ग्यारह बज रहे थे। अमित ने सोचा अब उसे वापस जाना चाहिये। "अच्छा अब मैं चलता हूँ गुडनाइट"।

स्मिता ने अपलक उसे निहारने के बाद धीमे से गुडनाइट कहा और अमित अपने कमरे में आते हुये स्मिता की हथेली की उष्णता को महसूस कर रहा था। सोच रहा था कि उसने लौट कर ठीक किया या नहीं। स्मिता का निहारना और

धीमे स्वर मे गुडनाइट कहना कही ऐसा तो नही था कि वह और देर तक सान्निध्य चाह रही हो।

दूसरे दिन जागने पर स्मिता ने नाक किया तो अमित को उठना पड़ा। बरामदे मे ही चाय पीकर वे रेलिंग के पास खड़े होकर बाहर देखने लगे। ऊँचाई से पिघलकर बहती बर्फ मनोरम दृश्य उत्पन्न कर रही थी। सूर्य के निकलने के साथ धूप तेज होने पर चांदी के समान दमकने लगी। इस खूबसूरत दृश्य को देखकर वे दोनों प्रभावित हुये बिना न रह सके।

बर्फ पाला पड़ जाने मे कठोर हो चुकी थी। सामने दूर बर्फीली चोटियाँ आज अधिक स्पष्ट दिखायी दे रही थी। आज दिन मे हनुमान गढी और रात मे आब्जर्वेटरी देखने का कार्यक्रम था। वे हनुमान गढी के दर्शन करने गये एयर बैग लटकाये हुये। प्रसाद भी लिया। दर्शन करते समय प्रसाद चढाया और फिर प्रसाद खाकर चाय पीने के बाद बतियाते हुये वापस आ गये। अमित ने एक बात को नोट किया इतने दिनों मे, स्मिता को मिठाई और नमकीन दोनो चीजें अच्छी लगती हैं जब कि उसे मिष्ठान्न अधिक प्रिय था। शायद इसी कारण स्मिता तिक्त और कड़वी अनुभूति को मिटाने मे सक्षम है। साथ ही उसके मन मे ज्वालामुखी धधकता रहता है। कभी-कभी ऐसा लगता कि बस अब ज्वालामुखी फूटने ही वाला है। ऐसे समय मे अमित जरूरत से ज्यादा सतर्कता बरतता। वह नही चाहता था कि बातो के क्रम मे किसी ऐसी बात का सिलसिला शुरू हो जाये। जो उसकी दुखती रग को छू दे और वह अन्यमनस्क हो जाये। आखिर वे जीवन की अन्धेरी घाटियो से हटकर यहाँ पहाड की वादियो मे आए थे अपने कटु अनुभवों को भूलने और जीवन को प्राकृतिक छटा तथा सौन्दर्य की अनुभूति से परिपूरित करने जिससे उनमे उमग और स्फूर्ति व्याप्त हो साथ ही जीवन की नीरसता दूर हो।

अमित जिन्दगी की बातें करके वातावरण को बोझिल न बनाता केवल वातावरण सम्बन्धी बातें करता जिसमे प्रकृति की रूप राशि और उसके सौन्दर्य की ही अधिकांश में चर्चा होती। रात्रि मे वेधशाला भी देखने गये। वेधशाला मे सीढियो से ऊपर चढ़कर बडी-बडी दूरबीनो से उन्होने चन्द्रमा को देखा जिसमें गड्ढे या सूराख स्पष्ट दिखायी पड़ रहे थे। बटन दबाने पर गुम्बद का छत का भाग खुल जाता था और दूरबीन को इस प्रकार फिक्सड कर दिया जाता था जिससे ग्रहों को साफ देखा जा सकता था। शनि अगूठी के आकार का दिखायी पड़ा और जूपिटर पूर्णमासी के चन्द्रमा के आकार का। उस वेधशाला के एक अधिकारी ने रुचिपूर्वक विस्तार से ग्रहों के सम्बन्ध मे और वेधशाला के महत्त्व पर प्रकाश डाला। परिचय होने पर उसने प्रसन्नता जाहिर की। अमित के उपन्यास का वह पाठक रह चुका था इसलिये उसने आग्रहपूर्वक सम्मान भाव प्रदर्शित करते

हुये विस्तार से सारी बातें बतायी। अनजानी जगह पर कोई आत्मीय मिल जाता है तो प्रसन्नता होती है। अमित को भी ऐसा ही महसूस हो रहा था। उसने इलेक्ट्रानिक वाच भी दिखायी जो एक सैकेण्ड के दस हजारवें भाग तक के समय को प्रदर्शित करती थी। इन अद्‌भुत और नवीन बातों से परिचित होकर ज्ञान विज्ञान की दुनिया की थोडी बहुत जो जानकारी मिली, वह उन्हे विस्मय मे डालने के लिये पर्याप्त थी। पर्वतीय यात्रा मे अमित ने स्मिता के कई स्नैप्स विभिन्न एंगिल्स से लिए।

वेधशाला मे लौटते समय अमित सोच रहा था कि उसका प्रेम स्मिता के लिए स्वीकृति एव अस्वीकृति के बीच भले ही रहा हो पर क्या वह इसे विफलता मान ले। किसी को प्रेम करना आनन्दपूर्ण होता है सम्भवतः पाने से अधिक क्योकि पा लेने के बाद प्रयास उतना प्रभावी नही रह जाता। फिर उसे लगता कि उसकी सोच अव्यावहारिक एव आदर्श पर आधारित है। कामना का पूर्ण होते कौन नही देखना चाहता ? स्मिता इसे दूसरे ढग से सोचती कि जो प्राप्त हो रहा है उससे अपने को वचित क्यो रखा जाये ? दोनों मे एक दूसरे के प्रति अव्यक्त प्रेम तो था वरना इतना संग साथ क्यो रहता लेकिन दोनो के विचारों मे अन्तर भी था। अमित स्मिता के साथ होता तो उसके मन मे विचित्र सी अनुभूति होती यह अनुभूति चाहत की है या कसक की, यह वह निश्चित नही कर पाता, शायद मिले-जुले रूप की अनुभूति थी।

अमित सोच रहा था कि यूं तो स्त्री और पुरुष के बीच प्रेम का सम्बन्ध आदि काल से चला आ रहा है शाश्वत रूप मे। इस प्रेम की अन्तिम परिणति दैहिक दायरे मे ही होती है। नारी के रूप, प्यार, नफरत, मुस्कान, अदा और हाव-भाव के मध्य गुजरते हुए पुरुष को नारी एक पहेली सी लगने लगती है जिसकी थाह पाना कठिन होता है। कभी-कभी उसे लगता कि शायद उसने स्मिता को दूसरों की अपेक्षा अधिक जाना और समझा है फिर भी वह उसे सम्पूर्ण रूप मे नही समझ पाया है। एक बार स्त्री के आगोश में पुरुष आया नही कि प्रवाह मे बह जाता है फिर उसे विवेक, जिम्मेदारियाँ, रिश्ता, सामाजिकता, नैतिकता और मान्यताओ आदि का ख्याल नही रहता। वह वही करने लगता हैं जो दिल चाहता है। प्रेम कभी उत्थान के शिखर पर पहुंचा देता है तो कभी पतन के गर्त मे मिला देता है। प्रेम मे व्यक्ति यथार्थ लोक मे नही बल्कि भावना के लोक मे विचरण करता है। अमित स्मिता के सान्निध्य मे इसी प्रकार काल्पनिक जगत मे विचरण करता रहता। उसके प्रति अपने प्रेम की सफलता मे उसे सदैव आशंका बनी रही है। जब जब वह इस प्रकार के ख्याल करता तो उसे अपनी सोच से भी डर लगने लगता। भावनाओ के प्रवाह मे डूबते उतराते हुए वह अस्थिर हो जाता यही कारण है कि वह सही निर्णय नही ले पाया है अब तक क्योकि सही निर्णय लेना

उसके लिए कठिन हो रहा है अभी तक। इतना सब होते हुए भी वह स्मिता के प्रेम के मार्ग में अपना आगे बढ़ाया हुआ कदम वापस नही ले सका है, यहां तक कि उसे जबर्दस्त ठेस भी लगी है जबकि कई व्यक्ति ऐसे होते हैं जो ठेस के लगने पर या असफलता के मिलने पर बढ़ाया हुआ कदम लौटा लेते हैं और परिवर्तनशील बन जाते हैं।

अमित स्मिता को सम्पूर्ण रूप से चाहता था, उसे कटु अनुभव हुए और ठेस भी लगी पर उसकी चाहत में कोई अन्तर नही आया। शायद स्मिता अमित की कमजोरी थी। ऐसी बात नहीं कि स्मिता मे कोई कमी न थी। कभी-कभी उसका व्यवहार अप्रत्याशित हो जाता। शायद उसकी बोल्डनेस और स्पष्टवादिता के कारण तब अमित का हृदय सिसक उठता। प्रायः वह स्मिता की दो एक कमियां जो थीं उसे अनदेखा कर जाता। दुःखी भले ही वह हो लेता पर व्यक्त न करता। उसकी धारणा थी कि जिसे चाहो सम्पूर्ण रूप से फिर मानव में कमियों का होना अस्वभाविक तो नही। जब तक स्मिता की बेरुखी उसे टीस और जलन प्रदान करती फिर वह सोचने लगता कि स्त्री के स्वभाव को परख करना अत्यन्त दुरुह कार्य है। कभी उपेक्षा दिखाने, प्रताड़ित करने और आलोचना करते रहने पर भी वह समर्पण भाव रखती है और कभी पुरुष के एकनिष्ठ बने रहने, सर्वस्व अर्पित करने पर भी वह उसे चाह नही पाती। चाहे पति हो या प्रेमी, एक बार मन से उतर गया तो दुबारा उसका मन मन्दिर में प्रतिष्ठित हो पाना सहज नही होता यदि दो के बीच कोई तीसरा आ गया तो फिर बहाव को रोक पाना सम्भव नही हो पाता। स्त्री के अप्रत्याशित व्यवहार को देखकर सोचना पड़ता है कि अब वह क्या कर बैठेगी, क्या रूप धारण करेगी कुछ कहा नही जा सकता। यह परिवर्तन किस सीमा तक होगा यह भी तय नही। किसी के प्रेम की ओर उन्मुख होने पर स्त्री उससे विमुख होने के सम्बन्ध मे कोई तर्क, अवरोध या बन्धन स्वीकार नही करती। इस आचरण से एक ओर जहां वह अपने जीवन को संवारने मे सफल होती है। दूसरी ओर गिरावट भी आ सकती है जो धीरे-धीरे होती है पर प्रारम्भ मे इसका आभास नही होता और जब होता है तब तक देर हो चुकी होती है, सम्भलने के लिये। इस प्रकार अमित स्मिता को लेकर अपनी सोच के उधेड़-बुन मे पड़ा रहता।

प्रस्थान से पूर्व की रात मे स्मिता लेटी हुई थी। उसके चेहरे पर तृप्ति के भाव अंकित हो रहे थे। वह दूर कही कल्पना लोक में विचरण कर रही थी। उसकी तृप्ति की भाव भंगिमा को अमित अपनी दृष्टि मे कैद कर लेना चाहता था। स्मिता इसी प्रकार सुध बुध खोकर लेटी रहे और वह उसे अपलक निहारता जाये यही उसकी साध बनी रही। अमित अनुभूतियों के सागर मे डूब उतर रहा

था। कुछ कहकर वह व्यवधान नहीं उत्पन्न करना चाह रहा था। स्मिता ने करवट ली तो उसे लगा कि वह उसी गहन अनुभूति के भाव से ताक रही है। वह बेचैन हो उठा। उसकी उंगलियां स्मिता की केश राशि को सहलाने लगीं। वह वह कुछ कहना चाह रहा था पर उसे शब्द नहीं मिल पा रहे थे। एक हाथ उसने स्मिता के सिर के नीचे रख दिया। उसे उसके शरीर की उष्णता की अनुभूति होने लगी। वह स्वयं को नियन्त्रित करना चाह रहा था पर सारे प्रयास के बावजूद उसे असमर्थता का बोध हो रहा था। स्मिता सिमट उठी। अमित इन क्षणों को खोना नहीं चाहता था। वह कामना की वश में नहीं कर सका। गति आवेश और आवेग में वह बहा जा रहा था। उसे लग रहा था कि ज्वार का तूफान आ गया हो और दोनों का निजत्व तिरोहित हो गया हो। स्मिता के हाथों के घेरे के बन्धन को वह महसूस कर रहा था। आस-पास खुशबू फैली हुई थी जो उत्तेजना को बढ़ावा दे रही थी। स्मिता का आंचल नागफनी के रूप में बंध चुका हो, ऐसी अनुभूति उसे हो रही थी। उसे यह धागे बन्धे गुलाब की तरह लग रही थी। अप्राप्य का भाव मिट चुका था। सारे बन्धन और अवरोध स्वतः टूटते जा रहे थे। कोमलता और कठोरता समर्पण में विलीन हो रही थी। उद्दाम की चरम सीमा पर दोनों तिरोहित हो गये एक दूसरे में। अमित को स्मिता से प्राप्त सेन्सुअस लव ने आज पराकाष्ठा प्रदान की थी। संतुष्टि और तृप्ति की सुखद अनुभूति की स्मृति में दोनों निढाल होकर सो गये।

अमित के चेहरे को स्मिता की केश राशि गुद-गुदा रही थी। उसने आहिस्ता से बालों को हटाना चाहा तो उसके हाथों में स्मिता का चेहरा आ गया। उसने अपने चेहरे के ऊपर झुके स्मिता के चेहरे को पकड़ कर चूम लिया पर उधर से कोई प्रतिक्रिया न होने के एहसास के साथ उसकी आंखें खुल गईं। एक पल को तो वह अपनी स्थिति नहीं समझ पाया पर दूसरे ही पल स्मिता को शांत और घूरती हुई निगाहों से देखते पाकर उसने अपना हाथ स्मिता के चेहरे से हटा लिया, स्मिता उसे जगाने आयी थी। चाय टेबिल पर रखी थी और स्मिता बगैर कुछ कहे उसके कमरे से बगल के अपने सूट में जा चुकी थी। ओह........तो क्या वह इसके पूर्व स्वप्न देख रहा था और उसी के तारतम्य में उसने अनजाने अर्द्धनिद्रित या अर्धचेतन अवस्था में स्मिता को चूम लिया।

यह सब कैसे और क्या हो गया ? स्मिता ने उसे किस रूप में लिया होगा। थोड़ी देर पहले ही वह शान्त दृष्टि से उसे घूरे जा रही थी। उसकी दृष्टि की तीक्ष्णता जैसे हृदय को बेधती हुई पार जा रही थी। अब वह क्या करे आज तक जब वह व्यक्त नहीं हुआ तो आज ही जाने अनजाने ही सही क्यों व्यक्त हो गया ? तृप्ति के भाव तिरोहित हो चुके थे। ग्लानि ने उसका स्थान ग्रहण कर लिया था।

आज ही तो उन लोगों को वापिस जाना था। स्मिता के समक्ष वह कैसे जाये ? स्मिता जिस भाव को दर्शाते हुये गयी है वह क्या अब कुछ न कहेगी ? न जाने पर अपराध बोध और उजागर होगा। बाईस दिसम्बर से पांच जनवरी तक लगभग दो सप्ताह की इस पर्वतीय यात्रा ने क्या कुछ नही दिया था जिसे वह वर्षों तक प्राप्त नही कर सका था पर समापन इस रूप मे होगा इसकी उसे कल्पना भी नहीं थी। आखिर वह तैयार होकर स्मिता के कमरे में पहुंचा तो देखा वह अपना सामान बांध रही थी। स्मिता ने उसे देखा पर कहा कुछ नही। वह स्मिता के बोलने की प्रतीक्षा करता रहा पर उसे कुछ बोलते न पाकर सामान पैक करवाने मे वह सहयोग करने लगा। स्मिता ने शांत स्वर मे इतना ही कहा "अमित किसी का विश्वास जीतना बहुत कठिन होता है वर्षों लग जाते हैं इसमे, उम्र बीत जाती है पर विश्वास को खोने मे कोई देर नही लगती।" अमित कुछ न बोला क्या सफाई देता और स्मिता ही क्यों कोई भी उसकी बात का विश्वास न करता। नजरें झुकाए हुए काम में वह लगा रहा। अमित के मन के कागज पर इस घटना ने अमिट हाशिया खींच दिया। वापसी में यात्रा के इस अन्तिम बिन्दु पर दोनों के मन में कसक बनी रही। प्रकृति के सौन्दर्य से बिछुड़ने की तथा अन्य भी कारण दोनों के अलग-अलग या कुछ भी क्यों न रहे हों ?

× × ×

अंकित के बीमार होने की बात जानकर अमित बेचैन हो उठा। उसने सफर के दौरान एहतियात बरता था कि अंकित को ठण्ड न लगने पाये पर होनी होकर रही। उसे कुछ आशंका तो हुई थी लेकिन यात्रा समाप्त हो गयी तो उसने चैन की सांस ली। इधर एक हफ्ते से वह स्मिता के यहां जा भी न पाया था कुछ तो व्यस्तता बाधक रही साथ ही यात्रा का जो अन्त हुआ था वह सम्भावना से परे था उसे आशा थी कि इस बीच स्मिता उससे मिलेगी तो उसके मनोभाव जान कर ही जाने के सम्बन्ध में सोचेगा लेकिन उसके न आने से अमित के मन मे विविध आशंकाएं पनपने लगी थीं वह सोचने लगा था कि उसका जीवन शायद जिन्दगी भर दुःख झेलने के लिए ही है। एक सुख की कामना की थी उसने प्रबल चाह के साथ पर वह उसे नसीब न हो सकी। इधर न्यूज पेपर का संस्करण प्रदेश के एक अन्य महानगर से प्रारम्भ किया जाने वाला था उसे आफर भी दिया गया कि वह चाहे तो वहां असिस्टेन्ट एडीटर का पद सम्भाल ले। पूर्व की स्थिति रही होती तो

इस उपलब्धि पर ध्यान न देता पर बदले हुए परिवेश में यहां रहकर भी वह क्य करेगा ? एक ही शहर मे रहते हुए उसे चुभन व पीड़ा जो झेलनी पड़ेगी सहज बर्दाश्त करना उसके लिए सम्भव नही होगा इसलिए बिना कुछ कहे वह इस पदोन्नति को स्वीकार करने के सम्बन्ध मे गम्भीरतापूर्वक सोचने लगा था।

अब तक के जीवन क्रम मे वह स्मिता के निकट पहुंचा, जुदा हुआ फिर संयोग वश सान्निध्य मिला और एक लम्बा अन्तराल रहा दूर हुए तथा पुनः परिस्थितियो ने समीपता प्रदान की। अभी तक कहीं एक क्षीण आशा बनी हुई थी मिलन की इसलिए जुदाई भी अस्थायी रही लेकिन इस बार के जुदा होने पर अगर यह स्थायी जुदाई रही तो निश्चित ही यह स्थिति वेदना और त्रासदी से पूर्ण होगी। स्मिता ने उससे एक बार कहा था, "मनोमालिन्य के बाद जब सम्बन्ध में बढोत्तरी होती है तो वह सम्बन्ध अधिक गहराई लिए होता है।" पर उसका यह कथन सार्थक न हो सका। उसे याद आ रहा था कि स्मिता ने यह बात उस समय कही थी जब उसने उद्गार व्यक्त करते हुए उससे कहा था "स्मिता, मैं अब तक रीता था अब तुम्हारा सान्निध्य एक अरसे बाद मिला तो लगता है कि यह रीतापन दूर हो गया आखिर क्यो ऐसा हो जाता है जिसे हम नहीं चाहते हैं ?"

अमित को स्मिता के सान्निध्य मे अन्तरंग क्षण जो प्राप्त हुए थे उसमे उसे प्रेम के नशे की अनुभूति हुई थी तब उसने जाना कि प्रेम के नशे मे अनेक बातें कही और सुनी जाती हैं अगर उसका विश्लेषण किया जाए तो लगेगा कि उसका कोई अन्त नही। जीवन बीत सकता है सिर्फ विश्लेषण करने मे या कही हुई बात का अर्थ समझने मे। नशे के टूट जाने पर उसे ठेस लगी थी इधर वह प्रायः अपने को विचारों के प्रवाह मे पाता। संकल्प करने का प्रयास करता कि वह और न सोचे पर सोचने पर उसका वश नही रह गया था। इन सब बातो को सोचकर भी क्या होगा, इसका कोई परिणाम निकलने वाला तो है नही। अतः वह अपने मित्र डाक्टर के साथ स्मिता के यहां जा पहुंचा।

स्मिता को कुछ आश्चर्य तो हुआ क्योंकि वह सोचने लगी थी कि अमित ने उसके व्यवहार को बुरा माना है शायद इसीलिए उसने यहां पहुंचाने के बाद उसकी कोई खोज खबर नही ली फिर भी अमित के आने से उसे सान्त्वना मिली और कहा, "आओ अमित, काफी दिनों बाद तुम्हें सुध आई।"

अमित से न रहा गया उसने कहा, "लगता है कि तुमने मुझे इस लायक भी नहीं समझा कि अंकित की बीमारी की खबर किसी से करा देती। अच्छा यह बताओ कि इलाज किसका चल रहा है ?"

यह रहा प्रिंस-क्रिप्शन, लाभ कुछ तो हो रहा है। तुम्हें यह सोचकर खबर नहीं दी कि मैं तो परेशान हूं ही तुम्हें इस परेशानी में क्यों डालूं ?"

*डाक्टर की मौजूदगी में अमित ने उनसे कुछ न कहा। परिचय कराने के* बाद उसने प्रिंस-क्रिप्सन डाक्टर साहब की ओर बढ़ा दिया। स्मिता चाय बनाने चली गई थी अमित परामर्श लेता रहा। उसे मालूम हुआ कि अंकित को न्यूमोनिया हो गया है। काफी देख-रेख की जरूरत है। इलाज ठीक ढंग से जारी था। जल्दी फायदा हो इसके लिये एक दो दवायें और लिख दी गयी। चाय पीने के बाद स्मिता से यह कहकर, "तुम इन्तजार करना मैं अभी दवा लेकर आ रहा हूं।" वह चला गया। डाक्टर के साथ जाने के लगभग आधे घन्टे में वह लौट आया। अब उसने स्मिता को देखा तो वह बोल पड़ा।

"आज मैं बैंक गया था वहीं मालूम हुआ कि अंकित के बीमार होने की वजह से तुमने छुट्टी ले रखी है।"

"हाँ वहाँ से आने के बाद से ही ठण्ड के प्रकोप ने असर दिखा दिया और दूसरे दिन से ही अंकित अस्वस्थ हो गया।"

"तुम्हें देखने से ही लग रहा है कि तीमारदारी में तुम काफी थक गई हो, और अब तुम आराम कर लो मैं यहीं बैठा हूं।"

तभी अंकित बोल पड़ा; "अंकल आप आये नहीं। मम्मी की दवा नहीं लूंगा।"

"हाँ बेटे तुम्हें दवा मैं दूंगा। अच्छी और बढ़िया।"

अमित बेड के पास ही इजी चेयर खीचकर बैठ गया। वह अंकित को अपनी बातों से बहलाता रहा, उसने चुटकले और कहानियां सुनाई। थोड़ी देर बाद अंकित सो गया। स्मिता खाना ले आयी थी, उसने अमित से खाने को कहा पर वह स्वीकार न कर सका क्योंकि वह खाकर आया था। पर पुनः आग्रह किये जाने पर वह मना भी न कर सका। अनिच्छापूर्वक उसने थोड़ा सा खा लिया। अमित स्मिता से बातें करना चाहता था पर उसके मन में संकोच बना रहा। पिछली घटना पर स्मिता की निर्लिप्तता और विड्राल टेन्डेन्सी को वह नहीं समझ पाया। उसने सोचा कि वह अपनी स्थिति स्पष्ट करे कि किन परिस्थितियों में अनजाने और स्वाभाविक रूप में घटित हो गया था वह सब लेकिन कोई चर्चा उधर से हो तभी कुछ कहना ठीक होगा अन्यथा पता नहीं वह क्या सोचे ? स्मिता ने कोई चर्चा नहीं उठायी। वह आश्वस्त प्रतीत हो रही थी। वह अंकित के पास बैठ गयी उसने कहा "अब मैं देख-रेख कर लूंगी। इसी प्रकार आते रहा करो।"

अमित ने देखा कि अंकित को तेज बुखार था। रात में उसे समय-समय पर दवा देनी थी। इसलिये आवश्यक था कि कोई जागता रहे अतः उसने कहा, तुम कहोगी तो मैं चला जाऊँगा लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम आराम करो, मैं जागता रहूँगा।

"स्मिता चाहती तो न थी पर भावुक अमित पता नहीं उसकी बातों को किस रूप मे ले। अतः उसने उसकी बात का प्रतिवाद नही किया।"

"जैसा तुम चाहो, मैंने तो तुम्हारे आराम का ख्याल करते हुये कहा था"।

अमित को लगा कि बातें औपचारिकता के स्तर पर हो रही हैं। विषय परिवर्तन करते हुये कहा "स्मिता तुम सूक्ष्म विश्लेषण करने मे दक्ष हो इसलिये तुम्हारी कसौटी पर जल्दी कोई खरा नही उतरता है।"

"हाँ जब तक कोई मुझे पूर्ण रूप मे भा नही गया, मैं उसे चाह न सकी। इतनी बात तो है।" उसने बगैर किसी दुराव के व्यक्त किया।

"मैं समझता हूँ की कोई व्यक्ति यदि पूर्णता का दीवाना हो जाता है तो व्यावहारिक जीवन मे सफलता उसे कम ही प्राप्त हो पाती है।"

"क्या करूँ, आदत से मजबूर हूँ प्रवृति तो बदली नही जा सकती। समस्त शक्ति के साथ पूर्ण रूप से ही किसी को पाना चाहती हूँ खण्डित रूप मे नहीं। सफल रहूँ या असफल इसकी मैं अधिक चिन्ता नही करती।"

अमित को याद आया, उसने किसी अवसर पर स्मिता से कहा था, "जीवन मे सुख का अभाव यदि तुम्हे महसूस होता है, तो क्या यह अच्छा नही होगा कि आंशिक रूप मे इसकी पूर्ति कर ली जाये। इस प्रकार आधार से दूर जाने की आवश्यकता नही होती। लेकिन स्मिता इस बात से सहमत नही हो सकी थी। अब अमित ने बात बढाते हुये कहा "जो बहुत क्रिटिकल माइन्डेड होते हैं, उनके सम्बन्धों मे अस्तव्यस्तता आ जाती है फिर वे सन्तुलित नही रह पाते हैं। उनके नितान्त अपने लोग भी इने गिने ही होते हैं इससे कभी-कभी उनमे उपेक्षित हो जाने का भाव उत्पन्न हो जाया करता है।"

स्मिता ने कुछ पल सोचा फिर कहा, "मैं कभी-कभी अपना विश्लेषण करती हूँ तो पाती हूँ कि इच्छा के विपरीत यदि कुछ घट रहा है तो उसे बर्दाश्त नही कर पा रही हूँ। हाँ, यदि गलती का आभास होता है तो संवेदनशील हो जाती हूँ जैसे तुम्ही ने महसूस किया होगा कि कनफेशन भी मैंने किया है। गलती व्यक्ति ही करता है।"

अमित बोल पड़ा, "मैं तो समग्र या शून्य के बीच के मार्ग को भी स्वीकार कर लेता हूँ यदि कोई और विकल्प नही रह जाता है।"

स्मिता ने अमित की ओर एक पल देखा फिर कहने लगी, "मैं इतनी सहज नहीं हो पाती। परिस्थितियों को यदि मोड़ न सकी तो अपना दूसरा रास्ता चुन लेती हूँ। नैतिक या अनैतिक होने की परवाह नहीं करती क्योंकि समय, परिस्थिति और व्यक्ति के सन्दर्भ में इसके अर्थ भी अलग-अलग होते है। मन की बात या अन्तरात्मा की बात को ही स्वीकार करती हूँ। सहिष्णुता का अभाव भी पाती हूँ पर निर्दिष्ट मार्ग की ओर बढ़ती रहती हूँ, विश्राम का पल मिले या नही। कुंठा और निराशा के भाव से उबरने का प्रयास करती हूँ। मानसिक रूप से अव्यवस्थित भी हो जाती हूँ। नैराश्य और चिन्ता के भाव से ग्रस्त भी होती हूँ पर मनचाही चीज के अभाव मे जिन्दगी का आनन्द भी क्या रह जायेगा ?"

अमित सोचता रहा कि पता नही वह स्मिता की अपेक्षा के अनुरूप कभी हो भी सका या नही पर क्या करे वह यथार्थ जो सामने आया है, उसे सहना पड़ेगा।

अमित ने अंकित को जगाकर दवा दी। स्मिता पलकें बन्द किये हुये अर्द्धलेटी हुयी अवस्था मे थी। सोच रही थी कि उसके जीवन में उसकी नजरों मे जो लोग एकाएक चढ़ गये किसी न किसी स्तर पर उनसे असन्तोष की अनुभूति होने पर सम्बन्ध मे व्यवधान पड़ा। अमित इन सबसे भिन्न रहा, वह एक बारगी छा गया हो ऐसा कभी नही हुआ। उसके सभी गुण उसे मोहक नही लगे थे, मतैक्य भी नहीं रहा, मतभेद हुये दूरी बढी पर जिन गुणों ने आकर्षित किया वे आज भी प्रभाव उसी रूप में बनाये हुये हैं। इसलिए दूर जाकर भी वह लौट आयी। अमित के प्रति उसके मन मे स्थायी प्यार भले ही न उमड़ा हो पर ऐसे क्षण तो आये ही जब वह उसे पा सकता था पर शायद वह उन क्षणों की पहचान न कर पाया हो साथ ही यह भी हो सकता है कि विगत घटनाओं ने उसे ऐसी ठेस पहुँचायी हो कि क्षणों को पहचान लेने पर भी वह आशंकित रहा हो इसलिए प्रेम के मामले में स्वयं को सहज रूप मे अभिव्यक्त न कर पाया हो। अमित से वह प्रभावित हुयी और समग्र रूप मे देखा जाये तो औरों से ज्यादा ही। हाँ, इतना जरूर रहा कि जहाँ दूसरा उसके ऊपर एक दम हावी हो गया और वह सम्मोहित-सी हो चली पर अमित अपना विशिष्ट व्यक्तित्व बनाये ही रहा। सादगी से परिपूर्ण होने पर भी "स्व" को उसने मिटने नही दिया यद्यपि निश्चित ही उसने जाने-अनजाने में ठेस पहुँचायी काफी हद तक।

दूसरा कोई होता तो जीवन भर के लिए किनारा कर लेता। पलायन कर गया होता किसी विकल्प को उसने चुन लिया होता। अमित ने पलायन चाहे किया हो पर पुनः सम्बन्ध को दृढ़ रूप में स्थापित करने मे उसने संकोच नही

किया। इसलिए नाराज होने पर भी वह अपने को अमित के समक्ष विवश सी महसूस करती है। वह उसे अपनी प्रेरणा मानता है। पर उसने सानिध्य के साथ उपेक्षा भी दी है। क्यों हो जाता है, ऐसा ? देर से ही सही, जिस पर उसे झुंझलाहट भी आयी है, अमित ने जब अपने को व्यक्त करना चाहा तो उसने कोल्ड रिसपान्स किया। उसकी अभिव्यक्ति मानव मन की सहज अभिव्यक्ति ही थी फिर चाहते हुए भी वह स्वीकार न कर सकी। अगर अमित थोड़ा उग्र रूप धारण कर आगे बढ़ ही जाता तो शायद वह स्वीकार कर लेती पर वह तो जरूरत से ज्यादा सजग और संकोची रहता है जिससे वह प्राप्तव्य मे असफल रहा है।

वह नैनीताल के अपने व्यवहार का विश्लेषण करने लगी तो पाया यदि वह रोहित के खयाल मे उस समय डूबी न होती तो अमित इस प्रकार मायूस न होता। दूसरे जो भी उसके जीवन मे आए, उन्हे वह बराबरी के स्तर का समझती रही पर अमित उसे कही अपने से उच्च भी लगता। शायद इसलिए वह सहज और निसंकोच उसके समक्ष नही हो पायी थी विभिन्न अवसरों पर। प्रस्थान के समय अमित को मायूसी की हालत मे देखकर उसने कहना चाहा था, 'मैं बहुत चाहती हूँ कि दूसरो के लिए मेरा जो भी रूप रहा हो, तुम्हारे सामने कमजोर न पड़ूँ। जिससे तुम्हारी प्रेरणा बनी रहूँ फिर भी लगता है कि टूटती जा रही हूँ, बिखरती जा रही हूँ और तुम्हारे सहारे की आवश्यकता तीव्रता से महसूस कर रही हूँ।" पर ऐसा कहना सम्भव न हो सका कारण परिस्थितियाँ अनुरूप नही थी।

आज भी वह अमित को खोना नही चाहती। शरीर की निकटता के लिए नही पर मन की निकटता वह उससे प्राप्त करना चाहती थी। शारीरिक सुख को उसने पर्याप्त रूप से पा लिया है पर मन को चैन व शान्ति नही मिल सकी। इसलिए जब उसने आते रहने के लिए कहा था तब आगे यह कहने जा रही थी, "अमित, तुमसे मिलकर पुनः आशा सजो लेती हूँ विश्वास सा भर जाता है, मन मे, अदम्य प्रेरणा भी मिलती है जीवन समर मे जूझने के लिए। तुम्हें खोना भी नही चाहती जिस रूप मे तुम चाहो पर मुझे विश्वास है कि तुम सीमा का उल्लंघन नही करोगे। मैंने तुम्हारा वरण भले न किया हो पर विश्वास रखो तुम्ही से सबसे अधिक भरोसा मुझे मिला है। तुम्हारा सानिध्य में अवश्य चाहती हूँ साथ ही मन की निकटता भी, शरीर की निकटता मेरे लिए उतनी महत्वपूर्ण वर्तमान सन्दर्भ मे नहीं रह गई है।"

वह जानती थी कि अमित कोई निष्काम तो है नही इसलिए कही वह सीमा और शरीर की निकटता का कोई और अर्थ न समझने लगे। अतः वह खामोश रही, कभी-कभी ऐसा होता है कि जिस बात को हम जिस अभिप्राय से

कहते हैं दूसरा व्यक्ति उसकी गहराई मे जाकर कोई और अर्थ निकाल लिया करता है और अमित से उसे यह आशा विशेष रूप से थी क्योंकि वह प्रबुद्ध कुछ ज्यादा ही है।

इस बीच स्मिता को नींद आने लगी थी, वह अमित के बगल मे ही सो गई। अमित ने यह देखा तो उसने महसूस किया कि स्मिता को ठंड लग रही होगी जिससे वह सिकुड़ी सिमटी है अतः उसने उसे लिहाफ ओढ़ा दिया केवल चेहरा खुला रहने दिया। लिहाफ ओढ़ाते समय स्मिता के चेहरे को देखकर अमित को लगा कि पहली बार जब स्मिता को देखा था तब की तुलना मे सौन्दर्य मे निखार और बढ़ गया है अब उसके अतिरिक्त। दोनो सो रहे थे, और वह स्मिता के चेहरे की ओर नजर गड़ाए हुए विचार में लीन सो गया। विचार की तरगें हिलोर में बन और बिगड़ रही थी। वह सोचने लगा कि स्मिता से एक बार स्पष्ट रूप में उद्‌गार व्यक्त करदे, "तुम नही चाहती कि तुम किसी को सहज में मिल जाओ, ठीक ही है, इस प्रकार दूसरे की लालसा अप्राप्य का भाव जगाकर बढ़ाये रहती हो। मिलने का विश्वास हो तो लम्बी प्रतीक्षा भी की जा सकती है। लेकिन अनिश्चितता की स्थिति मे यह भी सम्भव नही। मुझे तो लगता है कि तुमने जो कहा था कि फर्म डिटरमिनेशन हो तो हर चीज मिल सकती है, शायद सच नही। लगता है कि तुमने किसी अन्य सन्दर्भ मे यह बात कही थी। मैं ही गलत निकला जो सच मानकर उस पर विश्वास कर बैठा।"

स्मिता को सोती हुई अवस्था मे अमित मुग्ध दृष्टि से देखते हुए विमोहित सा बैठा हुआ था। विचार की तरगें उसे उद्‌वेलित कर रही थीं, क्रम से एक के बाद एक भाव मन मे आ जा रहे थे। वह सोच रहा था कि स्मिता सेनसुअस लव को कामना की पूर्ति का अनिवार्य अग मानती जा रही है क्योंकि ये पराकाष्ठा प्रदान करते हैं। वह जानती है कि पुरुष स्त्री के सीने के फैलाव और शरीर के बीच की गहराई में ही सन्तुष्टि खोजता है, तृप्त होना चाहता है लेकिन स्मिता के लिए इस तृप्ति का अवसर किसी को देना सहज नही हो सकता था। काफी परखने के बाद ही किसी को उसने इस निकटता तक पहुँचने का अवसर दिया हो तो वह पुरुष निश्चय ही भाग्यशाली है अन्यथा उसके मानसिक स्तर से तादात्म्य स्थापित करने वाले और निकटता तक पहुँचने वाले व्यक्ति को भी उसने उस स्तर तक पहुँने नही दिया। हाँ, यह भी सत्य है कि उसमे प्रभावित करने की कुछ ऐसी क्षमता है कि निकट हो जाने पर भी जब वह चाहती है तो अलगाव कर लेती है इस प्रकार कि जैसे उसके जीवन मे उसका कोई अस्तित्व ही न रहा हो लेकिन उसके वशीकरण का कुछ ऐसा प्रभाव होता कि वह स्मिता की आलोचना करने का साहस न कर पाता। या तो वह सुखद अनुभूतियों की स्मृति मे जीता

रहता अथवा मायूस मन लेकर वह तड़पता रहता। इस कामना के साथ कि उसे सान्निध्य स्मिता का प्राप्त हो।

अमित उन व्यक्तियों से भी मिला था जो उसके अन्तरंग कभी थे, फिर उनका सम्पर्क टूट गया लेकिन उन्होंने स्मिता के सम्बन्ध में कोई आलोचनात्मक बात कभी नहीं की। यद्यपि वे व्यक्ति भी भिन्नता के स्तर तक सीमित रहे थे ऐसा उसका अनुमान था क्योंकि उनमे से किसी मे ऐसी कोई विशिष्टता अमित को नजर नहीं आई कि स्मिता उन्हे विशिष्ट समझ सकती। साधारण व्यक्तित्व का स्मिता की नजरों में विशेष अर्थ मे कोई महत्व नहीं हो सकता। उसने स्वय भी अपने जीवन में स्मिता को एक उपलब्धि माना था। विलगाव होने की स्थिति में भी स्मिता के प्रति उसके मन में कोई शिकायत नहीं रही थी और न इस प्रकार के भाव उसने व्यक्त किए कभी।

पुरुष एक यात्री के समान होता है, और स्त्री का सान्निध्य यात्रा मार्ग के पड़ाव के सदृश होता है। उसने स्मिता को यात्रा मार्ग के एकमात्र पड़ाव के रूप मे देखा था। चाहा था लेकिन यह भी सार्थक न हो सका। स्मिता के शरीर की कामना भी की थी पर प्रारम्भ मे नहीं और एक स्थिति ऐसी भी आई जब शरीर की कामना प्रमुख नहीं रह गई थी फिर भी स्वीकारे जाने की चाह उसमे प्रबल रूप मे बनी हुई थी। उसे क्षण मिले जब उसने समझा कि वह उसे किसी न किसी रूप में स्वीकारेगी लेकिन इच्छा, इच्छा ही बनी रही। स्मिता ने स्वय भी कहा था कि कभी-कभी पुरुष यह जान नहीं पाता कि प्राप्ति का क्षण कब आ गया ? उस क्षण के व्यतीत हो जाने पर फिर अवसर जल्दी नहीं मिल पाता। यह बात उसके सन्दर्भ मे कही गई थी लेकिन अमित इससे सहमत नहीं हो सका।

उसने स्मिता को चाहा तो क्या यह चाहत क्षण भर के लिए ही उत्पन्न हुई थी। भाव तो क्षणिक फिर स्थाई हो जाता है। इस प्रकार का स्थायी भाव उसके मन मे भी रहा है। क्षणिक चाहत को वह स्थायी रूप मे परिणत कर सकती थी। क्षणिक सुख भी अमित ने चाहा भी नहीं था। इस प्रकार का सुख, एक बार प्राप्त कर लेने पर विलग होना पड़े, इससे अच्छा तो यही है कि एकाकी-पन के भार को वह ढोता रहे। प्राप्त न होने की स्थिति मे अप्राप्ति का ही दुख बना रहेगा पर प्राप्ति के बाद की दूरी तो और भी दारुण दुख देगी। अब उसे लगने लगा था कि स्मिता को उसने प्रभावित भले ही किया हो उसके द्वारा उसे खुशी भी मिली है, स्मिता को उसका सान्निध्य भी अच्छा लगता रहा है पर इस सबके बावजूद वे स्थायी रूप नहीं ले सके। विचारों की भिन्नता, जीवन शैली और नजरिये मे अन्तर होने की वजह से वह संशय मे पड़ी रही कि अपनाये अथवा नहीं। अगर उसे कटु अनुभव न हुए होते तो निःसंकोच वह अपनी सभी भावनाओं

मे उसको अवगत कराता लेकिन उसे सतर्कता बरतनी पड़ी जिससे उस प्रकार के अनुभव की पुनरावृति न हो।

सम्भवतः वह स्मिता का विश्वास नही अर्जित कर पाया इसलिए पास जाकर भी अपेक्षित निकटता प्राप्त न हो सकी फिर जब उसने विश्वास पाने और विश्वास खोने की बात कही भी तभी से एक बात कहने के लिए आतुर हो रहा था। आज भी उसने स्मिता से कहना चाहा था, "तुम मेरे लिए अलभ्य बनी रहोगी यह जानता तो इतने दिनो तक जब स्वयं व्यक्त नही हुआ था तो उस दिन भी न होता पर उसकी ग्लानि मुझे जीवन मे चैन नही लेने देगी।"

फिर यह सोचकर अतीत को कुरेदने से दोनो पक्ष को दुख ही होगा, कही कोई कड़वी बात स्मिता कह न बैठे तब वह सामान्य नही हो सकेगा लम्बे समय तक, अमित चुप रहा। विचारो के उहा-पोह मे वह इसी प्रकार डूबा रहा, इस बीच स्मिता की आँख खुल गई, देखा अमित अभी तक जाग रहा है।

"यह क्या अमित तुमने तो जरा भी आराम नही किया।" वह बोली। नही, मैं ठीक हूँ वैसे भी मुझे नीद नही आ रही थी।" अमित ने देखा घड़ी मे चार बज रहे हैं।

"अब तो मैं जाग गई हूँ, तुम थोड़ी देर आराम कर लो फ्रेशनेस बनी रहेगी, नही तो दिन भर बोझिल बने रहोगे।" यह कहने के साथ वह उठी और अमित के लिए चाय बना लाई।

चाय पीते हुए अमित ने उससे पूछा, "क्या इधर राजेश का कोई पत्र आया ?"

"हाँ" संक्षिप्त सा उसने उत्तर दिया फिर मौन रहने के बाद बोली, "उन्होंने स्थानान्तरण के सम्बन्ध मे लिखा था। ज्वाइनिंग के बाद आने की तिथि भी लिखी थी कि हम लोग सामान वहाँ से हटा लें, क्वार्टर खाली कर दें। जिसे जिस सामान की जरूरत हो ले जाये।"

"तो तुमने कब जाने का निश्चय किया है ?"

"मैंने उन्हें लिख दिया है कि मेरा आना सम्भव न हो सकेगा। तुम्हे जिस चीज की जरूरत हो ले जाना। मैं बाद मे जैसी आवश्यकता होगी सामान ले आऊँगी और क्वार्टर खाली कर दूँगी।"

"हाँ इधर तुम्हें काफी छुट्टियाँ लेनी पड़ गईं।" वहाँ जाने से ज्यादा जरूरी अंकित को होस्टल मे एडमिट कराना है और इसके लिए मुझे फिर छुट्टियाँ लेनी होगी।" फिर स्मिता ने कहा, "संकोच की जरूरत नही तुम थोड़ी देर के लिए सो जाओ। मैं तुम्हे ठीक समय पर जगा दूँगी।

अमित नहीं चाहता था कि वह वहाँ सोए। उसी सम्भावना तो नहीं थी फिर भी थोड़ी सी आशंका अवश्य थी कि कहीं उस जैसी घटना की आवृति न हो जाए। फिर एक पछतावा ही क्या कम है ? वह आशंकाग्रस्त था कि संबंध पता नहीं क्या मोड ले, समाप्त हो या जारी रहे अतः चले जाना ही श्रेयस्कर समझकर उसने कहा, "अंकित का बुखार अब कम हो गया है, बेचैनी भी नहीं थी नियमित दवा देती रहना। दो एक दिन में ठीक हो जाना चाहिए। अच्छा अब मैं चलता हूँ, घर पर कुछ काम भी है। "खैर तुम जाना ही चाहते हो तो मैं जबरन नहीं रोकूँगी तुम्हें कष्ट देती ही रहती हूँ।"

तुमने तो सूचना भी नहीं दी फिर कष्ट कैसा ? अमित के स्वर मे वेदना थी, स्मिता ने इसे लक्ष्य किया और कुछ महसूस भी किया पर कुछ कहा नहीं। उसके विदा होने के बाद वह उसे जाते हुए देखती रही।

स्मिता जानती थी कि अब उसे नींद नहीं आएगी इसलिए थोड़ी देर और लेट लूँ। इसका निश्चय कर वह बैड पर आ गई। वह सोचने लगी कि वह ऐसे दोराहे पर आ गई है कि किसको चुने और किसको छोड़ दे। अपनी बातें वह किससे कहे। राजेश ने उसकी मानसिकता को कभी समझने का प्रयास नहीं किया और दूसरे लोग तो कामना की पूर्ति चाहते हैं। शायद कोई समझ नहीं पाएगा पूरी तरह। अमित उसे काफी कुछ समझता है पर वह अहं की तुष्टि चाहता है। निष्काम तो कोई नहीं है और हो भी कैसे सकता है पर बीच-बीच मे ऐसा घटित हो जाता है कि अरसा बीत जाता है और उससे भेंट नहीं हो पाती। ऐसे समय मे अमित से मिलने की और दुख दर्द व्यक्त करने की इच्छा बलवती हो जाती है।

स्मिता अन्तर्द्वन्द मे फसी थी। भावो के जाल से वह निकल नहीं पा रही थी। अमित के सम्बन्ध मे विश्लेषण करते हुए उसे महसूस हो रहा था कि उसके सान्निध्य मे उसे भी पाने की इच्छा होती है लेकिन पूर्व अनुभव से भी कोई सबक नहीं सीखा तो क्या अन्तर रह जाएगा उसमे और दूसरों मे। फिर स्वयं को धोखा दे सकना या भरमाना क्या इतना सहज होता है ? अमित तो वैसे भी उसके व्यवहार से टूट चुका है यह बात और है कि उसने अपने भावो को सहज रूप मे व्यक्त नहीं होने दिया, इसलिए सहज रूप मे अपने को व्यक्त कर देने वालो से अवसर पड़ने पर उसने सम्बन्ध विच्छेद भी किया पर अमित को इस प्रकार की चोट अब वह नहीं पहुँचायेगी। अप्राप्ति का दुख उसे रहा है, प्राप्ति के बाद यदि उसे विलग होना पडा तो वह सहज रूप में जीवन जी न सकेगा। इससे अच्छा यह होगा कि अपनी भावनाओं का वह दमन करे और यही उसने किया भी था। एक बात और रह रहकर उसे जब तब कुरेदती रहती कि अमित उसके अतीत से पूर्ण परिचित है। क्या पता उसको, और वह हाथ बढ़ाये तो यह स्थायी बन्धन बना ही रहेगा ?

अस्थायी बन्धन वह स्वीकार नही कर सकती यदि यह करना होता तो अब तक कब का यह सम्बन्ध स्थापित हो चुका होता। कही अमित ने भी अतीत को कुरेदा तो पश्चाताप के सिवा वह कुछ न पा सकेगी। इसलिए सहारा ढूंढना ही है तो ऐसे व्यक्ति को पाना होगा जो उसके सभी पहलुओ का जानकार न हो, उसके अतीत की सभी बातो से परिचित न हो, ऐसा व्यक्ति शायद बेहतर हो सकता है उसके लिए। यदि कभी ऐसा व्यक्ति जीवन मे मिला, वह अपने ढग से स्वयं को उसके प्रति समायोजित करेगी। ऐसा विचार करते समय क्षण भर के लिए रोहित का चेहरा साकार सा हो उठा फिर जैसे वह विलीन हो गया हो, तभी वह स्वतः कह उठी, "अमित कभी भावात्मक रूप से मैं तुममे जुड़ी थी इसलिए आपस के सुख दुख हमे गहरे तक छू जाते है। मन मे इच्छा थी तुम्हारा प्यार पाना चाहती थी, क्या पता निहाल भी हो जाती पर बेहतर होगा मैं यह मानलूं कि यह सुख मेरे नसीब में नही है।"

उसे याद आ रहा था कि अमित से एक बात कहते कहते वह रुक गई थी यहाँ तक कि अमित के जाने के समय उसने कहना चाहा था, "अमित मैं देह के अस्तित्व को नकारती नहीं पर उसके इशारे को आँख मूंद कर स्वीकार भी नही कर सकती। मन क्या कहता है यह बात मेरे लिए प्रमुख है विचित्रता यह है कि दूसरों के समक्ष मैं मन से कमजोर उतना नही हुई जितना तुम्हारे समक्ष महसूस किया है। शायद यह सकल्प की दृढता ही है जिससे मैं अपने को अब तक बचाये रख सकी हूं।" होठो तक शब्द आकर भी रुक गये पता नही क्यो व्यक्त नही हो सके। इस समय भी वह किसी निश्चय पर न पहुंच सकी।

इसके बाद अंकित को दो चार दिन और लगे ठीक होने मे। वह कुछ कमजोर हो गया था। स्मिता खान-पान के प्रति सतर्क थी। उसकी देखभाल एवं मेडिसिन आदि से कुछ दिनों मे वह पहले की तरह स्वस्थ हो गया। अगले माह मे उसने नैनीताल में अंकित का एडमिशन करा दिया। होस्टल मे रहने की व्यवस्था से वह संतुष्ट थी। राजेश ने एक पत्र के बाद कोई पत्र नहीं लिखा और न उसने स्मिता के पत्र का उत्तर ही दिया। अमित से भी इधर मिलना न हो सका था इसलिये उसे भी वह अपने प्रोग्राम से अवगत न करा सकी। अतः अकेले ही उसे अंकित को लेकर जाना पडा। अंकित अभी बच्चा ही था अब तक मम्मी पापा दोनो या किसी एक के साथ वह रहा था, उनके बिना रहने के लिए वह तैयार नही हो रहा था। स्मिता ने बार-बार उसे समझाया कि हर माह वह उससे मिलने आती रहेगी और छुट्टियों में वह उसके पास ही रहेगा पर ये सब समझाते हुए उसके मन मे हाहाकार मचा हुआ हुआ था।

अंकित के सामने वह कमजोर नही पड़ना चाहती थी बस आंसू नही निकले वैसे और सब कुछ रोने वाली स्थिति बन गयी थी। बडी मुश्किल से अंकित को उसने मनाया। उसे अकेले ही लौटना पड़ा। उसकी मनःस्थिति ऐसी

बनी हुयी था कि कोशिश करने पर भी वह अपने को सामान्य न बना सकी। आज राजेश उसका अपना रहा होता तो ये सब करने की जरूरत नहीं पड़ती। इसके सिवा उसके पास विकल्प भी नहीं था। राजेश शायद अब कभी उसका अपना नहीं हो सकेगा, जिस रूप में वह चाहती है। राजेश के रवैये ने उसका दिल तोड़ दिया था। पति से उसे आघात मिला था जिससे प्रत्याघात का होना स्वाभाविक था। उसके आक्रमक रुख ने स्मिता को मर्मान्तिक पीड़ा पहुँचायी थी। उसकी सहनशीलता जैसे चुक गई थी। उसने परिस्थितियों का सामना करने के लिये जो माध्यम अपनाये थे या अपनाने जा रही है उसका प्रतिफल क्या होगा यह तो भविष्य ही बता सकेगा। असुरक्षा की भावना भी उसमें जब तब व्याप्त हो जाती। स्थायी सुख की राह में वह भटकी थी पर उसे अभी तक अभीष्ट की प्राप्ति न हो पायी थी। इसी प्रकार वह सोचते विचारते लौट आयी।

अब स्मिता को एकाकीपन और भी खलता। उसे ज्ञात हुआ कि उसकी अनुपस्थिति में अमित एक बार आया था पर उससे भेंट न हो पायी। पुनः वह उसका इंतजार करती रही कि अमित आयेगा तो उससे कुछ बातें करेगी। बहुत सी बातें थीं कहने-सुनने के लिए अमित का आना न हो सका। वह अब प्रायः बेचैन रहती। अमित के विषय में सोचती तो उसे राहत मिलती। वह जानती थी कि अमित के हृदय में उसके लिए स्थान सुरक्षित है, यही काफी है। यह विश्वास तो बना है कि एक व्यक्ति ऐसा है जो उसे सुकून दे सकता है। उसे अब अपने जीवन में रिक्तता और शून्यता का अनुभव होता लेकिन वह रिक्त होना नहीं चाहती थी। उसकी धारणा थी कि तभी तक वह जीवन जीना चाहती है जब तक अनुभव में बढ़ोतरी होती रहे और उस अवस्था में पहुँचकर, जब अनुभव में बढ़ोतरी न हो सके यदि उसे जीना ही पड़े तो वह शेष जीवन को यादों के रूप में व्यतीत करे।

अमित ने असिस्टेन्ट एडीटर के पद को ज्वाइन करने के सम्बन्ध में अपनी सहमति दे थी। वह सोच रहा था कि स्मिता को बताये या नहीं फिर उसे लगा कि बताने में कोई हर्ज नहीं है खासकर वर्तमान स्थिति में। पता नहीं फिर भेंट हो या न हो, यह सोचकर वह स्मिता के यहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि स्मिता एक युवक के साथ कहीं जाने को तैयार है। इस समय वह आकर्षक वेश-भूषा में थी तथा प्रफुल्लित दिखाई पड रही थी। अमित को उसने देखा तो कहा, "आओ अमित, इधर तुम दिखायी ही नहीं पड़े। इनसे मिलो यह है मिस्टर रोहित, पहले यह मेरे कलीग रह चुके हैं।" फिर रोहित की ओर उन्मुख होकर बोली, "रोहित यह मिस्टर अमित है जिनकी चर्चा मैं तुमसे कर चुकी हूँ। यहाँ न्यूज पेपर में न्यूज एडीटर है।" रोहित और अमित ने एक दूसरे से हाथ मिलाया और परिचित होने की प्रसन्नता व्यक्त की।

रास्ते में स्टेशन जाते समय स्मिता ने अमित को बताया, "रोहित जरूरी काम से आज सुबह यहाँ आया था और अब वापस जा रहा है, मैंने रुकने के लिए कहा पर वह जाने के लिए एडेमन्ट है अतः सी आफ करने जा रही थी, अच्छा हुआ जो तुम मिल गये।"

रोहित सम्भवतः चेन स्मोकर था, अमित ने लक्ष्य किया कि रोहित स्मिता का अन्तरंग साथी है तभी वह इतनी बेतकल्लुफ होकर बातें कर रही है। स्टेशन पहुँचने पर रोहित टिकट लेने चला गया और स्मिता अमित से रोहित के विषय में बातें करती रही। उसने बताया, "रोहित देखने में शर्मिला अवश्य है लेकिन बातें खूब करता है। कोई बात न भी करना चाहे तब भी यह चुप नहीं बैठ सकता। उसने विभिन्न अवसरों पर मेरी काफी मदद की है। मैं तो रोकती ही रह जाती लेकिन वह मेरे लिए अधिकारी से भी झगड़ा कर लेता। लन्च टाइम पर हम दोनों साथ ही खाते पीते। आफिस में कई बार काम में व्यस्त रहने पर जब मैंने इसकी ओर देखा तो इसे प्रायः अपनी ओर देखते हुए पाया। यह मेरा एक अच्छा मित्र है।"

बातों के बीच में रोहित को न आते देखकर स्मिता उसे देखने गई फिर आकर बोली, "काफी भीड़ है अभी कुछ समय लग ही जायेगा रोहित को टिकट लेने में।" आतुरतापूर्वक वह बुकिंग विन्डो की ओर भी जब तक देख लेती। उसने बताया, 'राजेश से तकरार हो जाने पर वह अवसर मुझे ढाढ़स बधाया करता था। आफिस के कुछ लोग हमारी दोस्ती को देखकर जलते थे, लेकिन मैंने किसी की परवाह नहीं की और हम दोनों की दोस्ती बरकरार रही। ट्रान्सफर के विषय में भी इसने काफी कुछ मेरे लिए किया। यह बात और है कि सफलता नहीं मिल पायी। देखो स्मार्ट भी कितना है। हम लोगों ने तय किया है कि सच्चे दोस्त बने रहेंगे।"

स्मिता का एक एक शब्द अमित को चुभता सा प्रतीत हो रहा था। वह जानता था कि दोस्ती के प्रारम्भिक रूप की परिणति क्या हो सकती है। विशेष रूप से दो युवा स्त्री पुरुष के मध्य। तभी रोहित को आते देखकर वह बोली, "अमित, वह देखो रोहित आ गया है।"

इस बीच अमित केवल हाँ, हूँ ही करता रहा। उसके बोलने के लिए कुछ था भी नहीं, स्मिता ही अधिकांश में बातें करती रही। अमित सोच रहा था स्मिता ने उसके हाल चाल के विषय में कोई भी बात नहीं की और अब वह रोहित से बातें करने में इतनी लीन हो गई जैसे अमित की उपस्थिति का एहसास ही न रह गया हो। अमित ने किसी प्रकार स्वयं को नियन्त्रित किया और बर-बस मुस्कराता खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद ट्रेन आ गई और अफरा तफरी में किसी प्रकार रोहित सूटकेस सहित कम्पार्टमेंट के भीतर जा पाया। खिड़की के पास खड़ी स्मिता उसे पत्र लिखने के सम्बन्ध में कह रही थी। पास खड़ा अमित

देख रहा था कि रोहित ने कोई बात स्मिता के कान में कही जिससे स्मिता पहले तो शर्मा गयी फिर खिलखिला कर हँस पड़ी।

ट्रेन धीरे-धीरे रेंगने लग गई थी जब अमित ने रोहित से हाथ मिलाया। स्मिता तब तक हाथ हिलाती रही जब तक ट्रेन का आखिरी डिब्बा ओझल न हो गया। फिर जैसे वह क्लान्त हो गई। मन्थर गति से कुछ सोचते हुए वह वापस लौटने लगी, अमित उसके पीछे हो लिया। रास्ते में अमित का मन हो रहा था कि वह स्मिता से कहे, "स्मिता तुम बहुत भावुक हो इसलिए भावना के प्रवाह में सच बोल जाती हो। अपने सम्बन्धों का भी व्यक्त कर देती हो जिससे दूसरे व्यक्ति का नजरिया बदल जाता है। तुम निश्चय कर पुन खो रही हो किसी के साथ जुड़ कर ऐसी स्थिति में तुम्हे पाने की बात तो दर किनार मैं जानता हूँ कि मैं तुम्हे खो चुका हूँ।"

मन की बात मन मे रह गई क्योंकि स्मिता ने उससे रास्ते मे कोई बात नही की। स्मिता जितनी उमंग से भरी, उत्साह से परिपूर्ण और प्रसन्नता के अतिरेक से मुग्ध दृष्टि से रोहित से बातें कर रही थी, उस रूप में अमित ने शायद ही कभी उसे देखा हो फिर कुछ कहने या न कहने का उस पर प्रभाव हो क्या पड़ना था, उलटा कहो उसे ही लाछित न होना पड जाये इसलिए अमित चुप ही रहा। स्मिता को घर पर पहुँचा कर अमित अपने घर लौट रहा था। आज स्मिता ने उससे जो भी बातें की थी, रोहित के विषय मे ही। स्मिता ने चलते समय उसे थोडी देर बैठने तक का आग्रह नही किया था, यह बात अमित को कचोट रही थी। आज वह स्मिता से असिस्टेण्ट एडीटर की पोस्ट ज्वाइन करने के सम्बन्ध मे बताने आया था पर कोई मौका उसे नही मिल सका था बताने के लिए और कहने का मन भी न हुआ।

अमित को नई पोस्ट ज्वाइन करने मे एक सप्ताह बाकी रह गया था। वह चाहता था कि कम से कम एक दिन पूर्व वहाँ वह पहुँच जाये। इस बीच वह अपने और स्मिता के सम्बन्ध मे सोचता रहा कि विगत कई वर्षों मे और विशेषकर इधर कुछ महीनों मे उसे स्मिता का साथ मिला तो ऐसा लगा कि दूसरों की अपेक्षा वह उसे अधिक जानता है इसलिए अपने भावाकाश के निकट पाकर उसने स्मिता से कुछ और ही या यूँ कहो कि ज्यादा अपेक्षा कर रखी थी। उसे राहें दुश्वार सी लगने लगी, कोई रास्ता सूझ नही रहा था। स्मिता से कुछ कहना सुनना बेकार ही होगा क्योंकि उसने उसकी बातो का कुछ और ही अर्थ निकाल लिया तथा कोई चुभने वाली बात कह दी तो फिर वह और ज्यादा असामान्य हो जाएगा। सामान्य तो वह वैसे भी अपने को नही पा रहा था।

कभी सोचता कि तनाव मुक्त होने के लिए स्लीपिंग पिल्स ले या ड्रग एडिक्ट हो जाये लेकिन क्षणिक मुक्ति भले ही दें ये सब, समस्या इससे हल नही होती

इसलिये एकाध बार इन चीजों का सेवन करने के बाद ही उसे सद्बुद्धि आ गयी और उसने इन चीजों को तिलांजलि दे दी। वह भाग्य पर विश्वास कम करता था, कर्म को ही प्रमुखता देता था पर प्राप्त असफलता से अमित जैसे कर्मठ व्यक्ति को भी भाग्य का भरोसा करना पड़ गया विशेष रूप से उस स्थिति में जब सारे प्रयास असफल सिद्ध हो गये तो उसे अब लगने लगा था कि उसकी नियति यही थी। पहले रवि फिर राजेश और अब रोहित उसे तीनों भाग्यशाली लगे जिन्हें स्मिता की निकटता उसकी अपेक्षा अधिक मिली। कभी कभी वह इन तीनों को अपने से अधिक योग्य समझने के लिए बाध्य होता और उसे इनसे रश्क भी होता। उसे स्मिता आकाश कुसुम जैसी लगी।

अमित अपने जीवन के घटनाक्रम पर दृष्टिपात करता तो पाता जैसा उसने चाहा था परिस्थितियाँ तद्नुरूप नहीं हो सकी। फिर भी उसने सृजन करना चाहा था प्रेम का और प्रतिभा का साहित्यिक कृतियों द्वारा लेकिन वह कुछ ऐसा विभक्त हो गया था कि दोनों को थोड़ा-थोड़ा पा सका लेकिन सम्पूर्ण रूप से तो शायद ही किसी को। उसने संघर्ष किया पर स्वत्व को मिटने न दिया। उसका जीवन अधिक सफल नहीं रहा तो एकदम असफल भी नहीं रहा। कुंठा, निराशा, निश्चय, अनिश्चय, सफलता और असफलता और जीवन के उतार-चढ़ाव के दौरे से वह गुजरता रहा। प्रगति भी उसने की पर अपेक्षित संतोष उसे प्राप्त न हो सका। सर्व प्रमुख स्मिता उसके लिए अनबूझ पहेली ही रह गयी, प्रतिष्ठा बनाये रखने में वह भले ही सफल रहा हो, पर स्मिता का सान्निध्य और सम्बन्धों में आंशिक सफलता के बाद निर्लिप्तता, तटस्थता, तथा कभी-कभी बेरुखी से मायूस होकर पलायन कर जाना उसकी नियति बन चुकी थी। उसका जीवन आखिरकार अतीत से प्रभावित है जब अतीत सुखद नहीं रहा तो वर्तमान के सुखद होने की आशा दुराशा ही बनी रही।

अमित स्मिता की याद में इतना सब कुछ घटित हो जाने के बाद भी खोया रहता। इधर हाल की मुलाकातों में ऐसा भी हुआ कि स्मिता सामने भी रही और वह प्राप्तव्य, अप्राप्तव्य के ख्यालों से मुक्त न हो पाया। स्मिता जब कोई बात करती उससे उस स्थिति में अमित को जागरूक होना पड़ता पर अब वह बातें कम करता, अधिकतर निर्निमेष दृष्टि से उसे देखता रहता और संक्षिप्त सा उत्तर देकर प्रायः स्मिता की बातें सुनता तथा उसके भाव को समझने का प्रयास करता। उसे महसूस हो रहा था कि समय तेजी से बदल रहा है इस अर्थ में कि स्थिति मोड़ ले रही थी। अब अमित को प्रतीत होता कि सोच विचार का कोई निष्कर्ष निकलने वाला नहीं है। वह अपनी वर्तमान स्थिति में अक्सर संवेदनशील हो जाता तथा अतीत की यादों में डूबता उतराता रहता।

देख रहा था कि रोहित ने कोई बात स्मिता के ·
तो शर्मा गयी फिर खिलखिला कर हँस पड़ी।

ट्रेन धीरे-धीरे रेंगने लग गई थी जब अमि
स्मिता तब तक हाथ हिलाती रही जब तक ट्रेन स
गया। फिर जैसे वह क्लान्त हो गई। मन्थर ग
लौटने लगी, अमित उसके पीछे हो लिया। रास्ते
कि वह स्मिता से कहे, "स्मिता तुम बहुत भावुक
सच बोल जाती हो। अपने सम्बन्धों का भी व्यक
का नजरिया बदल जाता है। तुम निश्चय कर पु
जुड़ कर ऐसी स्थिति में तुम्हें पाने की बात तो द
तुम्हें खो चुका हूँ।"

मन की बात मन में रह गई क्योंकि स्मिता
नही की। स्मिता जितनी उमंग से भरी, उत्साह
अतिरेक से मुग्ध दृष्टि से रोहित से बातें कर रही थी,
ही कभी उसे देखा हो फिर कुछ कहने या न कहने
पड़ना था, उलटा कहो उसे ही लाछित न होना पड़
रहा। स्मिता को घर पर पहुँचा कर अमित अपने
स्मिता ने उससे जो भी बातें की थी, रोहित के विषय
समय उसे थोड़ी देर बैठने तक का आग्रह नहीं किया
कचोट रही थी। आज वह स्मिता से असिस्टेण्ट एडीटर
सम्बन्ध में बताने आया था पर कोई मौका उसे नही
लिए और कहने का मन भी न हुआ।

अमित को नई पोस्ट ज्वाइन करने में एक सप्ताह बा
चाहता था कि कम से कम एक दिन पूर्व वहाँ वह पहुँच जाये
और स्मिता के सम्बन्ध मे सोचता रहा कि विगत कई वर्षों मे
कुछ महीनों में उसे स्मिता का साथ मिला तो ऐसा लगा कि
वह उसे अधिक जानता है इसलिए अपने भावाकाश के निकट पा
से कुछ और ही या यूँ कहो कि ज्यादा अपेक्षा कर रखी थी।
सी लगने लगी, कोई रास्ता सूझ नही रहा था। स्मिता से पु
बेकार ही होगा क्योंकि उसने उसकी बातो का कुछ और ही अर्थ
तथा कोई चुभने वाली बात कह दी तो फिर वह और ज्यादा
जाएगा। सामान्य तो वह वैसे भी अपने को नही पा रहा था।

कभी सोचता कि तनाव मुक्त होने के लिए स्लीपिंग पिल्स ले या
हो जाये लेकिन क्षणिक मुक्ति भले ही दें ये सब, समस्या इससे हल

प्रेम प्लावित हृदय से स्मिता उस व्यक्ति के लिये सब कुछ करने के लिए तैयार रही है जिसने उसे सही रूप में समझा। अमित से वैचारिक मतभेद होते हुए भी इसी कारण से वह उसे महत्व देती थी क्योंकि उसने उसे शायद सबसे ज्यादा समझा था।

आजकल एकाकीपन उसे बेहद खल रहा था। अमित के साथ इतने वर्षों के सानिध्य का विश्लेषण करने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुँची कि स्वभाव के विपरीत उसे ही अमित के लिये पहल करनी चाहिये क्योंकि अमित को आघात उसी के द्वारा मिला है। उसे अमित के सान्निध्य में प्राप्त सुखद अनुभूतियां उद्वेलित कर रही थीं जिससे वह भाव विह्वल हो उठी, स्वयं पर नियंत्रण न रख सकी। उसे अपने मन के उद्‌गार अमित के प्रति प्रतीत हुआ मानो व्यक्त हो रहे हैं" अमित तुमसे भेंट हो या न हो पर तुम्हें अस्वीकार कर तुम्हारे हृदय को चोट नहीं पहुँचाऊँगी। तुम अपने विश्वास को बनाये रखो। मैं चाहती भी नहीं कि तुम्हारी मेरे प्रति जो भावनायें हैं वे नष्ट हों, क्या हुआ जो अब तक तुम्हें उसका प्रतिदान नहीं मिल सका।" दूसरे क्षण उसने निश्चय किया, मुझे लेकर तुम्हारे मन में कोई काम्पलेक्स रहे, तुम जीवन भर बैचेन रहो ऐसा मैं नहीं चाहूँगी। तुम्हें दुखी देख कर भीतर बाहर से मैं भी रो पड़ती हूँ मैं तुम्हें सुखी देखना चाहती हूँ, तुम्हारे काम आ सकूँ यही चाहते हो तुम तो ठीक है मैं एतराज नहीं करूँगी।"

आज स्मिता को अमित की बेहद याद आ रही थी, उससे प्राप्त अनुभूतियां उसे बेचैन कर रही थी। उसने मन ही मन अमित के प्यार को स्वीकार करना चाह लिया था। अमित के समक्ष वह अपने उद्‌गार व्यक्त कर देगी। वह सब कुछ कह देगी जो उसके मन में है। किसी व्यक्ति के वास्तविक महत्व का ज्ञान उसकी अनुपस्थिति में ज्यादा होता है। उसने इस बात को इतने दिनों में महसूस कर लिया था। इसलिये संकल्प कर प्रमुदित रूप में अमित के यहाँ पहुँची तो उसे एक विश्वास सा था अपने निर्णय के प्रति। अमित के क्वार्टर पर ताला लगा देखकर वह चकित अवश्य हुई क्योंकि अमित इस समय प्रायः घर पर मिल जाता है। मकान मालिक से पूछने पर उसे ज्ञात हुआ कि अमित क्वार्टर खाली कर गया है, उसने कहीं अन्यत्र सर्विस ज्वाइन कर ली है, स्मिता यह सुनकर स्तब्ध रह गई, चेहरे की रौनक जैसे विलुप्त हो गई। यह सर्वथा अप्रत्याशित था उसे लगा कि जैसे उसकी शक्ति निःशेष हो चुकी है। वह कुछ बोल न सकी अमित के मकान मालिक से। हारी, थकी वह भारी कदमों से वापस लौटी।

निराशा और घुटन को वह तीव्रता से अनुभव कर रही थी। रविवार का दिन था इसलिए छुट्टी होने के कारण वह बिस्तर पर लेट गई। वह अभी तक कुछ सोच विचार करने की स्थिति में नहीं थी। बेड पर लेटते ही उसकी पलकें

अमित को याद आ रहा था कि स्मिता ने कहा था, अतीत में नहीं वर्तमान मे जीने का प्रयास करना चाहिये पर अतीत को क्या एकदम से अपने से अलग किया जा सकता है फिर याद न आने के लिये। शायद नही क्योंकि अतीत तो एक प्रकार की नीव है जिस पर भावी जीवन के भव्य भवन के निर्माण की दिशा मे प्रयास किया जा सकता है चाहे वह सार्थक हो या अर्थहीन।

उसे अब इस बात का पछतावा नहीं रह गया था कि उसने प्रयास नहीं किया या साहस नही किया चाहे वह अपेक्षा के अनुरूप न रहा हो। यदि इतना सब करने पर भी वह वांछित सफलता नही प्राप्त कर पाया तो यह उसके प्रयास का दोष नही हां किस्मत को दोषी माना जा सकता है। स्मिता को दोषी कैसे मान ले जब कभी उसने उसके प्रति खिंचाव महसूस किया, स्मिता की निकटता मिली अब प्रेम परवान नही चढा तो किया भी क्या जा सकता है। यह तो हृदय की बात है इन्ही सब बातों को सोचते-विचारते हुये भग्न हृदय लिए कुंठा, निराशा और अवसाद से युक्त अमित ने प्रस्थान किया और नये स्थान पर असिस्टेन्ट एडीटर के पद को उसने ज्वाइन कर लिया।

अमित से मिले हुये स्मिता को एक माह हो चुका था इस बीच उसने अमित की प्रतीक्षा भी की। कभी उसे लगता कि उसने रोहित की उपस्थिति मे अमित ने अपने को उपेक्षित तो महसूस नही किया पर रोहित से उसका मित्रता का नाता ही रहा है अभी तक। उसने कोई ऐसी बात अमित से नही की जिसका उसे मलाल होता। हां, जब वह घर पहुंचाने आया था उस समय ख्यालो मे वह उस कदर डूबी थी कि अमित से रुकने के लिये न कह सकी। उसे विश्वास था कि अमित ने इस साधारण बात को असामान्य रूप मे न लिया होगा। अमित के विषय मे स्मिता कभी-कभी सोचती कि नि सन्देह वह शायद सबसे उपयुक्त साथी हो सकता है पर उसमें सबसे बड़ी कमी यह है कि वह काफी आगा पीछा सोचता रहता है। उसने प्रयास नही किया उस क्षण मे जब उसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप वह रिसपान्सिव हो सकती थी और वह चाहकर भी रिसपान्सिव प्रत्युत्तर मे उस क्षण न हो सकी।

स्मिता उदार भी थी पर इस उदारता को लोग समझ नही पाते थे, उसे बोल्ड रूप मे ही देखते। उसके पास रस सिक्त हृदय था, भावनायें थी, अपना नजरिया था, उन्नति की ओर अग्रसर होने की लालसा थी और पारिवारिक सुख की उसे चाह थी, इसके लिये वह तिल-तिल कर जलने के लिये तैयार थी यदि यह सुख उसे नसीब हो साथ ही सही रूप मे उसको कोई समझे। नकारात्मक रुख पर वह आ जाती तो हर प्रकार से असहयोग करती बगैर परिणाम की परवाह किये।

प्रेम प्लावित हृदय से स्मिता उस व्यक्ति के लिये सब कुछ करने के लिए तैयार रही है जिसने उसे सही रूप में समझा। अमित से वैचारिक मतभेद होते हुए भी इसी कारण से वह उसे महत्व देती थी क्योंकि उसने उसे शायद सबसे ज्यादा समझा था।

आजकल एकाकीपन उसे बेहद खल रहा था। अमित के साथ इतने वर्षो के सानिध्य का विश्लेषण करने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुँची कि स्वभाव के विपरीत उसे ही अमित के लिये पहल करनी चाहिये क्योंकि अमित को आघात उसी के द्वारा मिला है। उसे अमित के सान्निध्य मे प्राप्त सुखद अनुभूतिया उद्वेलित कर रही थी जिससे वह भाव विह्वल हो उठी, स्वयं पर नियन्त्रण न रख सकी। उसे अपने मन के उद्‌गार अमित के प्रति प्रतीत हुआ मानो व्यक्त हो रहे हैं" अमित तुमसे भेंट हो या न हो पर तुम्हें अस्वीकार कर तुम्हारे हृदय को चोट नही पहुँचाऊँगी। तुम अपने विश्वास को बनाये रखो। मैं चाहती भी नही कि तुम्हारी मेरे प्रति जो भावनायें हैं वे नष्ट हों, क्या हुआ जो अब तक तुम्हें उसका प्रतिदान नही मिल सका।" दूसरे क्षण उसने निश्चय किया, मुझे लेकर तुम्हारे मन मे कोई काम्पलेक्स रहे, तुम जीवन भर बैचेन रहो ऐसा मैं नही चाहूँगी। तुम्हे दुखी देख कर भीतर बाहर से मैं भी रो पड़ती हूँ मैं तुम्हें सुखी देखना चाहती हूँ, तुम्हारे काम आ सकूँ यही चाहते हो तुम तो ठीक है मैं एतराज नही करूँगी।"

आज स्मिता को अमित की बेहद याद आ रही थी, उससे प्राप्त अनुभूतिया उसे बेचैन कर रही थी। उसने मन ही मन अमित के प्यार को स्वीकार करना चाह लिया था। अमित के समक्ष वह अपने उद्‌गार व्यक्त कर देगी। वह सब कुछ कह देगी जो उसके मन में है। किसी व्यक्ति के वास्तविक महत्व का ज्ञान उसकी अनुपस्थिति मे ज्यादा होता है। उसने इस बात को इतने दिनों मे महसूस कर लिया था। इसलिये संकल्प कर प्रमुदित रूप मे अमित के यहाँ पहुँची तो उसे एक विश्वास सा था अपने निर्णय के प्रति। अमित के क्वार्टर पर ताला लगा देखकर वह चकित अवश्य हुई क्योंकि अमित इस समय प्रायः घर पर मिल जाता है। मकान मालिक से पूछने पर उसे ज्ञात हुआ कि अमित क्वार्टर खाली कर गया है, उसने कहीं अन्यत्र सर्विस ज्वाइन कर ली है, स्मिता यह सुनकर स्तब्ध रह गई, चेहरे की रोनक जैसे विलुप्त हो गई। यह सर्वथा अप्रत्याशित था उसे लगा कि जैसे उसकी शक्ति नि.शेष हो चुकी है। वह कुछ बोल न सकी अमित के मकान मालिक से। हारी, थकी वह भारी कदमों से वापस लोटी।

निराशा और घुटन को वह तीव्रता से अनुभव कर रही थी। रविवार का दिन था इसलिए छुट्टी होने के कारण वह बिस्तर पर लेट गई। वह अभी तक कुछ सोच विचार करने की स्थिति मे नही थी। बेड पर लेटते ही उसकी पलकें

मुंदने लगी और बिना कुछ खाए पिए वह सो गई। दोपहर में उसकी आँखें खुलीं तो उसने अमित के विषय में कुछ सोचने की स्थिति में अपने को पाया फिर स्वतः उसके सम्बन्ध में स्मिता के शब्द प्रस्फुटित हो चले,

"अमित तुम सचमुच अभागे हो। अभी तक तुम्हारे प्रकरण में जब तब आंशिक रूप से अपने को दोषी समझ लेती थी पर आज जीवन में पहली बार स्वभाव के विपरीत पहल करना चाहा यह सोचकर शायद मेरा यह निर्णय सही निकले। प्रेम के साथ सहानुभूति भी सम्मिलित थी। तुम्हारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व एकदम से मुझे कभी प्रभावित नहीं कर सका, पर कुछ गुणों ने इन वर्षों में सदैव एक सा मुझे मोहित बनाए रखा जिसमें मैं बड़ी चाह के साथ तुम्हारे पास गई थी। पहले भी तुमने पलायन किया था उसका कारण तो समझ में आता है पर इधर तुम्हारे प्रति प्रेम प्लावित रही मैं। तुम्हारे कुछ अनपेक्षित व्यवहार को भी अनदेखा किया। शीघ्रता के पक्ष में मैं न थी। तुमसे इन्तजार भी न हो सका। तुम्हारी मायूसी से मुझे दुख हुआ था। तुम्हारे दुख का निमित स्वयं को मानकर आज उसका निराकरण करने पहुँची प्रेम को स्वीकार करने के उद्देश्य से लेकिन इस बार का तुम्हारा पलायन बगैर कुछ कहे, अचम्भित करने वाला बना। नियति को शायद हम दोनों का परस्पर प्रेम स्वीकार नहीं इसलिए किसी को दोष न दूँगी।

× × ×

रोहित का टेलीग्राम अभी-अभी स्मिता को मिला था। धड़कते दिल से उसने टेलिग्राम पढ़ा। पढ़ते ही हर्ष से वह भाव विभोर हो उठी। लिखा था "कांग्रेचुलेशन्स फार योर ट्रांसफर ऐट डिजायर्ड प्लेस। इतने दिनों बाद प्रयास सफल हुआ। अब वह पुनः पूर्व के बैंक में पहुँच जाएगी। रोहित उसका कितना ख्याल रखता है। इस ट्रान्सफर में उसका योगदान प्रशंसनीय था। पिछली बार आया था तो कितनी हसरत भरी निगाहों से ट्रेन में बैठे हुए विदा होने के समय वह उसे देख रहा था। स्मिता को यहाँ आए हुए एक वर्ष लगभग व्यतीत हो चुका था। अंकित की पढ़ाई सन्तोषजनक रूप से जारी थी, प्रायः वह हर महीने उससे मिलने जाती और हालचाल लेकर वापस आ जाती। कभी छुट्टियों में वह उसे अपने साथ ले जाती और छुट्टियाँ समाप्त होने पर उसे पुनः नैनीताल पहुँचा आती। हर बार विदा के समय अंकित का विछोह उसे दुःखी बना देता। बीच-बीच में अंकित

के अपने से दूर रहने का विचार जब तक उसके मन में आता और उसे दुःखी बना जाता। वह प्रमुदित थी यह सोचकर कि रोहित का साथ उसे एक लम्बे अन्तराल के पश्चात प्राप्त होगा।

टेलिग्राम मिलने के दूसरे दिन बैंक मे भी ट्रान्सफर आर्डर आ गया था, वैसे उसने एक दिन पूर्व ही सहयोगियो को इस समाचार से अवगत करा दिया था, ट्रान्सफर की खुशी मे कुछ सहयोगियो ने उससे पार्टी की फरमाइश की तो उसे उन लोगों की इच्छा पूरी करनी पडी वह जल्द से जल्द रिलीव होना चाहती थी, कभी-कभी स्थान विशेष भी कसक प्रदान करते हैं, जहां कटु अनुभूतियां हुई हो या हो सकता है कि सम्बन्धित प्रिय व्यक्ति जा चुका हो वहां से सदैव के लिए तब उस स्थान का प्रभाव कुछ अमिट सा हो जाता है मन को उद्वेलित करने के लिए। ऐसे समय मे जी चाहता है कि उस जगह को तिलाजलि दे दी जाए फिर एक-एक क्षरण वहां व्यतीत करना भारी पडने लगता है। अमित के जाने के बाद उसे अब इस स्थान पर इसी प्रकार की अनुभूति हो रही थी। उसने प्रेस जाकर एडीटर से अमित के सम्बन्ध मे मालूम किया था तो उसे ज्ञात हुआ कि वह प्रदेश के एक महानगर मे जहां से यही के न्यूज पेपर का संस्करण निकलना प्रारम्भ हुआ था, रेजीडेन्ट एडीटर के पद पर कार्यरत है। अमित के साथ लगभग पांच छः महीने का साथ एक बार पुनः यहां हुआ था और अब उसे गये हुए भी इतनी अवधि व्यतीत हो चुकी थी। स्थानान्तरण आदेश आने के दो दिन बाद ही स्मिता का सब्स्टीट्यूट आ गया था और वह रिलीव हो गई। सहयोगियों ने विदाई के उपलक्ष्य में शानदार पार्टी दी। लोगो ने अपने उद्गार व्यक्त किए जो इस प्रकार के अवसर पर औपचारिक होते हैं। यहां विगत वर्ष भर के कार्यकाल मे उसका कोई अन्तरंग न बन सका था। उसे अपनी समस्याओं से ही फुरसत नही थी। अतः इस संस्थान को छोडने का उसे दु:ख नही था बल्कि यूं कहा जाए कि आन्तरिक प्रसन्नता ही थी पर फेयरवेल के समय उसने भी दु:खी भावों का इजहार किया और सबके प्रति आभार व्यक्त किया।

स्मिता ने राजेश के स्थानान्तरित हो जाने के बाद और उससे पूर्व भी एकाकीपन का बोध किया था लेकिन अमित के सामीप्य मे उसका एकाकीपन दूर हुआ। आशा और विश्वास का सम्बल मिला लेकिन अमित के भी चले जाने के बाद पूर्व के एकाकीपन की अनुभूति मे इजाफा ही हुआ था स्मिता के लिए। अब वह अपने दुःख दर्द को किसके समक्ष व्यक्त कर अपने भार को हल्का करे, यही सोचकर उसकी बेचैनी और बढ जाती। उसे जीवन एक बार पुनः बोझिल लगने लगा था लेकिन वह नीरस और सपाट जिन्दगी को पसन्द नही करती थी। क्योकि ये उबाऊ होते हैं। उसे थ्रिलिंग और एडवेंचरस लाइफ पसन्द थी। इस उत्तेजना

की लालसा के कारण मानसिक रूप से तादात्म्य यदि किसी से हो जाता तो उसके प्रति जागरूक आकर्षण की अनुभूति उसे होती। राजेश की विरक्ति उसके लिए असह्य हो चुकी थी और सह अनुभूति उसे अमित के सान्निध्य में थोड़ी बहुत प्राप्त हुई थी लेकिन यह भी स्थायी न रह सकी और विगत कुछ महीनों में उसने ज्यादातर स्वयं को अमामान्य महसूस किया था। स्मिता ने सामान की पैकिंग आरम्भ कर दी क्योंकि जितनी जल्दी सम्भव हो उसे प्रस्थान करना था।

जब वह मय सामान के ट्रेन द्वारा अपने गन्तव्य के स्टेशन पर पहुँची तो रोहित को अपनी ओर आते देखा। वह प्लेट फार्म की ओर की खिड़की के समीप बैठी हुई थी। उसने बैठे हुए ही रोहित को देख लिया था। डिब्बे से उतरते ही रोहित से उसने कहा, "ठीक समय पर तुम मिल गये। मुझे तुम्हारे आने का विश्वास था। टेलिग्राम मिल गया था न ?"

हाँ, उसने कहा और बोला, "पहले सामान उतरवा लूँ, तुम बताती जाना।"

कुली के साथ भीतर जाकर सभी सामान प्लेट फार्म पर लाने में वह लगा रहा। सभी आइटम गिन लिए गये और यह जान लेने पर कि अब कोई सामान शेष नहीं रह गया उसे चैन मिला। उसने कहा, सामान ले जाने की अब कोई जल्दी नहीं है, आओ पहले काफी पी लें।"

स्मिता चाय के लिए कहना चाहती थी पर उसने सोचा कि काफी ही पी ली जाए जब रोहित की इच्छा है। वह सोच रही थी कि अच्छा हुआ उसने ट्रान्सफर की आशा में पहले वाला क्वार्टर खाली नहीं किया यद्यपि उसने बीच में कई बार सोचा था। कम से कम मकान की समस्या से तो मुक्ति मिली। काफी पी लेने के बाद उसने रोहित से कहा, "चलो अब चलें।"

रोहित ने अपने किसी परिचित से मिनी ट्रक की व्यवस्था कर रखी थी। उसने सोचा था कि सामान पता नहीं कितना हो लेकिन सामान कोई ज्यादा तो था नहीं इसलिए सब सामान रखने के बाद भी उसमें जगह बच रही थी। वे दोनों आगे बैठ गये। थोड़ी देर में स्मिता रोहित के साथ अपने निवास स्थान पर पहुँच गई। सभी सामान जैसे तैसे रख दिया गया। रास्ते में आते समय स्मिता और रोहित में कुशल क्षेम की औपचारिक बातें संक्षिप्त सी हुई थी।

रोहित ने प्रस्तावित किया "सामान बाद में एडजस्ट कर लेना। तुम फ्रेश हो लो, किसी होटल में पहले चलते है।"

स्मिता उससे सहमत न हो सकी उसने कहा, "खाना मैं ले आयी हूँ। यहीं साथ खा लेंगे।"

वह काम में एकदम जुट गई, रोहित ने भी सहयोग दिया। रोहित प्रसन्न था और हो भी क्यों न, कितनी प्रतीक्षा के बाद स्मिता उसे मिली है और अब मिलन के क्षण प्राप्त होते रहेंगे। लगभग दो घन्टे के बाद अब कमरा देखने लायक हो गया था। इतने दिनों तक बन्द पड़ा था अब रौनक लगने लगी थी। साथ खाते, पीते और बतियाते रात प्रारम्भ हो चुकी थी। दूसरे दिन ज्वाइनिंग की याद दिलाते हुए रोहित लौट आया। स्मिता उसे जाते हुए देर तक देखती रही।

दूसरे दिन उसने बैंक जाकर कार्यभार ग्रहण कर लिया। रोहित से उसकी भेंट प्रतिदिन बैंक में होती ही थी। कभी-कभी वह स्मिता के घर भी आ जाता था। स्मिता को लगता जैसे रोहित को प्रतीक्षा बनी रहती है कि स्मिता उसे कोई काम बताए और वह उसे पूरा करे। वह प्रायः आतुर निगाहों से उसे देखता रहता जैसे वह कुछ कहना चाह रहा हो पर कह न पा रहा हो। स्मिता इन सब बातों से अनजान नही थी लेकिन वह शीघ्र कोई निर्णय लेने के पक्ष मे नही थी। उन दोनों की निकटता बढ़ती रही। अमित के जाने से उसे जो सेट बैक की अनुभूति हुई थी उससे वह उबर रही थी अब वह गाफिल नही रहना चाहती थी कि प्राप्तव्य को खो दे इसलिए भविष्य के प्रति गंभीरतापूर्वक सोच रही थी। राजेश ने ऐसी बेरुखी अख्तियार कर ली थी कि विगत नौ-दस महीनों से उसने उसे कोई पत्र नही लिखा था। स्मिता का अहं भी आड़े आ गया, उसने कोई पहल नही की। अहं की टकराहट दोनों मे थी। इसलिए दोनों मे काफी दिनो से भेंट या पत्र व्यवहार अर्थात् किसी प्रकार का सम्पर्क नही हो पाया था।

स्मिता को रोहित की निकटता ऐसी प्रतीति दे रही थी कि उसे लगने लगा था जिसकी तलाश थी वह उसे मिल गया है। उसकी कल्पना अब साकार हो रही थी। वह सोच रही थी कि अब उसे जिन्दगी सही अर्थों मे मिल रही है, पर उसे संशय भी होता जब तक कि कहीं ये भी भ्रम के घेरे न रह जायें। वैसे वह सपने कम ही देखती थी पर इन दिनो में उसे पता नहीं क्या हो गया था? मन की हलचलों के रूप मे आन्तरिक और बाह्य परिवर्तन न कुछ इस प्रकार कि सपने तो सपने अब वह दिवा स्वप्न भी देखने लगी थी अपनी सुनहरी जिन्दगी के। वह सोचती कि यह नयी स्थिति कहीं किसी प्रकार के परिवर्तन की द्योतक तो नहीं। यदि रोहित के माध्यम से उसे स्थायी सुख मिल सके तब तो ठीक ही है यह बदलाव, नही तो उसके लिए एकाकीपन का जीवन ही बेहतर होगा। अतीत के दुख स वह खूब परिचित है। यदि रोहित का सान्निध्य प्राप्त कर उसे पुनः दुख मिला तो यह उसके लिए आघात होगा फिर इससे उत्पन्न जो बिखराव होगा उस संभालना उसके वश के बाहर की बात होगी। समस्या से वह कब तक जूझती रहेगी, क्या उसकी नाव किनारे नही लगेगी, क्या वह बिन पते की चिट्ठी बनी

रहेगी ? नही ऐसा कदापि नही होगा आखिर कार उसे भी कोई किनारा तो चाहिए ही।

एक दिन स्मिता और रोहित पार्क में घास पर बैठे थे। उन दोनों का इस पार्क में आने का पहला ही अवसर था। इधर कई दिनों से स्मिता उद्विग्न थी रोहित उसे पार्क इसी उद्देश्य से लाया था कि उसका जी बहल जाए। रोहित कह रहा था स्मिता से, "मैं चाहता हूँ कि तुम जिन्दगी को जिन्दगी की तरह जियो। तुम्हे मायूस देखता हूँ तो सोचता हूँ कि वह सब कर गुजरूँ जो तुम्हे खुशी दे सके"।

स्मिता ने उसकी ओर देखा और नजरें झुका ली।

"यह क्या तुम गमगीन ही बनी रही, आखिर क्या हो गया है तुम्हे ? तबियत होती है कि तुम्हारे पास से चला जाऊँ।"

स्मिता जानती थी कि रोहित का यह कृत्रिम रोष है। वह स्वयं को सामान्य बनाने का भरसक प्रयास कर रही थी। उसे प्रतीक्षा थी कि रोहित कुछ और कहे और उधर रोहित कह रहा था, "अब तो तुम्हे कोई निर्णय करना होगा।"

रोहित ने काफी समय पहले अपनी भावनाएँ व्यक्त कर दी थी। तब राजेश, अमित और रोहित के त्रिकोणात्मक सम्बन्ध को लेकर वह कोई निर्णय नही ले पायी थी। अब रोहित को छोड़कर दोनों दूर चले गये थे और रोहित जो दूर था अब पास आ गया था। निर्णय लेने के प्रश्न पर इधर राहित कई बार जोर डाल चुका था, आग्रह रोष और याचना सभी कुछ मिले जुले थे उसके इस प्रश्न में। स्मिता को लग रहा था कि उसका व्यक्तित्व विभाजित हो रहा है पति और प्रेमी के मध्य। एक से सम्बन्ध टूटने के कगार पर थे तो दूसरे से जुड़ने की प्रतीति। उसे लगा कि वह खंडित होती जा रही है, टूट रही है, पर इस प्रकार विशृंखलित होकर वह कही न रहेगी। नही वह अपने को बचाएगी। ऊहापोह की स्थिति मे उसे उबरना होगा। उस भावुकता के क्षण मे वह विचार मथन करती रही। सोच रही थी कि एक ही आधार बचा है, उसे उसको थामना होगा। सहारे के रूप में अपनाना होगा रोहित को तभी वह बिखरने से बचा सकेगी अपने आपको। अब वह कुछ आश्वस्त प्रतीत हो रही थी।

"तुम क्या चाहते हो ?" कोमल स्वर मे उसने पूछा।

"मैंने सुख की तलाश की थी और मुझे लगा कि जिसकी चाह थी उसी की प्रतिमूर्ति तुम हो। तुमसे सुकून मिलता है। जीवन का सफर तय करना ही है तो तुम्ही हमराही बन सकती हो।" रोहित ने मन के भाव व्यक्त किए।

स्मिता ने एक पल सोचा दूसरे ही पल उसने मृदु स्वर मे कहा, "मैं तैयार हूँ।" रोहित का रोम-रोम पुलक उठा। उसने अपना हाथ स्मिता के हाथ पर

रख दिया। मानो आश्वस्त कर रहा हो स्मिता को। खुशी का अतिरेक इस कदर बढ गया था कि कोई शब्द उसे नही मिल पा रहा था, कुछ कहने के लिए। कभी-कभी प्रेम मे खुशी के कुछ क्षण ऐसे होते हैं जहाँ शब्द नही मौन सम्प्रेषणीयता अनुभूति को सार्थक बनाती है। उधर स्मिता की हालत इससे कम न थी। उसके दिल की धड़कनें बढ गईं। कितने अरमान थे रोहित के समक्ष प्रेमजनित भावों को व्यक्त करने का और वह क्षण समीप भी आ गया पर भावुकता और संवेदनशीलता की स्थिति मे वह इतनी भाव विह्वल हो उठी कि कुछ कह न सकी मानो उसकी सुषुप्त कामनाएँ जागृत हो उठी हो और दिल की धड़कनो से एकाकार हो गई हो।

प्रेम किसी बन्धन को स्वीकार नही करता। विवाहित या अविवाहित अथवा उम्र के अन्तर से भी इस पर कोई प्रभाव नही पड़ता। यह तो एक प्रकार का भावात्मक रिश्ता है जिसका सम्बन्ध हृदय से होता है इसके लिए कोई निश्चित मापदण्ड भी निर्धारित नही किया जा सकता। स्मिता और रोहित की अब प्रायः मुलाकातें होती रहती। वह जब तब स्मिता के यहाँ आने लगा था। कभी वे घूमने या पिक्चर देखने भी जाते। घन्टों बातें होती। दोनों अब एक दूसरे की भावनाओं को समझने लगे थे लगभग पूरी तरह से। रोहित स्मिता को दुखी देखता तो वह विवश कर देता उसे मुस्कराने या हँसने के लिए। इच्छा हो या न हो उसे रोहित की खातिर प्रसन्नता का भाव चेहरे पर लाना पड़ता। आफिस में भी लन्च टाइम मे वे मिलते।

स्मिता को किसी चीज की जरूरत होती जिसमें रोहित के सहयोग की आवश्यकता हो तो वह कह भी देती थी। कभी-कभी वह स्मिता के कहे बगैर उसके मनोभाव को समझ जाता और तद्नुरूप बातें करता या आचरण करता। उनमें परस्पर निकटता बढ़ती जा रही थी। स्मिता को अतीत की यादें जब तब विचलित करती रहती। वह वर्तमान स्थिति का अवलोकन करती तो कुछ निर्णय न कर पाती लेकिन रोहित के प्रति उसे ख्याल बना रहता कि वह उसे इतना चाहता है तब वह उससे असम्पृक्त होकर उसको दुखी न करे इसलिए वह अपने व्यवहार के प्रति जागरूक रहती। अभी तक उनमे भावात्मक सम्बन्ध था। महीने बीतते जा रहे थे। लेकिन वह कोई पक्का निर्णय अब तक नहीं कर पायी थी। राजेश से उसका सम्पर्क टूटा हुआ सा था। कभी-कभी वह सोचती कि विद्रोह कर वह इस स्थिति में पहुँची है तो क्या वह समझौता करले फिर से राजेश के प्रति लेकिन इस प्रकार उसे पति की सभी शर्तें आँख मूँद कर स्वीकार करनी होंगी फिर उसका जीवन रह भी क्या जाएगा? बेजान सी और उमंगहीन वह हो जाएगी एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसकी कोई कामना न हो, स्पन्दन और उत्साह से हीन होकर किस प्रकार वह अपना जीवन बिता सकेगी?

एक दिन बातों ही बातों में रोहित ने स्मिता से कहा "तुम जानती हो कि तुम्हारी कामना की पूर्ति मेरा लक्ष्य है और जीवन की साध भी यही है। स्मिता की पलकें झुकी हुई थीं उसने धीरे से कहा "तुमसे मिलकर मुझे भी एक अनजानी सी खुशी महसूस होती है लगता है कि तुम्हें भूल नहीं पाऊँगी।"

"तो फिर देर किस बात की ?" रोहित पूछ बैठा।

स्मिता ने सोचकर कहा, "मैं चाहती हूँ कि तुम सोच समझकर निर्णय लो पर याद रखो कि जो भी निर्णय हो, स्थायी हो।"

रोहित स्मिता के संशय को दूर करने के सम्बन्ध में सोचने लगा तभी स्मिता ने बात बढ़ाते हुए कहा, "मैंने काफी सोच विचार कर लिया है हरेक पहलू से। कोशिश भी की तुमसे विलग हो जाऊँ पर सफल न हो सकी।"

"मेरी भी स्थिति इससे भिन्न नहीं है। मैंने जीवन साथी के रूप में जिसकी कल्पना की थी अब वह मुझे मिल गई है।" रोहित ने कहा फिर बात को आगे बढ़ाते हुए बोला, "लेकिन तुम सामाजिक बन्धन में बँधी हो, नहीं चाहता कि कोई ऐसी स्थिति आए फिर तुम्हें पीछे लौटना पड़े।"

स्मिता ने भावों को सप्रयास नियन्त्रित किया और सवेदनशील होकर कहा, "अब मैं इतना आगे बढ़ आई हूँ कि सीमाओं के बन्धन ढीले पड़ गये हैं। मैं चाहूँ भी तो पीछे नहीं लौट सकती। लगता है कि पीछे लौटने के रास्ते बन्द हो चुके हैं या तो मेरे द्वारा या तुम इसे यह भी कह सकते हो कि परिस्थितियों ने ऐसा मोड़ ला दिया है।"

स्मिता के आर्द्र स्वर से रोहित किंचित चकित हुआ फिर आश्वस्त करता हुआ बोला "हँसती मुस्कराती रहा करो, गमगीन मत रहा करो दुख के बादल छट जायेंगे। जिन्दगी की राह पर बढ़ोगी तो जिन्दगी भी मुस्कराएगी।"

"हाँ रोहित। मैं भी यही सोचती हूँ। मैंने जिन्दगी की ही राह चुनी है। राह का परिवर्तन मेरे लिए जीते जी मरने के समान है।"

"तुम्हारा इस तरह सोचना ठीक है। मैं जानता हूँ कि तुम्हारी जिन्दगी में कई मोड़ आए हैं पर मुझे विश्वास है कि शायद इस मोड़ के बाद कोई परिवर्तन तुम्हारी जिन्दगी में न हो।"

स्मिता अब अपने को रोक न सकी और बोली, "तुम्हारा मुझ पर इतना विश्वास है तो इस विश्वास की नींव को और भी मजबूत बनाऊँगी।"

"स्मिता, तुम सच कहती हो प्रेम विश्वास पर आधारित होता है जितना सच्चा प्यार होगा उतना ही अधिक विश्वास भी पर क्या सम्बन्ध विच्छेद पति से इतना ही सरल है ? नहीं, सरल तो कतई नहीं। मैं जानती हूँ कि सम्बन्ध विच्छेद में मुझे भावना के स्तर से ऊपर उठना होगा, विश्वास भी तोड़ने पड़ेंगे पर समय

के अन्तराल से सब ठीक हो जाएगा। स्मिता के स्वर मे निश्चय की झलक थी। "जैसी तुम्हारी मर्जी। वैसे मेरी भी यही चाह रही है।" रोहित ने व्यक्त किया।

अब स्मिता और रोहित दोनो की चाहत एक दूसरे के प्रति बढ़ती जा रही थी, फिर भी संकोच की दीवार कहीं न कहीं बनी हुई थी जिसे अब ढहने मे देर नही थी। स्मिता भावात्मक रूप से रोहित को स्वीकार कर चुकी थी पर मानसिक कशमकश बनी थी आखिर यह जीवन का प्रश्न था। वह सोच रही थी कि अतीत तो पीछे लौट गया वर्तमान भी जाने वाला है यदि उसने रोहित को स्वीकार न किया इसलिए उसे भविष्य को संवारना होगा पर, क्या सबको अलग किया जा सकता है? वह भी क्या करे। इसके सिवा कोई चारा भी तो नही है उसके लिए। कभी वह स्वयं को अनास्थावान रूप मे देखती कभी उसे लगता कि इतना सब कुछ तो भोग लिया अब कामना को महत्त्व ही क्यो दिया जाय पर कामनाहीन होकर क्या जीवन बिताया जा सकता है? नहीं कदापि नहीं, फिर उसकी उम्र भी क्या है जीवन का तीसरा दशक ही तो है जो युवावस्था की पूर्णता का द्योतक है। इस अवस्था में उसे महसूस हो रहा था कि कामनाएँ, वेग, वासना, रूपहले ख्वाब और प्रेम सभी कुछ होना है अतिशय रूप मे। अनिश्चितता की स्थिति मे वह निर्णय नही कर पाती कि वह चाहती क्या है? अस्पष्ट सा चित्र उभरता उस चित्र मे उसे रोहित का चेहरा दिखाई देता फिर वह चेहरा विलीन हो जाता।

स्मिता को रिकगनिशन की प्रबल चाह थी और यह उसे उसी व्यक्ति से मिल सकता है जो उसे सम्पूर्ण हृदय से चाहे इसलिए जीवन के लिए सुखकर मधुर स्वप्न से वह अपने को मुक्त न कर पाती। उसमे लालसा थी जीवन को जीने की, अपने को सुखी बनाने की, एक आशंका भी उसके मन मे कभी-कभी उत्पन्न होती कि अगर उसने कोई परिवर्तनकारी निर्णय कर लिया तो क्या गारण्टी है कि पुनरावृत्ति नही होगी पूर्व के अनुभवो की? फिर वह सोचती कि रिस्क न लेने का अर्थ होगा यथास्थिति स्वीकार करना जो उसके लिए सभव न था। उसकी धारणा थी कि हर निर्णय गलत नही हो सकते ठीक उसी प्रकार जैसे यह जरूरी नही कि हर निर्णय सही हो। सामाजिक मान्यताओ मे उसकी आस्था नही थी पर स्मिता के संस्कार कभी-कभी आडे आ जाते, तब वह सोचती कि क्या तलाक और उसके पश्चात् पुनर्विवाह इतना ही सहज है जितना एक पल के लिए इसके बारे मे सोच लेना। यह तो जीवन का प्रश्न है जो सिर्फ भावना पर आधारित नही हो सकते। पुनर्विवाह अन्तिम विकल्प की बात हो सकती है या किसी के साथ जुड़ना भी पर क्या उसका समय आ गया है? हाँ और नही के बीच वह झूलती रहती पर किसी एक ओर नही पहुँच पाती।

रोहित को स्मिता की नशीली आँखें और लरजते होंठ प्रिय थे। जब वह स्मिता के निकट रहता तो उसे महसूस होता कि उसकी बेचैन आहें उसे आगोश

मे लेने के लिए तत्पर हैं। कभी आलिंगनबद्ध होने की स्थिति मे उसे स्मिता की गर्म सांसों और उसके धड़कते वक्ष की मादकता की स्पष्ट अनुभूति होती फिर उसे स्मिता की खामोशी सहन नहीं होती क्योंकि उसे प्रतीत होता कि यह खामोशी अवरोधक बन गई है। ऐसे समय मे स्वयं को गतिशील होने से रोकना रोहित के लिए अत्यन्त दुष्कर हो जाता। उधर स्मिता की स्थिति भी इससे भिन्न नही थी क्योंकि राजेश से विलग हुए उसे एक वर्ष मे अधिक हो गया था फिर काम के उद्दीप्त होने पर यदि समाधान नही मिलता कारण च हे कुछ भी हो, ऐसी स्थिति मे सह अनुभूति वाला व्यक्ति मिल जाए जिसके प्रति विश्वास उत्पन्न हो चुका हो तब प्रेम सम्बन्ध चाहे वह विवाहेतर प्रेम सम्बन्ध ही क्यो न हो, रस से परिपूर्ण हो जाता है जिसमें तृप्ति होती है, मादकता भी, आवेश और आनन्द सभी कुछ। आखिर वही हुआ जो इस प्रकार के सम्बन्धों मे होता आया है। संकोच की दीवार एक दिन ढह गई और वे एक दूसरे के प्रति समर्पित हो गये।

रोहित को अब वातावरण मे रंगीनियाँ नजर आ रही थी और हो भी क्यो न? स्मिता अब उसकी ओर आकृष्ट थी। प्यार की खुशनुमा शाम, रात की रंगीनी कामना की पूर्ति करने वाली होगी ऐसा उसे लगता। उसने सोचा कि उसने स्मिता के लिए तड़प महसूस की है, निवेदन प्यार का उसने स्मिता से किया था पहले। प्रारम्भ मे मजूरी अभिव्यक्त नही हुई तो उस समय भी इन्कार नही था। तब उस लगा था कि आन्तरिक रूप से स्मिता ने उसे स्वीकार कर लिया। बाद की घटनाओं का क्रम उसके पक्ष में रहा जिससे उसे स्मिता का प्रेम मिल सका। उसे स्मिता की जिन्दगी से सहानुभूति थी वह उसे अभिन्न समझने लगा था। उसे स्मिता की जिन्दगी के सुख दुख अपने लगते। जब भी स्मिता को दुखी देखता अतीत की यादों मे खोई हुई देखता वह चैन से तब तक न बैठता जब तक उसे हँसा न लेता। उनके दिन प्रेमानन्द से परिपूर्ण गुजर रहे थे।

एक दिन रोहित से स्मिता की आँखें अपने हाथो से मूँद ली, और उससे पूछा "आज मैं तुम्हारे लिए एक उपहार लाया हूँ। बताओ क्या है वह?" स्मिता को रोहित की साँसो का आभास हो रहा था। उसे विश्वास हुआ कि प्रेम समृद्ध होता जा रहा है। हाथ को हल्के से हटाते हुए उसने कहा, 'उपहार की क्या आवश्यकता है। मेरे लिए तो सबसे बड़ा उपहार तुम हो।" जब उसने साडी का पैकेट देखा तो उसे प्रसन्नता भी हुई। रोहित का साथ पाकर उसे लगता कि उसका छोटा आशियाना मंजिल की ओर अग्रसर है। रोहित को स्मिता की लटें लहरो की तरह फैली हुई लग रही थी। उसने कहा, 'तुम्हारी अनुपस्थिति मे यादें सहारा थी जीने के लिए अब तुम मिल गई हो तो यादो के सहारे की जरूरत ही क्या रह गई। अब तो तुम्ही सहारा हो।"

स्मिता सोच रही थी दोनों ही एक दूसरे के सहारे हैं, इसलिए उसने कहा, मायूस मत हो, अब तो मेरे रहते तुम्हें इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी।" लेकिन वह सोच रही थी कि समय ने रोहित का पक्ष ले ही लिया। यदि अमित उस दिन मिल जाता तो शायद आज यह स्थिति न आती। अमित की याद आ जाने से पलभर के लिए उसके दिल में हूक सी उठी फिर वह सामान्य हो गई दूसरे ही पल।

स्मिता को मौसम और नजारे भाने लगे थे, रह-रह कर उसका दिल गुन-गुना उठता। रोहित की प्रतीक्षा उसे बनी रहती। दोनों जब मिलते तो एक दूसरे को आमन्त्रण-सा देते प्रतीत होते थे। रोहित किसी बात पर खफा न हो इस बात का वह ख्याल रखती। वह उसे और स्वयं को प्रसन्न बनाए रखना चाहती थी। उसे सन्तोष था तो इस बात का कि इतना सब कुछ गुजरने के बाद उसे अन्तरंग साथी मिल गया है जिसकी उसे चाह थी। रोहित के सान्निध्य में उसकी इच्छाएँ और आरजू करवट लेने लगे थे। उसे लगता कि वह जिन्दगी उसे मिल गई जिस ढंग की जिन्दगी की उसने कामना की थी। उसके मन मे रोहित के प्रेम का दीप प्रज्ज्वलित हो गया था। उसे अब सांझ उदास नही लगती थी। अब तो वह सोते जागते रोहित के सपने देखती थी, उसके विषय मे सोचती। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि प्रेम मे प्रिय के इर्द-गिर्द ही सारे ताने-बाने बुने जाते हैं। यही स्मिता ने भी किया था। उसे समय तेजी से गुजरता मालूम होता।

उसके मन के कागज पर रोहित का नाम लिख गया था। उसे रोहित पर भरोसा था। जिन्दगी के नये आयाम की उसे प्रतीति हो रही थी। रोहित उसका राजदां बन चुका था और वे दोनों अब जिन्दगी के क्षणों को जीने मे विश्वास रखने लगे थे। उम्मीदों का अन्तहीन सिलसिला स्मिता को पूरा होता नजर आ रहा था। उसका नवजीवन आशा से संचरित हो गया था, लगता जिन्दगी खिल उठी हो। रोहित के अधिकार को वह अपने तनमन पर महसूस करती। स्मिता के जीवन के अंधेरे की कालिमा अब छँट गई थी। अब वह स्फूर्तिमय दिखाई पड़ती थी।

रोहित के सपने साकार हो गए थे और उसकी जिन्दगी रोशन हो गई थी। स्मिता की उपस्थिति उसे आभास देती जैसे हवाओं मे खुशबू घुल गई हो। वह यही चाहता रहता कि स्मिता सामने रहे और वह अपलक उसे निहारता रहे। दोनों के प्यार के अन्दाज एक दूसरे को मोह रहे थे। वह सोचता कि स्मिता न मिली होती तो उसका दिल अब तक टूट गया होता। स्मिता को पाकर जैसे

उसकी किस्मत जग उठी। अब उसकी कामना यही रह गई थी कि स्मिता का संग साथ इसी प्रकार स्थायी रूप से बना रहे।

गुजर रहे दिनों में स्मिता प्रमुदित दिखायी पड़ रही थी। वह सतरंगे महल के रुपहले स्वप्न में विचरण करती, वेश-भूषा और साज-सज्जा मे पहले से अधिक समय देने लगी थी, साथ ही उसके गीतों की गुनगुनाहट गुंजरित होती रहती। रोहित से यदि किसी कारणवश भेंट न हो पाती दो चार दिन तब वह बेचैन दिखाई पडती। एक बार रोहित से कुछ दिनों तक भेंट न हो सकी, उसे ज्ञात हुआ कि उसकी छुट्टी की दरख्वास्त आई हुई है, कारण वह न जान सकी, उसे ज्ञात हुआ उन दिनों में आते-जाते सड़क, गली, पार्क, नुक्कड़ या मोड़ अथवा चौराहे पर उसकी नजरें रोहित को खोजती फिर रही थी। उसे लगता कि उसका मन जैसे खुले आकाश मे विचरण कर रहा हो। अतीत को उसने पीछे छोड़ दिया था, वह वर्तमान के क्षण को रोहित के सान्निध्य मे मधुरतम बनाए रखना चाहती थी। जब तक कोई आहट रोहित की उपस्थिति या उसके आगमन का आभास देती। राग रंग मे वह खुलकर भाग लेने के लिए उत्सुक रहती। संयम का बांध जब एक बार टूट जाता है तो उसकी परिणति इसी रूप मे होती है।

स्मिता की इच्छाओं ने करवट ले ली थी। वर्तमान के आधार पर भविष्य को सुखद बनाने की उसने कल्पना कर रखी थी, दिवास्वप्न भी देखती। इन खुशी के क्षणो में भी कभी-कभी उसका मन आशंकित होता रहता कि क्या यह सब स्थायी हो पाएगा पर जल्द ही इन विचारों को मन से निकाल फेंकती और बेसब्री से उसे इन्तजार रहता रोहित से मिलने का और उससे बातें करने का। रोहित उसके जीवन में छा गया था और उसके प्रति स्मिता मे समर्पण भाव थे। वह उसके मन मन्दिर मे प्रतिष्ठित हो चुका था। पति के स्मरण से अब उसका मन उद्वेलित न होता। अजाना सा दुख, क्षोभ और मुक्ति की उत्कृष्ट अभिलाषा उसके मन को घेर लेती और तब वह वर्तमान सुख के क्षण को अधिक से अधिक अपनाने का प्रयास करती। दिवा-स्वप्न से उसका मन हर्षित होता रहता।

रोहित को विश्वास था कि वह प्रेम के द्वारा स्मिता के जीवन की सारी कमी पूरी कर देता लेकिन संशय बना रहता कि क्या स्मिता वैधानिक रूप से भी उसकी हो सकेगी ? किस हद तक वह साथ देगी यह निश्चित नहीं हो सका था। वह स्मिता को सम्पूर्ण रूप मे स्थायी ढंग से पाना चाहता था। उसने स्मिता के साथ योजना बना ली थी। कानून विशेषज्ञ की सलाह भी ले ली थी कि किन हालातों मे पति से सम्बन्ध विच्छेद हो सकता है ?

एक दिन रोहित ने स्मिता से पूछा "डाइवोर्स के सम्बन्ध में तुमने क्या निर्णय किया है, कब तक तुम्हारे द्वारा पहल की आशा करूँ?"

स्मिता ने कहा, "एक हफ्ते के समय में मैं तुम्हे निर्णय से अवगत करा दूँगी।"

उसने अपनी बात इस सम्बन्ध में किसी व्यक्ति द्वारा मौखिक रूप से पहुँचाई भी थी लेकिन राजेश के स्पष्ट इन्कार से उसने सोचा कि यह तो जलालत होगी, कोर्ट कचहरी मे काफी समय लग सकता है फिर अंकित का भविष्य प्रश्न चिन्ह के रूप में उपस्थित हो जाता। इसलिए एक हफ्ते बाद रोहित ने जब पूछा "अब तो तुमने स्पष्ट निर्णय कर लिया होगा।"

स्मिता ने राजेश के बारे में कुछ न बताते हुए कहा, "अभी मैं इसके लिए तैयार नहीं हो पाई हूँ।"

रोहित यह सुनकर बर्दाश्त न कर सका, जज्ब करते करते उसका स्वर प्रस्फुटित हो ही गया, "अगर डाइवोर्स भी हो जाए और विवाह की तैयारी कर मैं बारात लेकर आ जाऊँ तो तुम उस समय कही यह न कह दो कि मैं अभी तैयार नहीं हो पाई हूँ।"

स्मिता को रोहित के स्वर मे व्यंग्य, आक्रोश और चुभन का मिला जुला आभास हुआ। वह भी कुछ कहना चाह रही थी इस प्रकार, "मैंने हर सम्भव प्रयास कर देख लिया पर यह इतना सहज तो नही। दूसरे की स्थिति तुम पुरुष लोग क्या समझो। तुम तो स्वत्व और अधिकार चाहते हो जो मैंने लगभग दे ही रखा है।" पर उसने कुछ कहा नहीं।

स्मिता को ट्रान्सफर होकर यहाँ आए हुए दो वर्ष से अधिक हो चुके थे। उसे कभी-कभी हैरत होती कि सात-आठ वर्षों के वैवाहिक जीवन मे इतनी अपेक्षा और अन्यमनस्कता के बावजूद शायद अब भी कहीं पुनर्मिलन की आशा रखता है उस स्थिति में जब कि उसने स्वयं उसे स्वतंत्र छोड़ दिया और इन वर्षों मे कोई खोज खबर नही ली। वह चाह रही थी कि वर्तमान जिन्दगी को मन के सुकून के साथ वह जिए। वैसे भी वह आत्म निर्भर है और अपने तथा अंकित के भविष्य को उसे ही सँवारना है, अपने योगदान द्वारा। "क्या पता रोहित आज उसे इतना चाहता है कल को बदल जाए।" यह प्रश्न उसके मन मे उत्पन्न होने लग गया था। इधर उसे रोहित प्रायः उद्विग्न दिखाई पड़ता था। रोहित की शराब और सिगरेट की लत मे पहले से कहीं अधिक इजाफा हो गया था पता नहीं तनाव से मुक्ति पाने के लिए या अन्य किसी कारण से। तनाव तो रोहित से ज्यादा वह झेल रही है। राजेश, रोहित और अंकित सभी का उसके जीवन मे स्थान रहा है।

रोहित में सहनशीलता कम होती जा रही थी। कभी-कभी वह असंयत होकर ऐसी बात कह देता जिससे स्मिता को चुभन की अनुभूति होती। उसकी झल्लाहट का आभास स्मिता को होने लगा था। एक बात उसे विशेष रूप से महसूस हुई वह यह कि रोहित चाहता था कि अंकित होस्टल में ही रहकर पढ़े जबकि स्मिता अंकित को अपने पास रखने के लिए आतुर थी। रोहित का अंकित के प्रति प्रेम प्रदर्शन शायद उसके प्रेम को पाने के लिए रहा होगा फिर अंकित स्मिता का है रोहित का नहीं इसलिए चाह का प्रदर्शन भले ही किया गया हो रोहित द्वारा लेकिन वह वास्तविक चाह नहीं थी। स्मिता स्पष्ट रूप से महसूस कर रही थी कि यदि ऐसा हुआ तो अंकित पर इसका अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा। वह सब कुछ अच्छा बुरा सहन कर सकती थी लेकिन अंकित, अपने जिगर के टुकड़े के विरुद्ध जाने वाली कोई बात उसे कतई बर्दाश्त नहीं थी। इसी कारण से रोहित से अब वह मन की उतनी निकटता न पाती जितनी सम्बन्धों की आरम्भिक अवस्था में थी। उसने अलग तो नहीं होना चाहा पर वह सोचती कि इस प्रकार तनावग्रस्त जीवन व्यतीत करने से लाभ भी क्या ?

रोहित के सामीप्य से जो इसे सुख मिला था उसे उपलब्धि मानते हुए अपनी सीमा का ध्यान रखकर स्मिता ने मधुर सम्बन्धों के बीच ही अलग हो जाना ही श्रेयस्कर समझा। उसे दुख तो अवश्य हुआ लेकिन धीरे-धीरे रोहित को अपनी स्थिति उसने समझा दी।

रोहित और अमित में स्मिता को एक अन्तर नजर आया कि रोहित खण्डित या विभक्त प्रेम को लेकर जीवन नहीं बिता सकता। उसमें उतावलापन अधिक था। वह किसी चीज को जल्दी और पूर्ण रूप से हासिल करना चाहता था। न हासिल होने पर वह सब कुछ कर गुजरने के लिए तैयार रहता चाहे वह प्रत्याशित हो या अप्रत्याशित लेकिन जीवन इस ढंग से जिया तो नहीं जा सकता। कुंठा, चिन्ता और अवसाद सभी लगे रहते हैं जीवन में व्यक्ति के साथ। फिर जिन्दगी में कुछ बातें और सच्चाई को अनिच्छापूर्वक भी स्वीकार करना पड़ता है। प्रतीक्षा भी करनी पड़ती है, कभी-कभी लक्ष्य की सिद्धि के लिए। अमित में धैर्य और प्रतीक्षा भी थी। वह पूर्ण अथवा विभक्त या आंशिक तथा शायद एकपक्षीय प्रेम, बशर्ते दूसरे पक्ष को इसका एहसास हो तथा स्वीकारोक्ति न दी गई हो तो अस्वीकृति भी न दी गई हो, के सहारे भी दिन गुजार सकता है। स्मिता को अमित का केवल नव वर्ष का बधाई पत्र प्राप्त हुआ था। वैसे भी जब तक अमित की याद आती रहती लेकिन यादों के सहारे जिन्दगी नहीं बितायी जा सकती। जिन्दगी अपनी गति से आगे बढ़ती रहती है। लोग मिलते हैं, बिछुड़ जाते हैं, कुछ

अपनी यादें या स्थायी प्रभाव छोड़ जाते हैं, और कुछ ऐसे होते हैं जो जिन्दगी से चले जाते हैं और विस्मृत हो जाते हैं। वक्त स्वयं में एक मलहम है जो बहुत से घावों को भर देता है।

रोहित से अलगाव का ढंग उसे कुछ दिनों तक सालता अवश्य रहेगा। पर उसे विश्वास था कि पारिवारिक प्रगति में यह अतीत का एक पृष्ठ बन कर रह जाएगा। उसे स्वयं को मुरझाने नहीं देना है, खिले रहना है, जिन्दगी को जीना है और जीवित रहना है। जिजीविषा उसमें उत्कट रूप में बनी हुई थी। अब वह भविष्य की अधिक चिन्ता नहीं करती क्योंकि जितना सोचो विभिन्न आशंकाएँ और सन्देह मन में पनपने लगते हैं जो जीवन को बोझिल बना देते हैं। हम पाने लायक व्यक्ति को पाकर समझते हैं कि सब कुछ पा गये लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि तब भी हम उसे पूरी तरह नहीं पा सकते हैं।

स्मिता जानती थी कि बैंक में अधिकारी के रूप में एक स्थान पर वह अधिक दिनों तक नहीं रह सकती। उसे ट्रान्सफर होकर आए हुए दो वर्ष बीत चुके थे। कहीं अनिच्छित जगह पर वह स्थानान्तरित हो जाए इससे अच्छा होगा कि मनचाही जगह के लिए प्रयास कर लिया जाए। उसे लगा कि नैनीताल यदि उसका ट्रांसफर हो जाए तो अंकित के अपने पास रहने की सुविधा उसे हो जायेगी तथा वह उसी स्कूल में पढ़ता रहेगा दूसरी जगह राजेश वालों हो सकती थी पर उसके विषय में सोचना दुःस्वप्न ही होगा। इसलिए उसने उसे भूल जाना चाहा। अंकित की खोज खबर लेने उसे महीने दो महीने में जाना पड़ जाता था। इतने वर्ष के वैवाहिक जीवन में उसने कितना कुछ तो भोग लिया। विवाह से पूर्व किशोरावस्था का प्रेम, विवाह होने पर पति के साथ का सुख कम दुख अधिक भोगना पड़ गया था। सुख की खोज में विवाहेतर प्रेम सम्बन्ध स्थापित किया पर वह भी उसे रास न आया। राजेश ने जाने के बाद उसकी कोई खोज खबर नहीं ली थी। इस बात का उसे मलाल बना रहा। कितना भी कुछ हो आखिर वह उसकी पत्नी है। जब तक संग साथ रहा वह राजेश के प्रति एक निष्ठ बनी रही। ऐसा नहीं कि उसे चाहने वाला न मिल रहा हो उस बीच लेकिन उसे कहीं आशा थी कि कितना भी विलगाव की भावना हो, राजेश उसका होकर रहेगा पर आशा कल्पना ही बनी रही यथार्थ में परिणत न हो सकी। राजेश के जाने के बाद भी उसने प्रतीक्षा की थी कम से कम एक वर्ष तक पर प्रतीक्षा सफल नहीं हुई तो कब तक वह संयमित जीवन व्यतीत करती और फिर जिसके लिए संयम धारण करती उसकी नजर में उसका मूल्य ही क्या था ?

अविश्वास की प्रताड़ना वह सहती रही फिर एक हमदर्द मिला कम से कम उस समय और बाद के कुछ समय तक उसे यही लगा तो उसने दुश्वार जिन्दगी

को सरल बनाना चाहा तनाव मुक्त होने के लिए, पीड़ा और दुख दर्द को भूलने के लिए। उसे अपने किए पर पछतावा नही था। उसकी खोज सार्थक भले ही न रही हो पर उन क्षणों में सुख तो मिला ही। यह सुख की प्राप्ति भी जीवन की उपलब्धि उस समय उसे लगी थी। उसने पति के साथ खुद को एडजस्ट करने का पूरा प्रयास किया था पर पति की ओर से इस सम्बन्ध मे लेश मात्र भी प्रयास नही किया जा सका। उसने अपनी भावनाओं का दमन किया इच्छा न होने पर भी पति के साथ जिन्दगी को सँवारने की कोशिश की पर पति की उपेक्षा, तिरस्कार और संशय ने उसे घुटन ही प्रदान किया था फिर उसने उस जाल को तोड़ फेंकना चाहा, दूसरे जाल में बंधने या फंसने के लिए नही बल्कि जिन्दगी को अपने ढंग से जीने के लिए तो क्या बुरा किया ?

स्मिता को ट्रांसफर के प्रयास में सफलता मिली। प्रस्थान करते समय उसे ख्याल आया कि यहाँ से जब वह उच्च पद पर गई थी तो अकेली ही थी, वापस भी अकेली आयी और पुनः अकेली ही उसे जाना पड़ रहा था। यह एकाकीपन अब उसके जीवन का अभिन्न अंग बनता जा रहा था। नैनीताल पहुँच कर उसने पोस्ट ज्वाइन की। अंकित अब सैकेण्ड स्टेन्डर्ड मे पढ रहा था। अध्ययन सम्बन्धी उसकी प्रगति सन्तोषजनक रूप से जारी थी। अंकित की पढ़ाई के प्रति अब वह ध्यान देने लगी थी। वह व्यस्त रहने लगी थी। बागवानी और सामाजिक कार्यकलापों मे व्यस्त रहने पर दुख को विस्मृत करने का उपक्रम किया जा सकता है। प्रकृति का रमणीक वातावरण उसे राहत प्रदान करता और वह सोचने लगी कि आज के मेटीरिअलिस्टक युग मे जीवन की आपा-धापी में लोग इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें प्राकृतिक सौंदर्य से आनन्दित होने की फुरसत नही मिलती। यदि उसकी तरह कुछ व्यक्ति प्रेरित इस दिशा की ओर होते हैं तो उनका यह आनन्द अधूरा ही रहता है जब तक कोई मन का मीत साथ न हो पर यह अधूरा आनन्द ही शायद उसकी नियति बन गई है। इस प्रकार के विचार उसके मन मे आते।

उधर राजेश स्मिता से दूर अपनी जिन्दगी गुजार रहा था। कभी वह सोचता कि इन सब झंझटो से स्मिता को मुक्ति दे दी जाए और वह भी अपना नया घर बसा ले पर यह उसके पुरुषार्थ का हनन होगा फिर इससे उसके जीवन की राहे आसान हो जायेंगी। नहीं, वह स्मिता को बन्धन मुक्त नही करेगा इसीलिए जब मेसेन्जर आया था डाइवोर्स के सम्बन्ध में कहने के लिए तो उसने स्पष्ट इन्कार कर दिया था। उसे याद आ रहा था कि उसने स्मिता से रोहित के सम्बन्ध मे उड़ती हुई अफवाहो एवं चर्चा के सम्बन्ध मे पूछा था तो उसने भिन्नता स्वीकार कर ली पर प्रेम को स्वीकार नही किया था जिससे उसका मानसिक तनाव बढ़

गया था। उसका विश्वास था कि जहाँ धुआँ होता है वहाँ आग होती है। चर्चा ऐसे नही फैलती कुछ तो सच्चाई होगी या आधार होगा। प्यार एक ऐसी चीज है जो छिपाने से छिपती नही चाहे कितने ही आवरण मे इसे क्यों न रखा जाये। प्रेम प्रकाशित होकर रहता है, जग जाहिर हो जाता है।

वह स्मिता पर नियन्त्रण स्थापित करने के सारे प्रयास कर चुका था अपनी समझ से। उसे अपनी पत्नी की लोकप्रियता से भी ईर्ष्या होती उसका कहना था कि सब मतलब के साथी होते हैं और स्वार्थ सिद्ध करते हैं। वह समझता था कि स्मिता को मनोनुकूल बनाने मे असमर्थ होने पर उसने उसे उसके हाल पर छोड़ दिया चाहे जो वह करे और भुगते। जब उसने देख लिया कि वर्तमान स्थिति मे अंह के कारण स्मिता का संग साथ बहुत दिनो तक नहीं चल पाएगा तो उसने ट्रान्सफर करवा लिया। सबक सिखाने के लिए। वह भी स्मिता से दुखी था। न पहले का घरेलू जीवन सुखी था और न अब वह सुखी है बल्कि उसकी कुंठा पहले से बढ गई है। उसने एक निर्णय कर लिया था कि भविष्य में भी वह तलाक के लिए अपनी स्वीकृति नही देगा। वह सोचता था कि स्मिता ने उसके प्रेम को महत्त्व नही दिया। वाचालता उसके लिए आकर्षण है, बाह्य आकर्षण से वह प्रभावित होती है। आज वह चाहे जिसके प्रति लगाव या समर्पण भाव रखती हो पर यह भाव स्थायी न रह सकेगा वैसे प्रेमी से वह क्या कह सकता है. समय ही इसका निर्णायक होगा। स्मिता लम्बे समय तक निर्वाह किसी के साथ नही कर सकती। उसने उसके प्रेम को और दिल की गहराइयो को नहीं समझा, इस बात का राजेश को दुख था।

स्मिता प्रबुद्ध है, अंह उसमें प्रबल है और स्वयं उसमे भी। उसे व्यक्तियों की परख नही है। हाँ, निश्चय की वह दृढ है इसलिए जो उसके मन को भा जाता है या उसके व्यक्तित्व पर छा जाता है उसके प्रति वह उन्मुख हो जाती है फिर किसी प्रकार का अवरोध स्वीकार नही होता है। असफल रहने पर वह विकल्प ढूंढ लेती है, कभी उसे प्रतीति होती कि उसकी कमी या स्मिता की भावुकता के कारण यह प्रेम सम्बन्ध जो विकसित हुआ तो शायद उसका लौटना अब न हो। वह जानता था कि प्रारम्भ में भावात्मक स्तर पर किसी के साथ प्रेम सम्बन्ध विकसित होते हैं फिर शारीरिक स्तर पर आने मे देर नही लगती। राजेश का सोचने का अपना नजरिया था उसने रोहित से सम्बन्ध टूटने की बात सुनी थी और नैनीताल में स्मिता के पहुँचने के विषय मे भी उसे ज्ञात हुआ था लेकिन सम्बन्ध बन जाने पर किसी कारणवश यदि सम्बन्ध टूट जाते हैं तो यही क्या गारंटी है कि अन्य कोई व्यक्ति अब उसके जीवन मे नही आएगा? पति के रूप में

अच्छा या बुरा जो कुछ वह रहा है स्मिता को उसके प्रति ही समर्पित रहना चाहिये था ऐसा न करने पर उसने भयंकर भूल की है जो क्षम्य नही है।

मन पर काबू न रख पाने पर स्त्री का पतन निश्चित है। उसे लगने लगा था कि स्मिता उसके लिए पहेली ही रही और वह उसे समझ सकने में असमर्थ रहा। वह सोचता कि स्मिता में दूसरो को आकर्षित करने की क्षमता है इससे वह कुढता रहता था। यदि उसने स्मिता का ज्यादा ख्याल रखा होता तो आकर्षण की लालसा से स्मिता मुक्त रही होती तब उन दोनों का वैवाहिक जीवन सफल रहा होता। खैर कुछ भी हो स्मिता यदि उसके पास आएगी, गिड़गिड़ाएगी, सान्निध्य की याचना करेगी, पश्चाताप का उसे बोध होगा और मेरी सभी शर्तो को स्वीकारेगी तब उसके अहं को सन्तुष्टि मिलेगी और तभी वह सम्बन्ध को सामान्य बनाने के विषय मे सोचेगा।

अमित अपने और स्मिता के अब तक के सम्बन्ध के विषय मे जब तब सोचता रहता। उसने असिस्टेन्ट एडीटर का पद यहा ज्वाइन किया था। उसे अब एडीटर बनने मे अधिक देर नही थी, यही उसकी चाह भी थी जो देर सवेर पूरी हो जाएगी यहां आने के बाद उसने स्मिता को दो बार नव-वर्ष की ग्रीटिंग्स भेजी थी। उसे आशा थी कि स्मिता उसे पत्र लिखेगी, प्रतीक्षा भी की लेकिन न पत्र आया और न उसे चैन मिल सका। अब तक की संग्रहित स्मिता की विभिन्न फोटो को वह जब तब देखता रहता, यादें और फोटो ये ही सहारे के रूप में उसके पास थी। उसे जो दारूण आघात मिला था उसने उसे दुःखी बना दिया था। जीवन भार स्वरूप लगने लगा था। बाहर से लोग उसे प्रफुल्लित देखते हैं पर मन के दर्द को वे क्या समझें? यदि स्मिता का स्नेहप्लावित आश्वासन मिला होता, उसने उसके सुख-दुख को अपना समझा होता और इन्ट्रोजक्शन की फीलिंग उसके प्रति उसमें होती तो उसे कितनी बड़ी आशा और विश्वास का सम्बल प्राप्त हुआ होता। वह सोचता की इतने आघातो के बाद भी वह उसे भूल नही पा रहा है। भविष्य मे सम्बन्ध बनेगा यह अब पूर्ण अनिश्चित सा ही है स्मिता कितनी भी प्रबुद्ध हो चाहे जितने विलक्षण गुणों और आकर्षण से मुक्त हो एक बार उससे मिलकर सारी बातों को स्पष्ट रूप से बगैर किसी दुराव छिपाव के व्यक्त करना ही होगा। वह इन्कार ही तो अधिक से अधिक करेगी, क्या पता शायद स्वीकार भी कर ले। स्मिता ने ही एक बार उससे कहा था, "अमित क्या तुम समझते हो कि हम लोगो का बार-बार मिलना महज इत्तफाक रहा है, नही मैंने चाहा इसलिए ऐसा हुआ।" कभी उसे लगता कि शायद झूठी आशा ही बनी रही है उसके जीवन मे दूसरे ही पल उसका मन प्रतिवाद करता, कि इतना ज्यादा जो वर्षों का सान्निध्य मिला वे झूठे सम्बन्ध थे, नहीं, कदापि नही।

ग्रमित विश्लेषण करता तो पाता कि स्मिता के जीवन में जो व्यक्ति सफल हुए उनमें व्यावहारिक समझ और अवसर से लाभ उठाने की प्रवृत्ति हो सकता है कि उसकी अपेक्षा रही हो। निश्चित ही वे सफल हुए पर अलगाव की स्थिति आने पर पराजय के भाव उनमे आए हैं। उसे प्रारम्भ में कुछ समय ऐसा अवश्य मिला था जब वह स्मिता की जिन्दगी मे अकेला था अपनी भावना को व्यक्त करने में उसे विलम्ब हो गया। उसके पश्चात रवि, राजेश और रोहित उससे इस प्रकार जुड़े रहे कि वह महसूस करता कि स्मिता के लिए वह प्रथम वरीयता का तो नही शायद द्वितीय वरीयता का पात्र बन कर रह गया है फिर भी उसे कही विश्वास था कि हो सकता है स्मिता जीवन के किसी मोड़ पर उसे समझे और चुने। वेदना ग्रमित के जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी थी। वह सोचता कि सम्भव है उसका प्रेम प्रतिदान से वंचित रहे लेकिन वह तो मौखिक स्वीकारोक्ति से भी सन्तुष्ट हो जाता यदि वह इसी रूप में चाहती तो वैसे पूर्ण प्राप्ति की आशा कौन नही करता, ग्रमित भी इसका अपवाद न था। वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे उसे अधिक आशा तो नही हां क्षीण आशा अवश्य थी। इतना सब कुछ प्रत्याशित और अप्रत्याशित घट जाने के बाद वह स्मिता को विस्मृत नही कर पाया। दूर चले आने पर रोज-रोज की व्यथा से वह ग्रस्त नही रह गया था पर उसे अपना जीवन समस्त उपलब्धियों के बावजूद अभावग्रस्त लगता।

उसे प्रतीत होता कि स्मिता से बातें करते समय स्पष्ट रूप में वह अपनी भावनाओं को व्यक्त नही कर सका। ऐसा हो भी जाता है कि मन में जो भाव होते हैं जुंबा से वे व्यक्त नही हो पाते। उसके लिए शारीरिक तृप्ति से बढ़कर मानसिक तृप्ति थी जो स्मिता से ही मिल सकती थी क्योंकि वह उसके भावों के अनुरूप औरों की अपेक्षा ज्यादा थी। यदि उसने शारीरिक सुख ही चाहा होता तो असफलता की स्थिति मे दूसरा विकल्प ढूंढ़ लिया होता लेकिन ऐसा नही हुआ। प्रेम में यादें महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उसके सहारे उम्र का एक बड़ा हिस्सा कभी-कभी कट जाता है। ग्रमित का विचार था कि स्मिता की शायद कोई मजबूरी रही होगी या उसमे अभाव जिससे वह अभी तक उसे पूर्णतया स्वीकार न कर सकी थी वह अपने को अब थका हारा महसूस करता और हो भी क्यों न, वह कोई स्थिति प्रज्ञ तो है नही कि सुख दुख से परे रहे। यादों और ख्वाबों से वह अपने को मुक्त नहीं पाता। तन्हाई भी महसूस करता और इसी को नियति मानने के अलावा उसके पास कोई विकल्प नही रह गया था। फिर भी भ्रम या विश्वास कुछ कहो स्मिता को किसी न किसी रूप मे पाने का बना था। वह अपने को जब तब बेचैन पाता, कशिश और उलझन बनी रहती। प्रेरणा से दूर हो जाने के

कारण अपने अन्य कार्य को जैसे तैसे वह पूरा करता उमंग हीन और उत्साहहीन होकर। वेजुबा प्यास उसमें अब भी बनी हुई थी। उसे अपनी जिन्दगी स्मिता के बिना अधूरी लगती। स्मिता उसे मिलती रही थी इधर के समय को छोड़कर, दोनों के कदम बढ़े पर कहीं वे रुक गये चाहे झिझक या अन्य किसी कारण से और दूरियाँ कभी एकदम खत्म नही हो सकी। सीमित शक्ति के कारण इन्सान की अपनी मजबूरियाँ हो सकती हैं। उसने कब चाहा था कि स्मिता का साथ छूटे पर क्या स्मिता भी कभी उसको याद करती होगी? क्या कभी वह मिलेगी? वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे सम्भव तो नहीं प्रतीत होता फिर भी अगर ऐसा हुआ तो उससे बढकर खुशकिस्मत कौन होगा? इन्तजार करना ही होगा फिर प्रेम का पटाक्षेप चाहे जिस रूप मे हो। उसे चाह थी स्मिता के प्रति अर्पित होने की। कामना के बिना अस्तित्व भी क्या रह जाएगा उसका? एक ही कामना है उसकी स्मिता को पाने की चाह।

स्मिता नैनीताल में अंकित के साथ जीवन गुजार रही थी। अंकित की पढ़ाई सामाजिक सेवा की संस्थाओं के कार्यकलापो एवं काव्य सृजन मे वह अपने को व्यस्त बनाए रखने का प्रयास करती। उसकी कवितायें पत्रिकाओं मे प्रकाशित होने लगी थी। उदासी और मन के दर्द की अनुभूति उसे एकान्त के क्षणो मे होती वह निष्क्रिय नही बैठ सकती थी। उसमे प्रतिभा थी इसलिए वह संघर्ष करते हुए अपना मार्ग प्रशस्त कर रही थी कभी-कभी वह क्लान्त भी हो जाती। जब वह अद्यावधि अपने जीवन के सम्बन्ध मे विचार करती तो उसे लगता कि अपनी राह खुद तय करनी होगी। कोई साथ मिले न मिले जिन्दगी का कारवाँ यूँ ही चलता रहेगा। जीवन मे दो एक अवसरों पर कुछ समय के लिए मन चाहे व्यक्ति का साथ मिला तो प्रतीत हुआ कि बदलाव आ गया फिर मजबूरी या परिस्थिति के मोड़ आने पर उसने स्वयं को निपट अकेली पाया। बोरियत और निराशा की जिन्दगी होती है एकाकीपन की अवस्था मे, ऐसे मे सुख की तलाश करना व्यक्ति के लिए स्वाभाविक होता है कि कोई मिले जो सुकून दे सके। वह सोचती कि परख और इत्मीनान कर लेने पर यदि सुख के पल मिलने की आशा बंधती है तो उन क्षणों को सहेजने का प्रयास करने का जी चाहता है बाद में वह भ्रम भले ही सिद्ध हो क्योंकि भावों को कौन जान सकता है। पर सुख के क्षण को अपना बनाने की इच्छा तो होती ही है। हाँ, इस सम्बन्ध में निर्णय लेना आसान नही क्योंकि सामाजिक परिवेश की एकदम उपेक्षा नही की जा सकती। केवल अपना सुख सब कुछ नही है पति और पुत्र में थोडी देर के लिए पति के सम्बन्ध मे विचार न भी करूँ तो पुत्र जो उस पर निर्भर है, जिसके कारण भविष्य का निर्माण उसे करना है, का भविष्य देखना ही होगा, यदि वह बिखर गई तो न अपने लिए और न पुत्र

के लिए वह कुछ कर सकेगी इसलिए वह बिखरना नही चाहती मजबूत अवलम्बन मिले जो सुख व शान्ति दे सके तो सभी परिस्थितियों का सामना किया जा सकता है।

इस समय वह जीवन के पथ पर अकेली बढ़ रही थी। पुरुषों की स्वार्थ-लिप्सा के कारण उसकी धारणा बन गई थी कि सब नही तो ज्यादातर पुरुष भी सब कहीं एक से होते हैं। विश्वास ऐसा दिलाते हैं कि उनके जीवन मे उसके जैसा कोई और अब तक नही आया। कोई सौन्दर्य की प्रशंसा करेगा तो कोई स्वभाव, श्रद्धा और बौद्धिकता के गुणगान करेगा। थोड़े बहुत मन के भाव मिलने पर यदि किसी को लिपट दे दो तो उस सान्निध्य का सबके लिए एक ही अर्थ होता है मानसिक तृप्ति के साथ शारीरिक तृप्ति भी प्राप्त करना। इस तृप्ति के क्रम में फिर वह मानसिकता मे कमियां खोजने लगता है फिर शारीरिक सुख ही प्रमुख लक्ष्य रह जाता है। किसी मौके पर उपेक्षा न सही तटस्थता का भाव दिखा दो तो फिर उनका अहं चोट खा जाता है। या तो किनारा कस लेंगे या प्रेम की दुहाई देकर मायूसी दर्शाकर प्राप्तव्य को प्राप्त करने के प्रति सचेष्ट रहेंगे। वैसे शारीरिक जरूरत अस्वाभाविक तो नही है पर इसके बिना भी सम्बन्ध जारी रख सकते हैं। इस स्थिति में उन्हें विरक्ति होने लगती है। साथ ही अरुचिकर लगता है। इस प्रकार पुरुष प्रायः स्वार्थी और झूठे अहंकारी होते हैं। स्वार्थ लिप्सा और तृष्णा ही उनका प्रमुख लक्ष्य रहता है। वे दूसरे के मनोभाव को उसकी स्थिति में समझने का प्रयास ही नहीं करते केवल अपने मापदण्ड पर सम्बन्ध का विस्तार चाहते हैं और यह विस्तार नारी शरीर पर केन्द्रित रहता है।

सम्बन्धों की दुनिया अजीब होती है, सम्बन्धों का प्रारम्भ अलग-अलग रूप में भले हो पर अधिकांशतः इस प्रकार के सम्बन्धों की परिणति एक जैसी होती है। कभी वह सोचती कि पुरुष के बिना नारी क्या जीवन-यापन नहीं कर सकती ? पर पूरक के बिना वह अधूरी ही रहती है। पूरक सही अर्थ मे पूरक होना चाहिए तभी चैन है नही तो भटकती हुई जिन्दगी। सहारा तो चाहिए ही स्त्री पुरुष को एक दूसरे का। पुरुष के सहारे की उसे भी जरूरत है लेकिन वह भटकना नहीं चाहती। हां, राजेश के व्यवहार से क्षुब्ध होकर उसने एक विकल्प की कामना अवश्य की थी पर वह भी स्थायी सुख का आधार न बन सका। इस प्रकार की मृग मरीचिका या तृष्णा से तो अच्छा है कि अकेली जिन्दगी बितायी जाये अंकित को साथ लेकर। वह यह भी चाहती थी कि उसकी जिन्दगी का कोई बदलाव अंकित के लिए कुंठा का कारण न बने। परिवर्तन हो तो उसके और अंकित दोनों के सुख की बढ़ोत्तरी हो तभी वह बदलाव उसे स्वीकार होगा अन्यथा किसी कीमत पर नही आश्रित तो वह वैसे भी किसी पर नही है। इतनी समर्थ तो है ही कि

अपने और पुत्र के जीवन का यापन सुख सुविधा के साथ हो सके पर इसके बावजूद भी इस संघर्षपूर्ण जीवन मे सहारे की जरूरत कभी-कभी बेहद महसूस होती है मनचाहा विकल्प न मिलने की स्थिति में अकेला जीवन भी मजबूरी की स्थिति में जिया जा सकता है। किसी पर निर्भर न रहते हुए सहारा तभी चुना जाए जो केवल सहारा ही हो पुरुष के अर्थ में, तब भी जीवन बिताया जा सकता है लेकिन स्थायित्व की कामना कौन नहीं करता ?

स्मिता की भावनाएँ परिवर्तनशील थीं। प्रेम भाव के उत्पन्न होने पर भी वह अपनी भावना का इजहार नही करती थी। उसे अपने पर ग्रोवर कान्फिडेन्स था जिससे निर्णय करने में कभी-कभी उससे त्रुटि भी हो जाती थी पर इसे वह कालान्तर मे ही महसूस कर पाती थी। सच मे देखा जाए तो प्रेमाभिव्यक्ति के स्वरूप भी विभिन्न होते हैं कभी बरसात की तरह जोर से बरस जाता है तो कभी धूप निकलने की तरह यह स्वयं अभिव्यक्त हो जाता है।

स्मिता की धारणा थी कि इन्सान फरिश्ता तो होता नही। उसमे अपनी इच्छाएँ और कमजोरियाँ होती है इसलिए रूठने, मनाने, गम और खुशी इन सबका क्रम जीवन मे लगा रहता है। फिर भी किसी स्थिति मे अपने वजूद को मिटने नही देना चाहिए। तभी व्यक्ति जीवन मे कुछ पा सकता है। हाँ, इसके लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। वह अपने अनुभव से जान गई थी कि प्रेम का मार्ग सहज नही है इसमें प्रतीक्षा, वियोग, संयोग, अवरोध और कुंठा प्राप्त होती रहती है। हाँ, इन सबसे गुजर कर प्रेम का स्वरूप परिष्कृत ही होता है।

वह जीवन और कर्तव्य पर विचार करती तो पाती इस क्षण भंगुर जीवन मे उसने भी कर्तव्य की वेदी पर बलिदान होना चाहा था सुख की अभिलाषा मे पर सुख उसके लिए मृगतृष्णा सदृश रहा। वह जीवन में कठिन परीक्षा की घड़ियो गुजरी थी। सफलता भी अर्जित की उसने जीवन के विविध क्षेत्र मे पर जीवन साथी उसको मन के अनुरूप न मिल सका। ऐसा नही कि जीवन साथी ने उसे चाहा नहीं। अतीत की अभिव्यक्ति के कारण राजेश की चाहत मे व्यवधान पड़ा फिर मानसिकता और दृष्टिकोण के अन्तर ने उन दोनों के जीवन को दुखमय बना दिया इसलिए वह अतीत को जल्दी याद नही करती थी। वह सोचती कि जो बीत गया वह बीत गया जो सामने है उसी को देखना और समझना है तथा तदनुरूप जिन्दगी ढालनी है। उसे जीवन में साथी मेहरबां के रूप मे मिले जिस्म और जाँ क हुए पर जिन्दगी शायद परिवर्तन का ही पर्याय है। एक स्थिति ऐसी आई कि बसे अलग होना पड़ अपने और अंकित के सुख और भविष्य के लिए। वैधानिक प से यदि वह पति से स्वतन्त्र न हुई तो क्या हुआ ? समाज उसे चाहे जिस रूप मे

देखे पर जिन्दगी को अपने ढंग से जीने का उसे हक है। अगर लोग उसे मिटाने पर तुले हैं तो उनकी इन आशाओं पर तुषारपात होगा। दूसरे को अपने अनुकूल चाहे वह न भी बना सके। पर अपने अनुकूल जिन्दगी वह जीती जा रही है और जीवन मे यही उसके लिए सबसे उपयुक्त मार्ग है। अंकित भी अब बड़ा हो रहा है। चाहे कुछ भी हो वह अंकित के भविष्य को सुखद बनाकर समाज को दिखा देगी कि वह नारी है पर अबला नही।

स्मिता को याद आ रहा था कि जब राजेश से सम्बन्धो मे दरार पड़ने लगी थी तब अमित ने उसे समझाया था जीवन के सकारात्मक पक्ष को वह ग्रहण करे। सन्तुलित व्यवहार बनाए रखने से आपस मे निर्भरता और समझ सही रूप मे स्थापित होती है। साथ ही साहचर्य भी तभी आनन्दपूर्ण होगा। जीवन मे परिवर्तन होते रहते हैं। इसलिए स्थिति से तादात्म्य बनाकर जीने का प्रयास करना चाहिए। प्रेम मे घट बढ भले ही हो पर यदि विश्वास बनाए रखने मे सफलता प्राप्त हो जाए तो दांपत्य जीवन मे शान्ति और सुरक्षा बनी रहेगी। स्मिता इन्टेलिजेन्ट थी वह इन बातों को भली प्रकार समझती थी। उसने एक बार पुनः सम्बन्ध को सामान्य बनाने की चेष्टा की। सुख के चिरस्थायी होने की उसने केवल कल्पना ही नही की बल्कि यथेष्ट रूप मे उसको क्रियान्वित करने का प्रयास भी किया था। उसने अपने प्रयास की असफलता के सम्बन्ध में अमित को जब अवगत कराया तो अमित ने कहा था, "पति से विलग होने की स्थिति मे विकल्प ढूंढ़ा जा सकता है पूर्ण सतर्कता के साथ। सारी स्थिति स्पष्ट होने के बाद स्वयं और संतान के सुखद भविष्य के लिये दूसरा माध्यम अपनाने मे हर्ज नहीं है।" स्मिता को व्यक्ति को समझने के लिए उस व्यक्ति या पुरुष के सम्बन्ध मे पूर्ण रूप मे अवगत होना था। अमित का सकेत स्वयं के प्रति रहा होगा ऐसा उसने सोचा था। चाहा भी था काफी देर मे, लेकिन घटनाक्रम ने सारी स्थिति ही बदल कर रख दी।

स्मिता को कभी-कभी उदासी घेर लेती। परिस्थितियों से जूझते हुए इस प्रकार के क्षण आ जाया करते थे। जब तब उसे अमित की भी याद आती। उसकी मायूसी से वह अपनी उदासी की तुलना करती। क्या राजेश भी इसी प्रकार उदास होगा...... शायद नही यदि होता तो उसने उसकी खोज खबर ली होती। अब इस विषय मे सोचने से लाभ भी क्या? उसे अपना पथ निर्दिष्ट करना होगा पर उसका स्वरूप क्या हो जीवन को अकेले बिताए या किसी के संग साथ? उसने विवाह से पहले रवि का साथ किया फिर जीवन साथी के रूप में राजेश का चुनाव किया, रोहित भी मिला लेकिन बाह्य आकर्षण की प्रबलता में बिंध जाने पर

आकर्षण स्थायी न रह सका। वितृष्णा उत्पन्न हुई और अब वह एकाकी जीवन व्यतीत कर रही है। अब किसी नए व्यक्ति के चयन की इच्छा भी नहीं रही। हां अमित को साथी बनाना चाहती थी पर वह भी दूर हो गया। यदि वह कभी मिला उसने प्रस्तावित किया तो वह अवश्य सोच सकती है पर पहल स्पष्ट रूप में उसे ही करनी होगी नही तो वह अकेलेपन का ही जीवन वितायेगी सोचेगी कि यही उसकी नियति है पर चाह तो है ही दुख दर्द बटाने वाले की हम सफर की जो उसे सजा कर रखे, कामनाओ की पूर्ति मे सहायक हो, अन्धानुकरण न करे पर उसकी इच्छाओं को महत्व दे उसको समझे यथार्थ रूप में। देखो अमित मिलता भी है या नहीं जीवन पथ में। एक बार अमित को भी परखने की, उसे अपनाने की उत्कट अभिलाषा है। अगर वर्तमान की तरह एकाकी ही उसे चलते रहना पड़ा तो भौतिक समृद्धि भले ही मिल जाये व्यावहारिक जीवन मे भी वह सफल हो जाये पर क्या ये सब सुकून दे पाएँगे ? वर्तमान तो अनिश्चित सा ही मालूम होता है भविष्य के सम्बन्ध मे कुछ कहा नही जा सकता है शायद हाँ या शायद नही।